THE ATHLYE SANSKRIT-GUJRATI SERIES

Editor,

TRIBHUVANDAS KALLIANDAS GAJJAR.

M A, B Sc,

Assisted by

MANILAL NABHUBHAI DVIVEDI,

B A

EDITOR'S PREFACE.

Rao Bahadur Y. V. Athalye, M. A., LL. B., late Naib Dewan, Baroda State, was a representative man of culture. He combined in himself all the qualities of a sound large-minded critic and an erudite scholar of Sanskrit literature and philosophy. If he was competent to take rank with any Indian S'ástree he was no less entitled to the respect of western orientalists. Deep study of Sanskrit literature and philosophy had rendered him alive to the importance of western criticism; for, he was convinced, the treasures of native learning will never appear in their true colour but in the light of that criticism. *He devised numerous plans for inducing native Pandits to approach each his* own subject in the spirit of western oriental scholarship. It was only through his exertions that the large yearly outlay on the encouragement of Sanskrit learning has been brought under some intelligent system at Baroda. He devised the plan of translating rare Sanskrit works of Law, History, Philosophy, Fiction, Art, in the Vernaculars of the country; he remodelled the whole system of giving life annuities for competency in certain departments of Sans-

krit learning But before these and similar plans could be matured, death removed that pioneer of Eastern learning and Western culture, from the field of action

I had had the good fortune, while I was Principal of the Kala Bhavan at Baroda, to enjoy the intimate friendship of this erudite scholar I had also the rare privilege of discussing ways and means with him to realize some of his most cherished dreams I think it a sacred duty towards the deceased, no less than towards the cause of Sanskrit literature and original research he had most at heart, to be able, however imperfectly to thus sow the first seeds of a cause likely to bear much fruitful result

Bombay,
27th October 1896 — T K. GAJJAR

The Sarvadars'an-Sangraha, the first number of the Athalye Sanskrit-Gujrati Series, is a short History of Indian Philosophy by the well-known scholar and philosopher of the fourteenth century, Madhavâchârya, popularly known as Sâyana, minister of the King of Vijayanagar. He has written commentaries on all the four Vedas, and on several of the subsidiary works necessary for a complete study of the Veda. His literary activity does not embrace only spiritual and philosophic literature, for, he is reported to be the author of several other works, chief among them a standard work on the Diagnosis of disease.

In afterlife he turned a Sannyasin and as one in charge of the soul of man he devoted his energies to a brief history of the principal doctrines of the well-known philosophic schools of his time. His work deals with fifteen different philosophies and the arrangement admirably leads the reader from one school to another in the logical order of mental and philosophic development. He opens with Materialism and ends with Idealism—the sixteenth philosophy to which, for its bulk and comprehensiveness, the author has devoted a separate work viz. the Panchadas'i. The passage from Materialism to Idealism, through all the varied

phases of Nihilism, Theism, Logic, Analytic, Grammer, Spiritual communion and the like is indeed interesting and instructive. With clear *demonstration of the true*, basis *of belief* is bound up the highest moral and spiritual welfare of man and an epitome like the, present would be useful for more than mere curiosity. And what most conduces to the merit of his labours is the unbiased impartiality with which Madhavá an Idealist, has condensed within a short space, the opinions of his rivals. The book has been rendered into English by Gough and Cowell and is published as a number of Trubner's Oriental series.

It is impossible in the brief space of an introduction to give any satisfactory abstract of a work which is already an abstract of several larger works. I have had opportunities to look into the present translation now and then and test its correctness. I think the Gujarati reader will derive much benefit from a careful perusal of the following translation.

Nadiad,
21*st October* 1896.

M. N. DVIVEDI.

THE ATHLYE SANSKRIT-GUJRATI SERIES. NO. 1.

The Sarva-Darsana-Sangraha

OF

Madhavacharya.

TRANSLATED

BY

MANISHANKAR HARGOVIND BHATTA, B. A.

'Poorna-Chandrodaya Press.'

BARODA.

1896.

Price Rupees 5.

श्री आठल्येसंस्कृतगुजराती भाषान्तरमाला.

प्रकाशक

त्रिभुवनदास कल्याणदास गज्जर,

एम. ए., बी. एससी.

साहाय्यकृत

मणिलाल नभुभाई द्विवेदी, बी. ए.

श्री आठल्येसंस्कृतगुजराती भाषान्तरमाला.

प्रथमांक.

श्रीमाधवाचार्यप्रणीत

सर्वदर्शनसंग्रह.

तेनुं

गुजराती भाषांतर उपोद्घात अने विवरण सहित

कर्ता

मणिशंकर हरगोविंद भट्ट, बी. ए.

वडोदरा 'पूर्णचंद्रोदय' मुद्रालयमां मुद्रित.

सन १८९६.

अनुक्रमणिका.

ॐ श्रीं.

मंगलं मंगलात्मानं मंगलायतनं शिवम् ।
मंगलाशक्तिसंयुक्तं नृसिंहं सद्गुरुं नुमे ॥ १ ॥

उपोद्घात.

वर्तमान काल विचारकाल कहेवाय छे. पोतानी मेळे पोताने माटे निश्चय करवो, परंपरागत सिद्धान्तना याथातथ्यनुं बनते प्रयासे शास्त्रीय अने तात्त्विक रीतिए परीक्षण करवुं, अने न्यायसिद्ध प्रमाणोनी कसोटीए कसायली वार्ता मात्र स्वीकारवी ए वर्तमान बुद्धिनुं विशेष लक्षण छे. सामाजिक, राजकीय, नैतिक, के धर्मविषयक बंधारण माननीय छे के नहि तेनो, स्वतंत्र विचारथी निश्चय कर्याविगर स्वीकार करवो ए मनुष्यनी विचारशक्तिने अपमान आप्या बरोबर गणाय छे. टुंकामा कहीए तो वर्तमान शिष्टवर्गने जे कंई अभिमाननीय छे ते विचारस्वातंत्र्य छे. एटलुज नहि पण विचारस्वातंत्र्यना सेवकोनी तेना प्रति एटली बधी तो पूज्यबुद्धि छे के तेने माटे तेओ पोतानुं सर्वस्व समर्पण करता पण अचकाता नथी. समाज निंदा करो, राजकीय सत्ता शिक्षा करो, के उभय संस्था अनेक प्रकारनां दुःख आपो, तो पण, जे सामाजिक, राजकीय, नैतिक, के धर्मविषयक बंधारण विचारस्वातंत्र्यना समर्थने प्रतिकूल होय तेनो विनाश करवाने धर्मयुद्ध करवामां विचारस्वातंत्र्यना भक्तो पोतानुं धीरत्व माने छे. मनुष्यबुद्धिना निरंतर बदलाता स्वरूपनुं सूक्ष्मताथी अवलोकन करनारने आ वात अज्ञात नथी; अने तात्त्विक रीतिए कार्यकारणसंबंध शोधनारने आ आविर्भाव सकारण समजवो अशक्य नथी.

विचारस्वातंत्र्यना वर्तमान स्वरूपनो आविर्भाव युरोपमां आ चालता शतकना आरंभमां थयो छे, जो के तेने माटेनां कारणोनो व्यापार बे चार शतकथी चालतो आव्यो छे. शित देशोमां जीवनप्रवृत्ति चलाववानां साधनो घणां जोईए छीए तेमज ते कष्टसाध्य होय छे. मनुष्य वर्गनी जेम जेम संख्यामां वृद्धि थती जाय छे तेम तेम आ साधनो वधारे ने वधारे कष्ट साध्य थतां जाय छे. आथी आवा प्रसंगोमां मनुष्यनुं मन घणे भागे निर्वाहक साधनो प्राप्त करवामां अने जे कंई लभ्य होय तेमांथी तेमने घडी काढवामां व्यापृत रहे छे. प्रयत्न अने प्रयोगनो उपयोग आ कार्यने माटे वधतो जवाथी मनुष्यनी वृत्तिमां चांचल्य वधतुं जाय छे. सुख सर्वने अभीष्ट होवाथी, वृत्तिचांचल्य सुखनुं विरोधी होवाथी, वृत्तिना क्षोभनी शांतिमां सुखनी प्रतीति थती होवाथी, अने नूतनतानी प्राप्तिमां वृत्तिने एक प्रकारनो संतोष मळतो होवाथी नूतनतानी प्राप्ति अने कृति ए उत्तरस्थितिनां मनुष्योनी प्रवृत्तिनो मुख्य विषय थाय छे. बीजा शब्दोमां कहीए तो नैसर्गिक सृष्टिमांथी नवा नवा पदार्थ शोधी काढवा अने तेमनी भिन्न भिन्न रचना व्यवस्था के योग करीने तेमने अपूर्व रूपमा लाववा ए उत्तरस्थितिनां मनुष्योनुं कर्तव्य थाय छे. जेम जेम नूतनताना आनंदनुं ग्रहण करवामां वृत्ति तीक्ष्ण थती जाय छे तेम तेम नूतनता आपवानी कळामां पण ते अधिकाधिक परिचित अने प्रवीण थती जाय छे; अने जे पदार्थोने नूतनता आपवानी होय छे तेओनुं एक बीजाथी संपूर्ण भिन्न तत्त्वोमां पृथक्करण करवा रूप, अने पृथक्कृत तत्त्वोनो धारेलो हेतु पार पडे एवा प्रकारनो योग करवा रूप, शास्त्र अने कळानो उत्कर्ष ए आ प्रवीणतानुं फळ छे. पुरातन उपर प्रीति ए आ प्रकारनी वृत्तिने विरोधी होवाथी ते घटवा मांडे छे. आ प्रमाणे नूतनतामां राग अने पुरातनमां अप्रीति ए बे तत्त्वोनो

प्रसंगवशात् मनुष्यवृत्तिमां दृढीभाव थाय छे. आवे वखते बंधुकना दारु जेवा पदार्थनो शोध थवाथी ज्यारे शौर्य, वीरत्व अने तेओना आधारभूत मनायलां जात्याभिमान अने कुलाभिमान, ए प्रायशः निरर्थक जेवां थई पडे छे, त्यारे पुरातन संस्था उपर रहेलो भाग्यो तूटयो भाव पण भग्न थई जाय छे. मुद्रणकलाना शोधथी साक्षर वर्ग विशाळ थाय छे त्यारे अन्यना निश्चयो अने वचनो उपर श्रद्धा राखवानुं प्रयोजन रहेतुं नथी, अने धर्मशिक्षकोना परस्परना कलह अने विवादनुं परिणाम ए थाय छे के परंपरागत धर्मसंस्था पण परीक्षाने पात्र मनाय छे. जुदा जुदा देशो साथेना व्यापार वधवाथी निर्वाह अने सुखनां साधन ओछां कष्टसाध्य थतां अने प्रजाओमां शांति प्रवर्ततां मनुष्यवृत्तिना चांचल्यनो केटलोक भाग मानसिक अने हृदयविषयक आनंदनां साधनो शोधवा तरफ खेंचाय छे अने तत्त्वशोधनविद्या अने साहित्य नवा रूपमां प्रकाशी निकळे छे. आ प्रमाणे थवाथी अनुकरण करवानी वृत्ति निरुपयोगी थतां विनष्ट थाय छे, अने नवो मार्ग शोधवामां स्वातंत्र्यनी आवश्यकता होवाथी तेनो उदय थाय छे. आ सर्वनुं समुचित परिणाम ए थाय छे के विचारस्वातंत्र्यनी सत्ता अने प्रताप सर्वत्र सुज्ञात अने संमाननीय थाय छे.

हवे कोई शंका करशे के विचारस्वातंत्र्यना आविर्भावनां कारणो मात्र उपर कह्यां तेज होई शके के अन्य पण होई शके? म्हारुं कहेवानुं तात्पर्य एवुं नथी के मात्र उपरना प्रसंगो आवी मळे तोज विचारस्वातंत्र्यनो उदय थाय. विचारस्वातंत्र्यना वर्तमान स्वरूपना उदयने माटेनां कारणोमांनां मात्र केटलांक में उपर जणाववानो प्रयत्न कर्यो छे. भारतभूमिमां पण एक वखत विचारस्वातंत्र्यनी सत्ता प्रवर्तती हती एम मान्या वगर चालतुं नथी, अन्यथा बौद्ध, जैन, सांख्य, योग इत्यादि दर्शनोनो उदय जसंभवतो नथी. अहीं कंई उपर कह्यां तेज सर्व कारणो

आवी मळ्यां हतां एम धारवुं निरर्थक छे. महारुं कहेवानुं तात्पर्य मात्र एटलुंज छे के शारीरिक, मानसिक, के हृदयविषयक सुखना साधनोनी जेम जेम आवश्यकता वधती जाय छे तेम तेम विचारस्वातंत्र्यनो उदय पण अवश्य थतो जाय छे, अने आ प्रमाणे होवाथीज विचारस्वातंत्र्य आटला बधा माननुं अने आटली बधी पूज्यबुद्धिनु पात्र छे.

उपर कह्युं के भारतभूमिमां पण एक वखत विचारस्वातंत्र्यनी सत्ता मनाती हती, पण कालक्रममा आवी मळेलो विरोधी, बलोना कार्यनी झेरी असरथी ते नष्टप्राय थई गयुं. आपणी एवी दशा थई के आपणे आपणी राजकीय स्वतंत्रता खोई बेठा, परदेशीओ अने परधर्मीओने शरण थया, आत्मसंरक्षणने माटे स्त्रीओनी पेठे पारका उपर आधार राखवा लाग्या, घरधंधाना क्षुद्र मोहमां वृत्तिनो सर्व व्यापार शमावी दीधो, अने पेट भरातां पाटण भरायु मानवा लाग्या. आवे वखते आपणे कहीए के हमारामा विचारस्वातंत्र्य छे तो ते खरेखर मिथ्याभिमान सीवाय अन्य कंईज नथी. दिवसे दिवसे आपणामां विचारस्वातंत्र्यनो उदय थतो जाय छे ते दयाळु ब्रिटिशसत्तानो प्रताप छे. आपणे शांतिमा आव्या; आपणां मन अने वृत्तिओ खीले एवां विद्यादि साधन आपणने प्राप्त थयां; आपणा पूर्वजोना अगाध श्रमनां फल—आपणा शास्त्रो—जेने उधेई खाई जती हती तेनो उद्धार करवाने आपणे समर्थ थया; अने थोडा वखत उपर आपणे आपणाज घरमां नाशी आवेला परदेशी चोरनी पेठे गुपचुप फरता हता ते हवे जाणे पोतानाज घरमां स्वतन्त्रताथी फरता होईए एवो अनुभव करवा लाग्या ए सर्वमां प्रताप ब्रिटिश सत्तानो छे.

हवे आपणे पाछा प्रस्तुत विषय उपर आवीए. आपणे जोयु के विचारस्वातंत्र्यनो उदय उन्नति साथे छे; एटलुंज नहि

पण उन्नतिनो आधार पण विचारस्वातंत्र्य उपरज छे. विचार-स्वातंत्र्यनो अर्थ एवो नथी के जेना तेना संबंधमां शंका करवी अने कोईनो पण स्वीकार न करवो. चालती आवती प्रत्येक संस्थाना संबंधमां शास्त्रीय अने तात्त्विक रीतिए अवलोकन करवां, शंकाओ पण करवी, अने हंसवृत्तिथी क्षीरनुं ग्रहण करवुं. मात्र उदयनाचार्यनो नियम ध्यानमां राखीए के 'प्रवृत्तिना व्याघातना अवधि सुधी आशंका करवी' तो न्यायपूर्वक स्वतंत्र विचार करवाथी कदापि पण हानि थवानो संभव नथी; सामु आवा प्रकारनी चर्चाओ अने विवादोथी तो प्रत्येक संस्थानी उन्नतिज थवानो संभव छे. वादनुं फलज तत्त्वनिर्णय छे अने 'वादे वादे जायते तत्त्वबोधः' एम विद्वज्जनो कही गया छे.

पण शुं त्यारे मनोवाणीथी अगोचर एवा ईश्वर अने धर्मना संबंधमां पण स्वतंत्र विचार करवा? प्राथमिक दृष्टिथी जोतां तो आम बनवुं अशक्य लागे छे, परंतु जो तेमज होय, जो ईश्वर अने परलोकना संबंधमां ज्ञान आपनार धर्म केवल अंध श्रद्धाथी मानवामां आवे, अने तेमां स्वतंत्र विचार अने वादविवादने निरवकाश मानवामां आवे, तो वादथी तत्त्वबोध थाय एम जे शिष्ट जनोनां वाक्य छे ते निरर्थक थाय, अने वेदान्तमे आदि लई सर्वदर्शनना प्रवर्तकोना श्रम केवल जलताडनवत् गणाय. ए तो खरुं छे के विचारनो विषय प्राकृत-पदार्थो मात्र होई शके, अप्राकृत न होई शके. ईश्वर अप्राकृत छे अने तेना संबंधमां पदार्थविज्ञान के रसायनशास्त्रनी पेठे प्रयोगसिद्ध ज्ञान मेळववुं अशक्य छे. परिमित अने सापेक्ष बुद्धिथी अपरिमित अने निरपेक्ष ईश्वरनुं स्वरूप समजायज नहि, अने धर्म मात्र श्रद्धानोज विषय मानवो पडे. आ वात खरी छे, पदार्थविज्ञान अने रसायनशास्त्रमां जे पद्धतिथी तत्त्वनिर्णय करवामां आवे छे ते पद्धति धर्मतत्त्वनो निर्णय करवामां चालेज

नहि एम तो मानवुं पडे छे; पण तेथी कंई एम न कहेवाय के मनुष्यज्ञान केवळ परिमित छे अने ते प्राकृतपदार्थोनी सीमाना बहारना विषयनुं ग्रहण करवाने केवळ असमर्थ छे. नेत्रादिथी जेनुं ग्रहण नथी थतुं ते मनुष्यज्ञानने गम्य नथी, अने दिक्कालादिथी अवच्छिन्न वस्तुओनी सीमानुं अतिक्रमण करवाने विचार असमर्थ छे एम जो कहेवामां आवे अने मानवामां आवे तो तत्त्वनिर्णयने माटेनो श्रम करनारा मूर्ख गणाय, एटलुंज नहि पण तत्त्वनिर्णय शशशृंगवत् थई जाय. ए तो खरुं के सहस्त्रावधि विचारकोनो श्रम आ स्थले निरर्थक गयो छे, प्रत्येक देशनां अने प्रत्येक प्रजाना महाबुद्धिमान् गनातां मनुष्योनां मन आ फळ लेवाने दोड्यां छे अने श्रान्त थई पाछां पड्यां छे, तो पण तेथी एम न कहेवाय के कोईने पण तत्त्वप्राप्ति थईज नथी. महापुरुषोनां मन आ विषय प्रति आकर्षयां छे एटला उपरथीज तेनुं महत्त्व सिद्ध थाय छे, अने फलप्राप्ति अधिक कठिन होवाथी तेने माटे अधिक श्रमनी अपेक्षा छे एम निश्चय थाय छे.

धर्मविचार अने धर्माचारमां श्रद्धा आवश्यक छे ए वात तो खरीज छे पण तेनुं (श्रद्धानुं) स्वरूप समजवुं कठिन छे. उपदेशक कहेशे के सोयना नाकामांथी सात हाथी निकळी गया अने छेल्लानुं पुंछडुं माहे भराई रह्युं तो पण श्रवण करनाराओए हाजी हा कहेवुं अने ग्रावाणस्तरन्ति (पत्थर तरे छे) जेवा वाक्योने (जुओ पृ. १४४ अने विवरण) अक्षरशः सत्य मानवा एनुं नाम जो श्रद्धा कहीए तो मनुष्यनी विचारशक्ति अने दृष्टने आधारे अदृष्टनु ज्ञान- करावनारी प्रमातृशक्ति ए बनेने महोटु अपमान आप्युं गणाय. ए तो निर्विवाद छे के विचारनुं फल पण श्रद्धाज छे. प्राकृत विषयोमां पण विचारथी निश्चय कर्या पछी प्रवृत्ति तो श्रद्धाने आधारेज करवामा आवे छे. पोतानो—अथवा पोताने विचार-

सिद्द जणातो परनो निश्चय एकवार प्राप्त थयो एटले पछी विचारनुं प्रयोजन रहेतुं नथी. आ प्रमाणे जोतां श्रद्धा ज्यारे विचारनुं फल छे त्यारे फलनेज न वळगी रहेतां शास्त्रादिनुं अवलंबन शा माटे करवुं जोईए ? आ कहेवुं यथार्थ छे. केटलाक ईश्वरना लाडीला एवा पण छे के जेओनी अंतर्वृत्ति विषयथी उपरक्त थई गई नथी, आवा पुरुषोने प्रयास वगर पण मनुष्यमात्रना अंतरमां साक्षात्प्रतीत थई शके एवुं अपरिमिम अनंत निरपेक्ष अनवच्छिन्न अने शुद्ध ज्ञानस्वरूप समजाय छे—अनुभवाय छे. आथीज नैषा तर्केण मतिरापनेया इत्यादि श्रुतिवाक्योमां श्रद्धानुं शुष्क तर्कनी अपेक्षाए प्राधान्य गणेलुं छे, आथीज गुरु अने ईश्वरना प्रसादनी प्राप्ति आवश्यक मनाय छे, अने आथीज नमस्कारादि स्तुत्यात्मक उपासनाथी इष्टप्रति आभारवृत्ति जणाववी सप्रयोजन ठरे छे. आवां मनुष्यो प्रति सर्व देशमां अने सर्व काळमां जनसमूहनो आदर, मान, बुद्धि अने भाव, आकर्षायो छे. पण आथीज सिद्ध थाय छे के आवां मनुष्य घणांज थोडां होय छे; अने धर्माचार अने धर्म विचारनी आवश्यकता सर्व मनुष्यने छे एम मानीए तो जे मात्र केटलीक व्यक्तिओमां होय तेने धर्मतत्त्वज्ञाननुं साधन मानवुं ए एक पक्षथी जोतां यथार्थ लागतुं नथी. वळी श्रद्धा अने व्हेम जो के वस्तुतः भिन्न छे तो पण तेओनां रूपनुं साम्य एटलुं बधुं छे के श्रद्धालु पोताने प्रसंगवशात् व्हेमी माने अने व्हेमी पोताने श्रद्धालु मानी बेसे. कालवल जोतां पण मात्र श्रद्धाथी धर्मतत्त्वनो निश्चय थाय छे ए सिद्धान्तने धर्माचार्यो वळगी रहे अने विचारसिद्ध उपायोथी जेओने विचार करवानो परिचय छे तेओने धर्मतत्त्वनुं स्वरूप समजाववानो प्रयत्न मिथ्या मानी तेनो त्याग करे तो तेमनी आवश्यकता पण ओछी जणाय, एटलुंज नहि पण तेमनुं अस्तित्व पण निष्प्रयोजन मनाय. एम पण अनुभव थाय छे

के विचारथी सिद्ध थयली वस्तुमां जे श्रद्धा रहे छे ते दृढ होय छे अने खरुं जोतां श्रद्धा तो तेनेज कहेवी जोईए छीए. ए तो खरुं के सर्व मनुष्यो पोताने माटे विचारथी निश्चय करवाने असमर्थ छे अने खरुं जोतां तो प्रत्येक मनुष्यने पोताना निश्चयनी यथार्थता अन्यथी परीक्षित कराववानी रहे छे, तो पण प्रत्येक मनुष्यनी स्थिति, वृत्ति, स्वभाव, आदिनुं अवलोकन करी मनुष्यमात्रने अभीष्ट एवा धर्मना तत्त्वनुं ज्ञान आपवानां प्रतिव्यक्तिए अनुकूळ भिन्नभिन्न साधनोनी योजना करनार आचार्योनो स्वीकार करतां उक्त शंका अवतरती नथी. आवा आचार्यो-महापुरुषो-परमात्माओ-विरल होय छे अने तेनी खोळ-करी तेमने शरण रहेवुं ए प्रत्येक सविचार मनुष्यनुं कर्तव्य छे.

परिमित ईश्वर परिमित मनाता मनुष्यज्ञाननो विषय थवाने शक्य छे एटलुज नहि, पण मनुष्यज्ञान अपरिमित अक्षयी अभिन्न छे, अने भेदबुद्धि जवी शक्य छे एटलुज नहि, पण ते जवी ए मनुष्यने अभीष्ट छे एम जणाववु ते धर्मनी आवश्यकता जणावी कहेवाय. दु:खनो अत्यन्तोच्छेद अने परमानंदप्राप्ति ए मनुष्यने अभीष्ट अने आवश्यक छे एम मानीए, अने धर्मतत्त्वनु अंत्यतम परिणाम—तेनुं केवळ स्वरूप ते उक्त उच्छेद अने प्राप्ति छे एम लईए, तो धर्म आवश्यक छे एम सिद्ध कर्यु कहेवाय. नीतिनो मार्ग सुखने माटे अभीष्ट होवाथी ते जेम आवश्यक गणाय छे तेम अपरिमित अने केवलनि प्राप्तिमा जीवनी सर्व प्रकारनी इच्छाओ पर्यवसान पामे छे एम दर्शाववु ते धर्मनी आवश्यकता सिद्ध करी कहेवाय.

पण जीवात्मानो स्वीकार करवामा आवे तोज तेनो परमात्मासाथे योग सभवे अने त्यारेज धर्मनी आवश्यकता मानवामा आवे. पूर्वकालमा चार्वाकजेवाना अने वर्त्तमानमा जडवादीओना सिद्धान्त एवा छे के जडपरमाणुना एक प्रकारना योगथी जीवात्मा उत्पन्न थाय छे. आ प्रमाणे जोता जडनु परिणाम जीवात्मा छे अने तेथी तेनो ईश्वरसाथे योग सभवतोज नथी वळी ईश्वरनु अस्तित्व मानवाने पण कारणो नथी माटे ज्यासुधी विचारथी एम सिद्ध करवामा न आवे के जीवात्मा जडनु परिणाम नथी अने ज्यासुधी शास्त्रीय अने तात्त्विक रीत्या ईश्वरनु अस्तित्व सिद्ध करवामां न आवे त्यासुधी धर्मना सबधमा जेटलु कहेवु तेटलु मिथ्या छे. आटलामाटे आ स्थळे जडवादीओना सिद्धान्तोनु परीक्षण करवानो अने ईश्वरनु अस्तित्व सिद्ध करवानो प्रयत्न करवो उचित धारवामां आवे छे.

जडवादीओ एम माने छे के बुद्धिशक्ति जेवु कईज छे नहि, अथवा छे तो ते जडपरमाणुओनो व्यापारविशेष छे.

उष्मा, प्रकाश, विद्युत्, चुंबकत्व इत्यादि भिन्न भिन्न शक्तिओ जेम एकज शक्तिनुं परिणाम छे तेमज बुद्धिशक्ति पण तेज शक्तिनुं परिणाम छे. उष्मा अने प्रकाश जेम अणुओनी एक प्रकारनी गति छे तेम बुद्धिशक्ति पण छे. आ प्रमाणे ज्यारे जडशास्त्रोना नयथी जडथी भिन्न जणातां उष्मादिनो सोपपत्तिक खुलासो थई शके छे तो आगळ जतां बुद्धिशक्तिनो पण सोपपत्तिक खुलासो जड शास्त्रोनाज नयथी थई शकशे. वळनां अनेक रूपान्तर थाय छे ए सिद्धान्तने आधारे मनुष्यमां जे ज्ञान मेळववानी अने ज्ञानने संग्रही राखवानी बुद्धिशक्तिजेवुं कंइक जोवामां आवे छे ते पण वळनुं रूपांतर छे एम सिद्ध थवुं शक्य धारवामां आवे छे. यांत्रिक वळनुं रसायनिक बळमां रूपान्तर थतुं जोवामां आवे छे तेज प्रमाणे यांत्रिकवळनुं अथवा रासायनिक बळनुं चेतनमां रूपान्तर थाय छे एम मानवामां अने इंद्रियबोध, इच्छा, तुलना करवानी शक्ति, कल्पनाशक्ति, विचारशक्ति ए सर्व जीवात्माना धर्मो पण चेतनना रूपान्तर छे एम मानवामां कंइ अडचण नथी.

आ प्रमाणे जडवादीओनो सिद्धान्त एवो छे के शक्तिनुं मूळ जडमां छे. पण आ प्रमाणे मानवामांज तेओ बुद्धिशक्तिनो स्वीकार करी ले छे, एटलुंज नहि पण तेनो स्वीकार कर्यावगर तेमने चालतुं नथी. बुद्धिशक्ति जडमांथी उत्पन्न थई छे एम सिद्ध करवामां अने समजवामां बुद्धिनो व्यापार आवश्यक छे एम तो मानवुंज पडे छे, अने तेथी प्रथमज तेनुं ग्रहण करी पछी ते जडमांथी उत्पन्न थई छे एम कहेवुं ते माथुं नीचे अने पग उंचे राखी उभा रहेवानो प्रयत्न करवा बरोबर छे. बाह्य पदार्थो—जड-परमाणुओ—नो विचार तेमने केवळ बाह्य लईने थई शकतोज नथी, अने तेथी बुद्धिशक्ति जडमांथी प्रादुर्भूत थई एम बुद्धिशक्ति वगर अन्य कोई जोवाने समर्थ नथी. ए तो निर्विवाद सिद्ध छे के गमे तो जड परमाणुओनुं अस्तित्व होय तो पण तेमनुं अ-

स्तित्व आपणने जणाय छे—ते आपणा विचारनो विषय थाय छे—ते बुद्धिशक्तिवगर थवु अशक्य छे. जो बुद्धिशक्ति जड परमाणुओमाथी प्रादुर्भूत छे ए सिद्धान्त सिद्ध करवो होय तो बुद्धिशक्ति उपर आधार न राखता तेने सिद्ध करवो जोईए; पण आम थवु अशक्य छे. बाह्य विश्वने सत्य अने ज्ञानथी व्यतिरिक्त मानवु ए मनुष्यना सहज अज्ञाननु एक परिणाम छे. आ अज्ञान ओछु थवु अने अत्ये निर्मूल थवु शक्य छे एम जगत्नो अनुभव आपणने जणावे छे. असस्कृतमति मनुष्यना विचारमां आवतुज नथी के आ पदार्थोनी मने "प्रतीति थाय छे", ते तो एमज समजे छे के आ पदार्थो "छे". जेओनी मति थोडी घणी सस्कृत थई होय छे ते एम जाणे छे के जेने आपणे बाह्य पदार्थो कहीए छीए ते द्रष्टानी वेदनशक्तिनी अपेक्षाएज अस्तित्वमा छे आवा मनुष्य पण बाह्य पदार्थने ते जेवा रूपमा प्रतीत थाय तेवा रूपमांज माने छे, अने तेमना परस्परना सबधादिनो विचार करवाने तेमना ध्यानपूर्वक अवलोकनने आवश्यक माने छे. आथी वधारे सस्कार पामेली मतिवाळा मनुष्यो एम अनुभवे छे के बाह्य पदार्थोमा जे रूप, रग, विस्तार, आदि जोवामा आवे छे ते ते वस्तुओना धर्म नथी, पण आपणे तेओना उपर ते ते धर्मनु आरोपण कर्यु छे. एकनो एकज पदार्थ एकने रागनो अने बीजाने द्वेषनो हेतु जोवामा आवे छे त्यारे सविचार मनुष्य एम माने छे के पदार्थना अतर्गत धर्मने लीधे पदार्थोनी अमुक विशिष्ट प्रकारनी प्रतीति थती नथी, पण ते विशिष्ट प्रकार गमे ते कारणोथी आरोपित छे. आवा मनुष्यने पण आ आरोप शाथी छे ते समजाता नथी पण ते छे एम ते माने छे आ प्रमाणे जोता एवु पण मनुष्य होई शके के जेने विश्वमान पोताथी अव्यतिरिक्त छे एवो अनुभव थयो होय पण आ सबधमा वधारे बोलवानु प्रयोजन आ स्थले नथी ।

उपर आपणे जोयुं के बाह्य पदार्थोनुं अस्तित्व समजवाने माटे बुद्धिशक्तिनो स्वीकार करवो पडे छे; आटलुंज नहि पण जडवादीओ बाह्य पदार्थोना उत्पत्त्यादि क्रमने माने छे अने तेम करतां पण बुद्धि जेने तेओ जडमांथी उत्पन्न थई एम कहे छे तेनो स्वीकार प्रथमथीज करी ले छे. अमुक अमुक प्राकृतिक कारणो उपर प्राकृतिक बलनो व्यापार थवाथी अमुक अमुक प्राकृतिक कार्य उत्पन्न थाय छे ए समजवुं अर्थात् बलना स्वरूपनुं अने तेना व्यापारनुं ज्ञान होवुं ए बुद्धिनोज विलास छे, अने आ प्रमाणे जोतां बुद्धिशक्ति बलनुं रूपान्तर छे एम मानवा करतां बलनुं अस्तित्व बुद्धिशक्तिने माटे अने बुद्धिशक्तिद्वारा छे एम मानवुं वधारे न्यायपूर्वक छे. वळी नैसर्गिक सृष्टिनां सर्व कार्योमां सनियमता अने एकरूपता जेवुं कंई छे एम मान्याबगर जडवादीओने पण चालतुं नथी. हवे बाह्य पदार्थोनी इंद्रियद्वारा प्रतीतिओ थाय छे एमज मानीए अने बुद्धिशक्ति न मानीए तो आ एकरूपता अनुपपन्न थई पडे छे. जुदा जुदां ज्ञान अथवा प्रतीतिओना संतानने एक बीजासाथे संबद्ध रूपमां समजवा माटे ते सर्वनी नोंध लेनारते सर्वनो संबंध समजनार--कोई संतानी मानवोज पडे छे. (जुओ पृ.३२) परिणाम अथवा विकारनो विचार कोई पण नित्यवस्तुना संबंधमांज थई शके छे. आ प्रमाणे जोतां बुद्धिशक्ति, जे प्रतीतिओ अथवा अनुभव नथी पण तेओनो संबंध जोनार छे, ते जडपरमाणुओना व्यापारविशेषथी परिणत नथी, पण उक्त व्यापार समजवा माटे आपणे तेनो स्वीकार प्रथमथीज करी लेवो पडे छे. हवे कोई वस्तुनुं अस्तित्व छे एम जो ते बुद्धिशक्तिना व्यापारनो विषय होय तोज कही शकाय छे, अने तेथी नैसर्गिक बलनुं अस्तित्वज बुद्धिशक्तिने अधीन मानवुं पडे छे. वळी जडथी मांडीने ते चैतन्य अने स्वयंवेदन सुधीना सर्व बनावोनुं स्वरूप जडवादीओ मात्र यांत्रिक बलना व्यापारने कारणभुत मानीने

समजाववानो प्रयत्न करे छे ए पण निर्दोष नथी. तेओ एम कहे छे के रासायनिक कार्यो अणुओना प्राकृतिक कार्योनु रूपविशेष छे, चैतनकार्यो रासायनिक अने आण्विक कार्योनी स्थितिविशेष छे, अने इंद्रियबोध, वृत्तिओ, इच्छा इत्यादि सर्व जीवात्माना धर्म पण, जीवात्मा पोतेज जडनु रूपविशेष होवाथी, जड यान्त्रिक वळनां भिन्न भिन्न रूपो छे. जो•के आ प्रमाणे सिद्ध थयु नथी तो पण जडवादीओ आशा राखे छे के आगळ जता ते सिद्ध थई शकशे. हवे आपणे जोईए के जडवादीओनो आ सिद्धान्त केटलो सबळ छे. प्रथम तो केवल रासायनिक घटकोना योगथी जीव उत्पन्न थवानु एक पण उदाहरण मळतु नथी. वळी सेन्द्रिय पदार्थोनो अल्पतम घटक 'प्रथमरूप' (प्रोटोप्लॅझम) जेना वडे पोषण, वर्धन, वगेरे क्रियाओ थाय छे ते पण केवल रासायनिक सयोग नथी. जीवत अने मृत 'प्रथमरूप' ना रासायनिक घटको सरखा जोवामा आवे छे तो पण तेओना व्यापार भिन्न भिन्न होय छे, अने आ प्रमाणे जोता पोषण वर्धन अने उत्पादन आदि व्यापारनो आधार तद्दन रासायनिक तत्त्वो उपर नथी पण कोई बीजाज उपर छे. निरिंद्रिय पदार्थो अने सेन्द्रिय पदार्थोना जे स्वरूप आपणने प्रतीत थाय छे तेमा पण एटलो बधो फेर छे के जे कारणो अने नियमोथी निरिंद्रिय पदार्थसबधी बनावो समजावी शकाय तेज कारणो अने नियमोथी सेन्द्रिय पदार्थसबधी बनावो समजाववा अशक्य छे. निरिन्द्रिय पदार्थोमा आपणने एकरूप अखडत्वनो अनुभव थतो नथी. पत्थर अथवा माटीनु ढेफु भागीशु तो तेना बे कडका थशे, अने ते बने कडका अक्केको पत्थर अथवा माटीनु ढेफु रहेशे. आ प्रमाणे भागवाथी आ प्रकारना पदार्थना अखडत्वमां बीजी कई पण हानि न थता मात्र तेना नहाना रूप थशे. सेन्द्रिय पदार्थोमां आथी उलटु जोवामा आवे छे. आवा

पदार्थना बे कडका थता तेमाना प्रत्येकमा अखडत्व रहेतु नथी. एक सेन्द्रिय पदार्थ ते तेना भागोनो समूह नथी, पण तेना भागोना समूह करता कईक वधारे छे; अने जो तेने विभक्त करवामा आवे तो तेना अखंडत्वनो नाश थई जाय छे. हवे विचार करता स्पष्ट जणाशे के निरिंद्रिय अने सेन्द्रिय बने प्रकारना पदार्थोना प्रतीत थता स्वरूपोनो यान्त्रिक बलना व्यापारथी खुलासो करवानो प्रयत्न केवळ निरर्थक छे.

वळी सेन्द्रिय पदार्थो पोतानी मेळे वृद्धि पामता अने स्वरूपमा आवता जोवामा आवे छे. बीजमा सहकारीओ मळतां वृक्षरूप थवानो धर्म रहेलो होय छे तेवो निरिंद्रिय पदार्थोमां रहेलो जोवामा आवतो नथी. मनुष्यकृति जे घर तेना सर्व पत्थर इट इत्यादि पदार्थोमां पोतपोतामा कोई एवो धर्म नथी के अमुकेअमुक कार्यज करवु. मनुष्य तेमनो उपयोग करी तेमने कृत्रिम एकरूपता आपे छे. सेन्द्रिय पदार्थोमा आथी उलटु थाय छे. आ पदार्थोना सत्रधमा तेओने अमुकरूप आपवु एवी योजना कोई बाह्य स्थानमाथी थती नथी. अमुकरूपमा आववु एवी योजना तेमा पोतामांज रहेली छे. यान्त्रिक बनावोमा गत्यादि बल जेने आपणे कारण मानीए छीए ते कार्य (उष्मादि) मां लीन थई जाय छे, रासायनिक सयोगोमा घटकोना पोतपोताना धर्म नवा उत्पन्न थता पदार्थना धर्ममां लीन थई जाय छे; पण सेन्द्रिय पदार्थमा तो कारणनो कार्यमां लय थतो नथी पण ते तेमा (कार्यमा) रहे छे, एटलुज नहि पण ते तेमां पोताने पोताना रूपमां राखी शके छे. आ प्रमाणे रासायनिक अने यांत्रिक कार्योमा कार्य कारणथी भिन्न थाय छे अथवा कारण कार्यथी भिन्न होय छे, पण सेन्द्रिय पदार्थोमां तो कार्य अने कारण एकज होय छे, कारणज कारणने कारण रही कार्यरूप थाय छे—कार्यरूपे जणाय छे. पण आपणे ज्यारे बुद्धिशक्ति अने स्वसंवेदनना

कार्योप्रति दृष्टि करीए छीए त्यारे तो त्या जे वैचित्र्य अने जे गुचवण जोवामा आवे छे ते आपणने छक करी नाखे छे. अहीं जे कार्य थाय छे ते तेना प्राकृतिक पूर्ववर्तीओथी सर्वांशे भिन्न छे. प्राकृतिक पदार्थोनु अस्तित्व तेमने पोताने माटे नथी पण आपणे जे तेना द्रष्टा ज्ञाता छीए तेने माटे छे, ते पदार्थो द्रष्टाने माटे दृश्य छे, पण इच्छा, वृत्तिओ, विचार, स्वयवेदन, इत्यादि तो द्रष्टा अने दृश्य बने छे. निरिन्द्रिय पदार्थोमा परमाणु, द्व्यणुक, सयोग, इत्यादि जोवामा आवे छे, अने तेओना अग (भाग) एक बीजाने निरपेक्ष होय छे, कोई पण प्राणीनु शरीर तेना सर्व अगोनो समूह छे एटलुज नहि पण ते पोताना अगोने पोते जाणे छे एटलो तेमा विशेष छे, अने बुद्धिना स्वरूपनो विचार करता तो आपणने तेमा एक सपूर्ण अखडत्व लागे छे. अहीं एवो कोई पण भाग जोवामा आवतो नथी के बेमानो एक कार्य थई शके अने बीजो कारण थई शके बाह्य बल बुद्धिनु कारण थई शकतु नथी, कारण के बाह्य बलनु अस्तित्वज बुद्धिने अधीन छे, अने ते ' छे ' एवु समजवामाज बुद्धिनो स्वीकार करी लेवो पडे छे तेमज बुद्धिमा पोतामा पण एवो कोई भाग नथी के जे मानो एक कारण थई शके अने अन्य कार्य थई शके. आ प्रमाणे जोता, निरिंद्रिय जड, सेन्द्रिय पदार्थ, अने बुद्धि अथवा स्वयवेदन, ए त्रणे एक बाजाथी सपूर्ण विलक्षण छे जड पदार्थोनी स्थिति बाह्य कारणो उपर आधार राखे छे, खरु जोता तो ते बाह्य (पोताथी व्यतिरिक्त) पदार्थोना समूह मात्र छे, अने अहीं जे कार्यकारणव्यवस्था छे ते सादी अने सरल छे, सेन्द्रिय पदार्थोमा बाह्य अने आतर जेवु छे खरू पण बाह्य आन्तरने अधीन वर्ते छे, अने तेमा कई एवु तत्त्व रह्यु छे के जे पोतेज अमुक रूपमा आववानी पोतानी मेळे प्रथमथीज योजना करी मुके छे बुद्धि अने स्वयवेदन तो आ सर्वथी भिन्न छे बाह्य

पदार्थोनो तेना उपर आधार नथी के तेनो बाह्य पदार्थो उपर आधार नथी. तेमज तेनो अने तेनो तेना अने तेना उपर आधार पण नथी. ते एक, स्वयं, अखंड, तत्त्व छे. हवे आपणे विचार करीए तो जणाशे के जड परमाणुओनी गतिविशेष ते चेतन अने चेतनना ज्ञानादि धर्मनुं कारण अथवा मूळ स्वरूप छे ए कहेवुं केटलुं बधुं सदोष छे. जड पदार्थो अने तेओना संबंध जोनार बुद्धि ते जड पदार्थो अने तेओना संबधनुं परिणाम छे एम कहेवा करता जड पदार्थो अने तेना सबंधोना अस्तित्वनी आपणने जे प्रतीति थाय छे ते बुद्धिनुं तद्रूप परिणाम छे एम कहेवुं केटलु बधुं वधारे न्यायपूर्वक छे?

आ प्रमाणे बुद्धि अथवा ज्ञान जे आत्मानो धर्म अथवा स्वरूप छे ते जडमांथी उत्पन्न थयुं ए कहेवुं न्यायविरुद्ध छे एम जणाव्या पछी आपणने कहेवानु प्रयोजन रहेतुं नथी के आत्मा जेवुं कंई तत्त्व छेज. पदार्थमात्र मूल कोइ सूक्ष्म रूपमाथी आविर्भूत थाय छे एवो सिद्धान्त लईए तो पण ज्यारे ते अमुक रूपमांज आविर्भूत थाय छे एम मानीए त्यारे त्या योजना प्रथमथीज छे एम मानवुं पडे छे. योग्यतम मात्र अवशिष्ट रहे छे ए नियम जोता पण योग्यतम थवानो प्रयत्न करनार कोइ विचारक तत्त्व लेवुं पडे छे, अने आत्मसरक्षणने हेतु लईने योग्यतम थवानो प्रयत्न करातो होवाथी आत्मतत्त्व—अहंता—पोतापणु—स्वीकार्यावगर चालतुं नथी. पोतानी मेळे पोतानुं पोषण स्वयंवर्धन अने उत्पादन करनार 'प्रथमरूप' ने परमाणुओनो योग मानीए तो पण आ योग अमुकरूपनो थवाने माटेज परमाणुओनो सबंध थयो छे अने तेथी तेओमा कई पण एवुं रह्युंज होय छे के अमुक स्थळे जवु अने अमुक कार्य करवुं. आ प्रमाणे बाह्य पदार्थोने केवळ बाह्य लईने विचार करीए तो पण तेमां कोई प्रकारनुं पोतापणुं मानवारूप तत्त्व रहेलुं छे एम

मान्यावगर चालतुं नथी. हवे आ आत्मतत्त्व (हुं पोते एवुं माननार जे कंई एक ते)मां एवुं शुं रह्युं छे के जेथी ते अनंत अने अपरिमित रूपमां जवाने सतत वलण करे छे तेनो विचार करवानो रहे छे.

प्रथम आपणे जड अने चेतन वच्चे जे विलक्षणता बतावी त्या जोयुं के चेतनमां 'हुं पोते' एवो विचार रहेलो छे. पण हुं पोते ए विचार जेम जेम शुद्ध रूपमां आवतो जाय छे तेम तेम हुं ए संज्ञाथी जे जे समजवामां आवे छे तेमां फेर पडतो जाय छे. क्षुद्र प्राणीओमां अहंता तेओनां स्थूल शरीरमांज परिबद्ध थई रही होय छे. हुं ते शरीर अने शरीर ते हुं ए विचार तेओमां एटलो बधो दृढ होय छे के शारीरिक सुख दुःख तेमने घणांज तीक्ष्ण लागे छे. उच्च प्रकारनां प्राणीओमां अहंतानो विषय जरा विस्तीर्ण होय छे. प्रीति, द्वेष इत्यादि वृत्तिओनो तेओमां प्रादुर्भाव थयो होय छे तेथी तेओना संतोषने माटे ते पोताना शरीरने जोखममां नाखता डरतां नथी. सिंहण ज्यारे पोताना बच्चाना रक्षणने माटे पोतानो जीव आपे छे त्यारे तेनी अहंतानो विषय मात्र तेनुं स्थूल शरीर न रहेतां जेने ते पोतानुं गणे छे ते पण थयुं होय छे. मनुष्यमां आ करतां पण अधिक जोवामां आवे छे. दया, स्वदेशाभिमान अने बीजी केटलीक मनुष्यवृत्तिओ आ प्राणीमां एटली बधी स्फुट थई होय छे के तेने लीधे ते पोताना पोतापणाना विषयने, व्यक्तिमात्रपरिमित प्रदेशनुं अतिक्रमण करावी घणोज वधारी दे छे. आ प्रमाणे पोतापणुं जेम वधारे स्फुट थतुं जाय छे तेम तेनो प्रदेश पण वधारे विस्तीर्ण थतो जाय छे. बाह्य पदार्थ अने मनुष्यात्मा बंने परिमित देखाय छे ए वात खरी छे पण उभयनी परिमितता जुदी जुदी होय छे. बाह्य पदार्थोनां स्वरूप आपणने तेना बाह्यगत दिकादिना संबंधे करीने समजाय छे अने तेथी तेमनुं ग्रहण अवच्छिन्न रूपमां थाय छे, परंतु बुद्धिनुं अवच्छेदक बुद्धिथी बाह्य

नथी, बुद्धिज पोतानु ग्रहण करवाने पोते समर्थ छे. प्राथमिक दृष्टिथी जोता मनुष्यज्ञान बाह्य पदार्थो, अनतिक्रम्य बाह्य बळो, अने बाह्य नियमोथी परिवेष्टित जोवामा आवे छे, आटलुज नहि पण 'पोते' ए विचारनी साथेज 'बाह्य' ए विचार सबध करीने रहेलो जणाय छे, अने उभयनी वच्चेग्राह्य ग्राहकता रहेली छे एम आपणे जाणीए छीए, तो पण मनुष्य ज्ञाननो विचार करता तेमा रहेली एक प्रकारनी विशेषता आपणने जणाय छे, अने आ विशेषतानीज मनुष्य ज्ञाननु अवच्छिन्न पदार्थो साथे वैलक्ष्य छे एम आपणे निश्चय करी शकीए छीए. आपणे उपर जोयु छे के वेदन अथवा बुद्धिमा एक एवु तत्त्व रहेलु छे के जेने लावे ते पोताथी बाह्य वस्तुमां पोताने जोवानु सतत वलण धरावे छे जडवादीओनी भाषामा कहीए तो 'अज्ञातने जाणवु' अने चेतनवादिओनी भाषामा कहीए तो 'पोतानी मेळे पोतानो प्रथम पोताथी बाह्यवत् जणाता पदार्थोमा अनुभव करवो' ए बुद्धि अथवा ज्ञाननु स्वरूप छे. मनुष्यस्वभावनु अवलोकन करतां आपणने जणाय छे के ज्ञान मेळववामा अने सारा थवामा निरतर आगळ वधवानी योग्यता अने शक्ति मनुष्य प्राणीमा रहेली छे, अने ते साथे उभयमां पोते गमे तेटलु आगळ वधे तो पण तेनी प्रेरकवृत्ति–तेमां रहेलु कोइ एक प्रेरक बळ–परिसतुष्ट थतु नथी आपणे जाणीए छीए के आपणु ज्ञान परिमित छे तो पण विचार करता आपणा ज्ञाननी सीमा आपणने जणाती नथी आपणने स्पष्ट समजातु नथी के अमुक हदथी आपणु ज्ञान आगळ वधवानुज नथी. आपणे जाणीए छीए के आपणे क्रोधमोहादिने एटलाबधा वश्य छीए के आपणाथी सपूर्ण नीतिवाळा थई शकातु नथी तो पण ते साथे आपणने आपणा दोषनु ज्ञान होय छे अने तेथी आपणाथी कही शकातु नथी के आपणाथी आटले सुधीज नीतिमां आगळ वधाशे. आ प्र

माणे जणाय छे के मनुष्यमां आगळ वधवानी निर्बाधित अने नि.सीम योग्यता अने शक्ति रहेली छे; वळी ते साथे तेनामा उच्चतानो विचार एटलो बधो उत्कृष्ट छे के जेटलुं जेटलुं आगळ वधायुं तेटलुं तेटलुं तेने ओछुं पडे छे; आ युग्मवृत्तिओनुं पर्यवसान मात्र संपूर्ण निर्दोषत्व, केवलशुद्धत्व, सर्वज्ञत्व अने सर्व शक्तिमत्त्वमां थाय छे. ज्यारे कंइज प्राप्तव्य कर्तव्य रहेतुं नथी त्यारेज आ मनुष्यवृत्तिओनुं चांचल्य शांत थाय छे; अने ज्यारे निर्विशेष आनंदनी प्राप्ति थाय छे त्यारेज तेने कर्तव्यप्राप्तव्य रहेतुं नथी अने त्यारेज शांतिः शांतिः शांतिः प्रवर्ते छे. आ प्रमाणे जोतां मनुष्यमां मूळबीज 'हुं पोते' ए विचारनी साथेज सर्वज्ञत्व अने सर्वशक्तिमत्त्वना विचार रहेला छे, अने 'आ (ज्ञेय)' अने 'हुं (ज्ञाता)' ना पोतपोताना प्रदेशोनी सीमाओ अनुक्रमे घटतां अने वधतां पहेलुं अंशतः पण रहेतुं नथी अने बीजुं **केवल एक अद्वैत** रहे छे. 'हु (ज्ञाता)' ए ज्यारे 'आ (ज्ञेय)' नी अपेक्षा ए छे त्यारे एक जतुं रहेता उभयनो लय उभयनुं परिणाम (जो आपणे परिणाम शब्द वापरीए तो) जे **ज्ञान** तेमा थई जाय छे, अने आज वखते परमतत्त्ववित् पुरोपोना उद्गार थाय छे के "हुं नहि, तु नहि, ते नहि, ...तोय छे.—' प्रत्यभिज्ञानवादीओ जीवने ईश्वरनु ज्ञान अनादियी छे एम स्वीकारे छे ए जोता आ विचार वधारे स्पष्ट थशे. (जुओ प्रत्यभिज्ञादर्शन).

आपणे उपर जोयुं के आपणे अपूर्ण छीए एवु आपणने भान छे; पण आ भान जो आपणामा संपूर्णनो विचार न होय तो थवुं अशक्य छे. कोई एम पण कही शके के आपणे अपूर्ण छीए एम आपणा करता ओछा अपूर्णनी अपेक्षाए आपणे कही शकीए छीए अने तेथी संपूर्णनो विचार आपणामा छे एम लेवानुं प्रयोजन नथी. आ प्रमाणे कहेनारने एटलुज कहेवाय के

आपणी अपूर्णता प्रथम करतां ओछी थई तोपण आ बीजी स्थिति पण अपूर्ण छे एम आपणने भान थाय छे अने ए प्रमाणे अंत्यसुधी थयाज करे छे. हवे जो कोई एक नित्य संपूर्णनो विचार आपणामां न होय तो आ प्रमाणे आपणा आगळ वधवाना प्रत्येक क्रममां आपणने अपूर्णतानुं भान थया करे छे ते थाय नहि. जे मानदंडथी आपणने जे जे प्राप्त थाय तेनुं मान करीए छीए अने ते सर्व अपूर्ण लागे छे ते मान दंडनो विचार आपणने प्रथमथीज होवो जोईए. वळी कोई वस्तु छे एम आपणाथी ते वस्तुना ज्ञानथी कही शकाय छे. आपणने कोई वस्तु जणाय ते पूर्वे तेनुं अस्तित्व भले होय, पण तेनुं अस्तित्व आपणे माटे तो ते ज्यारे ज्ञात थाय छे त्यारेज समजाय छे, त्यारेज शक्य छे. बीजा शब्दमां कहीए तो अस्तित्व अने ज्ञातत्व (सत् अने चित्) एकबीजाथी अभिन्न छे. हवे 'हुं छुं' एनो अर्थ समजवा मागीए तो 'हुं ज्ञात छुं' एवो थशे अने विचारथी पृथक्करण करतां आपणने समजाशे के जेनो 'छुं' मां समावेश थाय छे एवो जे 'हुं' तेनो 'ज्ञात' मां समावेश थाय छे, अर्थात् 'हुं' व्याप्य छुं अने 'ज्ञात' व्यापक छे. आ प्रमाणे 'हुं ज्ञात छुं' छेलां कोई 'ज्ञाता' नी अपेक्षा रहे छे, अने ज्यांसुधी ज्ञाता अने ज्ञातना एकत्वनो विचार नथी आव्यो त्यांसुधी 'हुं मने ज्ञात छुं' एम कहीए तोपण 'मने' पदथी सूचित ज्ञाता 'हुं' करतां कंइक वधारे ने वधारे छे एम भान रहे छे; हवे उपर आपणे कह्युं के वेदनशक्ति तेना अंत्यतम संपूर्ण रूपमां आवे त्यांसुधी विस्तीर्ण थवाने शक्य छे; अने वेदनशक्ति अने 'हुं' पर्याय मात्र होवाथी जेने ज्ञाता लीधो ते कोई केवळ अने संपूर्ण होवो जोईए एम समजाय छे. आ प्रमाणे ज्यांसुधी हुं अल्पज्ञ 'छुं', हुं अमुक 'छुं' इत्यादि विचार छे त्यांसुधी हुं तत्तद्रूपमां कोईने ज्ञात छुं. आ 'कोई' 'हुं' थी भिन्न रूपमां समजी

शकाय तेम नथी, कारण के ज्ञाता अने ज्ञेय बने एक बीजाने भिन्न रूपमां समजवाने अशक्य छे; तोपण तेओनी भिन्नतानुं निर्विकल्प रूप अन्यथी लक्ष्यमां आणी शकाय छे. 'हुं' 'आ' ने जाणु छुं एम कहेतां 'हुं' 'आ' अने 'आनुं ज्ञान' ए त्रणे कोई एक, नित्य, सत्, अने चित्नी अपेक्षा करे छे. आवो जे 'ज्ञेय हु' नो 'सच्चिदानंद ज्ञाता हु' ते प्रथमर्थीज 'हुं' मां छुं अने तेथीज रामानुजाचार्य 'हुं' पदवाच्य जीवने 'केवल हुं' पदवाच्य ब्रह्मनु शरीर कहे छे.

आ विचार में म्हारी भागी तुटी भाषामां जणाव्या छे अने मने भय रहे छे के माराथी स्पष्ट रीता जे कहेवानु छे ते कही शकायुं नथी. पण आ विषयज एवो छे. वाचकने म्हारे एटलुंज कहेवानुं छे के ज्यारे 'हुं पोते' ए विचारनी साथेज पोतानी व्यक्तिनी सीमानुं अतिक्रमण करवानी वृत्ति रहेली छे, अने जेने ते पोताथी बहार गणे छे तेने जाणवानु अथवा तो तेमां पोताने जोवानु ते सतत वलण धरावे छे, अने ज्यारे व्यक्तिरूप हुं नी साथे समष्टिरूप हुं नो विचार मूलथीज रहेलो छे त्यारे सपूर्ण, केवल, नित्य, निर्विशेष, अद्वैत, सच्चिदानद ए जेनु अन्यतम स्वरूप छे एवो धर्म बीज रूपे मनुष्यमां न जूदो पडे एवा रूपमा रहेलो छे एम मानवाने संपूर्ण कारण छे. जेम क्षुधा स्वभावत लागे छे अने अन्न तेनी शान्तिनेमाटे आवश्यक छे तेम स्वभावत ज्यारे व्यक्तिरूप हुनु वलण समष्टिरूप हुमां जवानु छे त्यारे ते वलणने सतुष्ट करवु ए आवश्यक छे. आ सतुष्ट करवाना उपाय ते धर्माचरण अने फल ते धर्म अथवा ज्ञान छे.

उपर आपणे मनुष्य स्वभावमां जे बे वृत्तिओ कही तेनो वधारे विचार करतां ईश्वरनुं अस्तित्व पण सिद्ध थई शके छे.

परिमित अने अवच्छिन्ननी सीमानुं अति क्रमण करी अपरिमित अने अनवच्छिन्नमां पर्यवसान पामवुं—त्यां विश्रांत थई जवुं एवी आपणी वृत्ति छे एज ईश्वरनुं अस्तित्व सिद्ध करी आपे छे. आपणे जे बाह्य विश्व प्रपंचनो अनुभव करीए छीए ते आपणने क्षणिक, मध्यव्यक्त, अने अस्वतंत्र जणाय छे. आपणी अंतर्वृत्ति—बुद्धिशक्ति—आ बाह्य प्रपंचनुं कारण शोधवानो प्रयत्न करे छे तो ते तेने तेमांथी जडतुं नथी अने ज्यारे ते कोई नित्य अनादनंत अने स्वतंत्र वस्तुप्रति जाय छे त्यारेज तेने विश्रान्ति मळे छे. आपणे जाणीए छीए के आपणी दुष्टतानुं ज्ञान थतांज अने तेथी असंतोष थतांज ते दूर करवाना उपाय शोधवा प्रति आपणी वृत्ति जाय छे अने ते मळे छे त्यारे ज शांति वळे छे; आपणे जाणीए छीए के आपणी अपूर्णतानुं भान थतां अने तेथी आपणामां असंतोष थतां आपणने संपूर्णता (जे आपणामां छेज *अने जेने लीधे आपणने अपूर्णतानुं भान थाय छे ते*) प्राप्त करवानी वृत्ति थाय छे अने तेनी प्राप्तिमांज परम संतोष मळे छे. आज प्रमाणे आपणने विश्वना क्षणिकत्वनुं, प्रयोज्यत्वनुं, अने पारतंत्र्यनुं भान थतां (अने आ भान थवामां हेतु आपणामां गुप्त रहेलो नित्यत्वादिनो विचार छे) वृत्तिने ज्यारे कोई नित्य प्रयोक्तृ अने स्वतंत्र तत्त्वनी प्राप्ति थाय छे त्यारेज त्यां ते परम विश्रान्ति पामे छे. आ प्रमाणे घणा प्राचीन काळथी थतुं आव्युं छे. *सविचार मनुष्यनी आ इंद्रियानुभूत विश्वथी असंतुष्ट रहेनारी* अने उच्चतमना अवधि सुधी निरंतर उच्चतर अने उच्चतर प्रति गमन करनारी वृत्ति नेति नेति कहेवामां पोतानो असंतोष जणावी गई छे. आथी कंई ईश्वर अभाव रूप ठरतो नथी; मनुष्य ज्ञान अथवा वेदनशक्तिने जेनो जेनो अनुभव थाय छे तेने तेने ते, पोते जेनी प्राप्तिनेमाटे प्रयत्न करे छे ते नथी एम कहे छे, तेथी जेनो तेना मनमां विचार छे ते केवळ निषेधनो विषय छे

एम समजनानुं नथी—एम समजीज शकातुं नथी. जो ते केवळ अत्यंताभावरूप होय तो तेनी प्रवृत्ति कराबी शके एवो विचारज मनुष्यमां स्वभावथी सभवतो नथी. गोपांगनाओ गांडी घेली थई 'कृष्ण' 'कृष्ण' करती भ्रमण करे छे अने अन्य कोई पण वस्तुथी तेमने संतोष थतो नथी ए एक आज मनुष्यवृत्तिनु रूपक छे.आ प्रमाणे सर्व बाह्य विश्वप्रपच आ वृत्तिरूप गोपांगनाने लुखो लागे छे अने जेनु स्वरूप पोताना हृदयमा रहेलु छे तेनी प्राप्ति थतां तेनी साथे सबधमां आवतां, अने प्रेम करनार अने प्रेमनो विषय, उभयनो प्रेममा लय थतां, मात्र केवळ प्रेम एज एक अवशेष रहेतां, तेने परमसंतोष मळे छे. आपणा न्यायना विद्वानोने आ हास्यजनक लागे तो भले लागो, पण आ सहजसिद्ध न्यायने आधारे तो ईश्वरनु अस्तित्व सिद्ध थया वगर रहेतु नथी.

आपणे कह्यु के विश्वप्रपच क्षणिक प्रयोज्य अने परतंत्र अनुभवाय छे अने तेथी कोई नित्य प्रयोक्ता अने स्वतंत्र मनातो ईश्वर सिद्ध थाय छे. परंतु आ प्रमाणे समजातो ईश्वर विश्वप्रपचना धर्मना अभाववाळो समजाय छे ते छे एम अतर्वृत्तिमा तेना विचार होवाथी कहेवु पडे छे तो पण आ लक्षणथी तेनु भावात्मक स्वरूप अन्यने समजावी शकातु नथी. वळी विश्वप्रपच क्षणिक छे तो पण ते कंईक छे. अथवा तो जेना क्षणिक अनित्य परतत्र आदि धर्म छे एवु कंईक छे. ते केवळ शून्य नथी. बौद्धोना शून्यवादना संबंधमा विचार करता शंकराचार्य आ विश्वने ब्रह्मनो विवर्त कहे छे अने शांकर मतनु हार्द नहि समजनाराज विश्वने शशशृगवत् कही उडावी दे छे. आ स्थळे महारे आ विषयमा विशेष बोल्वानु नथी पण एटलुज कहेवानु छे के क्षणिकादि धर्म जेना छे एवु विश्व कंईक छे, अने ए शु छे ? शाथी छे ? क्याथी छे ? ए विचार आपणने सहज थाय छे. आ जाणवानी ईच्छाथीज न्यायवाळा

जगत्ने जणाय छे तेवा रूपमां सत्यमानी तेमां सविचार रचना जोई ईश्वरना अस्तित्वनी सिद्धि करवाने दोराया छे. पण आ प्रमाणे ईश्वरने विश्वनो रचनार अथवा गोठवनार मानीए तो तेने रचवानां अथवा गोठववानां द्रव्य—उपादानकारण उपर आधार राखवानो रहे छे. जो के आ द्रव्यो करतां ते वधारे शक्तिमान् छे तो पण तेनी संपूर्णतामां जे संपूर्णता आपणो मानदंड छे तेने आधारे बाध आवे छे. शांकरभाष्यना प्रथमाध्यायना चतुर्थपादना सप्तम अधिकरणमां ईश्वरना ईक्षापूर्वक कर्तृत्वनो (ईश्वरना केवल निमित्तकारणत्वनो) निषेध कर्यो छे ते जोतां ईश्वरने केवळ उपादान कारणथी व्यतिरिक्त मानी तेने कर्ता अथवा रचयिता मानतां जे जे अडचणो अने विरोध आवे छे ते समजाशे. जो ईश्वरने विश्वप्रपंचनुं उपादान अने निमित्त बंने प्रकारनुं कारण लईए तो तेम लई शकवुं शक्य छे; अने आ स्थळे आ बाह्य विश्व (ज्यारे ते कंई छे त्यारे) कोई पण कारण वगर थयुं नथी एम जणावी, तेनुं उपादान तेमज निमित्त कारण एकज छे एम जणावी, आ उभयरूप कारण ते ईश्वर छे एम लई ईश्वरनुं अस्तित्व सिद्ध करवाने हुं कंईक प्रयत्न करुं छुं.

विश्वप्रपंच कंईज नथी अर्थात् ते असत् छे एम कही शकातुं नथी, कारण के ते दृश्य छे एवुं मने द्रष्टाने भान रहे छे. वळी जो ते इंद्रियथी ज्ञात थतांज अस्तित्वमां आवतुं होय तो मने ते इंद्रिय ज्ञात थयुं ते पूर्वे ते न होतुं एम कहेवुं पडे. ए तो खरुं छे के ज्ञातत्व अने अस्तित्व परस्पर अभिन्न छे, पण वैश्विक अस्तित्व अने व्यक्तिविषयक ज्ञातत्व अभिन्न छे एम कही शकातुं नथी. ज्यारे हुं तेनो द्रष्टा छुं अने ज्यारे आ दृश्य छे त्यारे हुं द्रष्टा अने आ दृश्य ए बंने हुंथी, तेमज आ दृश्यथी, भिन्न नहि एवा कोई अन्य ज्ञाताने ज्ञात छीए. आ

प्रमाणे ज्यारे विश्वप्रपंचनुं अस्तित्व व्यक्तिविषयक हुंथी निरपेक्ष ज्ञात छे त्यारे ते सत् पण छे. पण जो आपणे तेने केवळ सत् कहीए तो तेमांज आपणी नित्य सच्चिदानंदनी प्राप्तिने माटे प्रयत्न करती वृत्तिने परम संतोष थवो जोईए; पण ते प्रमाणे थतुं नथी. आम होवाथी आपणे तेने असत् पण कहेवुं पडे छे. आ प्रमाणे आ विश्व सदसद् उभयात्मक छे. पण तेथी ते शशशृंगवत् छे एम कहेवाय नहि. जो अभावने आपणे कोई भावरूप लईए तोज आपणाथी आ विश्वने अभावरूप कहेवाय अने रामानुजाचार्य अने शंकराचार्यना विरोधनुं मूळ जो तपासीए तो एक विश्वने भावरूप कहे छे अने अन्य तेने अभावरूप कहे छे तेमां भावरूप कहेनार अभावने अभावरूप माने छे अने अभावरूप कहेनार अभावने भावरूप माने छे ते छे. अभावने भाव केवीरीते कहेवो ए वात जुदी छे; पण अभावने ज्यारे भाव मानवामां आवे अने तेम मानीने विश्वने अभावरूप कहेवामां आवे तो तेम कहेतां ते शशशृंगवत् (दोषारोपकना शब्दोमां) थई जतुं नथी. आ प्रमाणे ज्यारे आ विश्व कंई पण छे त्यारे तेनुं कारण शुं ? ते क्यांथी थयुं ? इत्यादि जाणवानी अपेक्षा रहे छे.

हवे दृष्टने आधारे अदृष्टनुं अनुमान करी शकाय छे ए न्यायथी आपणे दृष्ट सृष्टिनुं अवलोकन करी त्यां जे नियम प्रवर्ते छे ते शोधी काढीए. बीजमांथी वृक्ष थतुं जोवामां आवे छे; घरनो बांधनार जेम तेने माटेनां द्रव्य लावी,तेना घाट घडी, तेमने पोतानां मनमां प्रथमथी करेली योजनानुसार गोठवी, घर तैयार करे छे तेम सेन्द्रिय पदार्थोमां थतुं जोवामां आवतुं नथी. अहीं कोई कर्ता अथवा रचयिता ते जे द्रव्यनुं बनेलुं छे ते द्रव्यथी पृथक् जणातो नथी. पोताने अमुक रूपमां आववुं छे एवो विचार अथवा योजना जाणे तेना प्रत्येक अंगमां

प्रथमथीज रहेली होय तेम थतुं जणाय छे. जे सूक्ष्म परमाणुओ ' प्रथमरूपो ' अथवा पेशीओनुं ते बनेलुं छे तेमां कोई अंतर्गत बल रहेलुं जणाय छे, अने आ बल केवल यांत्रिक नथी पण अमुक प्रकारनुं संपूर्ण अखंडत्व प्रकट करवुं छे एवी योजनाना विचारवाळुं जणाय छे. आदिथी अंतसुधीमां ते पोतानी मेळेज पोते घडाय छे–अमुकरूप युक्त थाय छे, अने पोतानी मेळेज पोते प्रकट थाय छे. वळी डार्विन्‌नो सिद्धान्त जोतां पण स्वयनो विचार अने स्वतः स्वयंनी उत्पत्ति ए नैसर्गिक सृष्टिनां मूल छे एम समजाय छे. सेन्द्रिय पदार्थोनो सूक्ष्मतम भाग (प्रथमरूप) जे परमाणुओनो बन्यो छे ते परमाणुओ अमुकरूप अने अमुक प्रमाणमाज एकठां मळे छे. अने केवळ यांत्रिक अथवा रासायनिक बलना व्यापारथी आ प्रमाणे थाय छे एम लईए तो ' प्रथमरूप ' मां जे जीवनव्यापार—पोतानी मेळे पोतानुं पोषण वर्धन अने उत्पादन करवानी क्रिया—जोवामां आवे छे ते सोपपत्तिक समजावी शकाय तेम नथी. वळी जीवन चलाववानी मारामारीमां योग्यतम होय छे तेज बची शके छे (Survival of the fittest) ए नियम एवो नथी के सेन्द्रिय पदार्थोनुं अस्तित्व अनस्तित्व केवळ तेने शरण होय. सेन्द्रिय पदार्थो कोई अज्ञ जडवस्तुनी पेठे आ नियमना रमकडां नथी, तेओ आ नियमने पोतानो करी लई तेनो लाभ ले छे. पोते पोताने अभीष्ट एवुं स्वसरक्षण तेने माटे पोताने योग्यतम करवानो प्रयत्न करे छे. आ प्रमाणे ' हुं ' ए विचार सूक्ष्मतम तत्त्वमां पण रहेलो छे; आ विचारथी थतुं बल केवल यांत्रिक अथवा रासायनिक बळ जेवुं नथी पण ते करतां घणुंक विरल—उच्चतर प्रकारनुं छे, अने पाछळ जणाव्या प्रमाणे आ सर्व भिन्न भिन्न ' हुं ' नुं अधिकरण जे एक केवल नित्य ' हुं ' तेने आधारे—तेने लक्षीने—ते सर्व प्रवर्ते छे एम जोतां सृष्टिनुं

उपादान तेमज निमित्त कारण एक छे ए सिद्धान्त समजवो दुर्घट नथी. दृश्य प्रपंच अने ईश्वर वच्चे कुंडल अने कनकना जेवो संबंध छे अने ईश्वर अने जीव वच्चे सूत्र अने मणकाना जेवो संबंध छे एम कहेनार रामानुजाचार्यना सिद्धान्तोनुं विचारपूर्वक अवलोकन करतां आ विचार वधारे स्पष्ट थशे. अने ज्ञातत्त्व अने अस्तित्त्व समानाधिकरण छे एम जोतां आ त्रणे तत्त्व प्रथम जे भिन्न भिन्न लागे छे ते परस्पर अभिन्न थई जशे अने केवल एक रहेशे. पण आ संबंधमां आ स्थळे वधारे कहेवुं निष्प्रयोजन छे.

आपणा अत्यारसुधीना विचारनुं परिणाम शुं छे ते आपणे जोईए. स्वयंवेदन जड परमाणुनुं परिणाम नथी पण ते जड परमाणुनिरपेक्ष छे एम आपणे जोयुं; व्यक्तिविषयक स्वयंवेदन (जीवात्मा) ना अधिकरणरूपे रहेला कोई **केवल समष्टिविषयक स्वयंवेदननुं** अस्तित्त्व मानवुं पडे छे एम आपणने लाग्युं, परिमित स्वयंवेदनने अपरिमित स्वयंवेदननुं भान छे अने तेनी प्राप्तिने माटे—पोते तद्रूप थवामाटे—ते प्रयत्न करे छे एम आपणने समजायुं; अने आ प्राप्ति ते धर्मनुं फळ छे, अने प्रयत्न ते धर्माचरण छे, एम आपणे धर्म अने फलनां स्वरूप बांध्यां. वळी आपणे जोयुं के आ प्रयत्न करवानी वृत्ति सहज छे, प्रयत्न अभीष्ट फलने उद्देशीने होवाथी अभीष्ट छे, अने तेथी धर्म सहजाभीष्ट छे. हवे कोइ पूछे के जो धर्म सहजाभीष्ट छे तो तत् प्रति सर्व मनुष्यनी प्रवृत्ति थवी जोईए. पण जगत्मां कंइ एम जोवामां आवतुं नथी. आम होवानु कारण शुं? मनुष्यमां एवुं शुं छे के जे तेने धर्माचरणथी दूर करे छे? वळी धर्माचरणनुं व्यावहारिक स्वरूप शुं छे? आ स्थळे महारो विचार आ विषयमां उतरवानो छे, अने टुंकामां महारे जे कहेवानु छे ते समेटी लउं छुं.

मनुष्यस्वभावनु अवलोकन करनारने तेमा बे तत्त्व रहे-ला जणाय छे, एक पशुत्व अने बीजु मनुष्यत्व. आहार निद्रा-भय मैथुन इत्यादि प्रकारनां इंद्रियसुख मेळववामा अने तेमने अनुभववामां मनुष्य अने पशु साधारण रीते समान गणाय छे. पण मनुष्यमा जे बीजु तत्त्व रहेलु छे तेने लीधे तेनुं क्षुद्र प्राणीओ परत्वे आधिक्य छे आ तत्त्व ते सविचारत्व मनुष्यत्व के धर्मवृत्ति छे, अने आज तत्त्वनी आभ्यतर प्रेरणाथी ते परिमित नी सीमानु अतिक्रमण करी, पोताने जेनु भान छे अने जेनी उच्चतमतानो प्रथमावधारित विचार तेने उच्चतरथी उच्चतर स्थितिमा गमन करावनाना हेतुरूपे छे एवा अपरिमितनी प्राप्तिपर्यंत सप्रयत्न रहे छे. वळी आ तत्त्वने लीधे तेने पोतानी आहारादि वृत्तिओ—विषयवासनाओ—कामनाओ पोताथी भिन्न रूपमा समजाय छे, अने तेनामा जे परम सुखनी कल्पना छे ते साथे सरखावता आ इंद्रियजन्य सुख तेने क्षुद्रवत् लागे छे. आमानु एक तत्त्व सुखनो तात्कालिक अनुभव करावनार छे अने बीजु कोइ भावी महोटा सुखना स्वरूपनो विचार बधावी आ सुखने नहिवत् जेवु समजावनार छे. आ प्रमाणे मनुष्यमा आ बे तत्त्वोनु द्वंद्वयुद्ध चाल्या करे छे अने एकनो बीजाउपर सपूर्ण विजय थयो नथी त्यासुधी आ युद्ध पण शात थतु नथी. हवे ए तो स्वाभाविक छे के सविचारत्वनी इंद्रियसुखवासनादि साथे तुलना करता ते घणुज प्रबळ लागे छे, अने आम छे तो सविचारत्वनो विजय थता वार लागे तेम नथी. पण इंद्रियसुखवासनादि मनुष्यमा सविचारत्वसाथे युद्ध चलावता सविचारत्वना धर्मोनु ग्रहण एटले सुधी करे छे के तेथी ते पण अपार बळ दर्शाववाने शक्तिमत् थाय छे अने ज्यारे मनुष्यमा रहेला सविचारत्वथी महारी वासनावृत्तिओनु ज्ञान थाय छे त्यारे आ वासनावृत्तिओ पोताना मूळ रूपमां न रहेता महारीसाथे एकप्रकारना

ऐक्यमां रहे छे. आ वृत्तिओनो संतोष ते हुं महारोज संतोष गणुं छुं. विवेक वणझारानी प्रवृत्ति निवृत्ति स्त्रीयोमांनी प्रवृत्तिनो ज्यारे विवेकवणझारो पोते पक्ष करे छे—ज्यारे ते तेने पोतानी प्रियतमा माने छे—त्यारे जो के निवृत्तिसाथे तुलना करतां तेनामां कंइ पण वधारे नथी, तो पण ते निवृत्ति उपर पोतानो दोर चलावी शके छे खरुं कहीए तो आहार निद्रा भय आदि सहज वृत्तिओ छे. मनुष्यव्यतिरिक्त प्राणीओमां पण तेमनुं प्राबल्य जोवामां आवे छे, अने तेमने संतुष्ट करवी एवी आंतर प्रेरणा छे. तेमना संतोषमां एक प्रकारनो सुखानुभव थाय छे; अने आ संतोष तेना स्वाभाविक रूपमां नित्य अथवा अनित्य नथी; कोइ पण कही शकशे नहि के सहजवृत्तिओने संतोष पामाडनार पशु सारुं करे छे अथवा खोटुं करे छे. भारे पदार्थनुं नीचे पडवुं, पाणीनुं सरखी सपाटीए रहेवुं, धूम अने बाष्प जेवा वायु करतां हलका पदार्थोनुं वायुमां उंचे उडवुं, इत्यादि जेम स्वाभाविक नियम—बल छे, तेम सहजवृत्तिओनो तेना तेना विषयनी प्राप्तिथी संतोष थशे ए नैसर्गिक नियम छे. पण आज सहजवृत्तिओ सविचार मनुष्य साथे संबंधमां आवतां पोताना सहज शुद्ध स्वरूपमां रहेती नथी. क्षुद्र प्राणीमां सहजवृत्तिनो उदय थतां तेना विषयनी प्राप्तिने माटे ते प्रयत्न करे छे अने ते प्राप्त थता आ सहजवृत्ति संतुष्ट थई जाणे निवृत्त थती होय तेम थाय छे. गायने भूख लागतां ते खावानुं खोळे छे अने ते पेटपूर मळ्युं एटले तेने संतोष थाय छे. मनुष्यमा सहजवृत्तिओ आथी विलक्षण रूपमा प्रतीत थाय छे. अहीं तेमनी स्थितिनो काळ मात्र विषयना अवधि सुधी न रहेता वधे छे. मने जेम महारूं पोतानुं भान अविच्छिन्न रूपमा रहे छे ते प्रमाणे आ वृत्तिओ महारी छे अथवा हुं ए वृत्तिओथा अभिन्न छुं एवु भान पण अविच्छिन्न रूपमां रहे छे. महारी स्वाभाविक आहारवृत्तिने तेनी शांतिने

माटे जोईए तेटलुं मळ्युं तेथी ते संतुष्ट थती नथी. तेमां मे महारा नित्यत्वनो आरोप कर्यो छे तेने लीधे तेना असतोषमा पण एक प्रकारनु कृत्रिम नित्यत्व आव्यु होय छे, अने मने ज्यांसुधी खबर पडती नथी के आ नित्यत्व कृत्रिम छे त्यांसुधी महारूं पेट भरायुं होय तोपण महारो आहारप्राप्तिनो प्रयत्न शांत पडतो नथी अने मने धननो सग्रह करवानु मन थाय छे. लोक निंदा करे, शरीरने हानि थाय तात्कालिक दु ख पडे, तो पण आ धनसग्रह करवानी वृत्तिनी प्रेरणाथी हु ते सर्वनी उपेक्षा करूं छु. आ प्रमाणे लोभ ए खरूं जोता आहार प्राप्त करवानी सहज वृत्तिनु परिणाम छे, तोपण सहजवृत्तिमां जे निर्दोषता ते तेमा नथी; ते दोषरूप छे. आ प्रमाणे क्रोध, मोह, मत्सर, व्यभिचार, इत्यादि जे जे मनुष्यमां दोष जोवामा आवे छे ते सनिर्दोष सहजवृत्तिओना, मनुष्यना सविचारत्वने लीधेज--मनुष्यना ' हु पूर्वापार एक नित्य छु ' ए प्रकारना भानने लीधेज--थयलां परिणामविशेष छे. टूंकामा कहीए तो जेने लीधे मनुष्य धार्मिक थवाने शक्त अने योग्य छे तेनेज लीधे ते अधार्मिक छे.

हवे आपणने समजाशे के मनुष्य प्राणीमां सहजवृत्तिओ दोषरूप परिणामने पामे छे त्यारे ते तेना सविचारत्व जेटलीज बलवती थाय छे, अने तेथी सविचारत्वनो विजय दुष्प्राप्य थई पडे छे. जोके सविचारत्व अने विषयवासना--धर्मवृत्ति अने अधर्मवृत्ति--ए बने प्रकाश अने अधकारना जेवा परस्पर विलक्षण छे तोपण हु, ' हु तेओनो द्रष्टा छु ' एवा भान वगरनो द्रष्टा, मने पोताने उभयनी साथे एक अने अभिन्न समजु छु. सविचारत्व मने विषयवासनानी निर्मल्यता देखाडे छे त्यां हु के जे विषयवासनाथी मने पोताने अभिन्न समजु छु ते महारी पोतानीज निर्माल्यता जोऊं छु. योगदर्शननो सिद्धान्त छे के हु 'पुरुष' तो कमळपत्रवत् निर्लेप

छुं पण सत्त्वनुं परिणाम जे बुद्धि ते तापक रजस् (रागादि) थी तपे छे अने तमस् (अज्ञान) थी हुं मने पोताने बुद्धिथी अभिन्न समजुं छुं तेथी हुं पण तपतो होउं एवो अनुभव करूं छुं.

पण आ सविचारत्व अने इंद्रियसुख भोगववानी वृत्तिनो चालतो कलह शी रीते शांत पडे? आ प्रश्ननो प्रत्युत्तर आपतां आपणने धर्माचरणनी आवश्यकता लागे छे. उक्त कलह जे क्लेशादिनुं मूळ छे ते योगशास्त्रना शब्दोमां कहीए तो अभ्यास वैराग्य अने ईश्वरप्राणिधानथी समूळ नाश पामे छे. व्यावहारिक शब्दोमां कहीए तो अहिंसा सत्य धृति दयाआदि लौकिक नीति, अने अपरिमित सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् परमेश्वरने उद्देशीने परिमितनी सीमानु अतिक्रमण, अथवा बीजा शब्दोमां कहीए तो पोताने जेना स्वरूपनं अस्फुट पण वास्तविक ज्ञान छे तेनी प्राप्ति,—पोते तेथी अभिन्न छे ए वातनो अनुभव—ए आ कलहने शांत करनार छे. पण आ प्रमाणे कहेवुं तेना करतां आ कलह शांत करवाना उपायोनुं निरूपण जुदा जुदा काळमां अने जुदा जुदा देशमां उत्तम बुद्धिवाळा महापुरुषो—धर्मशिक्षकोआचार्योए केवी रीते कर्युं छे तेनुं तात्त्विक अने शास्त्रीय रीत्या अवलोकन करवाने कहेवुं ए वधारे सारुं छे घणा पुरातन काळथी मनुष्यो कोइ गुप्त बळनी प्रेरणाथी आ संबंधमां विचार करता आव्या छे; अने धर्मसंस्थाओ स्थपाई छे; दुःखमात्रनी निवृत्ति अने परमानंदनी प्राप्ति जे मनुष्यने सदासर्वदा अभीष्ट छे तेना उपायोने जणावनार अनेक ग्रंथो थया छे. सूक्ष्म विचार करनारा, उत्तमबुद्धिवैभववाळा, अने तत्त्वशोधनमां निरंतर तत्पर एवा पुरुषोना विचार वस्तुतः सत्य होवा जोईए अने सत्य एक होवाथी ते पण एकरूप होवा जोइए एम आपणने प्राथमिक दृष्टिथी जोतां लागे छे, पण ते प्रमाणे उपर उपरथी जोनारने जणातु नथी. आ प्रमाणे नहि जणावानुं

कारण मात्र विचार जे जे साधनोथी जणावावाना छे ते ते साधनोना, विचारोने तेओना यथार्थ रूपमा जणावा जेटला सामर्थ्यना अभावने लीधे अने विचारनु ग्रहण करनारनी शक्तिनी परिमितताने लीधे छे पृथ्वीउपर अत्यारसुधीमा जेटलां जेटला धर्मना स्वरूप थया छे ते सर्व एक छे एम महारु कहेवानु प्रयोजन नथी, पण देश काल प्रसग इत्यादि उपाधिओथी निरपेक्ष रूपमा तपासता जे जे धर्मो छे ते सर्वमा एक अविच्छिन्न सत्य रहेलु छे आ सत्य शोधवाने माटे भिन्न भिन्न धर्मोनु तात्त्विक अने शास्त्रीय रीत्या अवलोकन करवु आवश्यक छे अने तेथी आपणा देशमा तेमज इतर देशोमा धर्मना इतिहास लखाया छे. ए तो खरू छे के जे अर्थमा आपणे इतिहास शब्द हमणा समजीए छीए ते अर्थमा ते कदाच भारतवर्षीय धर्मइतिहास कोने नहि समजायो होय तोपण तेओए आ दिशामां प्रयत्न कर्यो छे ब्रह्मसूत्र जोता आपणने जणाय छे के घणा प्राचीन कालमा पण पोताने अनुकूल नहि जणाता एवा चालता धर्मोनु अवलोकन श्री व्यासाचार्य जेवाओए कर्युं छे श्रा माधवाचार्य प्रणीत सर्वदर्शनसग्रह पण एक आ प्रकारनो ग्रथ छे अने ना भाजी नामना भक्त हिंदी भाषामा भक्तमाल नामनो ग्रथ लख्यो छे ते पण आ वर्गमा मुकवा जेवो छे.

धर्मनु यथार्थ स्वरूप समजवाने–धर्मतत्त्वनो निश्चय करवाने धर्मना इतिहासनु ज्ञान आवश्यक छे आपणा पूर्वे धर्म सबधी विचारो करनारा जे जे पुरुषो थया तेओनो तेना सबधमां शो मत छे ते जाणता आपणे तेमाथी तत्त्व शोधी शकीए छीए. ए तो खरू छे के आ मत केवळ छे तेवो जाणवो ए कंई तत्त्वनिश्चय नथी, तेओनो सकारण स्वरूप समजवो ए तत्त्व निश्चयने माटे आवश्यक छे सृष्टिमां जे कंई एकरूप छे तेनु सकारण स्वरूप समजवाने आपणने तेना सबधमां पूर्व पुरु

ग्रोनुं मानवुं शुं हतुं ते जाणवानुं प्रयोजन रहेतुं नथी, खगोल के भूगोलविद्याना संबंधमां पूर्व पुरुषोना विचार केवा हता ते जाण्याविगर पण आपणे पोतानी मेळे पोताने माटे अवलोकन करवाथी, अने पोतानी मेळे पोताने माटे ए अवलोकननोना संबंधोनो विचार करवाथी, तेओने शास्त्रना रूपमां समजी शकीए छीए. परंतु जेमां कालक्रमानुसार फेर पडतो जाय छे, जेमां कोई पण प्रकारनुं बंधारण बंधातुं आव्युं छे, अने जे कोई पण एक स्वरूपमां आव्या पहेलां अनेक स्थितिओमां स्थित थयुं छे, तेनुं स्वरूप समजवाने आपणने आ भिन्नभिन्न स्थितिओ जाणवानी आवश्यकता रहे छे. नीतिना संबंधमां, राजकीय व्यवस्थाना संबंधमां, व्यवहारना संबंधमां, अने धर्मना संबंधमां मनुष्यना केवा केवा विचारो छे ते तात्त्विक रीत्या समजवा माटे अमुक मनुष्यना के जनसमूहना महोटा भागना वर्तमानमां तत्संबंधी शा विचार छे ते मात्र जाणवाथी आपणे कृतकृत्य थता नथी. आ विचार आ रूपमां आव्या ते पहेलां तेनां केवां केवां स्थित्यन्तरो थयां ते जाणवाथीज, अने आ भिन्न भिन्न स्थितिओना परस्पर संबंधोना विचार कर्याथी आपणने उक्त प्रकारना विचारोमां जे तत्त्वार्थ रह्यो होय छे ते जणाय छे. मनुष्यना धर्मविचारनी आ भिन्न भिन्न स्थितिओ ते भिन्न भिन्न देशमां अने भिन्न भिन्न कालमां स्थपायली धर्मसंस्थाओ छे. अने ज्यांसुधी आ सर्व संस्थाओनां स्वरूप समजायां नथी त्यांसुधी एक अमुक विचार सत्य छे एम आग्रहथी मानी रहेवाथी मनुष्यना मनमां धर्मतत्त्व जाणवानी जे आंतर अभिलाषा छे ते तृप्त थती नथी. भारतभूमिनी नैसर्गिक स्थिति जोतां जे धर्म संबंधी विचार आ भूमिमां थया छे ते सामान्यरीत्या सकल जनसमूहना धर्मविचारोना प्रतिरूपक छे एम कहेवामां अतिशयोक्ति नथी. भारतवर्षनी रसाल भूमि, भव्य पर्वतो, विशाल नदीओ, हृदयने शांत करे एवी लोकोत्तरवाळी

खीणो, जीवनवृत्तिनां सर्व तैआर साधनोनां भरेलां अने उपवननी बरोबरी करे एवां नदीओना उपकंठ उपर आवेलां अरण्यो, अने जीवनवृत्ति चलावबाने झाझां साधनो न जोईये एवी हवा, ए सर्वनो योग बुद्धिवैभवमां अन्य प्रजाथी अधिक एवा आर्योने मळतां तेओनी सर्व शक्तिओनो व्यापार मानसिक अने आध्यात्मिक सुख मेळववा प्रति जाय ए स्वाभाविक छे. वळी ए. बार्थ. नामनो फ्रेंच विद्वान् लखे छे के ज्यारे इतर देशोमां नूतन विचारोनी विकारी असरथी पुरातन धर्ममत केवल नष्टप्राय थई गयां छे अथवा अत्यंत विकृतिने पामी गयां छे त्यारे मात्र भारतभूमिमां विकारना सर्व हेतुओ होवा छतां पण ते तेवां रह्यां छे. एटलुंज नहि पण आ मतोना स्पष्टीकरण अने पुष्टिने अर्थे रचायला अनेक अने भिन्न भिन्न ग्रंथो उपरथी सिद्ध थाय छे के धर्मना मूल बीजनो निर्बाध अने सतत वृद्धिगत उदय आजसुधी भारतभूमिमां थतो आव्यो छे.

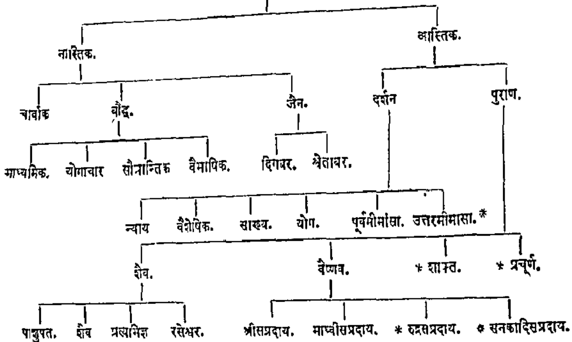
आ प्रमाणे अनेक विद्वत्पुरुषोना भारतभूमिनी धर्मसंस्थाओना संबंधमां अभिप्रायो छे, अने तेथी आ संस्थाओनुं अवलोकन करवुं ए धर्मतत्त्वनो निश्चय करनारने आवश्यक छे. आमांनी घणी खरी संस्थाओना स्वरूप माधवाचार्ये पोताना सर्वदर्शनसंग्रहमां आप्या छे अने म्हारा गुजराती वाचकोने आ अपूर्व अने अमूल्य ग्रंथना विषयनो लाभ मळे माटे तेनुं गुजराती भाषांतर हुं तेमनी सेवामां मुकुं छुं. पण आ स्थळे म्हारे तेमने नम्रतापूर्वक विज्ञप्ति करवानी छे के आ गहन अने अगाध समुद्रमां प्रवेश करता पहेलां तेनो आलेखना रूपमां उपर उपरनो देखाव तेमणे जोई लेवो. आटला माटे आ सर्व दर्शनोनो टुंकसार हुं आ स्थळे आपु छुं.

भारतवर्षीय सर्व धर्मोना मुख्य बे वर्ग थई शके छेः—एक आस्तिक-अथवा वेदने माननाराओनो; अने बीजो नास्तिक

अथवा वेदने नहि माननाराओनो. नास्तिकमार्गमां चार्वाक, बौद्ध अने जैन एओनो समावेश थाय छे. आस्तिकमार्गोना पण बे भाग पडे छे; दर्शनधर्म अने पुराणधर्म. दर्शनधर्मोमां छ दर्शन आवी जाय छे, अने पुराणधर्मोमां शैव, वैष्णव, शाक्त, अने प्रचूर्ण ए रीत्या चार गणी शकाय छे. सर्वदर्शनसंग्रहमां शैवधर्मना चार मुख्य भाग आपवामां आवे छे. (१) पाशुपत, (२) शैव, (३) प्रत्यभिज्ञ अने (४) रसेश्वर. वैष्णवधर्मना पद्मपुराणने आधारे चार संप्रदाय छे; (१) श्रीसंप्रदाय, (२) माध्वीसंप्रदाय, (३) रुद्रसंप्रदाय अने (४) सनकादिसंप्रदाय. माधवाचार्य आमांना मात्र बेज, श्रीसंप्रदाय अने माध्वीसंप्रदायनुं निरूपण करे छे, कारण के रुद्रसंप्रदाय अथवा पुष्टिमार्ग अने सनकादिसंप्रदाय अथवा निंबादित्यनो मार्ग ए माधवाचार्य पछीथी थया छे. शाक्तसंप्रदायना दक्षिणाचार अने वामाचार ए बे भाग छे पण तेना संबंधमां सर्वदर्शनसंग्रहमां कंईज कहेवामां आवतुं नथी. पातंजलदर्शन आपतां तांत्रिक मंत्रोना संबंधमां कंइ कहेवामा आवे छे अने शाक्तमार्गनुं मूळ तंत्रोमां छे तेथी माधवाचार्ये कदाच तेनो समावेश पातंजल योगमां कर्यो होय. प्रचूर्णधर्मोमां गाणपत्य, सौरपत्य इत्यादि आवे छे पण ते एटला बधा प्रचलित न होवाथी माधवाचार्य तेना संबंधमां कंई आपता नथी. बौद्धना चार वर्ग पडे छे; माध्यमिक, योगाचार, सौत्रान्तिक अने वैभाषिक. जैनना बे वर्ग छे; श्वेतांबर अने दिगंबर. वधारे स्पष्टीकरणने माटे आ सर्व धर्मोनी व्यवस्था आ प्रमाणे करी शकाय छेः

—

भारतवर्षीय धर्म.



* आवु चिन्ह करेलां दर्शन माधवाचार्ये लीधां नथी.

(१) चार्वाकः—आमतवादीओने लोकायत अने बार्हस्पत्य नाम पण आपवामां आवे छे. तेनो स्थापनार बृहस्पति कहेवाय छे, अने कोइ कोइ स्थले चार्वाकने बृहस्पतिनो पुत्र गणेलो छे. (कदाच देवगुरु बृहस्पतिनुं हास्य करवाने पण आ लोकोए पोताना मूळ पुरुषने बृहस्पति कह्यो होय). आ लोको ज्ञानना साधनने माटे केवल प्रत्यक्षने माने छे; अने अनुमान अने शब्द प्रमाणनो निषेध करे छे. ईश्वर अने परलोक प्रत्यक्ष प्रमाणसिद्ध न होवाथी तेमनो ते निषेध करे छे, अने आत्मा अथवा शरीरविशिष्ट चेतन ते केवल जडनुं परिणाम छे एम तेओ कहे छे. सृष्टि स्वभावयीज छे अने तेथी कोइ कर्ता नथी; देहव्यतिरिक्त आत्मा न होवाथी देहसुख तेज पुरुषार्थ छे; अने आत्मोच्छेद अथवा शरीरोच्छेद ते मोक्ष छे. वेदना आचार विचार धूर्तोना ढांग छे अने श्राद्धादिक कर्म केवळ मूर्ख लोकोनो मिथ्या श्रम छे. आ लोकोना सिद्धान्तोनुं संग्राहक कोइ पण पुस्तक अथवा पद्धति जोवामां आवती नथी. केटलाक पौराणिक संस्कृतमां लखेला श्लोक मात्र जोवामां आवे छे पण ते आ मतना मूळ स्थापनारना नथी एम जणाय छे. आ मत कोइवार पण मतना रूपमां मानी शकायुं होय एम धारवामां मने तो शंका रहे छे. सर्व देशमां अने सर्व कालमां प्रचलित संस्थानी विरुद्ध बोलनारा थया छे अने आ वर्ग तेवो होई शके. खरुं कहीए तो चार्वाकदर्शन कोइ भावरूप धर्म नथी पण धर्मनो अभाव छे.

थोडा वर्षउपर कोइ राजा दयारामना आश्रित बख्तावर नामना पुरुषे हिंदीभाषामां शून्यसार अथवा शूनीसार नामनो ग्रंथ लख्यो छे. प्रोफेसर विल्सन पोताना "हिंदुओना धर्मो" ए नामना पुस्तकमां आमांथी कंइ कंइ भाग आपे छे, अने ते उपरथी जोतां तेमां सर्व शून्य छे ए आ मार्गनो सिद्धान्त जणाय छे.

खरुं जोतां आ मार्गनी गणना शून्यवादी बौद्धोमां थवी जो-ईए छीए.

(२) बौद्धः--पाश्चात्य विद्वानोए आ धर्मना संबंधमां घणो शोध कर्यो छे अने तेना संबंधमां जे लखाण थयुं छे ते एटलुं बधुं विस्तीर्ण छे के तेनो सार मात्र आपतां पण आवां आवां बे पुस्तक भराय. आ स्थळे मात्र आ धर्मना स्थापनारनो टुंक इतिहास अने तेना सिद्धान्तोनुं दिग्दर्शन करावी तेना माधवाचार्ये जे भेद आप्या छे तेनां टुंकामां स्वरूप आपवानो महारो विचार छे. बौद्ध धर्म वर्तमान काळमां भारत भूमिमांथी निर्मूळ थई गयो छे तो पण टीबेट, चीन, जापान, सीलोन वगेरे देशोमां ते हजु पण मनाय छे,अने आखी पृथ्वीउपर मनुष्यनी जे संख्या छे तेनो लगभग त्रीजो भाग बौद्धधर्म माननाराओनो छे एम कहेवाय छे. बौद्धावतारने विष्णुनो चोवीसमो अवतार मान्यो छे अने जगन्नाथजी ए बौद्धरूपे विष्णुनुं स्वरूप छे एम कहेवामां आवे छे. खरुं जोता बौद्धधर्म भारतवर्षमांथी निर्मूळ थतां तेनो जे अवशेष रह्यो ते जगन्नाथजी छे, पण ब्राह्मणधर्म माननाराओए तेने एवुं रूप आप्युं छे के आ बौद्धना देव छे एम शंका आववी पण भारे थई पडे छे. बौद्ध धर्मनो स्थापनार कपिलवस्तुना गौतमकुळना शाक्यराजा शुद्धोदननो पुत्र सिद्धार्थ छे, अने तेनी मातानु नाम मायादेवी छे. पिता तेने राजपुत्रने योग्य एवो विद्याभ्यास करावे छे अने परणावे छे पण तेनी वृत्तिओ निरंतर वैराग्यप्रति आकृष्ट रहे छे अने एक प्रसंगे ते छानामानो नाशी जाय छे. आ पछी ते ब्राह्मणोनीपासे धर्मशास्त्रोनो अभ्यास करे छे पण तेओना सिद्धान्तोथी असतुष्ट रहेतां वनमां जई तपश्चर्या करे छे. तपश्चर्या केवळ कष्टरूप समजता तेनो त्याग करी दृश्य विश्वप्रपंचनुं कारण शोधवामां ते रोकाय छे, अने पछी पोताने जे तत्त्व जणाय छे तेनो उपदेश करवाने ते निकळी पडे छे.

तेणे जे सिद्धांत बांध्या ते जाणवानुं आपणने साधन नथी पण माधवाचार्य बौद्ध सिद्धान्त आपे छे ते आ प्रमाणे छेः—

बौद्धो प्रत्यक्ष अने अनुमान बे प्रमाणनो स्वीकार करे छे. परम पुरुषार्थनी प्राप्ति चार भावनाओथी–चारप्रकारनो वारंवार विचार करी निश्चय करवाथी थाय छे. आ चार भावनाओ आ प्रमाणे छेः (१) सर्व क्षणिक छे; (२) सर्व दुःख छे; (३) सर्व-स्वलक्षण छे (एकना जेवुं अन्य नथी–पोते पोतानाजेवुंज छे; अने (४) सर्वशून्य छे. आ चार भावनाओथी सकल वासना-ओनी निवृत्ति थता शून्यरूप परनिर्वाणनो आविर्भाव थाय छे. चर्म तथा कमंडलु धारण करवा ए वगेरे (जुओ पृष्ठ ३०.) बौद्ध भिक्षुकोनो आचार छे. योग अने आचार ए शिष्यनां कर्तव्य छे. अज्ञातना ज्ञाननी प्राप्तिने माटे पूछवुं ते योग अने गुरुए कहेला अर्थनो अंगीकार ते आचार. भावमात्र सत् पण नथी, असत् पण नथी, सदसत् नथी तेम सदसत् नथी एम पण नथी. ते अनिर्वचनीय अने निःस्वभाव छे. तेओनु जेम जेम चिंतन थाय छे तेम तेम ते विशीर्ण थाय छे, अने एकना एक पदार्थमां भिन्न भिन्न मनुष्योनी भिन्न भिन्न कल्पनाओ होवाथी पदार्थमात्र केवल शून्यरूप छे. जे लोको आ प्रमाणे सर्व शून्यत्वनो अंगीकार करे छे ते माध्यमिक कहेवाय छे.(पृष्ठ १९). योगाचार बौद्धो भावनाचतुष्टयने निर्वाणनो हेतु माने छे अने बाह्य पदार्थने शून्य माने छे पण आंतर अर्थ–स्वयंवेदन–नो स्वीकार करे छे. अनादि मिथ्या वासना–अज्ञान–ने लीधे स्वयं-वेदन–(बुद्धि)–जे वस्तुतः भेदभेदकाकाररहित छे, ते भिन्नवत् भासे छे अने तेथी बुद्धिथी अभिन्न एवा बाह्य अर्थ जाणे भिन्न होय एवा जणाय छे. सौत्रान्तिक बौद्धो बाह्यवस्तुने केवल शून्य मानता नथी पण तेने अनुमेय माने छे. बाह्यपदार्थनो उद्भव–ज्ञान–निरंतर थया करतु नथी पण कदाचित् थाय छे

तेथी ते कइ पण छे. आ लोको आ प्रमाणे आलयविज्ञान अने प्रवृत्तिविज्ञान बनेनो स्वीकार करे छे. वैभाषिक बौद्धो बाह्य अर्थने प्रत्यक्ष माने छे वळी ते सविकल्प ज्ञानने अप्रमाण माने छे अने निर्विकल्प ज्ञानने प्रमाण माने छे.

(३) **जैनमत** आपणा प्रांतमा महोटा भागमा माननामा आवे छे अने तेथी तेना संबंधमा जरा वधारे लखवु योग्य धारवामा आवे छे आ धर्मना केटलाक सारा विद्वान् आचार्यो थई गया छे अने तेओए भिन्न भिन्न विषयोउपर अनेक ग्रंथो लख्या छे ब्राह्मणोना पुराण जेवा आ लोकोमा पण आदिपुराण, उत्तर पुराण, चामुंडरायपुराण विगेरे केटलाक पुराणो छे अने तेमा केटलाक प्रचूर्ण विषयो साथे तीर्थंकरोना चरित्र आपवामा आवे छे. आमाना घणाखरा पुराणो काचीना राजा अमोघवर्षना गुरु जिनसेनाचार्यना लखेला कहेवाय छे पुराणोने मळता जिन दत्तरायचरित्र, पूज्यपादचरित्र वगेरे चारित्र पण लखाया छे. आ उपरांत जैनधर्मना आचार विचार सिद्धान्त अने आगम जेवा, व्याकरण न्याय योग इत्यादि विषयना, अने खगोळ, गणित वगेरेना, अनेक पुस्तको जैन लोकोना पोताना जोवामा आवे छे आ ग्रंथोमाना केटलाक मागधी भाषामा अने केटलाक संस्कृत भाषामा छे गुजरातना राजा कुमारपालना वखतमा हेमचंद्र थया तेमणे जैन धर्मने घणो दीपाव्यो छे अने पोते अनेक ग्रंथो रची जैनसाहित्यना भंडोळमा अमूल्य वधारो कर्यो छे

जैनो वेदने प्रमाण मानता नथी, केटलाक पुरुषो आचरणनो क्षय करी सर्वज्ञ थई गया तेओने ते देवलोक करतां पण अधिक माने छे, अने जीवमात्र उपर दया करवी ए मुख्य धर्म समजे छे जे सर्वज्ञ पुरुषोने तेओ माने छे तेमांना चोवीस अवसर्पिणी कालमा थई गया छे, चोवीस चालता कालमा थया छे, अने चोवीस उत्सर्पिणी कालमा थवाना छे चालता काल-

मा जे चोवीस पुरुषो थया तेमाना प्रथम ऋषभदेव, तेवीसमा पार्श्वनाथ अने चोवीसमा महावीर छे, अने जैन 'डेरासरो' मा छेल्ला बेनी मूर्तिओ ने प्रधान स्थान आपवामा आवे छे. आ सर्वज्ञोने जगत्प्रभु, क्षीणकर्म, अधीश्वर, देवाधिदेव इत्यादि विशेषणो आपवामा आवे छे.

चालता कालना छेल्ला तीर्थंकर महावीर स्वामीनो पृथ्वी उपर कुमारपालनी पहेला १६६९ वर्ष उपर, छेल्लो जन्म थयो ते पहेला तेमना अनेक जन्म थया छे, अने ते सर्वना संबधमा बोलवु आ स्थळे अशक्यजेवु छे. आ छेल्लो जन्म भरतक्षेत्रमा इक्ष्वाकु कुलना राजा सिद्धार्थनी धर्मपत्नी त्रिशलाथी चैत्रमासना शुक्लपक्षनी त्रयोदशीने दिवसे थयो छे. युवावस्थामा आव्यापछी महावीरना समरवीरनी पुत्री यशोदासाथे लग्न थाय छे अने ते मने प्रियदर्शना नामनी पुत्री थाय छे. महावीरनु वय अठ्ठावीस वर्षनु थता सिद्धार्थ अने त्रिशलानु मरण थाय छे अने ते पछी ते गृहस्थाश्रमनो त्याग करी यतिना धर्म स्वीकारे छे बे वर्ष सुधी स्वस्थानमा रही, यतिना धर्मनु उत्तम प्रकारे पालन करी, वीतरागवृत्ति रही, महावीर यात्राने माटे नीकळी पडे छे यात्रानां प्रथम छ वर्षमा घणोखरो वखत ते उपवासमा, नासिकाना अग्र उपर दृष्टि राखी ध्यान करवामा, अने मौन धारण करवामां काढे छे, अने इद्रनी आज्ञाथी सिद्धार्थ नामनो यक्ष निरतर तेमनु रक्षण करतो पासेनेपासे रहे छे. राजगृहनी पासे आवेला नालन्दा गाममां तेमने एक गोशाल नामनो माणस मळे छे अने ते तेमनो शिष्य थाय छे. बुद्धचरित्रमा मार जेम बुद्धने छलचाववानो प्रयत्न करे छे तेम महावीरना संबधमां पण थाय छे, पण ते पोताना निश्चयमा बहुज दृढ रहे छे. आ प्रमाणे ते बार वर्ष काढे छे अने पछी जेम सर्प कचुकी उतारी नाखे छे अने [illegible] जेम चोढा उडी जाय छे तेम महावीरना कर्म-

बंध छूटी जाय छे अने ऋजुपालिकाना उत्तर कंठ उपर शाल-वृक्षनी नीचे तेमने केवलनी प्राप्ति थाय छे अने ते केवली थाय छे. सर्व प्रकारनां आवरणनो विलय थतां चेतनस्वरूपनो आविर्भाव थाय छे ते केवल कहेवाय छे अने केवल जेने प्राप्त छे ते केवली कहेवाय छे, आ पछी इंद्रादि देवथी निरंतर सेवाता महावीर अपाप पुरी प्रति जाय छे, अने त्यां पोताना धर्मनो उपदेश करे छे. ज्यारे महावीरनी कीर्ति घणी प्रसरे छे त्यारे मगध देशना अनेक विद्वान् ब्राह्मणो तेमनी साथे वादविवाद करवाने जाय छे पण ते सर्व हारी जई अर्हत् भगवान् (महावीर) ने शरण थई जाय छे अने तेना गणधर थईने रहे छे. एम कहेवाय छे के महावीरनी साथे आ वखते चौद सहस्र साधु, छत्रीस सहस्र साध्वी, त्रणसो श्रमणक, एक सहस्र अने त्रणसो अवधिज्ञानीओ, सातसो केवली, पांचसो मनोवित्, एक लक्ष अने पचास सहस्र श्रावक, अने त्रण लक्ष अने एंसी सहस्र श्राविकाओ, एटलां हतां. महावीर ज्यारे शरीरनो त्याग करे छे त्यारे शक्रादि इंद्रो तेना देहनुं दहन करे छे, अने दतादि जे भागनुं दहन थतुं नथी ते भिन्न भिन्न देवो लई जई पोतानी पासे राखे छे. आ प्रमाणे महावीर चरित्रनो सारांश छे.

हवे आपणे जैन सिद्धान्तोनुं दिग्दर्शन करी जईए. कर्मफलप्रदाता अने जगतनुं नित्य मूळ कारण जे ईश्वर तेनो जैनो स्वीकार करता नथी; प्रत्यक्ष अनुमान अने शब्द त्रण प्रमाण मानवामां आवे छे, पण शब्द प्रमाणमां वेद नहि पण तेमनां पोतानां आगम मानवामां आवे छे. आ आगम सर्वज्ञना शब्द छे अने मनुष्य सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, अने सम्यक् चारित्रथी आवरणनो क्षय करी सर्वज्ञ थई शके छे. (भाषान्तर पृष्ठ ३८, ४०, ४१ मां आ त्रण उपायनां स्वरूप आप्यां छे). आ मतमां मुख्य बे तत्त्व छे, जीव अने अजीव; अने ते बंने अ-

नादि अने अनंत छे. केटलाएक पदार्थनी व्यवस्था नव प्रकारे करे छे; जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा, बंध, अने मोक्ष, (जीवना स्वरूपने माटे जुओ भाषान्तर पृष्ठ ४१.) अजीवना आकाशास्तिकाय, धर्मास्तिकाय, काल, अने पुद्गल ए मुख्य अने बीजा अवान्तर भेद छे. सुखहेतु पुण्य अने दुःखहेतु पाप छे, अने तेना पण अनेक भेद छे. आस्रव, संवर, बंध अने मोक्षनां स्वरूप भाषांतरमांथी जोई लेवां. जैनोनी जाणवाजेवी प्रक्रिया सप्तभंगीनय छे अने आ सप्तभंगीओनो स्वीकार करवाथी तेओ स्याद्वादीओ कहेवाय छे. जे जैनो संसार त्याग करे छे ते यति कहेवाय छे अने जेओ गृहस्थाश्रममां रहे छे ते श्रावक कहेवाय छे. जैनोना दिगंबर अने श्वेतांबर बे मुख्य वर्ग छे. जो के दिगंबरनो अर्थ नग्न छे अने गोशालना वर्धनसूरि साथेना वादविवादमां "वस्त्रादिसंगरहितो निरपेक्षो व पुष्यपि" इत्यादि शब्दोमां दिगंबरनुं वर्णन करवामां आवे छे, तेमज ब्राह्मणो तेमने नग्न अने विवसन संज्ञा आपे छे, तो पण हालमां कंइ दिगंबर साधुओ नग्न फरता नथी. एम कहेवाय छे के खाती वखते आ लोको पोतानां वस्त्र वेगळां मुके छे अने वो'रती वखते उपरनुं वस्त्र आवृं करे छे. आ बे वर्गमां सातशो भेद छे अने तेमां चोर्यासी मुख्य भेद छे. श्वेतांबरो सुवर्ण रत्नादि अलंकारथी तीर्थंकरनी मूर्तिओने शाभावे छे पण दिगंबरो कंइ ते प्रमाणे करता नथी. श्वेतांबरो बार स्वर्ग अने चोसट इंद्रने माने छे अने दिगंबरो सोळ स्वर्ग अने सो इंद्रने माने छे. श्वेतांबर यतिओ वासणमां खाय छे अने दिगंबर यतिओ वो'रती वखते जे कंइ खावानुं आपवामां आवे छे ते पोताना हाथमां ले छे. श्वेतांबरो रजोहरणी अने कमंडलुने यतिने माटे आवश्यक गणे छे पण दिगंबरो तेम गणता नथी. श्वेतांबरो एम माने छे के अंग (शास्त्रो) तीर्थकरना साक्षात् शिष्योनां रचेलां छे पण दि-

गंबरो एम माने छे के ते पछीना आचार्योनां लखेलां छे. श्वे-तांबरो एम माने छे के स्त्रीने मोक्षनी प्राप्ति थाय छे पण दिगं-बरो तेम मानता नथी.

(४) **रामानुजः**—पद्मपुराणमां लखे छे के 'जे मंत्री संप्रदाय विहीन छे ते निष्फळ छे, माटे कलियुगमां चार सं-प्रदाय थशे. आ चार संप्रदायमांनो प्रथम श्रीसंप्रदाय छे अने तेना मुख्य प्रवर्तक रामानुजाचार्य छे. भार्गवपुराणमां रामानु-जने शेषनो अवतार कह्या छे. दिव्यचरित्रने आधारे जोतां रा-मानुजाचार्यना पितानुं नाम श्री केशवाचार्य अने मातानुं नाम भूमिदेवी छे. रामानुजाचार्य प्रथम कांचीपुरीमां रही सर्व शा-स्त्रोनुं अध्ययन करी थोडो वखत श्री रंगनाथमां रहे छे अने पछि दिग्विजय करवा नीकळे छे. अनेक पाखंडीओनो विजय करी श्री रंगनाथ पाछा आव्या पछी त्यांना चौलराजा केरिकाल साथे अणबनाव थतां रामानुज महीसूरना जैन राजानो आश्रय ले छे अने तेनी पुत्रीना अंगमांथी ब्रह्मराक्षस काढी राजाने वै-ष्णव करे छे. केटलांक वर्ष महीसूरमां रही चौलराजानुं मरण थतां रामानुज श्री रंगनाथ पाछा जाय छे अने त्यांज रही आ-युष्नो शेष ईश्वरोपासनामां व्यतीत करे छे.

रामानुज संप्रदायने माननारा लक्ष्मी अने विष्णुनुं पू-जन करे छे, कंठमां तुलसीनी माळाओ पेहेरे छे, बाहुमूलमां शंखचक्रादिनां छापां करे छे अने ललाटमां ऊर्ध्वपुंड्र करे छे तथा वचे कंकुनी उभी लीटी करी श्री करे छे. व्याससूत्र उपरनुं रामानुजनुं श्रीभाष्य, गीताभाष्य, वेदार्थसंग्रह, वेदान्तप्रदीप, वेदान्तसार, अने वेंकटाचार्यप्रणीत स्तोत्रभाष्य अने शतदू-षिणी ए आ संप्रदायना प्रमाणग्रंथ छे. नारदपांचरात्र अने विष्णुपुराण, नारदीयपुराण, गारुडपुराण, पद्मपुराण, वाराह-पुराण अने श्रीमद्भागवत ए पण प्रमाणग्रंथ गणाय छे.

रामानुज सम्प्रदायवाळा वासुदेवने ब्रह्म कहे छे वासुदेव जगत्नु उपादान तेमज निमित्त कारण छे. अने ते जीवोनो नियामक छे. जो के ते जगत्थी भिन्न नथी तो पण ते निर्गुण नथी, ते सर्व शोभन गुणथी युक्त छे कारणरूपे ब्रह्म ते वासुदेव छे अने कार्यरूपे ब्रह्म ते जगत् छे एम मानवामा आवे छे, वासुदेव सगुण मानवामा आवे छे तेथी आ मत विशिष्टाद्वैत कहेवाय छे विष्णुनी इच्छाथी जगत् थयु छे विष्णु मूळ एक छे पण ते इच्छा करे छे के 'हु एक छु, हु बहु थाउ' आ पछी विष्णुमा जे स्थूळ तत्त्व छे–विष्णुनो चतुर्थभाग जे जड छे–ते महाभूतना रूपमा आविर्भावने पामे छे रामानुज चित् अचित् अने ईश्वर अथवा भोग्य, भोक्ता, अने नियामक ए रीत्या त्रण तत्त्वोनो स्वाकार करे छे केवलाद्वैत वादीओ अनादि, भावरूप अने ज्ञाननिवृत्त्य अविद्याने माने छे तेवी अविद्यानो (अज्ञाननो) आ लोको स्वीकार करता नथी, तेओ एम माने छे के अज्ञान अनादि भावरूप नथी पण ते ज्ञाननो अभाव छे अने ज्ञान आत्मानो गुण छे ससार चक्रनु कारण अनृत एटले अज्ञान नथी पण अनृत एटले अल्प फळवाळु कर्म छे माया एटले अनादि अविद्या नहि पण त्रिगुणात्मक प्रकृति छे परमकारुणिक भक्तवत्सल वासुदेव भगवान् स्वभक्तोना अनुग्रहने माटे स्वलीलाथी अर्चादिस्वरूपे अवस्थित छे (जुओ भाषांतर पृष्ठ ६६) अभिगमनादि (पृष्ठ ६७) पाच प्रकारनी उपासनाथी एकठा थयला विज्ञानवडे दृष्टा अने दर्शननो भेद जता रहेला भक्तवत्सल भगवान् पोताना उपासकोने स्वपद आपे छे. विष्णुपदनी प्राप्तिनो उपाय भक्ति (पृष्ठ ७२) छे, अने ते विवेकादिथी सिद्ध थाय छे

रामानुजना शिष्य देवाचार्य थया छे, अने देवाचार्यना राघवानद अने तेना रामानद थया छे रामानदे रामानदी पथ

स्थाप्यो छे अने गुजरातमां साधारण रीते प्रत्येक गाममां रामानंदी साधुनुं मंदिर जोवामां आवे छे, वळी कबीर, नानक, दादु वगेरे अनेक पंथ जोवामां आवे छे ते सर्व पण रामानंदमांथी नीकळया छे.

(५) **माध्वी संप्रदाय** (ब्रह्म संप्रदाय अथवा पूर्णप्रज्ञ संप्रदाय):–मध्व, पूर्णप्रज्ञ अथा आनंदतीर्थना नामथी ओळखाय छे. आ मतना प्रवर्तकनो जन्म बारमा शतकना अंतमां थयो छे एम कहेवामां आवे छे. तेना पितानुं नाम मधिज भट्ट छे. आनंदतीर्थ वायुनो अवतार मनाय छे अने हनुमान् अने भीम ए तेना पूर्व अवतार छे. तेणे प्रथम शास्त्रनो अभ्यास अनंतेश्वरमां कर्यो अने नव वर्षनुं वय थतां वैष्णवदीक्षा लीधी. तेणे लघुवयमां भगवद्गीता उपर भाष्य कर्युं अने ते बद्रिकाश्रममां जई व्यास भगवान्ने देखाडयुं. व्यास तेना उपर घणा प्रसन्न थया अने तेने त्रण शालग्राम आप्या. बद्रिकाश्रममांथी आव्या पछी तेणे भिन्नभिन्न स्थले विष्णुमंदिर स्थाप्यां अने पोताना धर्मनो उपदेश करवा मांड्यो. आनंदतीर्थे साडत्रीश ग्रंथ लख्या छे अने तेमांना मुख्य सूत्रभाष्य, गीताभाष्य, ऋग्भाष्य, दशोपनिषद्भाष्य, अनुवाकानुनयविवरण, अनुवेदान्तरसप्रकरण, भारततात्पर्यनिर्णय, भागवततात्पर्य, गीतातात्पर्य, कृष्णामृतमहार्णव, तन्त्रसार, इत्यादि इत्यादि छे. अगन्याशी वर्षनुं वय थतां ते बद्रिकाश्रममां जईने रहे छे. आ उपरांत चार वेद महाभारत, मूलरामायण, अने पांचरात्र ए आ संप्रदायमां प्रमाण मनाय छे.

श्री संप्रदायवाळा गोपीचंदनुं जेवुं उर्ध्वपुंड् करे छे तेवुं आ संप्रदायवाळा पण करे छे पण तेमां फेर ए छे के श्री संप्रदायवाळा वचे कुंकुनी उभी लीटी करीने श्री करे छे तेवी आ नथी करता पण तेने बदले बाळेला सोपारीनी उभी लीटी करे छे अने तेने छेडे हल्दरनो चांल्लो करे छे. वळी आ

लोको तप्तमुद्रा धारण करे छे (पृष्ठ ७८). अने तेने माटे उपनिषद् सुधीना प्रमाणो आपे छे. सप्रदायनो मुख्य सिद्धान्त ए छे के नारायण एज परब्रह्म छे अने ते ज्यारे ब्रह्मा के शकर न होता त्यारे पण हता एम कहे छे, अने तेना प्रमाणने माटे **'एको नारायण आसीन्न ब्रह्मा न च शकरः'**, 'आनद एक एवाग्र आसीन्नारायण प्रभु ' इत्यादि वाक्यो लावे छे. सर्व जगत् आ नारायण (विष्णु) ना देहमाथी थयु छे, अने विष्णु स्वतत्र निर्दोष अने अशेषसद्गुण छे. स्वतत्र अने अस्वतत्र एवा बे तत्त्वमानवामा आवे छे, तेथी आ लोको द्वैतवादी कहेवाय छे. तेओ एम माने छे के जेम पक्षी अने सूत्र, नदीओ अने समुद्र, पुरुष अने विषय एक बीजाथी भिन्न छे तेम जीव अने ईश्वर पण सर्वदा परस्पर विलक्षण छे, अने तेथी तेमनु ऐक्य थवु असभवित छे. विष्णुना प्रसादथी मनुष्यनु ससारमाथी मुक्त थई वैकुठमा विष्णुना सामीप्यमा जईने रहेवु ते मोक्ष छे, अने आ प्रसाद विष्णुना गुणोत्कर्षना ज्ञा नथी थाय छे अभेदना ज्ञानथी नथी थतो. हु राजा छु एम कहेनारने राजा दड आपे छे पण जे तेना गुणोत्कर्ष बोले छे तेना उपर ते प्रसन्न थाय छे ते प्रमाणे जे कोई पोताने ईश्वरथी अभिन्न गणे छे ते ईश्वरनो द्वेष करनारा छे. अकन, नामकरण अने भजन ए रीते सेवा त्रण प्रकारनी छे. तप्तमुद्रा (शख, चक्र, गदा अने पद्मना चिन्ह) धारण करवा ते अकन; पुत्रादिनु नारायण वगेरे नाम पाडवु ते नामकरण, अने मन वाणी अने शरीर वडे दया सत्य अने दानादि करवां ते भजन. जगत् माया मात्र छे एटले ईश्वरनी प्रज्ञा जे माया तेथी ते मित (ज्ञात) अने त्रात छे. (मा=मित, त्र=त्रात). अत्मातत्त्वमसि ए वाक्यनो अर्थ आत्माऽतत्त्वमसि वाक्य लईने करवामां आवे छे. 'ब्रह्मने जाणे छे ते ब्रह्मज थाय छे ' एनो अर्थ ब-

झवत् थाय छे एम लेवामां आवे छे. आ प्रमाणे आ मत शांकरमतने सर्वांशे विरुद्ध जणाय छे.

रुद्रसंप्रदाय अथवा वल्लभाचार्यनो पुष्टिमार्ग अने निंबार्कनो सनकादि संप्रदाय ए बंने माधवाचार्य पछी थयला होवाथी तेना संबंधमा सर्वदर्शनसंग्रहमां कंई कहेवामां आवतुं नथी, पण आ बंने मार्ग गुजरातमां जोवामां आवे छे तेथी तेमना संबंधमां आ स्थळे कंई कहेवुं उचित धारवामां आवे छे.

पुष्टिमार्गमां बाळगोपाळनी प्रेमभक्ति ए मुख्य सिद्धान्त छे अने आ सिद्धान्ततुं प्रथम स्वरूप बांधनार विष्णुस्वामी कहेवाय छे. विष्णुस्वामी पछी ज्ञानदेव, ज्ञानदेव पछी नामदेव अने त्रिलोचन अने ते पछी वल्लभाचार्य थया छे. वल्लभाचार्य तैलंगब्राह्मण लक्ष्मणभट्टना पुत्र छे अने ते विष्णुनो अवतार मनाय छे. तेमणे संस्कृतमां अनेक ग्रंथ लख्या छे अने तेमां मुख्य श्रीमद्भागवत उपर सुबोधिनी नामनी टीका, व्याससूत्रभाष्य (अणुभाष्य), सिद्धान्तरहस्य, भागवतलीलारहस्य, एकान्तरहस्य, इत्यादि मुख्य छे. वल्लभाचार्य पछी तेमना पुत्र श्रीविठ्ठलनाथ थया छे अने ते अने तेमना वंशजो श्रीगोसांईजी कहेवाय छे. श्रीविठ्ठलनाथजीना श्रीगिरिधररायजी आदि सातपुत्र थया छे अने तेमनी सात गादीओ थई छे; म्होटी गादी श्रीनाथजीनी छे.

आ संप्रदायमां विष्णुनो कृष्णावतार पूर्णावतार मनाय छे अने तेमां पण एकादश वर्ष अने छ मास सुधी श्रीकृष्ण गोकुळमां रह्या तेटलो वखत सर्वोत्तम मनाय छे. महाभारतना वनपर्वमां अवान्तर प्रलयनुं वर्णन आवे छे ते वखते मार्कंडेय मुनि विष्णुने चंद्रना जेवा मुखवाळा बाळकना रूपमां जुवे छे अने त्रिकाळज्ञानी होवा छतां पण ते तेना स्वरूपने यथार्थ रीते जाणी शकता नथी एवी आख्यायिका छे. श्रीमद्भागवत-

मां वसुदेव बालकृष्णने शखगदादि आयुधथी युक्त, चतुर्भुज, कमलनयन, श्रीवत्सलांछन इत्यादि रूपमां जुवे छे, अने यशोदा बालकृष्णना मुखमां सर्व विश्वने जुवे छे एवी कथाओ छे. आ सर्व उपरथी जोता बालकृष्ण विष्णुनो पूर्णावतार मानवामा आवे छे ते सप्रमाण ठरावी शकाय छे ब्रह्मवैवर्त पुराणने आधारे कृष्णनु स्थान गोलोक छे अने ते त्रण जगत्थी पण उचे छे ऋक्संहितामा पण ' यत्रगावो भूरिशृगा अयास अत्राह तदुरुगायस्य वृष्ण परमपदमवभाति भूरि' आ मत्र विष्णुनु परमपद (स्थान) जे गोलोक तेनु सूचन करे छे. विष्णुनु वैकुठ अने शिवनो कैलास ए गोलोकथी पचास सहस्र योजन नीचे छे सर्व विश्वनो प्रलय थाय छे पण गोलोकनो थतो नथी. गोलोकना मध्यमा मेघ जेवा श्याम श्रीबालकृष्ण हाथमा वीणा लई अखड रास कर्या करे छे सर्व सचराचर विश्वनी उत्पत्ति श्रीबालकृष्णथी मानवामां आवे छे. तेमना दक्षिण अगमाथी नारायण, वाम अगमाथी महादेव, हस्तमाथी ब्रह्मा, इत्यादि इत्यादि अगमाथी जुदा जुदा देव थया छे.

सर्व विश्व श्रीबालकृष्णथी उत्पन्न थएलु मानवामां आवे छे तेथी आ मत अद्वैत छे अने पुष्टि मार्गवाळा तेने शुद्धाद्वैत कहे छे चोरासी वैष्णवनी वार्तामा एक ठेकाणे लखे छे के श्री आचार्यजीए श्री ठाकोरजाने पुच्छयु के जीवनो स्वभाव ज्यारे दोषवत छे त्यारे तेनो आपना साथे सबध (ब्रह्मसबध) शी रीते थई शके? त्यारे श्री ठाकुरजी कहे छे के तमे जे जीवनो ब्रह्म सबध करशो तेनो हु अगीकार करीश आ उपरथी जोतां आ मार्गमा जीवनो ब्रह्मसाथे सबध मानवामा आवे छे, पण मध्वनी पेठे जीव ईश्वरने केवल भिन्न मानवामा आवता नथी वर्तमानमा श्रीदेवकीनदनाचार्य अने श्रीगटुलालजी पुष्टि मार्गने दीपावनाने प्रशस्य प्रयत्न करी रह्या छे, अने तेथी थोडा वखतमा

आ पंथना तत्त्वज्ञानना ग्रंथ घणाना जाणवामां आवे एवा रूपमा आवशे एवी आशा छे. शुद्धाद्वैतवादीओ अने केवळा-द्वैत वादीओमा केटलो वास्तविक विरोध छे ते जाणवानु मने कई साधन न मळवाथी तेना संबंधमा म्हाराथी कई पण कही शकातुं नथी.

सनकादि संप्रदाय अथवा निंबार्क संप्रदाय गुजरातमां चाले छे ए वात प्रथम म्हारा जाणवामा दशक्रोइ तालुकाना वहेलाळ गाममा आवी. अहीं अने पासे आवेला भूवालडी नामना गाममा म्हारी ज्ञातिना केटलाक रायकवाळ ब्राह्मण भक्तने नामे ओळखाय छे अने तेओ कठीओ बांधी वैष्णव धर्मनो उपदेश करे छे. आमाना केटलाक साथे वात करतां म्हारा जाणवामा आव्यु के तेओ निंबार्क संप्रदायना छे.

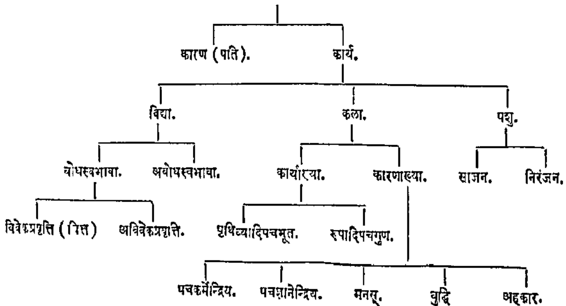
निंबार्कनु नाम भास्कराचार्य छे अने ते सूर्यनो अवतार मनाय छे. पोताना चतुर्थाश्रममा ते वृंदावन आगळ रहेता हता ते-षामा कोई यतिनु त्या आववु थयु अने बनेनो वादविवाद थतां सूर्यने अस्त थवानो वखत थयो. हवे सूर्यास्त पछी भोजन न-कराय एवो यतिनो समय होवाथी तेने ज्यारे भास्कराचार्ये भोजननी तैआरी करवानु कह्यु त्यारे तेणे सखेद जणाव्यु के आज मने उपवास पडशे. आ उपरथी भास्कराचार्ये तेने कह्यु के हजु सूर्यने अस्त थवानी वार छे माटे तमे पेला निंबवृक्ष नीचे पाक तैआर करो अने जो ते पहेलां सूर्यास्त थई जाय तो भोजन न करशो यतिए आ वचननो स्वीकार करी पाकनो आरंभ कर्यो अने भास्कराचार्ये पोताना प्रभावथी सूर्यने निंबवृक्षे यति जमी रहे त्या सुधी स्तंभावी राख्यो. आथी तेनु नाम निंबार्क के निंबादित्य पड्यु निंबादित्यने माटे एम कहेवाय छे के तेणे संस्कृतमां केटलाक पुस्तक लख्यां छे पण ते मळतां नथी तेनुं कारण ए छे के औरंगझेबे ते सर्वने मथुरामा बाळी मुक्यां. आ

सम्प्रदाय घणो जुनो होवाथी अने पद्मपुराण अने भक्तमालमां तेना सम्बन्धमा कहेवामा आवे छे तेथी आ धर्ममा सारा अथो हशे एम मानवाने कारण रहे छे गुजरातमा में जे उपर कह्या ते निंबादित्यना अनुयायीओ—वहेलाळ अने मुगलडीवाळा भक्तो, भागवत, पुराण, भक्तमाल, रामायण, इत्यादिने प्रमाण माने छे, विष्णुनी भक्ति श्रेयस्कर माने छे; द्वैताद्वैतनी चर्चामा उतरवु निरर्थक माने छे, अने भजन कीर्तनमा आनद माने छे मुख्य त्वे करीने अमदावाद जिल्लाना पाटीदार लोकोनो महोटो भाग आ भक्तोनी कठीओ बधावी शिष्य थाय छे तेओ गोपीचदनना उभा पोहोळा अने नाकनी दाडी सुधी अने एवा तिलक करे छे अने तुलसानी लाबी लाबी माळाओ पहेरे छे.

(६) पाशुपतः—आ मतना स्थापनार नकुलीश कहेवाय छे अने तेमणे पाशुपत शास्त्र नामनो सूत्रग्रथ लख्यो छे. पद्मपुराणमा लखे छे के शिवे नमुचि आदि दैत्योने शिक्षा करवा माटे शैवमत नामनु पाषडमत चलावाने पाशुपत शास्त्र रच्यु छे. शकरदिग्विजयमा शैव, रौद्र, उग्र, भाक्त, जगम अने पाशुपत ए छ शैव मार्गोना वर्णन आवे छे अने तेमा पाशुपत ललाट छाती नाभि अने बाहुमूलमा शिवलिंगनु चिन्ह करनारा वर्णव्या छे. योगने अने पाशुपत शास्त्रने निकट सबध जणाय छे अने ऐश्वर्यप्राप्ति ए बनेना अभाष्ट अने शक्य गणवामा आवे छे. कूर्मपुराणने आधारे जोतां शिवे हिमालय उपर रही मनुष्यने योग शिखव्यो छे अने तेमा तेमना चार मुख्य शिष्योना अने तेओना अठावीस शिष्योना नाम आप्या छे. नकुलीश तेमा छेल्ला शिष्य गणाय छे मत्स्येन्द्रनाथ जे महोटा योगी गणाई गया छे ते पाशुपत मतने माननारा हता अने शिव पार्वतीने योग शीखवता हता त्यारे तेमणे मत्स्यना उदरमा रहीने तेनु ज्ञान प्राप्त कर्यु एवी दतकथा चाले छे मानः

फटा जोगीओ पाशुपत मतने माननारा छे एम धारवामां आवे छे. पाशुपत शास्त्र, पचार्थभाष्य, पचार्थभाष्यदीपिका, आदर्श, इत्यादि आ मतनां शास्त्र छे अने नकुलीश हरदत्त वगेरे तेमा आचार्य थई गया छे. हठयोगने अने आ मतने सबध होय तेम लागे छे अने आ मत माननाराओनी केटलीक लोकातीत चर्याओ जोता तेनो कापालिक अने अघोरीसाथे सबध होय एम अनुमान थाय छे.

लाभादि आठ पंचक (पृष्ठ ९०) अने भैक्ष्यादि त्रण वृत्तिओने जाणनार अने तेनुं अन्यने ज्ञान करनार गुरु आ दर्शनमां आवश्यक मनाय छे. मिथ्या ज्ञानादि पंचमल पशुत्व (जीवत्व)नां मूल छे अने वासचर्यादिथी अने गुरुजन आदि देशथी ज्ञानादिफल, अनुक्रमे लब्ध करीने अने तेने वृद्ध करीने कृतकृत्य थवु ए इष्ट छे. भिक्षामार्गीने खावु के छांडेलु खावुं के रस्ते पडेलुं खावुं एथी मिथ्याज्ञानादि मल लघु थाय छे. क्रियालक्षण अने क्रियोपरमलक्षण योगथी आत्मा अने ईश्वरनो सबध थाय छे जप ध्यानादि क्रियालक्षणयोग छे अने सविद् क्रियोपरमलक्षण योग छे. योगनी सिद्धिने माटे व्रत अने द्वार ए बे प्रकारनी चर्या आवश्यक छे. भस्मस्नान, भस्मशयन, हास्यादि (९३–९४.) वडे सेवन, ए व्रत छे अने उघाडगर उघेलाना जेवा चिन्ह देखाडवा, शरीर कपावनु, निंद्य कर्म करवां, निंद्य शब्द बोलवा इत्यादि क्राथनादि (९४) द्वार छे. दुःखनो उच्छेद अने ऐश्वर्यप्राप्ति ए बे आ शास्त्रमा फल छे. धीशक्ति अने क्रियाशक्ति ए बे प्रकारनु ऐश्वर्य (सिद्धि) छे. (९१–९२.) आ मतमा ईश्वर कर्मनिरपेक्ष मानवामां आवे छे अने तत्त्वव्यवस्था आ प्रमाणे छे


तत्त्व.
कारण (पति).
कार्य.
विद्या.
कला.
पशु.
बोधस्वभावा.
अबोधस्वभावा.
कार्याख्या.
कारणाख्या.
साजन.
निरंजन.
विवेकप्रवृत्ति (चित्त)
अविवेकप्रवृत्ति.
पृथिव्यादिपंचभूत.
रूपादिपंचगुण.
पंचकर्मेन्द्रिय.
पंचज्ञानेन्द्रिय.
मनस्.
बुद्धि
अहंकार.

(७) शैवः—आ मत भारतवर्षमां घणा पुरातनकालथी चालतु आवे छे. विप्राणां दैवत शंभु एवु मनुनु वाक्य कहेवाय छे, अने शिव, रुद्र इत्यादि नामवाळा अनेक स्तुतिवाक्यो वेद ब्राह्मण अने उपनिषद्मांथी पण मळी आवे छे. मुसलमानो आव्या ते पेहेला द्वादश ज्योतिर्लिंग आ भूमिमां सुप्रसिद्ध हता एम इतिहास उपरथी जणाय छे अने अनेक पुराण तंत्र आगम रहस्य अने स्तोत्रादिना विस्तीर्ण ग्रंथो जोवामां आवे छे तेथी आ मतनी लोकप्रियता समजाय छे. आगळ जतां वैष्णव मत माननाराओनो अने शैव मत माननाराओनो मोटो कलह जोवामां आवे छे अने पद्मपुराण जेवामां शिवनी स्तुति करनारने पापड मानवामां आव्या छे. आम छतां पण हजुसुधी ब्राह्मणवर्गनो महोटो भाग शैव मतने माननाराओनो छे, अने एक पण गाम एवु अभाग्येज जोवामां आवशे के ज्यां महादेवनु स्थान नहि होय. माधवाचार्य जे शिवदर्शन आपे छे ते रूपमां शिवमत मनातु आपणे अहीं जोवामां आवतुं नथी अने ते जे जे ग्रंथोनां नाम

क्षय गणाय छे शिवतत्त्वनी प्राप्ति ए परम पुरुषार्थ छे अने तेने माटे दीक्षा ए सर्वोत्तम उपाय छे आ दीक्षानो विधि क्रियायोग अने चर्या छे अने तेथा पाशनो क्षय थता शिवत्वनी प्राप्ति थाय छे. मल, कर्म, माया, अने रोध ए चार पाश छे जीवना स्वाभाविकी अशुचि ते मल छे, फलार्थी मनुष्यथी जे कराय छे ते कर्म छे अने बीज अने अंकुरनी पेठे ते प्रवाहरूपे अनादि छे जेमा सर्व जगत् प्रलय वखते समाई जाय छे (माति) अने जेमाथी सृष्टि वखते पाछु आवे छे (याति) ते माया छे रोधशक्ति ते पुरुषनु तिरोधान करनारी शक्ति छे, अने तिरोभाव ए शिवना पंचकृत्यमानु एक होवाथी ते वस्तुत पाश नथी तो पण ते पाश मल कर्म अने माया) ना अधिष्ठानथा तिरोधान करे छे माटे लाक्षणिक रीत्या पाश कहेवाय छे.

(८) प्रत्यभिज्ञ:—आ मतने माननारा आपणा प्रांतमा जोवामा आवता नथी पण ते शांकरवेदान्तने घणे अंशे मळतु आवे छे सूत्र, वृत्ति इत्यादि (पृष्ठ १०९) आ मतना शास्त्रो छे अने तेमा अभिनवगुप्ताचार्य, उदयकरनो पुत्र उत्पल, सोमानन्दनाथ, वसुगुप्ताचार्य वगेरे आचार्यो थई गया छे आ मतनो मुख्य सिद्धान्त ए छे के जीव शिवथी भिन्न नथी अने दृश्य जगत् शिवनो अवभास छे—अर्थात् शिव स्वेच्छाथी अने स्वात्रियाथी जगद्रूपे अवभासे छे प्रमेय अने प्रमाता एक बीजाथी भिन्न नथी पण अनादि अज्ञान (अविद्या) था प्रमाता पोताने प्रमेयथी भिन्न जुवे छे अने तेथी अज्ञाननिवृत्तिनी कर्तव्यता रहे छे. वेदांतशास्त्रमा अने आ दर्शनमा आ प्रमाणे अनादि अज्ञान माननामा आव छे अने अनेक सविचार पुरुषोने शंका थाय छे के शुद्ध ब्रह्मरूप आत्मानो अज्ञान साथे योग शी रीते थयो? आ शंका वर्तमान विचारकोने थाय छे एटलुज नहि पण पूर्वेमा पण एवी शंकाओ करनारा थई गया छे. तदनन्य

त्वमारंभणशब्दादिभ्यः (२-१-१४) ए सूत्रनुं व्याख्यान करतां श्री शंकराचार्य आ शंका लावी तेनुं समाधान करे छे. तेमज सुरेश्वराचार्यनी नैष्कर्म्यसिद्धिना द्वितीय अध्यायमां पण आ विषयना संबंधमां घणुं कहेवामां आवे छे[१]. अहीं सर्वत्र कहेवानुं तात्पर्य ए छे के वस्तुतः आत्मा अने अज्ञाननो योगज नथी पण आ योग केवल प्रातीतिक छे. शास्त्रनी व्यवस्था करवाने माटे प्रथम तो आपणने पदार्थो जे स्थितिमां जणाय ते स्थितिमां तेमने सत्य मानी पछी तेमनो आपणे विचार करीए छीए. 'हुं कोण?' 'आ प्रतीत थतुं विश्व शुं?' ए प्रश्नोना समाधानने माटे शास्त्रप्रवृत्ति छे अने हुं अने आ विश्व ए बेने पृथक् मानी पछी आपणी प्रतीति यथार्थ छे के नहि तेनो आपणे विचार करीए छीए. अहीं 'आपणे' अथवा 'हुं' शब्द बे भिन्न भिन्न अर्थमां समजाय छे. हुं जोनारो अने हुं विचार करनारो. आ हुं-पदवाच्य उभय पदार्थ वस्तुतः एक छे, पण मुख्यवृत्ति अने गौणवृत्तिथी लेतां ते बे जेवा जणाय छे. हवे विचार करतां आ विश्व मने जे रूपमां प्रतीत थाय छे ते रूपमां नथी एम समजाय छे. आ प्रमाणे मात्र विश्वनुं अभावविशिष्ट ज्ञान थतांज आपणो विचार विरमीजतो नथी पण वास्तविक विश्व प्रातीतिक विश्व नथी त्यारे ते छे शुं एम आपणने जाणवानुं रहे छे. यथार्थ विचार थतां विचार्य ते विचारक पोतेज छे एम जणाय छे. आ कंइ प्रतीति नथी पण निश्चय छे; अने आ विचार्य-विश्व वस्तुतः हुं विचारक छुं ए निश्चयनी साथे पूर्वना प्रातीतिक अनुभवनी तुलना करतां आ प्रातीतिक अनुभव ते अज्ञान (भावरूप, अभावरूप नहि) जन्य छे एम निश्चयना सत्यत्वनी अपेक्षाए अन्यने कहेवामां आवे छे, अने आ कहेवानुं ज्यारे निश्चय थाय छे त्यारेज रहे छे,

---

१. श्रीमहादेवशास्त्री नैष्कर्म्यसिद्धिनुं भाषान्तर करवानो उपक्रम मैं कर्यो छे.

(अन्यथा तुलनाना विषयनो असंभव रहे). शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वरूप जे हुं तेमां अज्ञान क्यांथी आव्युं एम ज्यारे हुं शुद्ध बुद्ध मुक्त छुं एवो निश्चय थयो होय त्यारेज आपणाथी जाणी शकाय, पण आवो निश्चय थतां अज्ञानना विचार्यत्वनी हानि थई जाय एटले पछी 'हुं प्रथम अज्ञान युक्त हतो अने पछी महारुं अज्ञान गलित थई गयुं' एम विचारवानुंज रहेलुं नथी. अन्य जिज्ञासुने बद्ध अने मुक्तनुं स्वरूप समजावतां तेनी प्रवृत्तिने माटे वस्तुस्वरूप प्रथम कहेवुं पडे माटे तत्त्वमसि कहेवानुं रहे, अने तत् अने त्वम् नां स्वरूप तेने समजाववा माटे 'अनादि अज्ञानयुक्त त्वं ते वस्तुतः तत् छुं एम कहेवाय.' आ प्रमाणे जोता आत्मा कंइ एक प्राकृतिक पदार्थ नथी अने अज्ञान कंइ बीजो प्राकृतिक पदार्थ नथी, अने जेम बे प्राकृतिक पदार्थोनो योग थाय तेम आत्मा अने अज्ञाननो योग थतो नथी के जेथी 'आत्मामां अज्ञान क्यांथी आव्युं' एवुं पुछवानुं रहे. महारी इच्छा प्रमेयविवरणसंग्रहनुं भाषांतर करवानी छे ते श्री सद्गुरु परमात्मानी कृपाथी पार पडतां त्यां आ विषयना संबंधमां विशेष कहेवामां आवशे. आ स्थले मात्र दिग्दर्शन कराववा हुं महारा प्रस्तुत विषय उपर जाउं छुं.

उपर आपणे जोयु के प्रत्यभिज्ञावादीओ जीव अने शिवनुं एकत्व माने छे, भेदबुद्धि अनादि अज्ञाननुं कार्य छे, अने आ भेदबुद्धि गलित थई जाय त्यांसुधी प्रत्यभिज्ञाननी अपेक्षा रहे छे. आ दर्शननो सिद्धान्त मात्र आटलोज छे.

(९) रसेश्वर दर्शन —रसेश्वरवादीओना संस्कृतमां अनेक ग्रंथ छे. श्री शंकरदिग्विजयमां सिद्धोपासकोनुं वर्णन आवे छे अने तेओ अपमृत्युआदिने दूर करवाने रसपाननी प्रशंसा करे छे. आ दर्शननो सिद्धान्त ए छे के शरीर ए आद्य धर्मसाधन छे अने पारदादिना विधिवत् पानादिथी आ अने आ शरीरमां अजरत्व अने अमरत्वनी प्राप्ति थई शके छे. पारदने

मारवो, तेने मूर्च्छित करवो, तेने बांधवो, इत्यादि क्रियाओनुं आ शास्त्रमां स्वरूप जणावी तेनो उपयोग जणाव्यो छे. आ शास्त्र केवळ धातुवादने माटे नथी पण मोक्ष ए एवुं परम प्रयोजन छे. वळी पारदना दर्शन, भक्षण, दान अने पूजनथी पण अनेक फळनी प्राप्ति मानवामां आवे छे. पारदना शिवलिंगनुं माहात्म्य काशीआदिनां लिंग करतां पण अधिक छे अने रस (पारद) निंदा करनार महापातकी गणाय छे. **रसोवैब्रह्म** ए श्रुति वाक्य पण रसनुं माहात्म्य जणावे छे.

हवे आपणे षड्दर्शनना संबंधमां बोलवानुं छे. पूर्व मीमांसा अने उत्तर मीमांसा, सांख्य अने योग, अने न्याय अने वैशेषिक ए षड्दर्शन कहेवाय छे. माधवाचार्य आमांनां पांच दर्शन आपे छे अने पाणिनिदर्शनने अने पूर्व मीमांसाने निकट संबंध होवाथी ते पण आपे छे. उत्तर मीमांसा शांकरदर्शनने नामे प्रमेयविवरणसंग्रहमां आपवामां आवे छे. आ स्थळे आपणे माधवाचार्ये आ दर्शनो जे क्रममां लीधां छे तेज क्रममां लई तेओनो सार मात्र जोईये.

(१०) **औलक्य** (औलूक्य) अथवा वैशेषिकदर्शनः—आ दर्शनना स्थापनार कणाद कहेवाय छे. कणादनुं बीजुं नाम कणभक्ष आपवामां आवे छे अने साधारण रीतिए आ शब्दनी व्युत्पत्ति कण (दाणा=परमाणु) अने अद (खावुं) शब्दथी करवामां आवे छे. कणाद एटले परमाणुने कारण माननार (खानार). वळी कणनो अर्थ कागडो थाय छे अने तेथी कणाद एटले काकभक्षक अर्थात् उलूक (घुवड) छे. वैशेषिक शास्त्रनुं नाम औलूक्यदर्शन (माधवाचार्यना सर्वदर्शनमां औलुक्य शब्द आप्यो छे ते पण आ विशेषनाम (संज्ञा) होवाथी साधु छे, जेम के गंगदत्त अने गंगादत्त; कालीदास अने कालिदास,) आपवामां आवे छे ते आ कार-

णथी छे. आ दर्शनमां विशेषने पदार्थ मानवामां आवे छे तेथी ते वैशेषिक कहेवाय छे. कणादनुं बीजुं नाम (कुलनाम) काश्यप छे.

आ दर्शनना मुख्य सिद्धान्त आ प्रमाणे छेः दुःखनुं भान सर्वने छे अने सर्व तेनी निवृत्ति इच्छे छे माटे ते निवृत्य छे. आ निवृत्ति ईश्वरसाक्षात्कारथी थाय छे अने ईश्वरसाक्षात्कार श्रवण मनन अने निदिध्यासनथी थाय छे. मनन करवामां अनुमान आवश्यक छे, अनुमान व्याप्ति (नियतसंबंध) थी थाय छे, अने व्याप्ति पदार्थविवेकनी अपेक्षा करे छे. आ प्रमाणे तत्त्वज्ञान एटले पदार्थविवेक प्राप्य होवाथी तेना संबंधमां शास्त्र व्यवस्था करवामां आवे छे. आ शास्त्रव्यवस्था उद्देश लक्षण अने परीक्षा उपर आधार राखे छे. जेने जेने नाम छे ते पदार्थ छे. उद्देश एटले तेमनां विभागे करीने नामकरण. पदार्थ (अभिधेय) ना मुख्य बे वर्ग थाय छे, भाव अने अभाव. बीजी रीतिए व्यवस्था करतां पदार्थना सत्ता अने उपाधि (सब्स्टन्स् अने कन्डिशन) एवा बे भाग थाय छे. भावपदार्थमां द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष अने समवाय आवे छे, अने अभावमां प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव, अत्यंताभाव अने अन्योन्याभाव आवे छे. आ सर्वनां लक्षण अने तेओना अवान्तर विभाग भाषांतरमां आप्या छे. आत्यंतिकी दुःखनिवृत्तिने आ दर्शनमां मोक्ष मानवामां आवे छे.

(११) **गौतमदर्शन** (*न्यायदर्शन*):—वैशेषिक, सांख्य, योग, इत्यादि सूत्रग्रंथोमां प्रथम सूत्र **अथातः** थी आरम्भ थाय छे ते प्रमाणे आ सूत्रग्रंथमां थतुं नथी तेथी केटलाक एम धारे छे के आ ग्रंथ पाछळथी थयो छे. आ दर्शनमां प्रमाणादि सोळ पदार्थना संबंधमां कहेवामां आवे छे. आ दर्शननो सिद्धान्त आ प्रमाणे छेः—देहादि अनात्म वस्तुमां आत्मबुद्धि-

रूप अज्ञानथी राग, द्वेष, मोह, आदि दोषोनो आविर्भाव थाय छे. आ दोषोथी पापरूप अथवा पुण्यरूप प्रवृत्ति थाय छे. प्रवृत्तिथी धर्माधर्म उत्पन्न थाय छे. ज्यारे कोई पूर्व पुण्यना प्रभावथी आचार्यने प्राप्त करी तदुपदेश वडे करीने 'आ सर्व दुःखनुं स्थान छे अने दु.खथी अनुपक्त छे' एम जाणे छे त्यारे अज्ञानथी आरंभी दुःख सुधीना संसार चक्रने ते हेय गणे छे. वळी आ सर्वनुं मूल अज्ञान छे एम जणातां ते तेनी निवृत्तिनो उपाय जे तत्त्वज्ञान तेने माटे प्रयत्न करे छे, अने तेनी प्राप्ति थतां मिथ्याज्ञान, दोष, प्रवृत्ति, जन्म अने दुःखनो अनुक्रमे नाश थाय छे. आ दर्शनमां दुःखनी निवृत्ति तेज मोक्ष छे, सुखनी प्राप्तिनो स्वीकार करवामां आवतो नथी; अनुमानथी ईश्वरनुं अस्तित्व सिद्ध करवामां आवे छे; अने ईश्वरप्रसाद मोक्षने माटे आवश्यक मानवामां आवे छे.

१२. जैमिनिदर्शनः—आ दर्शन पूर्व मीमांसा अथवा कर्ममीमांसा पण कहेवाय छे. वेदना कर्मकांडनां भिन्न भिन्न वाक्योनी पूर्वापर संगति जणाववी ए आ दर्शननुं मुख्य प्रयोजन छे. कर्ममीमांसानां सूत्रोना कर्ता जैमिनि छे. आ सूत्रोनां व्याख्यान शबरस्वामी अने कुमारिलभट्टे करेलां छे. आ दर्शनमां वेद अपौरुषेय (पुरुष—ईश्वरथी नहि थयला पण अनादि-अनंत अने नित्य) मानवामां आवे छे, अने आ अपौरुषेयत्व शब्दना नित्यत्वने आधारे सिद्ध करवामां आवे छे. वळी धर्मना संबंधमां वेद स्वतः प्रमाण छे एम मीमांसको माने छे.

१३. पाणिनिदर्शनः—आ दर्शनने षड्दर्शनमां गणता नथी तोपण स्फोटाख्य शब्द नित्य छे ए पूर्व मीमांसाना विषयने वैयाकरणोए सारी रीते चर्च्यो छे माटे माधवाचार्य तेनो पण संग्रह करे छे. आ दर्शननो सिद्धान्त ए छे के व्याकरण वेदनुं मुख्य अंग छे माटे तेनुं अध्ययन आवश्यक छे; स्फोट सत्रक

नित्य निरवयव शब्द तेज ब्रम्ह छे; अने शब्दमां रूपभेद जोवामां आवे छे ते उपाधिवशात् छे.

सांख्यदर्शनः—कपिल, पंचशिख, आसुरि, ईश्वरचंद्र अने गौडपाद ए आ दर्शनना मुख्य प्रवर्तको गणाय छे. सांख्य-वाद परिणामवाद कहेवाय छे. आ दर्शनमां प्रकृति, विकृति, उभयात्मक, अने अनुभयात्मक ए रीत्या चार प्रकारना पदार्थ मानवामां आवे छे, अने तेमां पुरुष छे ते अनुभयात्मक छे. प्रत्यक्ष, अनुमान अने आप्त वाक्य ए त्रण प्रमाण छे. सांख्य-वादीओ सत्कार्यवादी कहेवाय छे, कारण के तेओ कार्यने उत्पत्तिनी पूर्वे सत् माने छे. कार्य कारणथी भिन्न न होई शके माटे सुखदुःखमोहात्मक जगत्नुं कारण त्रिगुणात्मक प्रधान मानवामां आवे छे. प्रधान अचेतन छे तोपण पुरुषना मोक्षरूप प्रयोजनने लीधे तेनी प्रवृत्ति उपपन्न छे. पुरुष अने प्रकृतिनो संबंध आंधळा अने पांगळाना जेवो छे. आ दर्शनमां पुरुष अने प्रकृतिना अन्यत्वनुं ज्ञान ते मोक्ष मानवामां आवे छे.

योगदर्शनः—आ दर्शनमां ईश्वरनो अनुग्राहकरूपे स्वीकार करवामां आवे छे माटे ते सेश्वर सांख्य कहेवाय छे. यमादि आठ योगनां अंग छे.आ दर्शनना संबंधमां सार आपवानुं काम मने दुर्घट लागवाथी हुं वाचकनी क्षमा मागुं छुं.

आ सर्वदर्शनसंग्रहनो संस्कृत ग्रंथ प्रथम म्हारा जोवामां म्हारा सद्गुरु परमात्मा श्रीमन्नृसिंहाचार्य भगवान्ना मंदिरमां आव्यो छे. आ ग्रंथनी उपयोगितानासंबंधमां जेटली प्रशंसा करीए तेटली ओछी छे. ते वाचतांज म्हारा हृदयमां एवी वृत्ति थई आवी के आ पुस्तक म्हारा गुजराती वाचकोना हाथमां अपाय तो घणुंज सारू. वर्तमानमां गुर्जरी भाषामां अनेक

वेदांतादि शास्त्रीय विषयोने चर्चनारा ग्रंथ थया छे अने गुर्जरी प्रजामां आवा ग्रंथ वांचवानी प्रशंसनीय अभिरुचि दिन प्रतिदिन अधिकाधिक बलवत्तर थती जाय छे ए जोतां आ भाषान्तर करवानुं कार्य मने अस्थाने न लाग्युं. वळी म्हारी मातृभाषानी सेवा बजाववामां म्हारामां जे शक्ति होय तेनो म्हारे उपयोग करवो ए म्हारो धर्म समजी आ श्रमसाध्य कार्य माथे लेवाने हुं सोत्साह थयो, अने आ भाषान्तर उपाधि बाधक वर्गथी प्रतिष्ठापित थयला श्री महाकालमां थोडे थोडे आपवाना विचारथी तेनो केटलोक भाग में लखी क्हाड्यो. पण आ विचार म्हारे तरतज फेरववो पड्यो. श्री महाकालमां अनेक विद्वानो तरफथी ज्यारे उत्तम नूतन विषय चर्चाय छे त्यारे तेनुं स्थान भाषान्तरथी रोकवुं मने उचित लाग्युं नहि, तेमज आ विस्तीर्ण भाषान्तर घणाक वर्षे जतां पण संपूर्णरूपमां आपवानुं काम मने प्रायशः अशक्य जेवुं लाग्युं म्हारा हृदयमां एवी इच्छा थई के आ पुस्तक स्वतंत्र रूपमां प्रसिद्ध थाय तो घणुं सारूं पण म्हारी स्थित्यादिनो विचार करतां आ इच्छा मात्र आशा जेवी जणावा लागी कोई विद्याविनोदी सद्गृहस्थनो आश्रय मळे तोज म्हारी आ इच्छा पार पडे एम विचार थतां म्हारुं ध्यान वडोदराना माजी नायब दिवान रावबहादूर यशवंत वासुदेव आथले साहेब प्रति आकर्षायुं. यद्यपि म्हारे आथले साहेब साथे कंई परिचय हतो नहि तोपण विद्यानी वृद्धिने माटेनां अने लोकोपयोगी कार्योमां आ पुरुषनी सुप्रसिद्ध उत्साहवृत्ति अने उदारता मने अज्ञात न होतां वडोदरामां संस्कृत भाषानुं अध्ययन दानशील महाराजाओना आश्रयथी सारा पाया उपर चाल्तुं हतुं, पण तेनी शिक्षणपद्धतिमां फेरफार करी आ नगरनी संस्कृत पाठशालाओने काशी अने कलकत्ताना संस्कृत पाठशालाओना पाया उपर लावी मुकवाना मोटे कार्यनो आरंभ आ

पुरुष तरफथी थयानुं जणातां मने तेमनी संस्कृत भाषाना अध्ययननी उन्नति करवा उपर अपार प्रीति छे एम धारवाने संपूर्ण कारण मळ्युं. परभाषानु अध्ययन करी तद्दत उत्तम विचार स्वभाषामा जणावी शकवानुं सामर्थ्य प्राप्त न थाय त्यां सुधी अध्ययन निरर्थक छे एम आ पुरुषनो सिद्धान्त हतो एम तेमनां अनेक कार्योने आधारे महारो निश्चय थयो छे. संस्कृत पाठशालाना धोरणो अने परीक्षानी पद्धतिओना संबंधमा तेमणे जे योजना करी छे ते जो के आरम्भक छे तो पण तेमा उपरनो सिद्धान्त स्पष्ट रूपे जणाई आवे छे. आटलुज नहि पण देशी भाषाद्वारा अंग्रेजी शास्त्रो अने कलाओनुं ज्ञान आपवामां आवे तोज देशनी उन्नति शक्य छे एम आ पुरुषनो विचार हतो, अने ते विचारने पार पाडवा माटे वर्नाक्युलर युनिवर्सिटिनुं प्रथम रूप–वडोदरानुं सुप्रसिद्ध *कलाभवन–स्थापवा माटे तेमणे भारे उत्साहवृत्ति दर्शावी.* आ सर्वनो विचार करता आ पुरुष तरफथी मने आश्रय मळशे एम में धार्युं अने तद्द्वारा 'सर्वदर्शन संग्रह' प्रसिद्धिमां आवी शकशे एवी आशाथी अर्ध सुधीनो भाग लखी कहाड्यो. पण ईश्वरेच्छा आगळ कोईनुं चालतु नथी. आपणे अनेक विचार करीए पण ते पार पडवा न पडवा ईश्वरी सत्ताने अधीन छे. मनुष्यनी आशाओ एवी नि सत्त्व छे के तेमनो गमे तेटलो समूह जाम्यो होय तो पण ते उपर आधार राखी शकातो नथी. महारी बंधायली आशाओ तरतज भग्न थई गई. आयले साहेबना कैलासवासना शोकजनक समाचार जाणतांज महारू हृदय खिन्न थयुं अने सर्वदर्शन सग्रहनो जेटलो भाग लखायो हतो तेटलो एक कोरे नाखी मुक्यो.

आ पछी थोडे वखते महारा प्रियमित्र शाह नरोत्तमदास क्षेमचंद्रे मने कलाभवनना प्रिन्सिपाल रा. सा. त्रिभुवनदास कल्याणदास गज्जर साहेबनु ओळखाण कराव्यु. गज्जर साहेब

साथे महारो परिचय जेम जेम वधतो गयो तेम तेम तेमनी निःस्वार्थता, स्वदेशप्रीति, उत्साह अने सदाग्रह मने एटलां बधां प्रशंसनीय लाग्यां के तेना संबंधमां हुं गमे तेटली चोकसाईथी यथार्थ बोलुं तो पण जेने आ विद्वत्पुरुषनो परिचय नथी तेने महारूं कहेवुं अतिशयोक्ति भरेलुं लाग्या वगर रहे नहि. सामाजिक, राजकीय, आर्थिक, नैतिक, अने विद्याविषयक उन्नतिने माटेना तेमना विचार अने योजनाओ मने एवी तो सुव्यवस्थित, शक्य, निर्दोष, अने सुग्राह्य जणाई के मात्र थोडाज वीर पुरुषो तेमने अमलमां मुकवाने प्रवृत्त थई जाय तो आ पडती दशामां आवेली भारतभूमि थोडा वखतमां जापान करतां पण वधारे सारी स्थितिए पोंहोची जाय. प्रथम महारुं मानवुं एम हतुं के गज्जरसाहेब व्यवहारी अने पाश्चात्य जडवादीओनां शास्त्रोने माननार छे अने तेथी तेमने हुं सर्वदर्शन संग्रहना संबंधमां कहुं तो ते मने अने आ ग्रंथने 'आइडल् टॉक्' कही हसी काढशे, पण थोडाज वखतमां आ विचार फेरववो पडे एवा प्रसंग मने मळ्या. धर्मना संबंधमां एकवार केटलीक चर्चा करतां एमणे मानस शास्त्रना, ग्रीकफीलसुफीना, अने आर्यधर्मशास्त्रोना संबंधमां विल्सन, बार्थ, वेबर, मॅक्षमुलर, वगेरेना लखेला केटलाक ग्रंथनुं सारुं अवलोकन कर्युं होय एम मने जणायु, अने खरो व्यवहारी तो प्राचीन काळथी जेनाप्रति उत्तम बुद्धिवैभववाळा पुरुषोनां अंतःकरण आकर्षायां छे एवा धर्म अने तत्त्वज्ञानना विषयनो अनादर कोइ वार पण नज करे एम महारो निश्चय थयो. में महारुं सर्वदर्शनसंग्रहनुं भाषांतर गज्जरसाहेबने देखाडयु अने तेमणे तेने प्रसिद्ध थवामां बहु आनंद जणाव्यो. वळी प्रोफेसर मणिलाल नभुभाईनुं ओळखाण पण मने तेमणेज करावी आप्यु, अने तेथी सर्वदर्शनसग्रह आ प्रसिद्ध विद्वान्‌ना आगळ वांची जई तेमणे कोइ कोइ टेकाणे जे

फेरफार करवानो सुचव्यो ते करवानो मने योग मळ्यो. आ पुस्तक आज आ स्थितिमा आव्यु ते गर्ब्जरसाहेबने लीधेज छे.

आ पुस्तकना वाचकोने महारे आ स्थळे बे शब्द कहेवाना रहे छे. आ विषय जेवो गंभीर अने आगत्यनो छे तेवोज ते कठिन पण छे. में जेम बने तेम तेने समजाय एवो करवामाटे पुष्कळ विवरण आप्युं छे, तो पण विषयना काठिन्यथी अने हुं एक साधारण शक्तिनो माणस होवाथी ते सर्व वाचकोनो सहेलथी समजाय एवुं करवाने महाराथी बनी शक्यु नथी. वळी मनुष्यकृति सर्वदा निर्दोष जोवामा आवती नथी, अने आ पुस्तकमां महाराथी अनेक दोष थया हशे. विद्वज्जनोने अने वाचकोने महारीनम्रतापूर्वक विज्ञप्ति छे के आ दोषोने माटे मने क्षमा आपवी. संस्कृत भाषानु घणुं सारु ज्ञान नहि धरावनारा पण सविचार अने बुद्धिमान् धर्मतत्त्वजिज्ञासुओनी जिज्ञासा आ पुस्तकथी घणे अंशे पार पडशे एम हुं आशा राखु छु अने दीनताथी याचु छु के श्री सद्गुरुपरमात्मा महारी आ आशा सफळ करो. तथास्तु.

वटपद्र,
द्वितीय जेष्ठशुद एकादशी, } मणिशंकर हरगोविंद भट्ट.
संवत् १९५२.

सर्वदर्शनसंग्रह.

चार्वाकदर्शन.

१. नित्य ज्ञानना आश्रय अने कल्याणना निधि शिवने हुं वंदन करु छु. जेणे करी आ पृथिव्यादि उत्पन्न थया छे तेणे ज करीने सर्व कर्तृयुक्त छे.

२. सकलदर्शन–समुद्रना पारने पामेला, आत्माना योग्य अर्थथी जेमणे सर्व लोकने कृतकृत्य कर्या छे एवा, शार्ङ्गपाणिना पुत्र अने सर्व शास्त्रने जाणनारा सर्वज्ञ विष्णुगुरुनो हु आश्रय लउ छु.

३. श्रीमत् सायणरूप–क्षीरसागरमा उत्पन्न थयेला तेजस्वी कौस्तुभमणि–आर्यमाधव, सर्वदर्शननो संग्रह करे छे.

४. आ श्रीमत् सायणमाधव, पूर्वना विद्वज्जनोए रचेला अतिदुस्तर शास्त्रोनु सारी रीते अवलोकन करीने सज्जननी प्रीतिने अर्थे आ उत्तम ग्रंथ रचे छे. ते हे सज्जनो! मत्सररहित मनथी श्रवण करो, विचित्र पुष्पो वडे गुंथेली माला कोने प्रीतिकर नथी होती ?

हवे परमेश्वर कल्याणप्रद छे एम शी रीते कहेवाय ? बृहस्पतिमतने अनुसरनार नास्तिकशिरोमणि चार्वाक तो तेनु खंडन करे छे, अने चार्वाकना मतनु खंडन करवु दुर्घट छे. प्रथम तो साधारण रीते सर्व प्राणी

जीवाय त्यांसुधी मोजमजामां जीववुं, मृत्यु कोइने छोडनार नथी, अने राख थई गयेलो देह पाछो क्यांथी आववानो छे?

इत्यादि लोक गाथाओनो आश्रय करनार, नीति–अर्थ-शास्त्र, अने कामशास्त्रने अनुसार अर्थ अने कामने पुरुषार्थ माननार, पारलौकिक अर्थने नहि माननार, चार्वाकमतने अनु-सरनारा ज अनुभवमा आवे छे, अने आ हेतुथी ज ते चार्वाक-मतनु लोकायत एवु सार्थक अपर नाम छे.

ते मतमा पृथिव्यादि चार भूतने तत्त्व मान्या छे, अने ते ज ज्यारे देहाकार परिणामने पामे छे त्यारे यत्रादिमाथी जेम मदशक्ति उत्पन्न थाय छे तेम तेमाथी चैतन्य उत्पन्न थाय छे, अने तेओनो नाश थये तेनो पण नाश थाय छे.

कह्यु छे के[2] —

ते भूतमाथी विज्ञानघन पोते उत्पन्न थई तेनी पछ वाडे नाश पामे छे; मृत्यु पछी ज्ञाननी स्थिति रहेती नथी.

माटे चैतन्यविशिष्ट देह ते ज आत्मा, कारण के देहव्यति-रिक्त आत्माने मानवा माटे कइ प्रमाण नथी. प्रमाण नथी एम कहेवानु तात्पर्य ए छे के ते केवल प्रत्यक्षप्रमाणवादी छे, अने तेथी अनुमानादिनो स्वीकार करता नथी. सुदरीना आलिंगनादि-थी उत्पन्न थतु सुख ते ज पुरुषार्थ ते दु खमिश्रित छे माटे पुरुषार्थ ज नथी एम न मानवु, कारण के दु ख अवर्जनीय छे माटे प्राप्त दु खनो परिहार करी सुख मात्र भोगववा योग्य थई शके छे ते आ प्रमाणे के जेम कोइ मत्स्यार्थी कटक सहित तथा कोटला सहित मत्स्यनु ग्रहण करे छे ने तेमाथी लेवा जेटलु लई निवृत्त थाय छे, तेम ज धान्यार्थी पराळ सहित धान्य ले छे, तेमाथी जेटलु लेवा जेवु होय तेटलु लई बध पडे छे. माटे दु खना भयथी वृत्तिने अनुकूळ लागतु सुख तजवु उचित नथी. हरण खाई जाय माटे डागर ज न वाववी अथवा भिक्षुको मा-

गत्रा आत्रे माटे चूला उपर तपेला न च्हडाववां एम करवुं योग्य नथी. जो कोइ वीकण दृष्टसुखने तजे तो ते पशुवत् मूर्ख गणाय.

कह्यु छे के:—

'पुरुषोए विषयसंगथी उत्पन्न थयेलां सुखनो त्याग करवो, कारण के ते दुःखमिश्रित छे' आ विचार मूर्खनो छे. कयो हितार्थी पुरुष सुदर श्वेत चोखाना कणथी युक्त डांगरने छोडांवाळी छे एम कही फेंकी देशे?

कोई शका करे के पारलौकिक सुखनो अभाव होय तो पुष्कळ वित्तव्यय तथा शरीरश्रमथी साध्य अग्निहोत्रादिमा विद्यावृद्ध पुरुषोनी प्रवृत्ति शाथी थाय? तो तेना प्रत्युत्तरमां कहेवानु के एम मानवामां कइ प्रमाण नथी; कारणके ते असत्य व्याघात अने पुनरुक्त दोषथी दूषित छे, अने वेदने प्रमाण माननारा धूर्तवकोए पोते ज परस्पर कर्मकाडने प्रमाण माननाराओए ज्ञानकाडनु, अने ज्ञानकाडने प्रमाण माननाराओए कर्मकाडनु खडन कर्यु छे, अने तेथी त्रयी धूर्त लोकोनो प्रलाप-मात्र छे एटले अग्निहोत्रादि मात्र आजीविकाना हेतु माटे छे. ते प्रमाणे ज आभाणक (कहेवत) छे के,

अग्निहोत्र, त्रण वेद, त्रिदंड संन्यास, भस्मधारण ए सर्व बुद्धि अने पुरुषत्व वगरना लोकोनी आजीविका छे एम बृहस्पति कहे छे

माटे ज कटकादिजन्य दु.ख ते नरक, लोकसिद्ध राजा ते परमेश्वर, अने देहोच्छेद ते मोक्ष. देहात्मवादमा 'हु कृश छु' 'हु कृष्ण छु' इत्यादि बोल्वु उपपन्न छे कारण के 'कृश-त्वादि' अने 'अहता' समानाधिकरणे छे. 'मारु शरीर' इत्यादि व्यवहार 'राहुनु मस्तक' एम कहेवु एनी पेठे लाक्ष-णिक छे.

आ सर्वनो आ प्रमाणे संग्रह कर्यो छे.

आ मतमां पृथ्वी, वायु, जल, अने अग्नि, ए चार भूतनो स्वीकार कर्यो छे. ते चार भूतमांथी चैतन्य उद्भवे छे, जेम के यवादि एकत्र करवाथी मदशक्ति उत्पन्न थाय छे.

'हुं स्थूल छुं' 'हुं कृष छुं,' इत्यादि वाक्योमां 'अहंता' अने 'स्थौल्यादि' नुं सामानाधिकरण्य छे तेथी, अने स्थौल्यादिनो योग देह साथे छे तेथी देह ए ज आत्मा छे, अन्य नथी.

आ म्हारो देह छे एम जे बोलाय छे ते लाक्षणिक छे.

पूर्वपक्षी कहेछेः—ठीक, एम होय; जो अनुमानादिने प्रमाण रूपे स्वीकारवामां न आवे तो आ मनोरथ सफल गणाय; परंतु अनुमानादि प्रमाण रूपे स्वीकारवां पडे छे; नहि तो अविच्छिन्न धूमलेखा जोया पछी अग्नि प्रति सविचार प्राणीओनी प्रवृत्ति केवी रीते थाय? तेम ज नदीने तीरे फल छे एम सांभळता ज फलार्थी पुरुषोनी नदीतीरे प्रवृत्ति थाय छे.

चार्वाक कहेछेः—आ कहेवुं ते केवल मनोराज्यनो उदय छे. अनुमानने प्रमाण माननाराओ व्याप्ति[८] अने पक्षधर्मता युक्त लिंगने[१०] गमक[११] माने छे. व्याप्ति ते बन्ने प्रकारना उपाधिथी[१२] रहित एवो संबंध छे. अने नेत्र वगेरे जेम पोताना अस्तित्वमात्रथी प्रत्यक्षज्ञाननो हेतु छे तेम आ संबंध पोताना अस्तित्वमात्रथी अनुमितिनो हेतु नथी ते ज्यारे ज्ञात थाय छे त्यारे ज ते अनुमाननुं अंग थाय छे. हवे तेनुं ज्ञान शाथी थाय? प्रथमनो प्रत्यक्ष लइए तो कयुं लेवुं, बाह्य प्रत्यक्ष के आन्तर प्रत्यक्ष? बाह्य प्रत्यक्ष कहेवाय नहि, कारण के तेनो ज्यारे विषय साथे संप्रयोग[३] थाय छे त्यारे ते ज्ञानने उत्पन्न करे छे अने एवा प्रसंगमां तेम थवानो संभव छे; पण भूत अने भविष्यत् कालमां तेम थवानो संभव नथी; अने तेथी व्याप्ति के जे सार्वकालिक अने सार्वलौकिक होवी जोइए ते तो दुर्ज्ञात रहेवानी. व्याप्तिज्ञान सामा-

न्यगोचर छे एम पण मानवुं जोइए नहि, कारण के वे व्यक्तिओना अविनाभावनो अभावनो प्रसंग रहे छे. आन्तर प्रत्यक्ष पण व्याप्तिज्ञानो उपाय कहेवाय नहि, कारण के अंतःकरण बहिरिंद्रियने अधीन छे अने तेथी बाह्य अर्थनुं ग्रहण करवामां तेनी स्वतंत्र प्रवृत्ति उपपन्न नथी. कह्युं छे के,:—

नेत्र वगेरेने कह्या तेवा विषय छे परंतु बाह्य प्रवृत्तिपरत्वे मन परतंत्र छे.

अनुमान पण व्याप्तिज्ञाननो उपाय नथी कारण के व्याप्तिज्ञानमां अनुमान जोइए ने तेमां बीजुं अनुमान जोइए एम अनवस्थादोष आवे.

शब्द पण व्याप्तिज्ञाननो उपाय नथी. कारण के कणादमत प्रमाणें अनुमानमां तेनो अंतर्भाव थाय छे. अन्तर्भाव न लइए तो पण तेथी ज्ञान थवामां वृद्धव्यवहाररूप लिंगनी अपेक्षा रहे छे अने तेथी ते उपर कहेलां दूपणनुं उल्लंघन करवाने अपंग छे. अने धूम अने अग्नि वच्चे अविनाभाव छे एम वचनमात्रमां मन्वादिनां वचन उपर जेम विश्वास नथी, तेम आ उपर पण नथी. वळी कोइने धूम अने अग्निनो अविनाभाव छे एम कह्या वगर तेनाथी एक पदार्थ (धूम) जोई बीजा पदार्थ (अग्नि) नी अनुमिति करी शकाती नथी माटे स्वार्थानुमाननी तो मात्र कहेवानुं ज रहे छे. उपमानादि प्रमाणने तो वेगळां ज करवानां, कारण के ते संज्ञा अने संज्ञीना संबंधादिनां बोधक छे कंइ उपाधिरहित संबंधनां बोधक नथी. वळी उपाधिनो अभाव पण समजाय तेम नथी, कारण के उपाधिमात्र प्रत्यक्ष छे एवो कंइ नियम नथी अने जो के प्रत्यक्ष उपाधिनो अभाव पण प्रत्यक्ष होय तो पण अप्रत्यक्ष उपाधिनो अभाव तो अप्रत्यक्ष ज रहेवानो अने जो ते समजवाने अनुमानादिनी अपेक्षा करीए तो तेमां उपर कह्यां तेवां दूषण नडवानां.

वळी उपाधिनु 'साधननी अव्यापक होई साध्यें साथे जेनी समव्याप्ति[23] छे ते उपाधि' एवु जे प्रसिद्ध लक्षण ते स्वीकारु. कह्यु छे के,

जे अव्याप्त साधनें होय अने साध्य साथे जेनी समव्याप्ति होय ते उपाधि

शब्दनु अनित्यत्व सिद्ध करवामा सकर्तृकत्व, घटत्व, अने अश्रावणता, ए त्रण दोष दूर करवाने अनुक्रमे आ त्रण विशेषणोनु ग्रहण कर्यु छे[25] माटे उपाधिनु आ लक्षण शुद्ध छे अने आचार्य पण '**समासमाविनाभावौ**[27]' ए वाक्यथी आ अर्थनुं समर्थन करे छे.

हवे विधिनु ज्ञान निषेधना ज्ञान पहेलुं होवुं जोइए. अर्थात् उपाधिना भावनु ज्ञान उपाधिना अभावना ज्ञाननी पहेलु होवु जोइए. माटे उपाधिनु ज्ञान थया पछी उपाधिना अभावथी रहित छे स्वरूप जेनु एवी व्याप्तिनु ज्ञान थाय, पण आपणे उपर कह्यु के उपाधिना ज्ञानमा व्याप्तिज्ञाननी जरूर रहे छे. आ प्रमाणे उपाधिज्ञानने अधीन व्याप्तिज्ञान अने व्याप्तिज्ञानने अधीन उपाधिज्ञान, एम परस्पराश्रयदोष वज्रलेप थाय छे माटे अविनाभाव दुर्बोध होवाने लीधे अनुमानादिने अवकाश रहेतो नथी. धूमादि जोई वन्ह्यादि प्रति जे प्रवृत्ति थाय छे ते प्रथमना प्रत्यक्षने लीधे के भ्रांतिथी छे. कोइवार फलप्राप्ति थाय छे ते मणि, मंत्र, अने ओषधि आदिनी पेठे अकस्मात् छे. माटे अनुमानादि वडे सिद्ध करवाना जे अदृष्टादि ते पण नथी. कोइ कहे के जो तमे अदृष्टादिने नहि मानो तो जगद्वैचित्र्यनु कइ कारण मळशे नहि, तो आ तेनु मानवु योग्य नथी, स्वभावथी तेम थई शके ए वात समजाय एवी छे कह्यु छे के,

अग्नि उष्ण छे, जल शीत छे, वायु शीतस्पर्श छे

आ सर्व विचित्रता कोणे करी? माटे आ सर्व व्यवस्था स्वभावथी ज थई छे.

आ सर्व बृहस्पति पण कहे छे:—

स्वर्ग पण नथी अने मोक्ष पण नथी परलोकगामी आत्मा पण नथी. वर्णाश्रमादिनी क्रियाओ कंइ फलने आपती नथी.

अग्निहोत्र, त्रण वेद, त्रिदंड संन्यास, भस्मलेपन ए बुद्धि अने पोरुष रहित पुरुषोने माटे ते रचनाराओए आजीविका रची छे.

ज्योतिष्टोममां मारेलुं पशु जो स्वर्गमां जतुं होय तो यजमान पोताना पिताने शा माटे मारतो नथी?

मरण पामेला प्राणीओने श्राद्ध जो तृप्तिनुं कारण होय, तो आ लोकमां प्रवास करनाराओने माटे भाथुं करवु निरर्थक छे.

आ लोकमां दान करवाथी स्वर्गमां रहेलाओ जो तृप्त थता होय तो महेलनी अगाशी उपरनाने नीचे जमीन उपरथी केम आपी शकातु नथी?

ज्यां सुधी जीवाय त्यां सुधी सुखे जीववुं, देवु करीने पण घी पीवुं, वळीने खाख थई गयेलो देह पाछो क्यांथी आववानो छे?

जो आ देहमांथी नीकळेलो जीव परलोकमां जतो होय तो सगांवहालांना स्नेहथी पीडाइने ते पाछो केम आवतो नथी?

माटे मरेलानी प्रेतक्रिया वगेरे कार्यो ब्राह्मणोए पेट भरवा माटे कर्यां छे; बीजु कंइ समजातु नथी

वेदना कर्ता भंड, धूर्त, अने निशाचर छे एटले "जर्फरी," "तुर्फरी" इत्यादि पंडितोनां वचन सारां कहेवाय!

अश्वनुं शिश्न पत्नीए हाथमां लेवुं इत्यादि, तेम ज अन्य अग्राह्य पदार्थो ते भंडना ठरावेला छे. मांस खावुं पण जे विधान छे ते निशाचरनुं करेलुं छे.

माटे बहु प्राणीना अनुग्रहने अर्थे चार्वाकमतनो आश्रय करवो ए वात युक्त छे.

बौद्धदर्शन.

आ स्थले बौद्धो कहे छे —कह्यु के अविनाभावे दुर्बोध छे ते ठीक नथी, कारण के तादात्म्ये अने तदुत्पत्तिने लीधे अविनाभाव सुज्ञात छे कह्यु छे के,

कार्यकारणभावथी या नियामक स्वभावथी अविनाभावनियम स्थित थाय छे अदर्शन के दर्शनथी थतो नथी"

जो एम मानीए के अन्वये अने व्यतिरेके ए अविनाभावनो निश्चय करनार छे तो साध्ये अने साधननो अव्यभिचारे समजाय नहि, कारण के भूत, भविष्यत्, अने वर्तमान एवा अनुपलभ्यमान अविनाभावमां व्यभिचारशंकानु निवारण थइ शके नहि"

हवे कोइ कहेशे के जो एम गणीए तो तमारा मतमां पण व्यभिचारशंकानो परिहार थइ शके नहि, तो तेने कहेवानु के एम कइ बोलो नहि कारण के कारण वगर पण कार्य थइ शके ए शंका पोतानी मेळे ज निवृत्त थाय छे, कारण के तेमां व्याघातदोष आवे छे. शंका तो एवी करवी जोइए के जेमां व्याघातादि दोष आवे नहि.

कह्यु छे के, —

व्याघातना अवधि सुधी आशंका

माटे तदुत्पत्ति(कार्यकारणभाव)ना निश्चयथी अविनाभावनो निश्चय करी शकाय. तदुत्पत्तिनो निश्चय कार्य अने हेतुना प्रत्यक्ष उपलभ अने अनुपलभथी थयेला पांच कारणो उपर आधार राखे छे. कार्यनो उत्पत्ति पहेला अनुपलभ, कारणनो उपलभ, अने ते थता कार्यनो उपलभ, कार्यनो उपलभ थया पछी कारणनो अनुपलभ थता कार्यनो पण अनुपलभ[13]. आ पांच कारणो वडे धूम अने अग्निना कार्यकारणभावनो निश्चय करी शकाय छे. ए ज प्रमाणे तादात्म्यना निश्चय वडे पण अविनाभावनो निश्चय करी शकाय छे. कारण के जो शिंशपा वृक्षत्वनो अतिपात करे तो तेनो पोतानो पण नाश थाय, माटे जो कोइ शिंशपा अने वृक्षत्वनी व्याप्तिनो विपक्ष लावे तो तेमा बाध नडे.[14] परतु बाध न नडतो होय अने वारवार शिंशपा अने वृक्षत्वनो सहभाव जोवामा आवतो होय, तोपण व्यभिचारनी शका थाय ते कोण निवारी शके? शिंशपा अने वृक्ष वच्चे तादात्म्य छे एम निश्चय 'आ वृक्ष शिंशपा छे' एम उभयना सामानाधिकरण्यथी[15] थाय छे. बेमा अत्यन्त अभेद होय तो सामानाधिकरण्य सभवे ज नहि कारण के बे शब्द पर्याय होय तो तेनो साथे प्रयोग थाय नहि. जो बनेमा अत्यन्त भेद होय तो पण सामानाधिकरण्य सभवे नहि कारण के गो अने अश्वनु सामानाधिकरण्य आपणे जोता नथी. माटे कार्य अने आत्मा कारण अने आत्मानु अनुमान करावे छे एम सिद्ध थयु[16]

अनुमानने प्रमाणरूपे न अगीकार करतो होय तेने कहेवानु के अनुमान प्रमाण नथी एम जे तमे मात्र कहो छो तेने सिद्ध करवाने कइ साधन लावो छो अथवा तो नथी लावता? तेनाथी एम तो कहेवाशे नहि के हु मात्र महोडे ज कहु छु. कारण के एकली प्रतिज्ञा प्रतिज्ञातने साधती नथी एवो

न्याय छे. साधन लावीए छीए एम पण न कहेवाय कारण के अनुमान प्रमाण नथी एम बोलतां ज तमे अशिरस्क वचनें कहाडो छो अने तेथी मारी माता वंध्या छे एम कहेवामां जेम व्याघात नडे तेवो ज अहीं पण नडे छे. वळी प्रमाण अने प्रमाणाभासेनी व्यवस्था तेओनी समानजातीयताने लीधे करीए छीए एम बोलतां ज तमे स्वभावानुमानं स्वीकारी लो छो. वचनलिंगे करीने परगतविप्रतिपत्ति मान्य करतां तमे कार्यलिंगक अनुमान स्वीकारी लो छो.[21] अनुपलब्धिथी तमे कोइ अर्थनो प्रतिषेध करता हो तो तेमां तमे अनुपलब्धिलिंगक अनुमान स्वीकारो छो.[22] आ ज प्रमाणे तथागत (बुद्ध)नुं पण कहेवुं छे.

प्रमाणान्तर सामान्यनी स्थिति अन्यनी बुद्धिमां ते उतरे छे तेथी छे. कोइएके तेनो प्रतिषेध कर्यो छे ते उपरथी तेनो सद्भाव सिद्ध थाय छे.

आ संबंधमां सूरिओए बहु लख्युं छे; अने ग्रन्थ बहु महोटो थइ जाय ते भयथी हवे बस करीए छीए.

आ बौद्धो चार प्रकारनी भावना वडे परम पुरुषार्थनुं कथन करे छे. अने ते माध्यमिक, योगाचार, सौत्रान्तिक, अने वैभाषिक ए चार संज्ञाओथी प्रसिद्ध बौद्धो अनुक्रमे सर्वशून्यत्वें,[23] बाह्यशून्यत्वें,[24] बाह्यार्थानुमेयत्वें,[25] अने बाह्यार्थ-प्रत्यक्षत्वें,[26] ए चार वाद माने छे. जो के भगवान् बुद्ध एक ज उपदेशक हता तो पण शिष्योना बुद्धिभेदथी तेओमां चार भेद पड्या; जेम के सूर्य अस्त थयो एम कहेतां जार, चोर, अने वैदिक ब्राह्मण पोतपोताना इष्टने अनुसार व्यभिचार, चोरी, अने सदाचरणनो समय जाणे छे. 'सर्वक्षणिक क्षणिक छे.[27]' 'सर्व दुःख दुःख छे.[28]' 'सर्व स्वलक्षण स्वलक्षण छे.[29]' अने 'सर्वशून्य शून्य छे.[30]' ए चार भावनाओ कही छे. त्यां नीलादि क्षणोनों[31] क्षणिकत्वनुं अनुमान तेओना सत्वेंथी थइ शके छे. जेम के,

जे सत् छे ते क्षणिक छे;
जेम के जलधर पटल.
आ सर्वभाव सत् छे
(माटे ते क्षणिक छे.)

अहीं हेतु असिद्ध छे एम कोइए मानवुं नहि; कारण के अर्थक्रियाकारित्व छे लक्षण जेनुं एवुं सत्त्व नीलादि क्षणोने विषे प्रत्यक्षसिद्ध छे. अने 'व्यापकनी व्यावृत्तिथी व्याप्यनी व्यावृत्ति थाय छे ' ए न्यायथी व्यापकना क्रम अने अक्रमनी व्यावृत्ति थतां अक्षणिकमांथी सत्त्वनी व्यावृत्ति थाय छे एम पण सिद्ध छे. हवे जे अर्थक्रियाकारित्व–सत्त्व छे ते क्रम अने अक्रम ए बेथी व्याप्त छे. अने क्रम अने अक्रम सिवाय बीजो कोइ प्रकार छे नहि कारण के

ज्यां परस्पर विरोध होय त्यां प्रकारान्तरनी स्थिति होय नहि अने बे विरुद्ध पदार्थो एक पण न होय, कारण के विरुद्ध कहेवामां ज ते जुदा ठरे छे.

आथी जो प्रकारान्तरस्थिति मानीए तो व्याघात आवे. हवे आ क्रम अने अक्रम ए बे अक्षणिकमांथी व्यावृत्त करीए तो अर्थक्रिया पण व्यावृत्त थाय अने तेथी क्षणिक पक्षमां ज सत्त्व ठरे एम सिद्ध थयुं.

कोइ कहेशे के अक्षणिकने अर्थक्रियाकारित्व शा माटे न होय ? तो तेने कहेवानुं के एम धारवुं युक्तिपुरःसर नथी, कारण के तेथी नीचेनो विकल्प सहन थतो नथी; ते आ प्रमाणेः—वर्तमान अर्थक्रियाकरणकालमां शुं अतीत अने अनागत अर्थक्रियानुं सामर्थ्य स्थायी(अक्षणिक)मां छे के नहि ? जो कहेशो के छे तो (अतीत अने अनागत) अर्थक्रियानुं निराकरण थइ शकशे नहि. कारण के जे (कार्य करवाने) समर्थ छे तेनो क्षेप (सामर्थ्यरहितत्व) थइ शकशे

नहि. जे ज्यारे जे करवाने समर्थ छे ते त्यारे ते करे छे ज. जेम के सामग्री स्वकार्यने करे छे ज. हवे आ भाव छे ते समर्थ छे एम प्रसंगानुमान रहे छे. जो कहेशो के स्थायीमां सामर्थ्य नथी तो ते कोइ काले पण करी शकशे नहि, कारण के अर्थ-क्रियाकारित्व मात्र सामर्थ्य उपर आधार राखे छे. जे ज्यारे जे नथी करतुं ते त्यारे ते(काम)मां असमर्थ छे, जेम के शिलानो कडको अंकुर उत्पन्न करवामां; अने आ स्थायी वर्तमान अर्थक्रियाकरण वखते अतीत अनागत अर्थक्रियाओ करतो नथी. आ प्रकारनो विपर्यय पण नडे छे. जो कदी तमे एम कहो के अनुक्रमे आवता सहकारीना लाभथी स्थायी अतीत अनागतमां अनुक्रमे सामर्थ्ययुक्त थाय छे तो त्यां तमने आ प्रमाणे हमे पूछीए छीएः—शुं सहकारीओ भाव(स्थायी)ना उपकारक छे के नहि? जो भावना उपकारक नथी एम कहो तो ते कंइ करता नथी माटे तेमनी जरूर पण नथी. जो एम कहो के उपकारक छे तो हमे पूछीशुं के ते उपकार भावथी भिन्न छे के नहि? जो भावथी भिन्न छे एम मानो तो ते आगन्तुक उपकार कारण थशे अने अक्षणिकभाव कारण थशे नहि. कारण के कार्य आगन्तुक उपकारना अन्वय अने व्यतिरेकने अनुसरे छे. कह्युं छे केः—

व्योम(आत्मा)ने वर्षा अने तापथी शुं थवानुं छे? तेओनुं फल तो मात्र चर्म उपर छे. जो आत्मा चर्म जेवो होय तो ते अनित्य ठरशे; अने जो चर्म आत्मा जेवुं हशे तो तेना उपर कशी असर थशे नहि.

जो तमे कहो के भाव ते सहकारीओ साथे काम करे छे एवो स्वभाव ज छे तो ठीक; हमे कहीशु के भाव सहकारीओने त्यजशे ज नहि; उल्टुं ते तेओने जो नाशी जता हशे तो गळे दोरडुं बांधीने करवानुं काम करावशे, कारण के

स्वभावनो नाश थाय तेम नथी. वळी सहकारीथी उत्पन्न थयेलो अतिशय बीजा अतिशयने आरंभे छे के नहि? गमे ते पक्ष स्वीकारो तो पण उपर कहेलां दूषणपाषाणनुं झापटुं तमारा उपर पडशे. जो सहकारीथी उत्पन्न थयेलो अतिशय बीजा अतिशयने आरंभे छे ए पक्ष स्वीकारो तो तमारे अनेक प्रकारनी अनवस्थामां जवुं पडशे. जो अतिशय उत्पन्न करवामां बीजा सहकारीनी अपेक्षा रहे तो आवा सहकारीओ एक पछी एक अपार थशे, एक तो आ अनवस्था. जेम के जळ पवन वगेरे सहकारी पदार्थो वडे बीजनो अतिशय थतां बीज उत्पादक थाय छे एम तमारे मानवुं जोइए, नहि तो जळ अने पवनना अभावे पण अतिशयनो प्रादुर्भाव थशे. वळी अतिशयने लेनार बीज सहकारीनी अपेक्षापूर्वक ज तेने ले छे, नहि तो उपकार सार्वकालिक थता अंकुरनो उदय पण सार्वकालिक थशे. तेथी अतिशयने माटे अपेक्षित सहकारीओ वडे बीजमां बीजा अतिशयनुं आधान करवु पडशे. आ प्रमाणे आ अतिशयनुं आधान कर्या पछी पण पूर्वनी पेठे सहकारीनी अपेक्षा करनार बीजने उत्पादक थवाने सहकारीथी संपाद्य बीजगत अतिशयनी अनंत परंपरा चालशे. आ प्रमाणे प्रथम अनवस्था व्यवस्थित थई. वळी हमे पूछीशु के उपकार कार्यने माटे अपेक्षित होय तो पण बीजादिनी अपेक्षा वगर कार्य करे छे के अपेक्षा वडे कार्य करे छे? जो एम कहो के अपेक्षा वगर तो बीजादि निरुपयोगी थइ जशे. जो कहेशो के अपेक्षा वडे तो अपेक्षित बीजादि वडे उपकारने विषे अतिशयनु आधान करवु पडशे. एम जोता बीजादिथी उत्पन्न थता अतिशयमा बीजो आवशे अने एम अनंत परंपरा थशे. आ प्रमाणे बीजी अनवस्था स्थिर थशे. ते ज प्रमाणे अपेक्ष्यमाण उपकार वडे बीजादि के जे धर्मी छे तेमा बीजा उपकारनु आधान थशे अने आ प्रमाणे

उपकारथी आधेय बीजगत अतिशयना आश्रयमा अतिशयान्तर आवता त्रीजी अनवस्था दूर न करी शकाय एवी थशे. हवे धारो के भावथी अभिन्न अतिशय, सहकारीओ वडे उपजावाय छे, तो पूर्वनो भाव जे पोते अनतिशयरूप छे ते तदन निवृत्त थइ जशे. अने बीजो अतिशयरूप 'कुर्वद्रूपादि' पदवाच्य उत्पन्न थशे अने आ प्रमाणे हमारु पण मनोरथवृक्ष फलित थशे[3].

माटे अक्षणिकने अर्थक्रिया दुर्घट थाय छे. वळी अक्रमथी पण अक्षणिकने अर्थक्रिया घटती नथी, कारण के नीचेनो विकल्प सहन थतो नथी. ते आप्रमाणे —एकदम सकल कार्य उत्पन्न करवाने समर्थ ते भाव (अक्षणिकभाव) कार्य उत्पन्न कर्या पछी उत्तर कालमा रहेशे के नहि? जो एम कहो के उत्तर कालमा ते रहेशे तो ते कालनी पेठे कालान्तरमा पण तेनाथी तेनुते कार्य उत्पन्न थशे. जो नहि रहे एम कहो तो तेना स्थायित्वनी आशा उदरथी भक्षित बीजादिमाथी जननी आशा जेवी थशे.

जेमां विरुद्ध धर्मनो आरोप होय ते नाना होय. जेम के शीत अने उष्ण. अने आमा विरुद्ध धर्मनो आरोप छे. एटले जलधरने विषे अक्षणिकत्वना प्रतिबंधनी सिद्धि थाय छे. अने आ हेतु असिद्ध छे एम कहेवाय नहि, कारण के स्थायीमां कालभेदे करीने सामर्थ्य अने असामर्थ्य उभयना अस्तित्वनो प्रसग अने तेनो विपर्यय सिद्ध छे. असामर्थ्यने सिद्ध करनार प्रसग तथा प्रसगविपर्यय पाछळ कह्या छे. हवे सामर्थ्यने सिद्ध करनारा प्रसग अने प्रसगविपर्यय विषे हमे बोलीए छीए. जे ज्यारे जेने उत्पन्न करवाने असमर्थ होय ते त्यारे ते नथी करतो; जेम शिलानो कडको अकुरने. आ भाव वर्तमान अर्थक्रिया करती वखते अतीत अनागतनी अर्थक्रियाओ करवाने असमर्थ छे.

आ प्रमाणे प्रसंग स्थित थाय. जे ज्यारे जे करे छे ते त्यारे ते करवाने समर्थ छे, जेम के सामग्री पोताना कार्यमां; आ भाव अतीत अनागत कालमां ते कालने लगती क्रियाओ करे छे; आ प्रमाणे प्रसंगनो व्यत्यय थवाथी विपर्यय स्थित थाय छे.

माटे विपक्षे क्रम अने अक्रमनी व्यावृत्ति वडे व्यापकनो अनुपलंभ नहि थवाथी जेनी व्यतिरेकव्याप्तिनुं ज्ञान थयुं छे एवुं, तथा प्रसंग अने तद्विपर्ययना बळथी जेनी अन्वयव्याप्तिनुं ग्रहण थयुं छे एवुं सत्त्व मात्र क्षणिकत्व पक्षमां ज व्यवस्थित थशे एम सिद्ध थयुं.[४०]

ज्ञानश्री पण कहे छे के,:—

जे सत् छे ते क्षणिक छे, जेम के जलधर, आ भाव मात्र सत् छे. प्रमाणथी सिद्ध थाय छे के सत्ताशक्ति अर्थक्रियामां छे, सिद्ध पदार्थोमां सिद्ध नथी. ते एकरूपा पण नथी, कारण के एकरूपा होय तो एकनां क्रियादि अन्यथी थाय. माटे बे (क्रम अने अक्रम) कारणोथी क्षणभंग संगत ठरे छे अने साध्यमां विश्रामने पामे छे.[४१]

वळी कणाद अने गौतमना मतनो स्वीकार करतां 'सत्ता सामान्य योगित्व ते सत्त्व छे' एम मानवुं जोइए नहि, कारण के एम मानतां सामान्य, विशेष, अने समवायने असत् थवानो प्रसंग रहेशे. वळी 'सत्' एवो जे व्यवहार थाय छे ते तेते वस्तुने विषे रहेली सत्ताने लीधे थाय छे एम पण मानवुं जोइए नहि, कारण के तेम मानतां प्रयोजकनुं गौरव थशे, अने अनुगतत्व अने अननुगतत्वथी थता विकल्पथी तेनुं खंडन थशे. वळी मणिमा सूत्रनी पेठे, अथवा भूतने विषे गुणनी पेठे पर्वत, सर्षप इत्यादि विलक्षण क्षणोमां तेनो प्रतिभास पण थशे नहि. वळी हमे पूछीशुं के सामान्य सर्वगत छे के पोताना सर्व आश्रयगत छे ? सामान्य सर्वगत छे एम

स्वीकारशो तो सर्व वस्तुने सकर थवानो प्रसग आवशे, अने तेथी अपसिद्धान्त थशे कारण के अक्षपादनु कहेवु छे के " सामान्य पोताना सर्व विषयगत छे. " जो कहेशो के सामान्य पोताना सर्व आश्रय गत छे तो हमे पूछीशु के आ विद्यमान घटमा रहेलु सामान्य अन्य स्थानमां उत्पन्न थता घट जोडे सबध करवा माटे आ घटमाथी आवी सबधाय छे के आव्या वगर ? जो आवीने जोडाय छे एम कहो तो ते द्रव्य ठरशे आव्या वगर जोडाय छे एम कहेशो तो सबध ज घटतो नथी वळी हमे पूछीशु के निनष्ट थयेला घटमा सामान्य रहे छे के नाश थाय छे के बीजा स्थानमां जाय छे ? जो कहेशो के रहे छे तो ते निराधार थइ पडशे जो कहेशो के नाश थाय छे तो एने नित्य कहो छो ते अयुक्त थशे जो स्थानान्तरमा जाय छे एम कहेशो तो ते द्रव्य थइ जशे ए प्रकारनां दूषणरूप पापग्रहोथी पीडित होवाने लीधे सामान्य प्रमाणरहित ठरे छे[४२] कह्यु छे के —

एक स्थानमां रहेनारनु ते स्थानमांथी चल थया वगर अन्य स्थानमां उत्पन्न थवाने वर्तवु ए अतियुक्तता कहेवाय[४३]

आ भाव (सामान्य) ज्यां रहे छे तेनी साथे ते जोडातो नथी अने ते स्थानमा रहेलाने व्यापे छे आ एक अद्भुत छे[४४]

ते (सामान्य) कइ जतु नथी, त्यां हतु पण नहि, पछीथी तेना विभाग पण थता नथी, वळी पूर्व आधारने त्यजतुं नथी, आ केवी अडचणोनी परपरा छे[४४]?

जो पूछो के अनुवृत्तिनी प्रतीतिनो आधार शो ? तो हमे कहीशु के ठीक अन्यनो अपोह ते ज तेनो आधार छे माटे तमारे सतोष मानवो[४५] हमे वह्नु स्थाण करता नथी.

सर्व संसार दुःखात्मक छे एम सर्व तीर्थंकर माने छे. जो तेम न होय तो तेनी निवृत्ति करवानी इच्छा वाळा जे ते, तेमनी निवृत्तिना उपाय प्रतिनी प्रवृत्ति उपपन्न थाय नहि. माटे "सर्व दुःख दुःख छे" एम भावना करवी.[४६] जो कोइ पूछे के कोनी पेठे? तमारे दृष्टांत आपवुं जोइए तो हमे कहीशुं के एम नहि. पोते ज पोतानुं लक्षण छे एवा क्षणोनी क्षणिकताने लीधे समानलक्षणतानो अभाव छे अने तेथी 'आना जेवुं पेलु छे' एम बोली शकातुं नथी. आ उपरथी 'सर्व स्वलक्षण छे' एम भावना करवी.[४७] एज प्रमाणे 'सर्व शून्य शून्य छे' एम पण भावना करवी; कारण के 'स्वप्नमां के जाग्रदवस्थामां आ रजतादि में जोयुं नथी' ए प्रकारना विशिष्ट निषेधनुं आपणने भान छे. जो जे दृष्ट होय ते सत् होय तो तद्विशिष्ट दर्शन, इदंतानुं अधिष्ठान, तेमा अध्यस्त रजतादि, तेनी साथे संबंध राखनार समवायादि ए सर्व सत् थाय पण आ कोइ वादीने इष्ट नथी. वळी अर्धजरतीय पण उचित नथी. कूकडीनो एक भाग पाकने माटे अने बीजो भाग प्रसवने माटे एम कोइ कल्पना पण करतुं नथी. माटे अध्यस्त, अधिष्ठान, तेओनो संबंध, दर्शन, अने द्रष्टा ए सर्वनी मध्ये एक अथवा अनेक असत् थतां सर्व निषेधनो विषय थइने बलात्कारे असत् थशे ज.[४८] आ प्रमाणे भगवान् बुद्धे उपदेश कर्यो त्यां उत्तम प्रज्ञावाळा एवा माध्यमिको आ प्रमाणे कहेवा लाग्या. क्षणभंगना अभिधानद्वारा स्थायित्व, अनुकूलवेदनीयत्व, अने अनुगतसर्वसत्त्व, ए त्रण भ्रमना व्यावर्तनथी बुद्धना मतनु पर्यवसान भिक्षुपादप्रसारण न्याये वादीने सर्वशून्यतामा ज थाय छे.[४९] आ उपरथी सत्, असत्, उभय, (सत् अने असत्) अने अनुभय (सत् नहि अने असत् पण नहि) ए चतुष्कोटिथी विनिर्मुक्त शून्य एज तत्त्व छे. कारण के सत्त्व ए घटादिनो स्वभाव

होय तो कारकनो व्यापार व्यर्थ थशे. जो असत्त्व ए स्वभाव छे तो तेमां पण पूर्वनो ज दोष आवशे.[50] कह्युं छे के:—

सत्‌ने कारणनी अपेक्षा रहेती नथी, जेम के व्योमादिने; असत् कार्यनो हेतु असंभवित छे. जेम के असत् एवा खपुष्पादिनो. बाकीना बे पक्ष विरोधने लीधे अनुपपन्न छे.

भगवान् बुद्ध लंकावतारमां कहे छे के,

बुद्धिथी विविक्त थाय एवा पदार्थोनो स्वभाव समजातो नथी. अने तेटला माटे तेमने अनिर्वचनीय अने निःस्वभाव कह्या छे."

कारण के डाह्या माणसो कहे छे के आ वस्तु बलात्कारे आवे छे (प्रकट थाय छे) अने जेमजेम पदार्थोनुं चिंतन थाय छे तेमतेम ते विशीर्ण थाय छे."[2]

अर्थात् (उपरनी चतुष्कोटिमांना) कोइ पण पक्षमां पदार्थोनुं व्यवस्थान थतुं नथी. दृष्ट पदार्थोनो व्यवहार स्वप्नव्यवहारनी पेठे संवर्तन साथे संगत नथी[53] माटे कह्यु छे के,

परिव्राट्, कामुक, अने कुतरो ए त्रणनी स्त्रीना एक ज शरीरमां त्रण प्रकारनी कल्पनाओ होय छे; शव, कामिनी, अने भक्ष्य.

तेथी ए प्रमाणे *भावनाचतुष्टयने लीधे सकल वासनाओनी* निवृत्ति थतां शून्यरूप परनिर्वाणनो आविर्भाव थशे माटे हमे कृतार्थ थया छीए, अने हमने कंइ उपदेश करवानुं रह्यु नथी. शिष्ये प्रथम योग अने आचार बे करवां. त्यां अज्ञातना ज्ञाननी प्राप्तिने माटे पूछवुं ते योग, अने गुरुए कहेल्य अर्थनुं अंगीकरण ते आचार. गुरुनां वचन अंगीकार करवाथी उत्तम अने पूछवानुं काम नहि करवाथी अधम तेथी आ लोको माध्यमिक ए नामथी प्रसिद्ध छे. केटलाकनी योगाचार एवी संज्ञा छे, कारण के तेओ गुरुनी कहेली भावनाचतुष्टय अने बाह्यार्थनुं शून्यत्व अंगीकृत करी पूछवा लाग्या के आन्तर अर्थनुं शून्यत्व

केवी रीते अंगीकृत कर्युं? आ तेओनी परिभाषा छे —स्वयंवेदन तो अंगीकार करवु जोइए, अन्यथा आखु जगत् अंध थवानो प्रसंग रहेशे[५४] धर्मकीर्ति कहे छे के;—

जे कोइ प्रत्यक्ष ज्ञानने स्वीकारता नथी तेओना पक्षमां अर्थदृष्टि सिद्ध नथी.

नीचेना विकल्पने लीधे ग्राह्यग्राह्य उपपन्न नथी: ज्ञानग्राह्य अर्थ भावथी उत्पन्न थाय छे के नथी थतो? उत्पन्न थाय छे एम कहेवाय नहि, कारण के उत्पन्न थयेलानी स्थितिनो अभाव छे. अनुत्पन्न पण कहेवाय नहि, कारण के जे अनुत्पन्न छे ते असत् छे. हवे कोइ एम माने के मात्र अतीत अर्थ ज्ञानग्राह्य छे कारण के ते ज्ञानने उत्पन्न करे छे तो ते पण बालकना बोलवा जेवु छे. कारण के तेथी वर्तमानताना अवभासने विरोध नडे अने इंद्रियादिने पण दृश्य॰थवानो संभव रहे. वळी ग्राह्य अर्थ परमाणुरूप छे के अवयविरूप छे? अवयविरूप कहेवाशे नहि कारण के ते आखो ग्राह्य छे के एक देशमा ग्राह्य छे ए विकल्प वगेरेथी तेना अवयवीपणानु निराकरण थाय छे. परमाणुरूप छे तेम पण कहेवाय नहि, कारण के परमाणु अतीन्द्रिय छे अने पट्कनी साथे तेना एकदम योगने बाध आवे छे. कह्यु छे के,

जो परमाणु पट्कनी साथे एकदम युक्त थाय तो तेमां षडंशता आवे. तेओने एक ज देश छे एम लइए तो पिंड अणुमात्र थाय.

माटे पोताथी व्यतिरिक्त ग्राह्य नहि होवाने लीधे तदात्मिका बुद्धि पोते ज प्रकाशनी पेठे पोताना रूपनी प्रकाशक छे एम सिद्ध थयु[५५] कह्यु छे के,

बुद्धिने कोइ अनुभाव्य नथी. तेनो बीजो अनुभव नथी. ग्राह्य अने ग्राहक न होवाथी पोते ज पोताने प्रकाशे छे.

वळी ग्राह्यग्राहकनो अभेद अनुमानथी पण समजाय छे.[६६] जे जे वेदन वडे जणाय छे ते तेनाथी भिन्न होतुं नथी, जेम के ज्ञान वडे आत्मा. अने नीलादि तेओना वेदन वडे ज जणाय छे. कारण के जो भेद लइए तो नियमहेतु जे तादात्म्य तेना अभावने लीधे अने तदुत्पत्तिना अनियामकत्वने लीधे अमुक वेदननो अमुक अर्थ साथे संबंध घटे नहि. जे कंइ ग्राह्य अने ग्राहकनी संवित्ति वच्चे पृथक् अवभास थाय छे ते एक चन्द्रमां बेनी पेठे भ्रम छे. अहीं पण (आ भ्रममां पण) अनादि अने अविच्छिन्न प्रवाह वाळी भेदवासना निमित्त छे. कह्युं छे के,:—

नील अने नीलबुद्धि ए बेना सहोपलंभना नियमने लीधे ते बेमां अभेद छे. जे भेद देखायछे ते भ्रांतिमय ज्ञानथी छे, जेम के एक चन्द्रमां बे देखाय छे. वळी,

जो के बुद्धिरूप जे अविभाग छे ते पण विपरीत दर्शनने लीधे जाणे ग्राह्यग्राहकसंवित्तिना भेद वाळो होय एम जणाय छे.

आ उपरथी एम न जाणवुं के आशामोदकना अने उपार्जित (वास्तविक) मोदकना रस वीर्य अने विपाकादि समान होय. कारण के वस्तुतः वेद्यवेदकाकाररहित बुद्धि छे, तो पण पोते व्यवहर्ता छे एवा परिज्ञानने लीधे ते विभिन्न ग्राह्यग्राहकाकाररूप वाळी होय तेमजेम तिमिरादिथी उपहत थयेली दृष्टि वाळाने केश अने इन्द्रनाडीना ज्ञाननो अभेद जणाय छे तेम अनादि मिथ्या वासनाना सामर्थ्यथी अहीं पण व्यवस्था थइ शके छे माटे शंकानो अवकाश नथी. कह्युं छे के,

जेम वेद्यवेदकाकारथी रहित बुद्धि, भ्रान्त पुरुषोने मिथ्याज्ञानयुक्त देखाय छे, तेम विभक्त ग्राह्यग्राहकलक्ष-

णाकार केशादिज्ञानना भेदनी पेठे तेनी व्यवस्था थतां ते ग्राह्यग्राहकाकार वाळी छे एवी शंका रहेती नथी.

माटे बुद्धि ज अनादि वासनाने लीधे अनेक आकार वाळी भासे छे एम सिद्ध थयुं.[“] तेथी पाछळ कहेली भावनाओना प्रचयथी सर्व वासनानो उच्छेद थता विविध विषयाकार भ्रांति गळी जई विशुद्ध विज्ञाननो उदय थाय ते ज महोदय (मोक्ष) छे.[“] *बीजा (सौत्रान्तिक) एम माने छे के बाह्य वस्तु मात्र नथी* एम कहेवुं ते अयुक्त छे, कारण के तेम कहेवामा कइ प्रमाण नथी. सहोपलंभनियम प्रमाण छे एम कहेवाय नहि, कारण के सहोपलंभनियम के जे वेद्यवेदकना अभेदनो साधक छे ते अप्रयोजक होई संदिग्ध विपक्षमांथी अन्यावृत्त छे. जो तमे कहो के भेद ग्रहण करता सहोपलभ नियम ए जे साधन ते साधन ज न थाय तो हमे कहीशुं के ज्ञाननी अंतर्मुखताने लीधे, भेद वडे तेनी प्रतिभासमानताने लीधे, अने एकदेशत्व अने एककालत्व ए लक्षणयुक्त सहोपलभनियमना असभवने लीधे तमारु कहेवुं मिथ्या छे. वळी नीलादि अर्थ ज्ञानाकार होय तो अन्यतिरेक प्रतीतिने लीधे ‘ हु ’ ए प्रकारनो प्रतिभास थाय, परतु ‘ आ ’ ए प्रकारनो प्रतिभास थाय नहि. वळी जो कहो के नीलाकार ज्ञानस्वरूप छे पण भ्रान्तिथी बहिर्वत् भेदे करीने प्रतिभासे छे अने तेथी ‘ अह ’ एवो प्रतिभास थतो नथी. कह्यु छे के —

जे भाग बीजा परिच्छेद(भाग)थी बाह्य होय एम जणाय छे ते अर्थात् अभेदी ज्ञाननो भेदप्रतिभास ए भ्रान्ति छे. अने

जे अंतर्ज्ञेय तत्त्व छे ते बहिर् होय तेम जणाय छे.

परंतु आ कहेवु अयुक्त छे. कारण बाह्य अर्थ न होय तो तेनी उत्पत्ति नहि होवाथी बाह्य जेवो एम उपमान कहेवु

ते अयुक्त छे. कोइ पण प्रेक्षावान् कही शकशे नहि के वसुमित्र वंध्यापुत्र जेवो देखाय छे. वळी भेदप्रतिभास भ्रान्ति छे एम सिद्ध करवामां अभेदप्रतिभासनुं प्रमाण लेवुं. अने अभेदप्रतिभासने प्रमाण ठरावववामां भेदप्रतिभास भ्रान्तिनी छे एम कहेवुं एम करतां परस्पराश्रयदोष आवे छे. जगत्मां पण आपणे एवी व्यवस्था जोइए छीए के संवित्ति करनार नीलादि बाह्य अर्थनुं उपादान करे छे अने आन्तरनी उपेक्षा करे छे. ए प्रकारे आ अभेदनो साधक जे हेतु ते गोमयनु पायसान्न बनाववानी पेठे आभासरूप छे. माटे बाह्य जेवुं एम कहेवा जतां 'बाह्य ग्राह्य छे ज' एवी भावना करवी पडे छे अने ते प्रमाणे तमारुं बाण तमने ज वागे छे.[६१]

कोइ कहेशे के ज्ञानथी अभिन्न काल वाळा अर्थनुं बाह्यत्व अनुपपन्न छे, तो तेम धारवुं ए ज अनुपपन्न छे. कारण के इंद्रियसंनिकृष्ट विषय उत्पाद्यज्ञानमां स्वाकार समर्पण करे छे तेथी समर्पित थयेला आकार वडे ते अर्थनुं अनुमान करी शकाय छे ए वात समजाय एवी छे.[६२] माटे प्रश्न अने प्रत्युत्तरनो आ प्रमाणे संग्रह कर्यो छे.

'जे पदार्थ ग्राह्य छे ते भिन्न शी रीते होइ शके?' एम जो कोइ पूछे तो कहेवानु के ग्राह्यता जणाय छे ए ज कारण छे. अने व्यक्तिनु हेतुत्व तेना ज्ञानाकारमां अर्पणथी शक्य छे. तेम ज जेम पुष्टिथी भोजननु अनुमान थइ शके छे अने जेम भाषाथी देशनु अनुमान थइ शके छे ते प्रमाणे ज्ञानना आकारे करीने ज्ञेयनु अनुमान थइ शके छे. कह्यु छे के,

पदार्थ अर्थरूपताने छोड्या वगर अर्थनी साथे संवित्तिने घटे छे; माटे प्रमेयनी अधिगतिनुं प्रमाण प्रमेयरूपता छे.

'वित्तिनी सत्ता ए ज वित्तिनुं वेदन' एम धारवुं युक्त नथी कारण के वित्तिसत्ता सर्वत्र समान छे. वळी वित्तिसत्ता सारूप्यमां आवे त्यारे ज वित्तिवेदनने सरूप करी शके. बाह्यार्थना सद्भावनो प्रयोग आ प्रमाणे छे. जे जेना होवा छतां पण कादाचित्क होय ते सर्व तेनाथी अतिरिक्तनी अपेक्षा करे छे; जेम के हुं बोलवानी के जवानी इच्छा न करतो होउं तो बोलवानो तथा जवानो प्रतिभास बोलवानी अने जवानी इच्छा करनार अन्य पुरुषोनी अपेक्षा करे छे. ते ज प्रमाणे विवादास्पद एवा प्रवृत्तिप्रत्ययो आलयविज्ञान होवा छतां पण कदाचित् ज नीलादिनो उल्लेख कराये छे. आलयविज्ञान एटले अहं छे स्थान जेनुं एवुं विज्ञान, अने नीलादिनो उल्लेख करावनार ते प्रवृत्तिविज्ञान. कह्युं छे के,

जे अहंनो आश्रय करनार ते आलयविज्ञान जे नीलादिनो उल्लेख करावे छे ते प्रवृत्तिविज्ञान.

माटे आलयविज्ञानना संतानथी अतिरिक्त, कादाचित्क, अने प्रवृत्तिविज्ञाननो हेतु जे बाह्य अर्थ ते ग्राह्य छे ज, परंतु ते कदाचित् उत्पन्न थतो नथी, कारण के वासनापरिपाकप्रत्यय कादाचित्क छे ए प्रमाणे जाणवुं जोइए.[६३]

विज्ञानवादिनये प्रमाणे वासनाओमां एकसंतानवर्ती आलयविज्ञानोनी जूदीजूदी प्रवृत्तिने उत्पन्न करवानी शक्ति छे. अने ते(शक्ति)नुं स्वकार्योत्पत्ति प्रति आभिमुख्य ते परिपाक छे; ते(परिपाक)नो प्रत्यय एटले कारण ते स्वसंतानवर्ती पूर्वक्षण एम स्वीकारवामां आवे छे. कारण के अन्य संतान तेनुं कारण छे एम अंगीकार करवामां आवतुं नथी. माटे प्रवृत्तिविज्ञानने उत्पन्न करनार आलयविज्ञानवर्ती वासनाना परिपाक प्रति सर्व आलयविज्ञानवर्ती क्षणो समर्थ छे एम कहेवुं जोइए, नहि तो कोइ पण समर्थ थशे नहि, कारण के सर्व आलयविज्ञानना संतानमां ज रहे छे. सर्व समर्थ छे ए पक्षमां कार्यक्षेप अनुपपन्न छे

माटे कादाचित्कत्वना निर्वाहने माटे शब्द–स्पर्श–रूप–रस–गंध विषयक तथा सुखादिविषयक छ प्रत्यय चार प्रत्ययने लइने उत्पन्न थाय छे. ए प्रकारे इच्छा न होय तो पण पोताना अनुभवनु आच्छादन न करता स्वच्छमतिना चतुरे परिच्छेद करवो जोइए. ते आलंबन, समनन्तर, सहकारी, अने अधिपतिरूप चार प्रत्यय प्रसिद्ध छे[६५] तेमा ज्ञानपदथी ओळखाता नीलादि अवभासनी चित्तना नीलालंबनप्रत्ययथी नीलाकारता थाय छे, प्राचीन काल जे समनन्तरप्रत्यय तेनाथी बोधरूपता थाय छे. आलोक जे सहकारिप्रत्यय तेथी तथा अधिपतिप्रत्यय जे नेत्र तेथी विषयग्रहणनी प्रतीति उत्पन्न थाय छे. विदितज्ञान जे रसादिनी साथे साधारणता पामे छे तेनु नियामक जे चक्षु ते अधिपति थवाने योग्य छे, कारण के लोकमा जे नियामक होय छे ते अधिपति कहेवानानो ज. ए प्रमाणे चित्त अने चित्तविकारात्मक सुखादिना चार कारण जोइ लेवा ए प्रमाणे **चित्तचैत्तात्मक स्कंध** पाच प्रकारनो छे[६७] रूप, विज्ञान, वेदना, संज्ञा, अने संस्कार. तेमा विषय जे वडे रूपयुक्त थाय छे तेम ज रूपण थाय छे जेनाथी, ए व्युत्पत्ति वडे वर्तीने पण विषय सहित इन्द्रियो ते रूपस्कंध, आलयविज्ञान अने प्रवृत्तिविज्ञानना प्रवाह ते विज्ञानस्कंध; उपर कहेला बे स्कंधना संबंधथी उत्पन्न थतो सुखदुःखादिप्रत्ययनो प्रवाह ते वेदनास्कंध; गौ इत्यादि शब्दने स्फुरनार विज्ञानप्रवाह ते संज्ञास्कंध; वेदनास्कंध उपर आधार राखनार रागद्वेषादि क्लेश, मदमानादि उपक्लेश, धर्म अने अधर्म, ए संस्कारस्कंध, माटे आ सर्व दुःख छे, दुःखनु स्थान छे. अने दुःखनु साधन छे एम भावना करीने तेना निरोधनो उपाय जे तत्त्वज्ञान ते संपादन करवु माटे कह्यु छे के 'आर्य(साधु)ने माटे दुःखसमुदायना निरोधना चार मार्ग बुद्धनां मानेलां तत्त्व छे' तेमां दुःख प्रसिद्ध छे. समुदाय

एटले दुःखनुं कारण. ते बे प्रकारनो छे. प्रत्ययोपनिबन्धन, अने हेतूपनिबंधन. तेमां प्रत्ययोपनिबन्धन(समुदाय)नुं संग्राहक सूत्र आ प्रमाणे छे. 'आ कार्य प्रति जे अन्य हेतुओ (आश्रयने माटे) जाय छे' ते जनार हेतुओनो भाव ते **प्रत्यय;** कारणनो समुदाय ते मात्र तेनुं फळ छे, कोइ पण चेतननुं नथी. आ प्रमाणे सूत्रार्थ छे.[*] जेम के बीज छे हेतु जेनो एवो अंकुर छ धातुना समुदायथी थाय छे; तेमां पृथ्वीधातु अंकुरनुं काठिन्य अने गंधने उत्पन्न करे छे; जलधातु स्नेह अने रसने उत्पन्न करे छे; तेजोधातु रूप अने उष्णताने उत्पन्न करे छे. वायुधातु स्पर्श अने चलनने उत्पन्न करे छे. आकाशधातु अवकाश अने शब्दने उत्पन्न करे छे. अने ऋतुधातु यथायोग्य पृथ्वी आदिनो योग उत्पन्न करे छे.

हेतूपनिबन्धन समुदायनुं संग्राहक सूत्र आ प्रमाणे छे. * 'तथागत(बुद्ध)ना अभिप्राय प्रमाणे आ धर्मोनी धर्मता, धर्मस्थितिता, धर्मनियामकता, अने तेमनी प्रतीति अनुसार समुत्पादनी अनुलोमता, ए सर्व तेओना उत्पादथी के अनुत्पादथी स्थित छे.' आ सूत्रनो अर्थः—तथागत(बुद्ध)ना मत प्रमाणे कार्यकारणरूप धर्मोनी जे कार्यकारणभावरूप धर्मता ते उत्पत्ति के अनुत्पत्तिथी स्थित छे. जेना होवाथी जे उत्पन्न थाय छे ते ते कारणनुं कार्य छे ए प्रकारे धर्मतानुं विवरण छे. कार्यकारणना अनतिक्रमे करीने धर्मनी स्थिति छे. कारणनी कार्य प्रति नियामकता ते धर्मनियामकता. कोइ पूछे के आ कार्यकारणभाव चेतन वगर संभवे नहि, तो तेने माटे कह्युं छे के कारण होइने तेने समजाने ग्रहण करीने उत्पत्तिमां जे अनुलोमता अर्थात् अनुसारिता ए ज धर्मता, ते धर्मोना अनुत्पाद अथवा उत्पादथी स्थित छे. अहीं कोइ चेतन अधिष्ठातानी उपलब्धि थती नथी; ए प्रकारे सूत्रार्थ छे.[*] कारणनी प्रतीति

थया पछी थनार जे समुत्पाद तेमा हेतुपरपरा आ प्रकारनी छे. बीजमाथी अकुर, अकुरमाथी थाड, थाडथी नाल, नालथी गर्भ, गर्भथी कली, कलीथी पुष्प, पुष्पथी फल. अहीं बाह्य समुदायमा बीजादि कारणने अने अकुरादि कार्यने 'हु अकुरने प्रकट करु अने हु बीजे करीने प्रकट थाउ' ए प्रकारनु चैतन्य छे नहि. ए प्रमाणे आध्यात्मिक अर्थमा पण बे कारण समजवा. हमारी आगळ प्रमेयाब्धि छे पण ग्रन्थनो विस्तार थाय ते बीकथी हमे विरमीए छीए. उपर कहेला बे (दु ख अने दु खसमुदाय)नो निरोध अने ते पछी विमल ज्ञाननो उदय ते मुक्ति. ते निरोधनो उपाय ते मार्ग. ते तत्त्वज्ञान छे, अने ते प्राचीन भावनाना बलथी थाय छे, ए प्रकारे आ परम रहस्य जेओए सूत्रनो अन्त पूछयो तेओने कहेलु छे. अने तमे सूत्रनो अन्त पूछो छो माटे सौत्रान्तिक थाओ एम भगवान् बुद्धे कह्यु तेथी तेओनी सौत्रान्तिक सज्ञा उत्पन्न थई.

'गधादि बाह्य स्कध अने रूपादि आन्तर स्कध होवा छता पण केटलाक बौद्ध ते उपरथी आत्मबुद्धि खसेडाववा माटे "सर्व शून्य छे" एम कहे छे,' एम भगवान् बुद्धे प्रथमना शिष्योने कह्यु. बीजा जे विज्ञानमात्र उपर आग्रह राखता हता तेओने 'विज्ञान एज एक सत् छे' एम कह्यु. त्रीजा जेओनी आस्था एवी हती के उभय सत्य छे तेओने कह्यु के 'विज्ञान अनुमेय छे.' 'आ प्रकारनी भगवान्नी भाषा विरुद्ध छे' एम जे कहेवा लाग्या तेओ वैभाषिक सज्ञाथी प्रसिद्ध थया, तेओनी परिभाषा आ प्रमाणे छे.[६] विज्ञेयानुमेयत्ववाद प्रमाणे कोई पण प्रत्यक्ष अर्थना अभावथी व्याप्तिना ज्ञान अने स्थानना अभावने लीधे अनुमाननी प्रवृत्ति नहि थवाथी सकल लोकना अनुभवमा विरोध आवशे, माटे अर्थ बे प्रकारना छे, ग्राह्य अने अध्यवसेय. तेमा ग्रहण निर्विकल्पनरूप छे अने ते कल्पनाथी रहित छे माटे प्रमाण

छे. अध्यवसाय सविकल्पकरूप छे अने ते कल्पना होवाथी अप्रमाण छे. कह्यु छे के —

जे कल्पनारहित अने भ्रान्तिरहित छे ते निर्विकल्पक प्रत्यक्ष छे वस्तुना निर्भासथी विकल्प(कल्पना) उत्पन्न थाय छे, अने वस्तुना असवादथी भ्रान्ति उत्पन्न थाय छे. ग्राह्य (प्रत्यक्ष) वस्तु प्रमाण छे. तेथी अन्य प्रकारनुं जे ग्रहण ते वस्तु पण नथी, अने शब्द, साधन, अने इन्द्रियथी उत्पन्न थनार प्रमाण पण नथी[१]

कोइ पूछे के सविकल्प अप्रमाण होय तो तेथी प्रवृत्त थनारने अर्थप्राप्ति शी रीते समजे ? तो तेने कहेवानु के एम धारवु ठीक नथी. कारण के ' मणिनी प्रभाने विषे मणिविकल्प करवो ' ए न्यायथी परपराए करीने अर्थनी प्राप्ति समजे छे. अने ए प्रमाणे अर्थप्राप्ति उपपन्न छे[१] बाकीनु सोत्रान्तिकना प्रस्तावमा कह्यु छे माटे ते हमे अहीं कहेता नथी. शिष्यना आशय(पात्रता) प्रमाणे उपदेशनो भेद राखवो ए साप्रदायिक नथी एम धारवु नहि. बोधचित्तविवरणमा कह्यु छे के,—

बुद्धनो उपदेश शिष्यना सत्त्व अने आशयने अनुसार होवाथी अनेक उपायरूप भेदथी ते अनेक प्रकारनो लोकमां प्रचलित छे

ते उपदेश कोइ वार गभीर होय छे ने कोइ वार उपलक्षोआ होय छे कोइ वार उभय प्रकारनो होय छे. ए प्रमाणे ते भिन्नभिन्न छे अने अद्वय छे लक्षण जेनु एवी शून्यता पण भिन्न छे

द्वादश आयतननी पूजा श्रेयस्कर छे एम बौद्ध मतमा प्रसिद्ध छे.

बहु प्रकारे अर्थनुं उपार्जन करीने द्वादश आयतननी संपूर्ण रीते पूजा करवी. बीजी पूजाओने शुं करवी छे ?

पंच ज्ञानेन्द्रिय, पंच कर्मेन्द्रिय, मनस् अने बुद्धि एने डाह्या माणसोए द्वादश आयतन कहेलां छे.

विवेकविलासमा बौद्ध मत आ प्रमाणे कह्यो छे —

बौद्धनो देव सुगत (बुद्ध) छे. तेमना मतमां विश्व क्षणभंगुर छे आर्यसत्त्व ए नामथी प्रसिद्ध चार तत्त्व छे ते अनुक्रमे आ प्रमाणे छे

दुःख, आयतन, समुदाय, अने मार्ग. तेओनां लक्षण क्रमवार सांभळो

दुःख संसारीना स्कंध छे; ते पांच कहेवाया छे; विज्ञानस्कंध, वेदनास्कंध, संज्ञास्कंध, संस्कारस्कंध, अने रूपस्कंध.

पांच कर्मेन्द्रिय, शब्दादि पंच विषय, मनस्, अने धर्मायतन (बुद्धि) ए बार आयतन छे.

ते ज्यारे मनुष्यना हृदयमां उदयने पामे छे त्यारे रागादि गण थाय छे अने ते ज 'आत्मानो आत्मीय स्वभाव' एवी संज्ञा पामे छे त्यारे समुदय कहेवाय छे.

सर्व संसार क्षणिक छे एवी स्थिर वासना ते मार्ग जाणवो, ते ज मोक्ष कहेवाय छे

ते ज प्रमाणे प्रत्यक्ष अने अनुमान ए बे प्रमाण छे. बौद्धोना वैभाषिकादि नामना प्रसिद्ध चार सम्प्रदाय छे.

वैभाषिक मुख्यत्वे करीने अर्थने ज्ञानान्वित माने छे सौत्रान्तिक बहिर् अर्थ प्रत्यक्षग्राह्य नथी एम माने छे

योगाचार एम माने छे के बुद्धि आकारसहित छे, अने माध्यमिक केवल संविद् ने पोते पोतामां अवस्थित माने छे.

चार प्रकारना बौद्ध एम माने छे के रागादिना, ज्ञानसंतानना, अने वासनाना उच्छेदथी मुक्ति मळे छे.

चर्म तथा कमंडलु धारण करवां, माथुं मुंडाववुं, चीथरां पहेरवां, पहेले पहोरे भोजन करवुं, संगमां रहेवुं, अने रक्त वस्त्र पहेरवां ए बौद्ध भिक्षुकोनो आचार छे.

आर्हत दर्शन.

आ प्रकारनुं मुक्तकच्छनुं मत नहि सहन करनार दिगंबरो[२] गमे ते प्रकारे स्थायित्वनो आधार लइने क्षणिकत्व पक्षनो प्रतिक्षेप करे छे. जो कदापि आत्माओ स्थायी छे एम न ग्रहण करीए तो लौकिक फलनां साधन संपादन करवानुं काम पण फलरहित थाय. कारण के एक करे, अने अन्य भोगवे ए संभवित नथी. माटे 'हुं के जेणे पूर्व कर्म कर्या ते हमणां तेनां फलने भोगवुं छुं' ए अनुभव, पूर्वापर कालमां अनुगत एवा स्थायी आत्मानुं स्पष्ट प्रमाण छे; अने तेथी जे पूर्वापर भागथी रहित छे, अने जेनुं कालनी एक कलामात्रमा अवस्थान छे, ए लक्षणयुक्त क्षणिकता परीक्षक आर्हतने ग्रहण करवा योग्य नथी. हवे पूर्वपक्षी एम माने के 'प्रमाणथी निश्चित थयेलो प्रवाह कोण अटकावी शके?' ए न्यायथी जे सत् छे ते क्षणिक छे इत्यादि प्रमाणे करीने क्षणिकता प्रमित थई छे तेथी तदनुसार समानसंताननर्ती प्रत्ययोमानो प्राचीन प्रत्यय, कर्मकर्ता अने उत्तर प्रत्यय फलभोक्ता ठरे छे[३] वळी कार्यकारणभाव नियामक छे तेथी आ (सर्व क्षणिक छे ए) प्रमितिनो अतिप्रसंग पण थतो नथी[४]; जेम के मधुर रसमा भावित करेला आम्रबीजने खेडेली जमीनमां वावता अंकुर, काड, स्कंध, शाखा, पल्लव इत्यादि सर्वनी परंपराए करीने तेनां फलमां माधुर्य आवे छे एवो नियम छे, अथवा जेम के लाक्षारसथी

सिंचेलां कपास वगेरेनां बीजनी अंकुरादिनी परंपराए करीने कपासादिमां रक्तता आवे छे एम नियम छे. कह्युं छे के,

जे संतानमां कर्मवासनानुं आधान करवामां आव्युं छे त्यां ज फल बंधाय छे[5] जेम के कपासमां रक्तता.

बीजोरां वगेरेना पुष्पमां जे लाक्षादि रेडवामां आवे छे त्यां कोइएक शक्ति बंधाय छे तेने केम जोता नथी?

परंतु आ सर्व काशकुशनुं अवलंबन करवा जेवुं छे. कारण के नीचेनो विकल्प सहन थइ शकतो नथी. ते आ प्रमाणेः जलधरादि दृष्टांतमां क्षणिकत्व आ (अर्थात् जे सत् छे ते क्षणिक छे इ०.) प्रमाण वडे प्रमित कर्युं छे के बीजा कोइ प्रमाण वडे? तमाराथी प्रथम पक्ष ग्रहण कराय नहि. कारण के तमारुं अभिमत क्षणिकत्व क्वचित् अदृष्टचर होवाथी दृष्टांतनी असिद्धि थाय छे अने तेथी आ अनुमान थतुं नथी. बीजो पक्ष पण लेवाय नहि कारण के तेना ते ज न्यायथी सर्वत्र क्षणिकत्व सिद्ध थतां सत्त्वनुं अनुमान विफल थशे[6]. सत्त्वनो अर्थ अर्थक्रियाकारित्व एम लेतां मिथ्या सर्पदंशादि पण अर्थक्रियाकारी होवाथी ते पण सत् थशे. माटे कह्युं छे के,

जे उत्पाद व्यय अने ध्रौव्ययुक्त छे ते सत् छे.[7]

जो कोइ कहे के सामर्थ्य अने असामर्थ्यरूप विरुद्ध धर्मना अध्यासथी आ सत्नी असिद्धि थाय छे[8] तो तेम कहेवुं ठीक नथी, कारण के स्याद्वादीने अनेकान्ततावाद इष्ट होवाथी विरोध असिद्ध थशे. कर्पासादिनुं दृष्टान्त कह्युं ते कहेवा मात्र छे, कारण के तेने सिद्ध करवामां युक्ति कहेवामां आवी नथी. अने तेमां निरन्वयनाश अंगीकार कर्यो नथी. वळी संतानी वगर पण संतान प्रमाणसिद्ध ठरतो नथी. कह्युं छे, केः—

जे व्यक्तिओ सजातीय होय अथवा क्रमोत्पन्न होय, के परस्पर प्रत्यासन्न होय तेने विषे जे संतान छे ते एक छे एम कहेवाय छे.

कार्यकारणभावनियम पण अतिप्रसंगनो भंग करी शकतो नथी, कारण के तमारा धारवा प्रमाणे उपाध्यायनी बुद्धिमा अनुभूत थयेलु शिष्यनी बुद्धि स्मरण करी शके, अथवा तेना करेला कर्मनु फल ते भोगवे, अने तेम थता कृत कर्मनो नाश थने अकृत कर्मनो आगम थवानो प्रसंग आवे[11] सिद्धसेन वाक्यकार कहे छे के,

कृत कर्मनो नाश, अकृतनो भोग, अनुभवनो नाश, अने स्मृतिनो भंग, ए दोषनो उपेक्षा करीने एकदम क्षणभंगने सिद्ध करवानी इच्छा करनार आ पूर्वपक्षी अहो! महा साहसिक छे.

वळी क्षणिकत्वपक्षमा ज्ञानकाले ज्ञेयना असत्त्वे करीने अने ज्ञेयकाले ज्ञानना असत्त्वे करीने ग्राह्यग्राहकभाव अनुपपन्न थता सकल लोकव्यवहार अहीं अस्त थशे[13] वने (ज्ञान अने ज्ञेय) समकालवर्ती छे एम पण मानवु नहि, कारण के एम कहेता डाबा जमणा शींगडानी पेठे कार्यकारणभावना असभवे करीने ग्राह्यनो आलम्बनप्रत्यय अनुपपन्न थशे[14] वळी 'भिन्नकालवर्ती पदार्थ आकारार्पक होवाथी (जो के ज्ञानकाले तेनो नाश थाय तो पण) ग्राह्य छे' एम धारवु ए पण गळे उतरे एवु नथी. कारण के प्रथम तो क्षणिक ज्ञान आकारार्पकतानो आश्रय छे एम कहेवु ए ज अशक्य छे, वळी ज्ञान ज साकार छे ए वाद लो तो तेमा ते (क्षणिक ज्ञान आकारार्पकतानो आश्रय छे ए वात) नु खडन थइ जाय छे. अने निराकारज्ञानवादमा तो योग्यताना बलथी प्रतिकर्मनी व्यवस्था स्थित थाय छे. (अने तेथी क्षणिक ज्ञान आकारार्पकतानो आश्रय छे एम लेवानु प्रयोजन रहेतु नथी[15]) वळी विषयाकाररहित ज्ञान ज प्रत्यक्षे करीने घटादिज्ञानना रूपमा प्रत्येक भिन्नभिन्न पुरुषथी अनुभवाय छे, दर्पणादिनी पेठे प्रतिबिंबगत ज्ञाननो

अनुभव करातो नथी.[१५] वळी ज्ञान विषयना आकार धडे धारीने पदार्थमां धारित थाय छे एम लइए तो दूर, अन्तिक, इत्यादि व्यवहारने जलांजलि आपवी पडे.[१६] आथी कंइ इष्टापत्तिनी आशा राखवी नहि. कारण के पर्वत दूर छे, थडमां छे, ऊंचो छे, के महोटो छे इत्यादि व्यवहार निर्बाध जोवामां आवे छे.[१७] 'आकारनुं आधान करनार ते अर्थनो दूरत्वादि स्वभाव छे अने तेने लीधे ए प्रकारनो (दूर छे इ०) व्यवहार चाले छे,' एम पण कहेवाय नहि, कारण के दर्पणादिमा ते प्रमाणे जोवामां आवतुं नथी.[१८] वळी अर्थथी उत्पन्न थनारुं ज्ञान जेम तेनी नीलाकारतानुं अनुकरण करे छे तेम तेनी जडतानुं पण तेणे अनुकरण करवुं जोइए; अने तेथी ते (ज्ञान) पण जड थवुं जोइए. आम थता वृद्धिनी इच्छा करतां मूळ पण नष्ट थाय अने ए महा कष्ट आवी पडे. हवे आ दोषनो परिहार करवाने ज्ञान जडतानुं अनुकरण नथी करतु एम जो तमे कहो तो जडतानुं ग्रहण पण नहि थाय. अने तेथी एकैतुं अनुसधान करवानी इच्छा करता बीजुं जतुं रहेशे. जो कहो के 'जडतानुं ग्रहण न थाय तो तेमां हमारु शु जवानु छे' तो (हमे कहीशु के) जडतानु ग्रहण न थाय, अने तो पण नीलाकारनु ग्रहण थाय तो ते बेमा भेद होय के ते बेमां अनेकान्तता आवे. नीलाकार ग्रहण थाय तो अग्रहीत जडता तेने अनुरूप शी रीते थाय? जो एम थतु होय तो गृहीत एवो जे स्तभ ते अगृहीत एवा त्रैलोक्यस्वरूपे पण ग्रहण करी शकायँ. आ सर्व प्रमेय प्रतापचद्र वगेरे अर्हत्मतानुसारीओए **प्रमेयकमलमार्तंड** आदि ग्रन्थोमां प्रपंचित कर्या छे, माटे ग्रन्थविस्तारना भयथी हमे आ स्थळे लखता नथी. माटे पुरुपार्थनी अभिलाषा करनार पुरुषोए बौद्ध मत न स्वीकारवो पण आर्हत मतने सेववो. चन्द्रसूरिए **आप्तनिश्चयालंकार**मा अर्हत्स्वरूप आ प्रमाणे ठराव्यु छे.

सर्वज्ञ, रागादि दोष जेणे जीत्या छे एवो, त्रैलोक्यपूजित अने यथार्थवादी अर्हत् देव परमेश्वर छे.

कोई शंका करे के सर्वज्ञ पदथी ओळखातो कोइ पुरुषविशेष प्रमाणथी सिद्ध थतो नथी, कारण के तेना सद्भावने समजावनार पांच प्रमाणें उपलब्ध नथी. तौतातिते (कुमारिलभट्टे) कह्युं छे के:—

प्रथम तो आपणा जेवा कोइथी सर्वज्ञ हालमां जोवातो नथी. तेनो एक देश पण कोइए जोयो नथी, के जे हेतु थइ तेनुं अनुमान करावे. कोइ नित्य सर्वज्ञने जणावनार आगमनुं विधिवाक्य पण नथी. कोइ अर्थवाद पण तत्पर जणातो नथी. अन्यार्थप्रधान वाक्यो वडे पण तेना अस्तित्वनुं विधान थतुं नथी. ते अनुवादमां पण आवतो नथी, कारण के पूर्वेना कहेनार कोइए तेनो बोध कर्यो नथी. आदिमान् सर्वज्ञ अनादि वेदनो अर्थ होय नहि, अने असत्य कृत्रिम शास्त्रोथी तेनुं प्रतिपादन तो थाय ज शी रीते? जो सर्वज्ञना वचन वडे बीजाने तेनी प्रतीति थाय तो अन्योन्याश्रयदोषवाळा आ उभयनी सिद्धि शी रीते कल्पी शकाय? सर्वज्ञनुं कहेलुं माटे वाक्य सत्य, अने वाक्ये करीने तेनुं अस्तित्व सिद्ध आ प्रमाणे ज्यां सुधी अन्यसिद्ध मूल होय नहि त्यां सुधी उभयनी सिद्धि शी रीते थाय? मूलरहित एवां असर्वज्ञप्रणीत वाक्यथी सर्वज्ञने जाणवानुं कहेनार लोको सर्वज्ञोक्त वाक्यने जाणता नथी. जो हाल कोइ सर्वज्ञ जेवुं जोवामा आवे तो उपमान वडे हमे सर्वज्ञने जाणीए. बुद्धनो धर्माधर्मादिगोचर उपदेश पण जो तेनामा सर्वज्ञता न होय तो उपपन्न गणाय नहि."

आ सर्वनुं प्रतिविधान हमे आ प्रमाणे करीए छीए; कह्युं के सद्भावने जणावनार पांच प्रमाण उपलब्ध नथी ते अयुक्त छे, कारण के तेना सद्भावने जणावनार अनुमानादिनो सद्भाव

छे. ते आ प्रमाणेः—कोइएक आत्मा सकळ पदार्थोनो साक्षात्कार करनार छे, कारण के तेनो तेने ग्रहण करवानो स्वभाव होई तेना प्रतिबंधक हेतुओनो क्षय थयो छे; जेनो जेने ग्रहण करवानो स्वभाव होइने तेना प्रतिबंधक हेतुओनो नाश थयो छे ते तेनो साक्षात्कार करनार छे; जेम के जेना तिमिरादि प्रतिबंधनो नाश थयो छे एवुं नेत्रेन्द्रिय रूपसाक्षात्कारी छे; कोइएक आत्मानो सर्वसाक्षात्कार करवानो स्वभाव होइने तेना प्रतिबंधोनो क्षय थयो छे; माटे ते सकल पदार्थनो साक्षात्कारी छे.[२२] अशेष पदार्थनुं ग्रहण करवानो आत्मानो स्वभाव छे ए हेतु असिद्ध नथी, कारण के चोदनावल्थी निखिल अर्थनुं ज्ञान थाय छे. अन्यथा 'सर्व अनेकांत छे सत्त्वथी' इत्यादि व्याप्तिज्ञान पण अनुपपन्न थाय. हवे 'चोदना (विधि) भूत, वर्तमान, भविष्यत्, सूक्ष्म, व्यवहित, विप्रकृष्ट (दूर) इत्यादि जातिना अर्थनुं ज्ञान आपे छे' ए वात माननार पूर्वमीमांसको 'सकल अर्थसंबंधी ज्ञान विधि अने निषेधनी विचारणा उपर आधार राखे छे,' एम प्रतिपादन करे छे, अने तेथी आत्मा सकल अर्थनुं ग्रहण करवाना स्वभाववाळो छे एम स्वीकारे छे.[२३] वळी अखिल अर्थना प्रतिबंधक आवरणनो क्षय अनुपपन्न छे एम पण नथी, कारण के सम्यग्दर्शनादि त्रण लक्षणयुक्त आवरणना क्षयनी हेतुभूत सामग्रीविशेष हमने प्रतीत छे.[२४] आ मुद्राए करीने क्षुद्रोपद्रव पण दूर करी शकाय.

पूर्वपक्षी कहे छेः—आवरणना क्षयथी अशेषपदार्थविषयक शुद्ध ज्ञान जेमां प्रत्यक्ष मुख्य छे ते उत्पन्न थाय छे एम जे तमे कहो छो ते अयुक्त छे; कारण के सर्वज्ञ अनादिमुक्त होवाथी आवरणनो ज असंभव छे.[२५]

आर्हतमतवादी कहे छेः—एम जो तमे कहो तो ते खोटुं छे, कारण के अनादिमुक्तत्व ए ज असिद्ध छे. सर्वज्ञ

अनादिमुक्त नथी, कारण के ते मुक्त छे; इतर मुक्तनी पेठे. बद्धनी अपेक्षाए करीने मुक्त कहेवाय छे. अने आकाशनी पेठे ते बद्ध न होय तो मुक्त पण न होय[२६].

पूर्वपक्षी कहे छेः—परंतु अनादि एवी पृथिव्यादि कार्यनी परंपरानो कर्ता होवाथी ते (आत्मा) नी सिद्धि छे. ते आ प्रमाणेः—पृथिव्यादि सकर्तृक छे, कार्यत्वथी; घटनी पेठे[२७].

आर्हतमतवादी कहे छे.—ए अनुमान ठीक नथी, कारण के कार्यत्व ए ज असिद्ध छे. तमाराथी एम तो कहेवाशे नहि के ते सावयव छे माटे कार्य छे, कारण के नीचेना विकल्प आवे छे. सावयवत्व एटले शु? अवयवसंयोगित्व, अवयवसमवायित्व, अवयवजन्यत्व, समवेतद्रव्यत्व के सावयवबुद्धिविषयत्व? प्रथम पक्ष अंगीकार कराय नहि, कारण के तेम करता आकाशादिमा अनेकान्तता आवशे[२८]. बीजो पक्ष पण लेवाय नहि, कारण के तेम करता सामान्यादिमां व्यभिचार आवशे[२९]. त्रीजो पक्ष पण लेवाय नहि, कारण के ते अने साध्य सरखा थशे[३०]. चोथो पक्ष पण लेवाय नहि, कारण के नीचेना विकल्परूप बे अर्गलामा ते सपडाशेः—मात्र समवायसंबंधवाळुं द्रव्य ते समवेतद्रव्य के अन्य साथे समवायसंबंधवाळुं द्रव्य ते तमारा हेतुरूपे कहेवामां आवेलु समवेतद्रव्य? प्रथमनो पक्ष लेता गगनादिमा व्यभिचार आवे छे. कारण के ते गुणादि साथे समवायसंबंधवाळु छे अने द्रव्य पण छे. बीजो पक्ष साध्यना जेवो छे, कारण के अन्यत्र शब्दथी कहेला समवायना कारणभूत अवयवने विषे समवाय सिद्ध करवानो छे. तमारा मत प्रमाणे हमे आ बोलीए छीए, वस्तुत तो समवाय ज नथी. कारण के तेना प्रमाणनो अभाव छे[३१]. पांचमो पक्ष पण लेवाय नहि, कारण के आत्मादिने विषे हेतुनो व्यभिचार थाय छे अने तेथी अनेकान्तिकतादोष आवे छे, कारण के

ते सावयवबुद्धिनो विषय छे पण कार्य नथी.[33] वळी 'आत्मा निरवयव छे पण सावयव अर्थ साथेना सबंधे करीने ते सावयव बुद्धिनो विषय छे एम लक्षणाथी कहेवाय' एम पण धारवुं नहि, कारण के जो ते निरवयव होयतो व्यापी न होय; जेम के परमाणुं; वळी हमे पूछीशु के शु तमे एक ज कर्ता सिद्ध करवा मागो छो, के शु ते स्वतंत्र छे एम सिद्ध करवा मागो छो? प्रथम पक्ष लेता प्रासादादिमां व्यभिचार आवशे, कारण के त्यां कारीगर वगेरे अनेक पुरुषो कर्ता छे एम जोइए छीए, अने स्वतंत्र लो तो ते एक ज सकल जगत्‌ने उत्पन्न करनार होवाथी इतरनी व्यर्थता ठरे छे.[34] वीतरागस्तुतिमां कह्यु छे के,

जगत्‌नो नित्य अने एक कर्ता छे. ते सर्वगत छे स्ववश छे, अने सत्य छे. जेना अनुशासक आप छो तेओने आवा प्रकारनी न तजी शकाय एवी पीडाओ होती नथी.

बीजे स्थले पण कह्यु छे के'—

अहिं कोइ स्वतंत्र इच्छावाळो कर्ता दृष्ट नथी, अन्यथा कटनी कृतिमां पण तेना होवानो प्रसंग रहे छे. जो पुरुष (ईश्वर) त्रण भुवननो नाश करीने तेने उत्पन्न करतो होय तो तमारुं के बीजा कारीगरोनुं शुं प्रयोजन छे?

माटे पूर्वे कहेला त्रण कारणोना बळथी आवरणनो क्षय थता सर्वज्ञता युक्त छे. अन्य उपदेशक वगर सम्यग्दर्शनादि त्रण अनुपपन्न छे एम पण कहेवु जोइए नहि. कारण के आ अशेष अर्थनु ज्ञान पूर्वना सर्वज्ञ पुरुषोना आगमथी उत्पन्न थाय छे. अन्योन्याश्रयतादि दोष पण आवे नहि, कारण के आगम अने सर्वज्ञनी परपरा बीजाकुरनी पेठे अनादि छे एम हमे मानीए छीएँ" आटलु बस छे.

रत्नत्रय पदवी प्रसिद्ध सम्यग्दर्शनादि त्रणने अर्हत् प्रवचनना संग्रह करनार परमागमसार नामना ग्रथमा आ प्रमाणे ठरावेला आव्या छे —

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, अने सम्यक्चारित्र ए मोक्षना मार्ग छे.

योगदेव तेनु विवरण आ प्रमाणे करे छे —जे रूपे करीने जीवादि अर्थ व्यवस्थित छे ते रूपे करीने अर्हत्ना प्रतिपादित तत्त्वार्थमां श्रद्धान एटले विपरीताभिनिवेशरहितत्व ते सम्यग्दर्शन तेम ज तत्त्वार्थसूत्र पण 'तत्त्वार्थमां श्रद्धा ते सम्यग्दर्शन' ए प्रमाणे छे. बीजु लक्षण पण आ प्रमाणे छे —

जिनोक्त तत्त्वने विषे रुचि ते सम्यक् श्रद्धा तेनी उत्पत्ति निसर्गथी होय छे, के ते गुरुना अधिगमथी थाय छे.

निसर्ग एटले परोपदेशनिरपेक्ष आत्मस्वरूप, अधिगम एटले व्याख्यानादिरूप परोपदेशजनित ज्ञान. जे स्वभावे करीने जीवादि पदार्थ व्यवस्थित छे ते स्वभावे करीने (तेओनु) मोह अने संशयरहित ज्ञान ते सम्यग्ज्ञान. कह्यु छे के,

यथावस्थित तत्त्वोनो संक्षेपे करीने के विस्तारे करीने जे अवबोध तेने डाह्या माणसो सम्यग्ज्ञान कहे छे.

ते ज्ञान पांच प्रकारनु छे. **मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्याय, अने केवल.** कह्यु छे के —

" **मति, श्रुत, अवधि, मन पर्याय, अने केवल, एटलां ज्ञान छे.** " तेओनो अर्थ आ प्रमाणे छे —

ज्ञानावरणनो क्षयोपशम थया पछी इन्द्रिय अने मनने आगळ करी (उपयोगमां लइ) ने जीव पोते व्यापृत थई यथार्थ विचार करे छे ते **मति**

ज्ञानावरणनो क्षयोपशम थया पछी मतिजनित स्पष्ट ज्ञान ते **श्रुत**

असम्यग्दर्शनादिगुणजनित (दोष) ना क्षयोपशमथी थयेलु, अने जेनो विषय अवच्छिन्न छे एवु जे ज्ञान ते **अवधि**[३]

ईर्ष्यारूप अंतरायथी थयेला ज्ञानना आवरणनो क्षयोपशम थतां परमनोगत अर्थनुं स्फुट अने परिच्छेदक ज्ञान ते मनःपर्याय.[४०]

जेने माटे तपस्वीओ तप वगेरे क्रियाविशेषनुं सेवन करे छे ते, अन्यज्ञानना स्पर्श वगरनुं ज्ञान ते केवल.[४१]

आ पाचमांनु प्रथम (मति) परोक्ष छे अने वाकीनां प्रत्यक्ष छे. कह्युं छे के:—

विज्ञान ए पोताने अने परने प्रकाश करे एवुं बाधरहित प्रमाण छे. मेयना बे प्रकारमां निश्चयथी ते प्रत्यक्ष अने परोक्ष छे.

अन्तर्गत सूक्ष्म भेद आगमोमांथी सविस्तर जोइ लेवा.

संसारकर्मनो उच्छेद करवाने उद्यत, श्रद्धावाळा, अने ज्ञानवाळा पुरुषने पाप प्रति गमन करावनार करणरूप क्रियानी निवृत्ति ते सम्यक्चारित्र.[४२]

आ सर्वनुं सविस्तर कथन अर्हत् आ प्रमाणे करे छे.

निंद्य योगोनो सर्वथा त्याग ते चारित्र. अहिंसादि व्रतना भेदे करीने ते पांच प्रकारनुं छे.

अहिंसा, सूनृत, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अने अपरिग्रह.

प्रमादयोगे करीने चर अने स्थावरना जीवितनो क्षय न करवो तेनुं नाम अहिंसाव्रत.[४३]

प्रिय, पथ्य, अने तथ्य वचन ते सूनृतव्रत कहेवाय छे.[४४] जे अप्रिय अने अहित होय ते तथ्य होय तो पण तथ्य कहेवाय नहि.

नहि आपेलुं न लेवुं तेनुं नाम अस्तेयव्रत. बाह्य प्राण छे ते मनुष्यनो अर्थ(मिलकत) छे जे कोइ तेने ले छे ते तेने ले छे.[४५]

दिव्य अने औदारिक कामनाओनो मन, वाणी, अने कायथी त्याग करवो, करवाने अनुमति आपवी, के करावयो तेनुं नाम ब्रह्मचर्य; ते अढार प्रकारनुं छे[४६]

सर्व अभावने विषेनी मूर्च्छा (मोह) नो त्याग ते अपरिग्रह, कारणके मोहथी असत् पदार्थने विषे पण चित्तने भ्रम थाय छे. पंच भावनाओ वडे अनुष्ठित करेलां आ अनुक्रमे पांच महाव्रतो लोकने अव्यय पदनी सिद्धि करावे छे."

पांच भावनाओनुं प्रपंचन पण

हास्य, लोभ, भय, क्रोध एओना निरंतर प्रत्याख्याने[४८] अने विचारी विचारीने बोलीने सूनृतव्रत अनुष्ठित करवुं

इत्यादि श्लोकोथी कर्युं छे. आ सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान अने सम्यक्चारित्र ए त्रणे भेगां मळतां मोक्षनुं कारण थाय छे. प्रत्येक पृथक्पृथक् थतुं नथी. जेमके रसायननुं ज्ञान, तेना फलमां श्रद्धा, अने तेनो उपचार ए एकठां मळीने रसायनफलने सिद्ध करे छे; प्रत्येक करतुं नथी.

संक्षेपथी कहीए तो आ मतमां जीव अने अजीव ए बे तत्त्व मानेलां छे. तेमां बोधात्मक ते जीव, अने अबोधात्मक ते अजीव. पद्मनंदि कहे छे के:—

चित् अने अचित् ए बे परतत्त्व छे. लेवा योग्यने लेनार अने त्याग करवा योग्यनो त्याग करनार पुरुषनी जे तेमना विषे विवेचनाबुद्धि ते विवेक छे.

कर्तानां रागादि त्याग करवा योग्य छे; अने अविवेकीनां ते कार्य छे. उपयोग ए ज छे लक्षण जेनुं ते परज्योति ग्रहण करवा योग्य छे.

उपयोग एटले सहज चिद्रूप परिणामनो स्वीकार करनार ज्ञान अने दर्शन. परंतु परस्पर प्रदेश होवाने लीधे प्रदेशबंधथी कर्म साथे एकताने पामेला आत्माने अन्यत्वनी प्रतिपत्तिनुं कारण एवुं तेनुं लक्षण थाय छे. सकल जीवने साधारण एवुं जे चैतन्य ते, उपशमक्षय अने क्षयोपशमने लीधे औपशमिकक्षमा-

त्मक अने क्षयोपशमिक भावे करीने कर्मोदय थवाथी कलुषादि आकारे करीने परिणामने पामेला जीवपर्यायनी जीवविवक्षा थतां तेनुं रूप थाय छे[५५].

वाचकाचार्य कहे छे के —

औपशमिकभाव, क्षायिकभाव, अने मिश्रभाव ए जीवनुं सत्त्व छे; तेम ज औदयिकभाव अने पारिणामिकभाव छे. जेमा कर्मनो उदय अने कर्मनी प्राप्तिनो अभाव छे एवो उपशम थता जीवनो जे भाव उत्पन्न थाय छे ते **औपशमिकभावें**, जेम के मलिनता करनार पङ्क कतकादि द्रव्यना सम्बधथी नीचे बेसी जता जलनी थती स्वच्छता. कर्मनो क्षयोपशम थता उत्पन्न थनार भाव ते **क्षायिकें**, जेमके मोक्ष. उभयात्मकभाव ते **मिश्रभावें**, जेमके जलनी अर्धस्वच्छता. कर्मनो उदय थता उत्पन्न थतो भाव ते **औदयिकें**. कर्मना उपशमादिनी अपेक्षा नहि करनार चेतनत्वादि सहज भाव ते **पारिणामिकभावें**. आ सर्वे ते ज यथासभव भव्य के अभव्य जीवनु तत्त्व—स्वरूप छे. ए प्रमाणे सूत्रार्थ छे. स्वरूपसंबोधनमा कह्यु छे के —

ज्ञानथी भिन्न अने अभिन्न नहि—कोइ पण रीते भिन्नाभिन्न एवो, पूर्वापरीभूतज्ञानरूप ते आत्मा कहेवाय छे[५६]

कोइ कहेशे के 'भेद अने अभेद परस्पर विरुद्ध होवाथी तेमानु एक ए ज वास्तविक छे, एटले उभयात्मक कहेवु ए अयुक्त छे' तो हमे कहीशु के आ कहेवु ज अयुक्त छे. कारण के उभयात्मक कहेता हमने जे बाधक नडे तेने सिद्ध करवा तमारी पासे प्रमाण नथी; जो कहो के अनुपलब्धि ए बाधकनु प्रमाण छे तो हमे कहीशु के ते छे नहि, कारणके हमारा स्याद्वादीना मतमा समस्त वस्तु अनेकरसात्मक छे एम सुप्रसिद्ध छे[५७]

वळी बीजा केटलाक जीव, आकाश, धर्म, अधर्म अने पुद्गल ए अस्तिकायर्नो भेदथी जीवाजीवनी बीजी व्यवस्था करे छे. आ पाच तत्त्व कालत्रयना सबधी छे माटे ते अस्ति एम कहेवाय छे. ते दरेक एक करता अधिक प्रदेश साथे शरीरनी पेठे युक्त छे माटे ते काय कहेवाय छे. त्या जीव बे प्रकारना छे, ससारी अने मुक्त. जे एक भवथी बीजा भवने पामे छे ते ससारी. ते बे प्रकारना छे, समनस्क अने अमनस्क. तेमा जेओ सज्ञावाळा छे ते समनस्क. शिक्षा, क्रिया, आलाप, अने ग्रहण ए छे रूप जेनु ते सज्ञा. जेओ सज्ञावगरना छे ते अमनस्क कहेवाय छे. अमनस्क बे प्रकारना छे. त्रसै अने स्थावर. तेमा बे इन्द्रियोवाळा इत्यादि जेवा के शख गडोलक (कीडा) वगेरे ते त्रस. ते चार प्रकारना छे, (बेन्द्रि, तेन्द्रि, चोरेन्द्रि, अने पचेन्द्रि). पृथ्वी, अप्, तेजस्, वायु, अने वनस्पति ए स्थावर छे. तेमा मार्गमानी धूळ ते पृथ्वी, ईट वगेरे ते पृथ्वीकाय–पृथ्वीने कायरूपे जेणे ग्रहण करी छे ते पृथ्वीकाय, पृथ्वीने कायरूपे जे ग्रहण करशे ते पृथ्वीजीव. ए प्रकारे आ चार भेदनी योजना अप् वगेरेमा पण करवी. तेमा पृथिव्यादिने कायरूपे जेओए ग्रहण करी छे अने जेओ ग्रहण करशे ते स्थावर (जीव) कहेवाय छे. परतु पृथिव्यादि अने पृथ्वीकायादि पोते स्थावर (जीव) कहेवाता नथी, कारणके ते अजीव छे. ते स्थावर मात्र एक स्पर्शेन्द्रियवाळा छे भवान्तरनी प्राप्तिथी रहित ते मुक्त. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, अने आकाशास्तिकाय ए एकएक अने निष्क्रिय छे. अने ते समस्त मळीने द्रव्यने एक प्रदेशमाथी बीजा प्रदेशमा पहोंचाडनार हेतु छे. तेमा धर्म अने अधर्म प्रसिद्ध छे. आलोक थडे अवच्छिन्न, लोकाकाश पदथी ओळखाता अने सर्वत्र अवस्थित एवा आकाशने विषे (जीवनी)

गति अने स्थिति करावयी ए धर्माधर्मनो उपकार छे. माटे धर्मास्तिकायनुं प्रवृत्तिथी अनुमान थाय छे, अने अधर्मास्तिकायनुं स्थितिथी अनुमान थाय छे. अन्य वस्तुना प्रदेशमां अन्य वस्तुनो प्रवेश ते अवगाह. ते आकाशनुं कृत्य छे. जेने स्पर्श, रस, अने वर्ण छे ते पुद्गल; ते बे प्रकारना छे,—अणु अने स्कंध. जेनो भोग नथी थई शकतो ते अणु. द्वयणुकादि ते स्कंध. तेमा द्वयणुकादि स्कंधना भेदथी अण्वादि उत्पन्न थाय छे. अने अण्वादिना संघातथी द्वयणुकादि उत्पन्न थाय छे. कोइ वार भेद अने संघात उभय वडे स्कंधनी उत्पत्ति थाय छे; माटे पूरयन्ति नाम पूरे छे अने गलन्ति नाम गळे छे ते पुद्गल[१]. काल एक करता अधिक प्रदेश साथे युक्त नथी अने तेथी ते अस्तिकाय नथी; तो पण ते द्रव्य छे, कारणके द्रव्यना लक्षणनो तेमां योग थाय छे. 'जेने गुण अने पर्याय[२] छे ते द्रव्य' ए द्रव्यनु लक्षण कह्युं छे. जे पोते निर्गुण छे अने द्रव्य जेनो आश्रय छे ते गुण. जेमके ज्ञानत्वादिसामान्य ए जीवना गुण छे, रूपत्वादिसामान्यस्वभाव ए पुद्गलना गुण छे; अने धर्म, अधर्म अने आकाशना अनुक्रमे गतिहेतुत्वसामान्य, स्थितिहेतुत्वसामान्य, अने अवगाहहेतुत्वसामान्य ए गुणो छे[३] उक्तरूपे करीने भवन, उत्पाद, तद्भाव, परिणाम, अने पर्याय (अत) ए द्रव्यना पर्याय छे. जेमके घटादि ज्ञान, सुख, क्लेश इत्यादि जीवना पर्याय छे. मृत्पिण्ड, घट इत्यादि पुद्गलना पर्याय छे, अने गत्यादिविशेष ए धर्मादिना पर्याय छे. माटे छ द्रव्य छे एम प्रसिद्ध छे.

केटलाक तत्त्व सात छे एम वर्णन करे छे. **जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जर,** अने **मोक्ष**. तेमा जीव अने अजीवनुं निरूपण हमे करी गया छीए; हवे आस्रवनुं निरूपण करीए छीए. औदारिकादि कायोना चलनद्वारा आ-

त्मानुं चलन जे योगपदवेदनीय छे ते **आस्रवे**. जेमके पाणीमा जतु द्वार नदीना स्नवणनु कारण छे माटे ते आस्रव कहेवाय छे तेम योगप्रणाडिकाए करीने कर्मनु आस्रवण थाय छे माटे **योग** छे ते **आस्रव** छे. जेम भीना वस्त्र उपर चारे तरफथी वायु वडे उडती रेणु ठरे छे तेम कषायरूप जळथी भीनो थयेलो आत्मा योगथी आणेला कर्मने सर्व प्रदेशे करीने ग्रहण करे छे; अथवा जेम तपेलो लोहनो गोळो पाणीमा नाखता पाणीने चारे तरफथी ग्रहण करे छे तेम कषायथी तप्त थयेलो जीव योगथी आणेला कर्मने चारे तरफथी ग्रहण करे छे. कुगतिमा लावीने जे आत्माने कषे छे अर्थात् प्रच्युत करे छे ते कषाय, जेवा के क्रोध, मान, माया अने लोभ. आस्रव बे प्रकारनो छे, शुभ अने अशुभ. तेमा अहिंसादि शुभ **काययोग** छे; सत्य, मित अने हित भाषणादि शुभ **वाग्योग** छे. आ आस्रवना भेदप्रभेद वगेरे 'काय, वाक् अने मनसूनो कर्मयोग ते आस्रव; ते पुण्यनो शुभ अने पापनो अशुभ' इत्यादि सूत्रसमूहे करीने संपूर्ण रीते वर्णव्या छे. केटलाक एम माने छे के जे इन्द्रियप्रवृत्ति विषयमा पुरुषने आस्रवे छे (छडसेले छे) ते आस्रव, कारणके पौरुष योति इन्द्रियद्वारा विषयनो स्पर्श करीने रूपादि ज्ञानरूप परिणामने पामे छे[FE]

मिथ्यादर्शन, अविरति, प्रमाद अने कषायने लीधे अने योगने लीधे आत्मा, सूक्ष्म एकक्षेत्रावगाही अनंतप्रदेशसयुक्त अने कर्मबंधने माटे योग्य एवा पुद्गलोनु जे उपादान करे छे ते **बंध** कह्यु छे के —

जीव सकषाय होवाथी कर्मभावने माटे योग्य एवा पुद्गलने ग्रहण करे छे तेनु नाम बध छे

अहीं कषाय सर्वबंधहेतुनो उपलक्षक छे. वाचकाचार्य कहे छे के —

बेंताळीश भिक्षादोषथी रहित एवुं जे अन्न मुनिओ ले छे ते एषणासमिति कहेवाय छे

आसनादिने बरोबर जोई सावचेतीथी ओळगी तेनुं ग्रहण करवु, तेने नीचे मूकवु अने ध्यान करवु तेनु नाम आदानसमिति.

कफ, मूत्र, मल इत्यादिथी तथा जतुथी रहित भूमि उपर संभाळीने मलोत्सर्ग करवो तेनु नाम उत्सर्गसमिति

माटे आस्रवरूप झराना द्वारनु जे संवरण (अटकाव) करे ते संवर एम कह्यु छे विद्वत् पुरुषो कहे छे के —

आस्रव संसारनो हेतु छे अने संवर मोक्षनु कारण छे आ प्रमाणे आर्हत धर्म मूठीमां माय एटलो छे. अन्य सर्व आनु प्रपचन छे

अर्जित करेला कर्मनु तपस् वगेरेथी निर्जरण ते निर्जरा तत्त्व छे ते चिर कालथी चालता आवेला कषायना समूहने तेम ज पुण्य अने सुखदु खने देहनी साथे नाश पमाडे छे. केशलुंछनादि तपस् छे. ते निर्जरा बे प्रकारनी छे. यथाकाल अने औपक्रमिक. जे वखते जे कर्म फलप्रदरूपे मानवामा आव्यु छे ते वखते फलदानथी उत्पन्न थती निर्जरा ते प्रथम प्रकारनी निर्जरा छे अने ते कामादिना परिपाकथी उत्पन्न थयेली छे एम कहेवाय छे तपोबलथी स्वकामनाना उद-यने माटे जे कर्म करवामा आवे छे ते कर्मनिर्जरा कह्यु छे के —

संसारनां बीजभूत कर्मना निर्जरणथी निर्जरा उत्पन्न थाय छे. ते बे प्रकारनी छे सकामा अने अकामा. यमी पुरुषोनी निर्जरा सकामा छे अने अन्य देहीओनी निर्जरा अकामा छे

मिथ्यादर्शनादि बंधहेतुओनो निरोध थता अभिनव कर्मना अभावथी अने निर्जराहेतुना सन्निधानने लीधे अर्जित

कर्मना नाशथी कर्मनो जे आत्यंतिक नाश थाय ते मोक्ष. 'बंधहेतुओनी निर्जरा थडे अने भवहेतुओनी निर्जरा थडे सकल कर्मथी संपूर्ण मोक्ष ते मोक्ष.' ते पछी जीव लोकान्तथी पण ऊर्ध्व जाय छे. जेम हस्त अने दंडना भ्रमणथी प्रेरित थयेलुं कुम्भकारनुं चक्र हस्त अने दंड उपरत थतां पण तेमां आवेला वळने लीधे संस्कारनो क्षय थतां सुधी फरे छे तेम संसारगत आत्मानुं अपवर्गनी प्राप्तिने माटे करेलुं प्रणिधान ते मुक्त थतां नष्ट थई जाय छे, तोपण पूर्वसंस्कारने लीधे तेनुं लोकान्त सुधी गमन उपपन्न छे; अथवा जेम मृत्तिकाना लेपवाळुं तुंबडुं पाणीमां नीचे पडे छे अने पछी मृत्तिकाबंधनो क्षय थतां ते उपर आवे छे तेम कर्मरहित आत्मा निःसंग होवाथी एरंडबीजनी पेठे बंधोच्छेदथी, के अग्निशिखानी पेठे उंचे जवाना स्वभावथी ऊर्ध्व गति करे छे. जीव अने कर्म परस्पर प्रदेशानुप्रवेश होईने उभयनुं अविभागे करीने अवस्थान ते बंध. मात्र परस्परनी प्राप्ति ते संग. कह्युं छे के 'पूर्वना योगथी, असंगपणाथी, बंधच्छेदथी अने गतिपरिणामथी मोक्षप्रेरणा थाय छे. पछी कुलालचक्रनी पेठे, मृत्तिकालेपथी रहित थयेली तुंबडीनी पेठे, एरंडबीजनी पेठे, अने अग्निशिखानी पेठे ऊर्ध्व गमन अविरुद्ध छे.' माटे ज कहे छे केः—

चंद्रसूर्यादि ग्रहो जाय छे जाय छे अने पाछा आवे छे; परंतु आलोकाकाशमां गयेला अद्यापि पाछा आव्या नथी.

केटलाक एम माने छे के जेना समस्त क्लेश तथा जेनी वासनाओ नाश पामी छे, जेना ज्ञानने कंइ आवरण नथी, जे केवळ सुखमां छे, एवा आत्मानुं उपरना देशमां अवस्थान ते मुक्ति. केटलाक उपर कहेलां सात तथा सुख अने दुःखनां साधन जे पुण्य पाप ए रीते नव तत्त्व माने छे. सिद्धांतमां कह्युं छे केः—

मिथ्यादर्शन, अविरति, प्रमाद अने कषाय ए बंध- हेतुओ छे.

मिथ्यादर्शन बे प्रकारनुं छे. मिथ्याकर्मना उदयथी परोपदेशनी अपेक्षा वगर स्वाभाविक उत्पन्न थनार जैन तत्त्व उपर अश्रद्धान, अने बीजुं परोपदेशथी उत्पन्न थनार. पृथिव्यादि छ विषयमांथी छ इन्द्रियनुं असयमन ते **अविरति. पंचसमिति अने गुप्तिने** विषे अनुत्साह ते **प्रमाद.** क्रोधादि ते **कषाय.** तेमां कषाय- सुधीना **स्थिति** अने **अनुभाव**रुप बधना हेतु छे. अने **योग प्रकृतिबंध** अने **प्रदेशबंध**नो हेतु छे. बंध चार प्रकारना कह्या छे; **प्रकृति,**[६१] **स्थिति**[७०], **अनुभाव**, अने **प्रदेश**[७२]. निंब, गोळ इत्यादिनो कटुत्व मधुरत्वादि स्वभाव ते प्रकृति, सूर्यप्रभानो उच्छेद करनार मेघनी पेठे अने प्रदीपप्रभानुं तिरोधान करनार कुंभनी पेठे आवरणीय प्रकृतिबंधनो **ज्ञानावरणत्व** अने **दर्शनावरणत्व** स्वभाव छे. **सदसद्वेदनीयप्रकृतिबंधनो** तरवारनी धार उपरना मधुलेहननी पेठे सुखदुःखोत्पादकत्व स्वभाव छे. जेम दुर्जननो सग चारित्रमा अश्रद्धा उत्पन्न करे छे तेम **मोहनीयप्रकृतिबंधनो** तत्त्वार्थमा अश्रद्धा उत्पन्न करवी ए स्वभाव छे. जेम मद्य मदनो हेतु छे तेम **मोहनीयप्रकृतिबंध** असयमनो हेतु छे. **आयुष्प्रकृतिबंधनो** स्वभाव जाळनी पेठे देहने बद्ध करवानो छे. **नामप्रकृतिबंधनो** स्वभाव चित्रकारनी पेठे विचित्र नाम करवानो छे. **गोत्रप्रकृतिबंधनो** स्वभाव कुंभ- कारनी पेठे ऊंच नीच करवानो छे. **अंतरायप्रकृतिबंधनो** कोशाध्यक्षनी पेठे दानादिमां विघ्ननुं कारण थई पडवानो स्वभाव छे. द्रव्य अने कर्मना अवान्तर भेद सहित **मूलप्रकृति** शब्दथी ओळखातो प्रकृतिबंध आ रीते आठ प्रकारनो छे. उमास्वाति वाचकाचार्य कहे छे के—

आद्य (प्रकृति) बंध ज्ञानावरण, दर्शनावरण,

वेदनीय, मोहनीय, आयुष, नाम, गोत्र अने अंतराय ए रीते आठ प्रकारनो छे, अने तेओना अनुक्रमे पांच, नव, अठ्ठावीश, चार, बे, चाळीश, बे, अने पंदर भेद छे.[93]

आ सर्वनुं चिदानंद वगेरेए विवरण कर्युं छे माटे विस्तारना भयथी हमे अहीं कंइ कहेता नथी. जेम अजा, गो, अने महिषी आदिना दूधनी लांबा काळ सुधी माधुर्यस्वभावमांथी अप्रच्युति ते स्थिति छे तेम ज्ञानावरणादि त्रण मूलप्रकृति अने अंतरायनी, 'स्थिति कोटिकोटि त्रिंशत् सागरोपमनी पण पर छे' इत्यादिमां कहेला काळ करतां पण वधारे वखत सुधी स्वस्वभावमांथी अप्रच्युति ते स्थिति छे. जेम अजा, गो, महिषी आदिना दूधनुं तीव्रमंदादि भावे करीने स्वकार्य करवामां जे सामर्थ्यविशेष छे ते अनुभाव छे तेम कार्यजनित पुद्गलोनु स्वकार्य करवामां जे सामर्थ्यविशेष ते अनुभाव छे. कर्मभाव रूपे परिणत थयेला पुद्गलस्कंधो जे अनंत प्रदेश वाळा छे तेओनो आत्मप्रदेशमां अनुप्रवेश ते प्रदेशबंध.[94] आस्रवनो निरोध ते संवर.[95] जेणे करीने आत्मामां प्रवेश करता कर्मनो प्रतिषेध थाय छे ते गुप्ति, समिति आदि संवर छे. संसारनुं कारण जे योग तेथी आत्मानुं गोपन ते गुप्ति. ते त्रण प्रकारनी छे. कायनिग्रह, वाग्निग्रह अने मनोनिग्रह. प्राणीने पीडा न थाय तेवी रीते सम्यग् अयन (गमन=कर्म) ते समिति. ते ईर्या भाषा इत्यादि भेदथी पांच प्रकारनी छे. हेमचंद्राचार्य तेनुं प्रवचन आ प्रमाणे करे छे:—

सूर्यकिरणथी चुंबित लोकमार्गमां जंतुनी रक्षाने माटे जोईने चालवुं तेने सत्पुरुषो ईर्या कहे छे.

आवेला सर्व मनुष्यो प्रति मित भाषण करवुं तेनुं नाम भाषासमिति छे अने ते वाणीने नियममां राखनार पुरुषोने प्रिय छे.

बेंताळीश भिक्षादोषथी रहित एवुं जे अन्न मुनिओ ले छे ते एषणासमिति कहेवाय छे.

आसनादिने बरोबर जोई सावचेतीथी ओळंगी तेनुं ग्रहण करवु, तेने नीचे मूकवुं अने ध्यान करवु तेनुं नाम आदानसमिति.

कफ, मूत्र, मल इत्यादिथी तथा जंतुथी रहित भूमि उपर संभाळीने मलोत्सर्ग करवो तेनुं नाम उत्सर्गसमिति.

माटे आस्रवरूप झराना द्वारनु जे सवरण (अटकाव) करे ते सवर एम कह्यु छे. विद्वत् पुरुषो कहे छे के —

आस्रव संसारनो हेतु छे अने संवर मोक्षनुं कारण छे आ प्रमाणे आर्हत धर्म मूठीमां माय एटलो छे. अन्य सर्व आनुं प्रपंचन छे

अर्जित करेला कर्मनुं तपस् वगेरेथी निर्जरण ते निर्जरा तत्त्व छे. ते चिर कालथी चाळता आवेला कषायना समूहने तेम ज पुण्य अने सुखदु खने देहनी साथे नाश पमाडे छे. केशलुछनादि तपस् छे. ते निर्जरा बे प्रकारनी छे. यथाकाल अने औपक्रमिक. जे वखते जे कर्म फलप्रदरूपे मानवामा आव्यु छे ते वखते फलदानथी उत्पन्न थती निर्जरा ते प्रथम प्रकारनी निर्जरा छे अने ते कामादिना परिपाकथी उत्पन्न थयेली छे एम कहेवाय छे. तपोबलथी स्वकामनाना उदयने माटे जे कर्म करवामा आवे छे ते कर्मनिर्जरा. कह्यु छे के —

संसारनां बीजभूत कर्मना निर्जरणथी निर्जरा उत्पन्न थाय छे. ते बे प्रकारनी छे सकामा अने अकामा. यमी पुरुषोनी निर्जरा सकामा छे अने अन्य देहीओनी निर्जरा अकामा छे

मिथ्यादर्शनादि बन्धहेतुओनो निरोध थतां अभिनव कर्मना अभावथी अने निर्जराहेतुना संनिधानने लीधे अर्जित

कर्मना नाशथी कर्मनो जे आत्यंतिक नाश थाय ते मोक्ष. 'बंधहेतुओनी निर्जरा वडे अने भवहेतुओनी निर्जरा वडे सकल कर्मथी संपूर्ण मोक्ष ते मोक्ष.' ते पछी जीव लोकान्तथी पण ऊर्ध्व जाय छे. जेम हस्त अने दंडना भ्रमणथी प्रेरित थयेलुं कुम्भकारनुं चक्र हस्त अने दंड उपरत थतां पण तेमां आवेला वलने लीधे संस्कारनो क्षय थतां सुधी फरे छे तेम संसारगत आत्मानुं अपवर्गनी प्राप्तिने माटे करेलुं प्रणिधान ते मुक्त थतां नष्ट थई जाय छे, तोपण पूर्वसंस्कारने लीधे तेनु लोकान्त सुधी गमन उपपन्न छे; अथवा जेम मृत्तिकाना लेपवाळुं तुंबडुं पाणीमां नीचे पडे छे अने पछी मृत्तिकावेष्टनो क्षय थतां ते उपर आवे छे तेम कर्मरहित आत्मा नि:संग होवाथी एरंडबीजनी पेठे बंधोच्छेदथी, के अग्निशिखानी पेठे ऊंचे जवाना स्वभावथी ऊर्ध्व गति करे छे. जीव अने कर्म परस्पर प्रदेशानुप्रवेश होईने उभयनुं अविभागे करीने अवस्थान ते बंध. मात्र परस्परनी प्राप्ति ते संग. कह्युं छे के 'पूर्वना योगथी, असंगपणाथी, बंधच्छेदथी अने गतिपरिणामथी मोक्षप्रेरणा थाय छे. पछी कुलालचक्रनी पेठे, मृत्तिकालेपथी रहित थयेली तुंबडीनी पेठे, एरंडबीजनी पेठे, अने अग्निशिखानी पेठे ऊर्ध्व गमन अनिरुद्ध छे.' माटे ज कहे छे के:—

चंद्रसूर्यादि ग्रहो जाय छे जाय छे अने पाछा आवे छे; परंतु आलोकाकाशमां गयेला अद्यापि पाछा आव्या नथी.

केटलाक एम माने छे के जेना समस्त क्लेश तथा जेनी वासनाओ नाश पामी छे, जेना ज्ञानने कंई आवरण नथी, जे केवळ सुखमां छे, एवा आत्मानुं उपरना देशमां अवस्थान ते मुक्ति. केटलाक उपर कहेलां सात तथा सुख अने दुःखनां साधन जे पुण्य पाप ए रीते नव तत्त्व माने छे. सिद्धान्तमां कह्युं छे के:—

' पुण्य अने पाप सहित जीव, अने अजीव, आस्रव संवर, निर्जर, बंध, अने मोक्ष ए नव तत्त्व छे. '

हमारो हेतु मात्र संग्रह करवानो होवाथी हमे आटलुं कही शांत पडीए छीए.

अहीं सर्वत्र जैन लोको सप्तभंगिनयँ नामनो न्याय लावे छे. **स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्तिचनास्ति, स्यादवक्तव्यः, स्यादस्तिचावक्तव्यः, स्यान्नास्तिचावक्तव्यः, स्यादस्तिचनास्तिचावक्तव्यः** आ सर्वनुं अनंतवीर्य आ प्रमाणे प्रतिपादन करे छे.

ज्यारे कोइ वस्तुनुं विधान करवानी इच्छा होय त्यारे कहेवुं के **स्यादस्ति.**

ज्यारे कोइनो निषेध करवानी इच्छा होय त्यारे कहेवुं के **स्यान्नास्ति.**

क्रमे करीने विधान अने निषेध बंने करवानी इच्छा होय तो बंने कहेवां.

बंनेनी साथे कहेवानी इच्छा होय तो तेम कहेवुं अशक्य होवाथी स्यादवक्तव्य कहेवुं.

ज्यारे **स्यादस्ति** कहेवु होय अने ते साथे ते अवाच्य छे एम कहेवुं होय तो पांचमा भंग लेवो.

जो **स्यान्नास्ति** कहेवुं होय अने ते साथे ते अवाच्य छे एम कहेवुं होय तो छट्ठो भंग लेवो.

ज्यारे त्रणेनो समुच्चय जणाववानी इच्छा होय त्यारे सातमो भंग लेवो.

स्यात् शब्द तिङतप्रतिरूपकनिपात (क्रियापदना रूपमां अव्यय) छे. अने ते अनेकान्तनो द्योतक छे. कह्युं छे केः—

स्यात् तिङतप्रतिरूपकनिपात छे; परंतु ते अर्थयोगी छे तेथी ते वाक्योमां अनेकान्त (अनिश्चय) नो द्योतक छे अने गम्य अर्थ प्रति विशेषण छे

वळी जो आ स्यात् शब्द एकान्त (निश्चय) नो द्योतक होय तो स्यादस्ति ए वाक्यमां स्यात् पद निरर्थक थई जाय, ते अनेकातद्योतक छे एम लेता स्यादस्ति एटले कथचिदस्ति एम अर्थ थाय अने तेथी स्यात् पदथी कथचित् ए अर्थनी प्राप्ति निरर्थक थाय नहि. कह्यु छे के —

सर्वथा एकान्तना त्यागथी स्याद्वाद घटे छे ते सप्तभंगिनयमां हेय अने आदेयना विशेषने ठरावे छे.

जो वस्तु सर्वथा, सर्वदा, सर्वत्र अने सर्वनी पासे अस्तित्वमां छे तो कोइ टेकाणे, कोइवार, कोइनी पण ते लेवानी के तजवानी इच्छा वडे प्रवृत्ति के निवृत्ति थाय नहि, कारण के जे प्राप्त छे तेने प्राप्त करवापणु होय अने जे अप्राप्त छे तेने त्याग करवापणु होय ए अनुपपन्न छे अनेकान्त पक्ष लेता वस्तु कोइ प्रकारे, कोइवार, कोइनी पासे अस्तित्वमा होवाथी प्रेक्षावान् पुरुषोने तेनी प्राप्ति अने त्याग समजाय एवा छे. वळी कोइने पूछवानु के वस्तुनो सत्त्व ए स्वभाव छे के असत्त्व ए स्वभाव छे ? अस्तित्व ए वस्तुनो स्वभाव छे एम कहेवाय नहि कारणके 'घट' 'छे' आ बे पद पर्याय थवाथी तेमनो साथे प्रयोग थवो अयुक्त छे अने 'घट' 'नथी' एवो प्रयोग उपरना प्रयोगथी विरुद्ध छे. आ प्रमाणे बीजा उत्तरने माटे पण समजवु. कह्यु छे के —

घट छे एम बोलाय नहि, कारणके घट कहेतां ज सत्त्व आवी जाय छे घट नथी एम पण कहेवाय नहि, कारणके सत्त्व अने असत्त्व परस्पर विरुद्ध छे

माटे उपर प्रमाणे स्यादस्ति वगेरे कहेवुं. प्रतिवादी चार प्रकारना छे, सद्वादी, असद्वादी, सदसद्वादी अने अनिर्वचनीय-

वादी, वळी सद् असद् वगेरे वाद साथे अनिर्वचनीयवाद मेळवतां तेओना त्रण वर्ग पडे छे. आ वादीओ ' शु वस्तु छे ? ' इत्यादि प्रश्न करे तो ' कोइ पण प्रकारे छे ' इत्यादि उत्तर हमारा तरफथी मळ्वानो संभव होवाथी ते सर्व हारी जई मौन धारण करशे; अने संपूर्ण अर्थनो विनिश्चय करनार स्याद्वादीनो विजय थशे माटे सर्व यथायुक्त छे. स्याद्वादमंजरीमां आचार्य कहे छे केः—

अनेकान्तात्मक वस्तु मात्र सर्वज्ञोने गोचर छे; अने एकदेशविशिष्ट अर्थ न्यायनो विषय छे. जे एकनिष्ट न्याय आगमप्रतिपादित मार्गमां प्रवर्ते तेनुं नाम आगमप्रतिपादित स्याद्वस्तु कहेवाय अने ते संपूर्ण अर्थनो विनिश्चय करावनार छे.

अन्योन्यना पक्षप्रतिपक्षथी सर्व वाद मत्सरयुक्त छे. आर्हत मत मात्र सर्व नयनी कोइ पण विशेष वगर इच्छा करनार होवाथी अपक्षपाती छे.

जिनदत्तसूरि जैनमत आ प्रमाणे कहे छेः—

जेनामां वल, भोग, उपभोग, दान अने प्रतिग्रह ए अंतराय, तथा निद्रा, भय, अज्ञान, जुगुप्सा, हिंसा, रति, अरति, राग, द्वेष, अविरति, स्मर (काम), शोक, अने मिथ्यात्व एटला अष्टादश दोष नथी ते जिन देव अथवा गुरु कहेवाय. अने ते तत्त्वज्ञाननो उपदेशक छे.

ज्ञान दर्शन अने चारित्र ए अपवर्गना मार्ग छे. स्याद्वादमां बे प्रमाणनो अंगीकार करवामां आवे छे. प्रत्यक्ष अने अनुमान पदार्थ मात्र नित्यानित्यात्मक मानवामां आवे छे

सात वा नव तत्त्व छे जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, बंध, निर्जरा, अने मोक्ष. हवे तेनां लक्षण कहीए छीए. चेतनालक्षण जीव छे, तेथी अन्य ते अजीव

छे. सत्कर्मथी उत्पन्न थनार पुद्गल ते पुण्य छे. तेथी उलटुं ते पाप छे. कर्मनो बंध ते आस्रव, कर्मनो वियोग करनार ते निर्जर; आठ कर्मना क्षयथी मोक्ष थाय छे. केटलाक पुण्यनो संवरमां अने पापनो आस्रवमां अंतर्भाव करे छे.

जेने चार अनंत(जगद्ज्ञान, आत्मज्ञान, सुखज्ञान, अने मुक्तिज्ञान)नी प्राप्ति थई छे, जे लोकमां गूढ छे अने जेनां अष्ट कर्मनो क्षय थयो छे तेने जिननी कहेली अनिर्व्याच्चृत्ति मुक्ति मळे छे.

श्वेताम्बर जैन साधुओ रजोहरण[७७] राखनार, भिक्षा उपर वृत्ति चलावनार, केशने तोडी नाखनार, क्षमाशील, अने निःसंग छे.

दिगम्बर साधुओ केश तोडी नाखे छे; हाथमां पींछी राखेछे. हाथने पात्रने ठेकाणे काममां ले छे, अने भिक्षा आपनारना घरमां ते ऊभाऊभा खाय छे; आ बीजा प्रकारना जैन साधुओ छे.

'केवली खातो नथी, अने स्त्रीने मोक्ष मळतो नथी' एम दिगम्बरो माने छे. तेओ अने श्वेताम्बरो वच्चे आ महान् भेद[७८] छे.

रामानुजदर्शन.

आ आर्हत मत प्रमाणदृष्टिथी जोनारने निंद्य छे; कारण के एक ज परमार्थसत् वस्तुमां सत्त्व असत्त्वादि धर्मवाळां अनेक परमार्थसत्नो साथे समावेश संभवतो नथी. एम पण कोइथी कहेवाय नहि के परस्पर विरुद्ध सत्त्वासत्त्वना समुच्चयनो असंभव भले होय, तो पण ते बंनेनो विकल्प केम न होय ? कारण के क्रियानो विकल्प होय वस्तुनो विकल्प होय नहि एवो न्याय छे. गणेश अने नृसिंहनी पेठे सर्व जगत् अनेकांत छे एम पण दृष्टांतने आधारे धारी शकाय नहि, कारण के एक ज देशमां गजत्व अथवा सिंहत्व अने बीजा देशमां नरत्व ए प्रमाणे देशभेदथी विरोध रहेतो नथी; परंतु एक ज देशमां सत्त्वासत्त्वादि वडे अनेकान्तत्व कहेवामां ते दृष्टांत उपपन्न पण नथी. वळी कोइ कहेशे के द्रव्यरूपे करीने सत् अने पर्यायरूपे करीने असत् एम लेतां बंने उपपन्न छे तो हमे कहीशु के एम नहि; कारण के वस्तुनुं कालभेदे करीने सत्त्व अने असत्त्व बंने लेवामां कंइ दोष नथी. वळी " जेम एक ज वस्तु ह्रस्व दीर्घ होय छे तेम जगत् पण अनेकान्त होइ शके " एम पण कहेवाय नहि, कारण के प्रतियोगीना भेदथी दृष्टांतमां कंइ विरोध रहेतो नथी. माटे प्रमाणाभावथी परस्पर विरुद्ध सत्त्व अने असत्त्व

एक ज वस्तुमा रहेवाने योग्य नथी. आ प्रमाणे बीजी भगीओनो भग पण समजवो.

वळी आ सर्वनु मूळ जे सप्तभंगिनय ते जाते ज एकान्त छे के अनेकान्त छे? जो कहो के एकान्त छे तो सर्व अनेकान्त एवी जे तमारी प्रतिज्ञा तेनो व्याघात थशे. जो अनेकान्त कहो तो विवक्षित अर्थनी असिद्धि थशे, कारण के अनेकान्त होवाथी ते असाधक थशे. आ प्रमाणे स्याद्वादीने बळे बने पक्षथी साणसो पडे छे[*] वळी नयत्व के सत्त्वादिनो निश्चय करवाना फळनो, तेनो निश्चय करनारनो, तेने यथार्थ समजनारनो, तेनु यथार्थ ज्ञान करावनार प्रमाणनो, अने नयत्वादि प्रमेयनो कइ नियम नथी, ए जोता आर्हतमतना अविचारी प्रवर्तके तीर्थकरत्व ठीक समर्थित कर्यु[६]!

तेमज जीवनु देह जेटलु परिमाण स्वीकारवामा पण योगबळथी अनेक देहने धारण करनार योगिजीवोना सबधमा प्रतिशरीरमा जीवविच्छेद थवानो प्रसग आववानो. मनुष्य शरीरना परिमाणवाळो जीव हाथीना आखा शरीरमा प्रवेश करवाने शक्तिमान् थवानो नहि. वळी गजादि शरीरनो परित्याग करी कीडीना शरीरमा प्रवेश करनार जीवनी प्राचीन शरीर माटेनी व्यापकशीलतानो विनाश थवानो[*] एम पण धारी शकाय नहि के जेम दीपनी प्रभा नहानी झुपडीमा के मोटी हवेलीमा सैकोचविकाशने पामे छे तेम जीव पण मनुष्यमातगादि शरीरोमा करी शके, कारण के दीपनी पेठे सविकार थवाथी ते अनित्य ठरता करेला कर्मनो प्रणाश अने नहि करेला कर्मनो अभ्यागम थशे

आ प्रमाणे प्रधानमल्लनिर्बर्हणन्याये[*] करीने जीव पदार्थना दूषणना दिग्दर्शन उपरथी बीजा पदार्थना दूषण पण धारी लेवा. माटे आ मत निरवनिर्दोष श्रुति विरुद्ध होवाथी तेनु ग्रहण करवु नहि. भगवान् व्यास कहे छे के

नैकस्मिन्नसंभवात्, व्याससूत्र अध्याय २ पाद २ सूत्र ३३

[नहि; एकमां असंभवथी]

अने जैनमतनुं खंडन करवामां आ सूत्रनुं तात्पर्य छे एम रामानुज तेनुं व्याख्यान करे छे. रामानुजनो सिद्धान्त आ प्रमाणे छे. चित् अचित् अने ईश्वरना भेदथी अथवा भोक्तृ भोग्य अने नियामकना भेदथी त्रण पदार्थ व्यवस्थित छे. कह्युं छे के

ईश्वर चित् अने अचित् ए त्रण पदार्थ छे. विष्णु ईश्वर छे जीव चित् छे अने दृश्य जगत् अचित् छे.

हवे केटलाक एम माने छे के विशेष मात्रथी रहित चिन्मात्र ब्रम्ह एज परम पदार्थ छे ते नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाववाळो छता पण तत्त्वमस्यादि वाक्यथी तेनुं जीव साथे ऐक्य समजाय त्यांसुधी ते बंध मोक्षने अनुभवे छे. ते कहे छे के ब्रम्हव्यतिरिक्त नानाविध भोक्तृभोक्तव्यादि सर्व भेदप्रपंच तेमां अविद्याए करीने कल्पित छे " हे सौम्य आ एक अद्वितीयसत् पहेलां हतुं " इत्यादि श्रुतिवचन उपरथी तथा " आत्मज्ञानी शोकने तरे छे " इत्यादि सेंकडो उपनिषद्ने आधारे निर्विशेष ब्रम्ह अने आत्माना एकत्व प्रतिपादन करनारी विद्याथी अनादि अविद्यानी निवृत्ति थाय छे एम ते माने छे. " जे कोइ अहीं नानात्व जुवे छे ते एक पछी एक एम अनेक मृत्यु पामे छे " इत्यादि भेदनिंदाप्रतिपादक श्रुति होवाथी पारमार्थिक भेदने स्वीकारता नथी. आवा पुरुषो पोताने डाह्या धारीने उक्त विभागने सहन करता नथी." तेओना सबधमा आ प्रमाणे समाधान करवामां आवे छे—जो अविद्याने माटे प्रमाण होय तो आम थाय; परंतु अनादि भावरूप, ज्ञानवडे जेनी निवृत्ति थाय छे एवुं तथा " हुं अज्ञ छुं " " हुं मने अने बीजाने जाणतो नथी " इत्यादि प्रत्यक्षप्रमाणथी सिद्ध अज्ञान छे ज नहि. तेओ कहे छे के:—

जे अनादि भावरूप छे, अने ज्ञानथी जेनो विलय थाय छे ते अज्ञान एम डाह्या माणसो लक्षण ठरावे छे.[11]

वळी [हुं अज्ञ छुं इत्यादि प्रत्यक्ष] ते ज्ञानना अभावनो विषय छे एम पण धारवुं जोइए नहि,[12] कारण के कोण कोने कही शके ? प्रभाकरनो आधार लेनार के कुमारिलभट्टनो आधार लेनार ? प्रभाकरनो आधार लेनार नहि; कारण के

सदसद्रूप वस्तुमां पोताना अने पारका रूपवडे कोइ एक नित्यरूप केटला एकने केटलीक वार जणाय छे.

कोइ एक व्यपेक्षा (संबंध) ए करीने अभाव कोइ अन्य भाव छे. अभाव भावान्तर छे, अन्य कंइ नथी. कारण के अन्यनुं निरूपण थतुं नथी.[13]

ए रीते कहेता तेणे (प्रभाकरे) भावव्यतिरिक्त अभावने मान्यो नथी. अभाव छठ्ठा प्रमाणथी (अनुपलब्धि) थी जणाय छे, अने ज्ञान सर्वदा अनुमेय छे (प्रत्यक्ष नथी) माटे तेनो अभाव प्रत्यक्ष प्रमाणनो विषय संभवतो नथी.[14] वळी कोइ अभावने प्रत्यक्ष माननार (हुं अज्ञ छुं इत्यादि वडे) अभावने प्रत्यक्ष कहे तो तेने कहेवानुं के 'हुं अज्ञ छुं' ए अनुभवमां 'हु' ए प्रकारनी पोतानी अवगति अभावधर्मिताए करीने अने ज्ञानथी प्रतियोगिताए करीने छे के नहि ? जो छे कहो तो विरोधथी ज ज्ञानाभावना अनुभवनो संभव नथी. जो ना कहो तो धर्मी अने प्रतियोगीना ज्ञाननी अपेक्षा वारनार ज्ञानाभावनो अनुभव जरा पण संभवतो नथी[15] अज्ञानने भावरूप लेता पूर्वोक्त दूषण आवता नथी माटे 'हु अज्ञ छु' ए अनुभव भावरूप अज्ञानने गोचर छे एम मानवु जोईए.

रामानुज मतवादि कहे छे:—

पण आ मानवुं गगनरोमन्थ जेवुं छे. कारण के भावरूप अज्ञान ते ज ज्ञानाभाव छे.[16] ते आ प्रमाणे; ज्ञाननो विषय अने

आश्रय होइने कोइ प्रत्यगर्थ ज्ञानथी भिन्न प्रतिपन्न छे के नहि ? कहो के प्रतिपन्न छे तो ते प्रतिपन्न थता स्वरूपज्ञानथी जेनी निवृत्ति थाय तेवु अज्ञान शी रीते टकी शके ? जो प्रतिपन्न नथी एम कहो तो, व्यावर्तक आश्रय अने विषयथी रहित एवा अज्ञाननो अनुभव शी रीते थाय ?[१८] तमे कहो के शुद्ध स्वरूपावभासमात्र अज्ञानविरोधी ज्ञानवडे भासित थाय छे, अने तेथी आश्रय अने विषयनु ज्ञान होवानी साथे अज्ञाननो अनुभव थाय तो तेमा विरोध आवतो नथी, तो हमे कहीशु के ठीक तो ज्ञानाभावमा पण तेम ज थशे. मात्र तमे अन्य प्रकारे बोलो छो ए ज माटे उभय पक्षने स्वीकृत एवो ज्ञानाभाव ए ज 'हु अज्ञ छु' 'हु मने अने अन्यने जाणतो नथी' इत्यादि अनुभवगोचर छे एम मानवु जोइये[१९]

शाकरमतवादी कहे छे —

ठीक पण विवादपात्र अज्ञानने सिद्ध करवाने हमे आ प्रमाणे अनुमान लावीए छीए विवादित प्रमाणज्ञान पोताना प्रागभावथी व्यतिरिक्त, पोताना विषयनु आवरण करनार, पोतानी मेळे निवृत्ति पामनार, स्वदेशगत एवी वस्तुपूर्वक होवु जोईए कारण के ते (प्रमाणज्ञान) अंधकारमा प्रथम उत्पन्न थएली दीपप्रभानी पेठे अप्रकाशित अर्थनु प्रकाशक छे[२०]

रामानुजमतवादी —

आ अनुमान पण टकी शके एवु नथी, कारण के अज्ञान सिद्ध करवामा अज्ञानान्तरने साधनरूपे वापरवानी जरूर पडशे अने ते तमने अभिमत नथी माटे अपसिद्धात थशे[२१] जो अज्ञानान्तरने साधनरूपे न लो तो ते अनैकातिक थशे[२२] वळी दृष्टान्त पण साधन विकल छे, कारण के प्रदीपप्रभा अप्रकाशित अर्थनी प्रकाशक थती समजती नथी, कारण के मात्र ज्ञान प्रकाशक छे दीप न होय तो पण ज्ञानथी विषयप्रकाश सभवे छे प्रदीपप्रभातो ज्ञानसमुत्पादक चक्षुरिन्द्रियना

विरोधी अंधकारना निरसनद्वारा उपकारक मात्र छे एटले बहु विस्तार करवानी जरूर नथी.[२२]

रामानुजनो प्रतिप्रयोग आ प्रमाणे छे. विवादपात्र अज्ञान ज्ञानमात्र एवा ब्रह्मनुं आश्रित नथी, कारण के ते अज्ञान छे, शुक्तिकादिना अज्ञाननी पेठे.[२३] जो कहो के शुक्तिकादि अज्ञाननो आश्रय जे प्रत्यगर्थ तेनो ज्ञान ए ज स्वभाव छे तो हमे कहीशुं के एम शंका करवी नहि, कारण के अनुभूति पोताना सद्भावमात्रथी कोइ पण वस्तुना व्यवहारादिने अनुगुण थवाना स्वभाववाळी छे.[२३] अने ज्ञान, अवगति, संगति, विद् आदि अनेकनामवाळी ते (अनुभूति) ज कर्मयुक्त अनुभवितानुं आत्मत्व अने ते ज्ञानत्व छे एम हमे मानीए छीए.[२४] जो कोइ कहे के ज्ञानरूप आत्मानो ज्ञान ए गुण शी रीते थाय तो हमे कहीशुं के आ पूछवुं निःसार छे. कारण के मणि, सूर्य वगेरे तैजस द्रव्य प्रभावाळा रूपे होई प्रभारूप गुणनो आश्रय छे. पोताना आश्रयथी अन्यत्र रहेवापणाने लीधे तथा रूपवत्त्वने लीधे प्रभा द्रव्यरूप होवा छतां पण तेमांथी शेषत्व रहेवाने लीधे गुणरूपे व्यवहाराय छे. ए ज प्रमाणे आत्मा पण स्वप्रकाश-चिद्रूप छतां पण चैतन्य गुणवाळो छे.[२५] श्रुति पण कहेछे के:—' सैंधव [मीठा] नो गोळो सदा मांहे अने बहार सघळो रसघन छे, तेम ज आ आत्मा मांहे अने बहार सघळो प्रज्ञानघन छे. ' ' अहीं आ पुरुष स्वयंज्योति छे, ' ' विज्ञाताना विज्ञाननो विपरिलोप जणातो नथी. ' ' जे आ जाणे छे ते आ सुंघे छे. ' ' जे विज्ञानमय छे ते प्राणने विषे अने हृदयने विषे ज्योतिर्मय पुरुष छे. ' ' ए द्रष्टा, श्रोता, रसयिता, घ्राता, मन्ता, बोद्धा अने कर्ता एवो विज्ञानात्मा पुरुष छे, ' इत्यादि.

' अनृत वडे करीने आवृत ' ए श्रुति पण विद्याना अस्तित्वना प्रमाणरूपे मानी शकाय नहि, कारण के अनृत शब्द ऋतेतरनो विषय छे. ऋत शब्द कर्मवचन छे. ' ऋतनुं पान करता ' ए वचन उपरथी ऋत एटले कर्मना फळना अभिसंधि

रहित एवु परम पुरुषनी आराधनाथी ज तेमनी प्राप्तिरूप जे फळ छे. आ श्रुतिमा अनृत एटले ऋतथी व्यतिरिक्त ब्रह्मप्राप्तिनु विरोधी संसारचक्रना भ्रमणरूप अल्पफळवाळु कर्म छे. कारण के आगु वचन एम छे के ' जे कोइ ब्रह्म लोकने पामता नथी ते अनृतथी वेष्टित थाय छे[२६]

' मायाने प्रकृति जाणवी ' इत्यादि वाक्यमा माया शब्द विचित्र पदार्थनी उत्पादक त्रिगुणात्मक प्रकृतिनो वाचक छे. अनिर्वचनीय अज्ञाननो वाचक नथी.

बाळकना देहनुं रक्षण करवाने सत्वर थनार तणे ते शंबरनी सहस्र मायाओने अकेके करीने बाजनी पेठे पकडी लीधी

इत्यादि वचनमा पण विचित्र पदार्थोने उत्पन्न करवाने समर्थ असुरादिना कोई पारमार्थिक अर्थविशेषनो माया शब्दथी बोध थाय छे[२७] माटे श्रुतिथी कदापि अनिर्वचनीय अज्ञाननु प्रतिपादन थतु नथी. वळी ऐक्योपदेशनी अनुपपत्ति होवाने लीधे तत् अने त्व पदथी करीने, सविशेष ब्रह्मना अभिधेयत्वने लीधे विरुद्ध एवा जे जीव अने ईश्वर तेमनु स्वरूप थकी ऐक्य सिद्ध थतु नथी, एटले अर्थापत्तिनो पण प्रसग आवतो नथी[२८] वळी तत्पद समस्त दोषथी रहित, अनवधि अतिशय असंख्य कल्याण गुणनु स्थान तथा जगत्नो उदय, स्थिति, अने लय, जेना लीला छे एवा ब्रह्मनु प्रतिपादन करे छे, कारण के तणे इच्छ्युं ' हु बहु थाउ, ' हु प्रजा उत्पन्न करु ' इत्यादि वाक्योमा पण तेना ज सबधमा बोलवामा आवे छे. तत् साथे समानाधिकरण त्वपद चिद्विशिष्ट अने जीव छे शरीर जेनु एवा ब्रह्मने बोधे छे, कारण के सामानाधिकरण्य वे प्रकारवाळा एक वस्तुने सूचवे छे[२९] कोइ कहेशे के आ ते देवदत्त छे ए वाक्यनी पेठे विरुद्ध भागनो त्याग करवानी लक्षणावाळा तत् अने त्व पदोना सामानाधिकरण्यनो अर्थ निर्विशेषस्वरूप आत्मै-

क्य केम न थाय ? जेम के 'आ ते' ए वाक्यमां तत् शब्दे करीने देशान्तर अने कालान्तर संबंधी पुरुषनी प्रतीति थाय छे अने इदं शब्द वडे करीने सन्निहित देश अने वर्तमान काल संबंधी पुरुषनी प्रतीति थाय छे. अने उभयना सामानाधिकरण्यथी तेओनुं ऐक्य समजाय छे. त्यां एकनी युगपद्विरुद्ध देशकाल प्रतीति संभवती नथी. तेथी बंने पद स्वरूपपर छे अने स्वरूपनुं ऐक्य थवुं शक्य छे. ते ज प्रमाणे अहिं पण किंचिद्ज्ञत्व सर्वज्ञत्वादि विरुद्ध अंशनो त्याग करतां अखंड स्वरूपनुं ज्ञान थाय छे.[30] आ प्रमाणे कहेनारने हमे कहीशुं के आ उपन्यास विषम छे. कारण के दृष्टान्तमां कंइ विरोध नहि होवाथी त्यां लक्षणागंधनो पण असंभव छे. भूत अने वर्तमान बे काळनी साथे एक [पदार्थ] नो संबंध विरुद्ध नथी. देशान्तर स्थितिने भूतकाल लइने अने सन्निहित देशस्थितिने वर्तमानकाळ लइने देशभेद संबंधी जे विरोध तेनो कालभेद वडे परिहार करवो.[31] लक्षणापक्ष लेतां पण एक ज पदने लाक्षणिक लेवाथी विरोधनो परिहार थाय छे तो पद द्वयने लाक्षणिक मानवां ए असंगत छे. अन्यथा [जो बन्ने पदने लाक्षणिक मानीए तो] एक ज वस्तुनुं तत्ता अने इंदता विशिष्टत्व मानतां अने प्रत्यभिज्ञाने प्रमाण नहि मानतां स्थायित्व असिद्ध थशे अने तेथी क्षणभंगवादी बौद्धोनो विजय थशे.[32] ए प्रमाणे अहिं [हमारा मतमा] पण जीवने शरीर अने परमात्माने आत्मा मानतां उभयना तादात्म्यनो विरोध आवतो नथी तेथी हमे प्रतिपादित कर्युं छे के जीवात्मा ब्रह्मनुं शरीर होइने तेनो एक प्रकार थाय छे अने तेथी ते ब्रह्मात्मक छे. अने अन्य स्थळे श्रुतिमां पण कहेलुं छे के[33] ' जे आत्मामां रहीने आत्मानो आन्तर छे, जे आत्माने जाणे छे अने आत्मा जेनुं शरीर छे ' इत्यादि. आ उपरथी हमे कहीए छीए के तमारुं कहेवुं अति अल्प छे सर्व शब्द परमात्माना वाचक छे. द्वारभेदना संभवथी ते एक बीजाना पर्याय नथी जेम के देव

मनुष्यादिनां शरीर जीवनी शरीरताए करीने प्रकारभूत छे तेम सर्व वस्तुओ ब्रह्मात्मक छे.[34] ते उपरथी

देव, मनुष्य, यक्ष, पिशाच, नाग, राक्षस, पक्षी, वृक्ष, लता, काष्ट, शिला, तृण, घट, पट,

इत्यादि सर्व शब्द जे प्रकृति प्रत्ययना योगे करीने अभिधायकता वडे लोकमां प्रसिद्ध छे ते तेनी वाच्यताए करीने प्रतीयमान थता जूदा जूदा शरीरवाळी वस्तुओ द्वारा ते ते वस्तुना अभिमानी जीव तथा तेओना अंतर्यामी परमात्माना शरीरना वाचक छे[35] देवादि शब्द परमात्मावाचक छे एम तत्त्वमुक्तावली तथा चतुरन्तरमां कहेलु छे.

देवादि शब्द भिन्नभाव छे अभिधान जेनुं एवा तेनाथी अपृथक् जीवनो वाचक छे. आ संबंधमां अनेक लौकिक अने वैदिक प्रयोग दृढ अने सारमाग्रने कहेनार छे. आत्माना असंबधवगतनी स्थिति अज्ञान छे. देव मर्त्य इत्यादि छे मूर्ति जेनी एवा विभुए जीवात्मामां अनुप्रवेश करीने जगत्मां नामरूप इत्यादि विचित्रता करी छे[36].

इत्यादि वडे देवादि शब्दो शरीर पर्यन्त छे एम प्रतिपादित करीने **'संस्थानना ऐक्यादिनो अभाव छे '** इत्यादिवडे शरीरनु लक्षण देखाडीने **'तत्त्व स्वरूपनी प्रतिकृति जे शब्दो ते वडे'** इत्यादि वडे विशेषणथी सर्वनु अपृथकत्व सिद्ध करीने **'निष्कर्षना सूचक '** इत्यादि शब्दो वडे सर्व शब्द परमात्माना वाचक छे एम प्रतिपादित कर्यु छे, ते सर्व ते ग्रन्थमांथी जोइ लेवुं. नाम रूप व्याकरण ए श्रुतिना भाष्य करते रामानुजे वेदार्थसंग्रहमां आ ज अर्थ समर्थित कर्यो छे.

वळी प्रमाणमात्र सविशेषनो विषय होवाथी निर्विशेष वस्तुने माटे कोइ पण प्रमाण नथी.[37] निर्विकल्प प्रत्यक्षमां पण सविशेष वस्तुनी प्रतीति थाय छे, अन्यथा सविकल्प प्रत्यक्षमां 'आ ते' ए रीतना पूर्वप्रतिपन्न प्रकार विशिष्ट

ज्ञाननी प्रतीति संभवे नहि.[38] वळी तत्त्वमस्यादि वाक्य पण प्रपंचनां बाधक नथी, कारण के ते भ्रान्ति-मूलक छे. भ्रान्तिथी वापरेला रज्जु सर्प वाक्यनी पेठे.[39] तेम ज ब्रह्मात्मैक्यज्ञान प्रपंचनुं निवर्तक पण नथी. कारण के तेने माटे प्रमाण नथी ए हमे प्रथम ज कह्यु छे. वळी 'एकना ज्ञानथी सर्वनुं ज्ञान थाय छे ' ए प्रतिज्ञामां प्रपचने सत्य मानवाथी बाध आववानो नथी, कारण के प्रकृति, पुरुष, महद्, अहकार, तन्मात्रा, भूत, इन्द्रिय, अने चतुर्दश भुवन ए सर्वरूप ब्रह्माड, तथा तेमा रहेनार देव, पशु, पक्षी, मनुष्य, स्थावर इत्यादि सर्व प्रकारना संस्थानमां संस्थित सर्व कार्य पण ब्रह्म ए ज छे, ए प्रकारे कारणभूत ब्रह्मात्मज्ञानथी ज सर्व विज्ञान थाय छे ए प्रमाणे एक विज्ञानथी सर्व विज्ञान वधारे समजाय एवी रीते ठरे छे.[40] वळी ब्रह्म-व्यतिरिक्त सर्वने मिथ्या मानतां सर्व असत् ठरे छे तेथी एक विज्ञानथी सर्व विज्ञानने बाध नडे छे.[41] जेना नामरूपमा विभाग नथी थता, जे सूक्ष्म दशापन्न छे, तथा प्रकृति पुरुष छे शरीर जेनु ते कारणावस्थ ब्रह्म. जगत्नुं आ ब्रह्मने पामवु ते तेनो प्रलय. नाम रूप विभागमा विभक्त, स्थूल, चिद् अचिद् वस्तु छे शरीर जेनुं ते कार्यावस्थ ब्रह्म ब्रह्मनो ए प्रकारनो स्थूलभाव ते सृष्टि. एम हमे कहीए छीए. ए प्रमाणे कार्य कारणनु अनन्यत्व के जे आरंभणादि अधिकरणमां प्रतिपादित कर्यु छे ते वधारे उपपन्न थाय छे.[42] जे निर्गुणवाद छे ते प्रकृतिना हेयगुणना निषेधने माटे व्यवस्थित छे.[43] नानात्वनिषेधना वाक्य छे ते, एक ज ब्रह्मनुं शरीर होईने सर्व चेतनाचेतनात्मक वस्तु ब्रह्मनो प्रकार छे, ए प्रमाणे सर्वनो आत्मा होवाने लीधे सर्वप्रकार ब्रह्म, ए ज अवस्थित छे एम सर्वात्मक ब्रह्मथी पृथग्भूत वस्तुना सद्भावनो निषेध ठरावा माटे छे.[44]

आ मतमां तत्त्व शु छे ! भेद अभेद के सर्व तत्त्व उभयात्मक छे ! आना प्रयुत्तरमां कहेवानुं के सर्व ब्रह्मनुं शरीर

होवाथी, सर्व छे प्रकार जेना एवा ब्रह्मनी अवस्थिति होवाथी अभेदनु ग्रहण थाय छे[४५] नानाभूत चित् अने अचित् छे प्रकार जेना एवा ब्रह्मनी नानात्वे करीने अवस्थिति होवाथी भेदाभेदनु ग्रहण थाय छे[४६] चिद्, अचिद् अने ईश्वर एओना स्वरूपस्वभावना वैलक्षण्यने लीधे तेओना असंकरपणाथी भेदनु ग्रहण थाय छे[४७] तेमा चिद्रूप जीवात्मा जे असंकुचित अपरिच्छिन्न, निर्मल ज्ञानरूप छे पण जे अनादि कर्मरूप अविद्याथी वेष्टित छे तेओना जूदा जूदा कर्मने अनुसार ज्ञाननो संकोच विकाश थयो ते, भोग्यभूत जे अचित् तेना भोक्तृत्वरूप संसर्ग, तथा तदनुगुण सुखदु:ख बनेना उपभोग करनारे प्राप्त करेली भगवत्नी प्रतिपत्ति अने भगवत् पदनी प्राप्ति इत्यादि जीवना स्वभाव छे[४८]

अचिद् वस्तु जे भोग्यभूत छे तेना अचेतनत्व, अपुरुषार्थत्व, विकृतथवापणु इत्यादि स्वभाव छे. भोक्तृ, भोग्य उभयना अंतर्यामी रूपे अवस्थित होवु, अपरिच्छेद ज्ञान, ऐश्वर्य, वीर्य, शक्ति, तेज इत्यादि अपार अतिशय असंख्य कल्याण गुणना समूहवाळा होवु, स्वसंकल्पथी पोताथी भिन्न समस्त चिदचित् वस्तुजातने प्रवृत्त करवापणु, स्वाभिमत, स्वानुरूप, एकरूप, दिव्य, निरतिशय, विविध, अनंतभूषण धारण करवापणु इत्यादि ईश्वरना स्वभाव छे

वेंकटनाथ आ प्रमाणे पदार्थ विभाग करेछे

तत्त्वने जाणनार तत्त्वना द्रव्य अने अद्रव्य एवा बे भेद करे छे द्रव्यना बे भेद थाय छे जड अने अजड; अव्यक्त अने काल ते पहेला (जड) ना विभाग छ. प्रत्यक् अने पराक् ए बीजा (अजड) ना विभाग छे प्रत्यक्ना बे भाग छे जीव अने ईश्वर. बीजा पराक्ना नित्यभूति अने मति ए बे भाग छे केटलाक प्रथमने (नित्यभूतिने) जड कहे छे.

तेमां द्रव्य नानादशावाळुं छे. प्रकृति सत्त्वादि गुणथी युक्त छे. संवत्सरादिरूप काल छे. अणुरूप अने बोधवान् जीव छे. अन्य आत्मा ईश्वर छे. नित्यभूतिने त्रण गुणथी अधिक कही छे अने ते सत्त्वयुक्त छे ज्ञाता अने ज्ञेयनो अवभास ते मति छे. आ प्रमाणे द्रव्यनां लक्षणोनो संग्रह छे.'

उपरना त्रण पदार्थोमां चित् शब्दवाच्य जीवात्मा परमात्माथी भिन्न छे अने ते नित्य छे. श्रुति पण 'बे पक्षीओ साथे रहेनार अने मित्र' इत्यादिथी ए ज प्रमाणे कहे छे अने तेथी ज कह्युं छे के:—

आत्मा नाना छे व्यवस्था (भेद)ने लीधे.

जीवात्मानुं नित्यत्व पण श्रुतिप्रसिद्ध छे,

आत्मा जन्मतो नथी, मरतो नथी. ए थयो नथी अने फरीने थवानो पण नथी. ते अज, नित्य, शाश्वत अने पुराण छे. हन्यमान शरीरमां ते हणातो नथी.

वळी जो जीवने नित्य न लईए, तो कृतना प्रणाशनो अने अकृतना अभ्यागमनो प्रसंग आवे. आ उपरथी ज कह्युं छे केः—

'जे वीतराग छे तेनो जन्म देखातो नथी माटे'
जीव अणु छे ए वात पण श्रुतिप्रसिद्ध छे.

वाळना सोमा भागनो सोमो भाग लईए तो तेवा एक भागनी बरोबर जीव छे अने ते पण ते अनंत होवाने योग्य छे.

अने

चमना आगना अग्र जेटलो आत्मा छे. आत्मा अणु छे एम श्रुतिथी समजवुं जोईए इत्यादि.

अचित् शब्दार्थे दृश्य जड जगत् त्रण प्रकारनुं छे. भोग्य, भोगोपकरण, अने भोगायतन. ते जगत्नो कर्ता तथा

उपादान ईश्वरपदार्थ[५२] पुरुषोत्तम छे, अने वासुदेवादि पदार्थो ते वेदनीय छे. कह्यु छे के —

मंगल गुणथी युक्त वासुदेव परब्रह्म छे; ते भुवनोनुं उपादान तथा निमित्त कारण छे अने ते जीवोनो नियामक छे

ते वासुदेव परमकारुणिक, भक्तवत्सल, परम पुरुष छे, अने पोताना उपासकोने उपासनाना प्रमाणमा फल आपवा माटे स्वलीलाना योगथी **अर्चा, विभव, व्यूह, सूक्ष्म, अने अतर्यामी** एटला भेद वडे पाच स्वरूपे अवस्थित छे.

त्या अर्चा (स्वरूप) एटले प्रतिमादि, रामादि अवतार ते विभव (स्वरूप); व्यूह (स्वरूप) चार प्रकारनु छे; **वासुदेव, सकर्षण, प्रद्युम्न, अने अनिरुद्ध;** सपूर्ण षड्गुण वासुदेवाख्य परब्रह्म ते सूक्ष्म (स्वरूप) छे. 'ते पाप रहित, रजोगुणरहित, मृत्युरहित, शोकरहित, क्षुधारहित, सत्यकाम, अने सत्यसकल्प छे ' ए श्रुतिथी ते पापरहितत्वादि छ गुणयुक्त छे. 'जे आत्मामा रहीने आत्माने माहेथी नियममा राखे छे ' इत्यादि श्रुतिथी ते **अतर्यामी** तथा सकलजीवनियामक सिद्ध थाय छे. आ स्वरूपोमाना पूर्व पूर्व स्वरूपनी उपासना वडे पुरुषार्थमा आडा आवनार दुरितनो क्षय थता उत्तरोत्तर स्वरूपनी उपासना करवानो अधिकार आवे छे. कह्यु छे के —

वासुदेव भगवान् पोताना भक्तोने वात्सल्यथी अधिकारीना प्रमाणमां पुष्कल अभीष्ट आपे छे.

तेओने माटे ते लीलावडे पोतानी पांच मूर्ति (स्वरूप) करे छे प्रतिमादि ते अर्चा छे अवतार ते विभवमूर्ति छे सकर्षण, वासुदेव, प्रद्युम्न अने अनिरुद्ध ए चार प्रकारनो व्यूह छे सपूर्ण अने षड्गुण थयो सूक्ष्ममूर्ति ते ज वासुदेवाख्य परब्रह्म कहेवाय छे. जीवमां रहेलो अने

जीवनो प्रेरक ते अंतर्यामी छे. 'जे आत्मामां रहीने' इत्यादि वेदांतवाक्यथी तेनुं निरूपण थाय छे.

अर्चा स्वरूपनी उपासनाथी पापनो क्षय थतां अधिकारी थवाय छे; ते पछी विभवोपासनानो अधिकार आवे छे, अने ते पछी व्यूहोपासनानो अधिकार आवे छे. ते पछी सूक्ष्मस्वरूपनी उपासना कर्या पछी अंतर्यामीने जोवाने ते शक्त थाय छे. इत्यादि.

उपासना पण पांच प्रकारनी छे. अभिगमन, उपादान, इज्या, स्वाध्याय अने योग ए प्रमाणे श्रीपंचरात्रमां कहेलुं छे. त्यां अभिगमन एटले देवमंदिरना मार्गने वाळवो लीपवो इत्यादि. उपादान एटले चंदन पुष्पादि पूजानां साधन संपादन करवां ते. इज्या एटले देवनुं पूजन. स्वाध्याय एटले अर्थना अनुसंधानपूर्वक मंत्रनो जाप करवो, वैष्णवसूक्त तथा स्तोत्रनो पाठ करवो, नामसंकीर्तन करवुं अने तत्त्वप्रतिपादक शास्त्रनो अभ्यास करवो. योग एटले देवतानुं ध्यान करवुं. ए प्रकारे उपासना *कर्मथी एकठा थएला विज्ञान वडे दृष्ट अने दर्शननो नाश* थतां तन्निष्ठ भगवद्भक्तने भक्तवत्सल अने परमकारुणिक पुरुषोत्तम पोताना याथात्म्यनो अनुभवने अनुगुण निरवधिक अनंतगुणवाळुं पुनरावृत्तिरहित एवुं स्वपद आपे छे. स्मृतिमां पण कहे छे के.—

माहारे शरण आवीने परमसिद्धिने पामेला महात्माओ दुःखनुं स्थान अने अशाश्वत एवा पुनर्जन्मने पामता नथी.

वासुदेव पण स्वभक्तने जोईने तेने आनंदमय, अक्षय, अने पुनरावृत्तिरहित एवुं पोतानुं धाम आपे छे.

आ सर्व हृदयमां राखीने महोपनिषद् मननुं अवलंबन करीने भगवान् बौधायनाचार्यकृत विस्तीर्ण ब्रह्मसूत्र उपरनी वृत्ति जोईने रामानुजे शारीरकमीमांसानुं भाष्य कर्युं छे. त्यां

अथातो ब्रह्मजिज्ञासा

(हवे ब्रह्मज्ञाननी इच्छा)

ए सूत्रनो आ प्रमाणे अर्थ कर्यो छे:—आ सूत्रमां अथ शब्द ' पूर्व प्रवृत्त कर्मना ज्ञान पछी ' एम आनन्तर्यना अर्थमां लेवो. वृत्तिकारे कह्युं छे के ' कर्मनुं ज्ञान थया पछी ते ब्रह्मने जाणवानी इच्छा करे छे.' अत:शब्द हेत्वर्थ छे. जेणे साग वेदनुं अध्यन कर्युं छे तथा जे तेनो अर्थ समज्यो छे ते कर्मने निनश्वर फळवाळां जाणीने तेनाथी विरक्त रहे छे, अने तेथी स्थिर मोक्षना अभिलाषुकने तेना उपायभूत ब्रह्मनी जिज्ञासा थाय छे. ब्रह्मशब्दे करीने स्वभावथी समस्त दोषथी रहित अनवधि अतिशय असंख्य कल्याण गुण युक्त पुरुषोत्तम[५५] कहेवाय छे. ए प्रमाणे कर्मज्ञान[५६] तथा तेनुं अनुष्ठान वैराग्यने उत्पन्न करे छे तथा चित्तना मळने दूर करे छे अने तेथी ते ब्रह्मज्ञाननुं साधन छे. ए प्रमाणे मानतां कार्यकारणताए करीने पूर्वमीमांसा अने उत्तरमीमांसानुं एकशास्त्रत्व ठरे छे. माटे ज वृत्तिकार कहे छे के आ शास्त्रनु जैमिनीना सोळ लक्षण वाळा शास्त्र साथे एकत्व छे. कर्मना फलनुं क्षयित्व अने ब्रह्मज्ञानरूप फळनु अक्षयित्व

' कर्मथी प्राप्त थता लोकनी परीक्षा करीने ब्राह्मणे विरक्त थवुं जोईए. कृतकर्मथी बंधावुं न जोईए '

इत्यादि श्रुति साथे अनुमान अने अर्थापत्तिने[५७] लईने प्रतिपादित कर्युं छे. एक एकनी निंदा वडे कर्मविशिष्ट ज्ञान मोक्षनुं साधन छे एम श्रुति देखाडे छे:—

' जे अविद्यानो उपासना करे छे ते अंधतमस्‌मां प्रवेश करे छ. अने जे केवल विद्यामां ज आनंद माननार छे ते ते करतां पण अधिक अंधतमस्‌मां प्रवेश करे छे. जे विद्या अविद्या बनेने जाणे छे ते अविद्याथी मृत्युने तरीने विद्याथी अमृतत्वने पामे छे. ' इत्यादि.

पांचरात्ररहस्यमां पण कह्युं छे के.—

ते करुणासिंधु भगवान् भक्तवत्सल होईने उपासकोने माटे पंचमूर्तियुक्त थाय छे ते पंचमूर्ति अर्चा, विभव, व्यूह, सूक्ष्म, अने अंतर्यामी ए संज्ञा वाळी छे; अने तेनो आश्रय करीने जूदां जूदां (उत्तरोत्तर) ज्ञेयने पामे छे

पूर्व पूर्व उपासना विशेषथी पापनो क्षय थतां उत्तरोत्तर मूर्तिनी उपासनानो अधिकार आवे छे ए प्रमाणे श्रौतस्मार्त धर्मनुं प्रतिदिवस अनुष्ठान करवाथी उक्त उपासना वडे वासुदेव मनुष्य उपर प्रसन्न थाय छे

निदिध्यासनरूप भक्तिवडे प्रसन्न थएला हरि कर्मसंघातरूप अविद्यानुं एकदम निवर्तन करे छे ने पछी संसारथी तिरोहित थएला जीवोना सर्वज्ञत्वादि स्वाभाविक कल्याण गुण आविर्भावने पामे छे

ए गुण मुक्त अने ईश्वरने समान छे तेमना फरतां ईश्वरमां सर्वकर्तृकत्व ए गुण विशेष छे

अशेष पूर्ण ब्रह्म जे शेषी छे तेमां मुक्त शेषरूप छे; ते आत्मानी साथे तेओ सर्व कामने भोगवे छे.

माटे तापत्रयातुर पुरुषोए अमृतत्वने माटे पुरुषोत्तमादि पदथी ज ओळखाता ब्रह्मना ज्ञाननी इच्छा करवी जोईए. प्रकृति अने प्रत्यय साथे अर्थनो बोध करे छे, अने तेमा प्रत्ययार्थनुं प्राधान्य छे, तेथी 'सनोऽन्यत्र' ए वचनना बळथी इच्छाना इष्यमाणना प्राधान्यथी इष्यमाणज्ञान विधेय छे अने ते ध्यानोपासनादि शब्दवाच्य वेदन छे, वाक्यजन्य आपात ज्ञान नथी. कारण के नहितो शब्दसमूहने सांभळनार व्युत्पन्न पुरुषनी विधानवगर पण प्राप्ति थाय. अने श्रुति पण कहे छे के —

आत्मानुं दर्शन श्रवण मनन अने निदिध्यासन करवुं जोईए; तेणे 'आत्मा एज छे' एम उपासना करवी जोईए. तेनुं ज्ञान मेळवीने तेणे प्रज्ञा करवी जोईए विद्या पछी ते तेने जाणे छे.

अहीं श्रोतव्य ए अनुवादे छे. कारण के अध्ययनविधि वडे सांग स्वाध्यायनुं ग्रहण करता श्रवणनी प्राप्ति थाय छे. अर्थातवेद पुरुष प्रयोजनयुक्त अर्थदर्शन करीने तेनो निर्णय करवाने पोतानी मेळे ज श्रवणमां प्रवृत्त थाय छे. मनन्य ए पण अनुवाद छे,[६३] कारण के 'शास्त्रार्थनी अप्राप्ति होय तो पण शास्त्र अर्थवत् होय' ए न्यायथी मनन श्रवणनुं प्रतिष्ठान करावनार छे माटे तेनी पण प्राप्ति थाय छे. ध्यान एटले तेलनी धारनी पेठे अविच्छिन्न स्मरणपरंपरारूप स्मरण. वारंवार स्मरणथी सर्व ग्रंथिनो उच्छेद थाय छे. ए प्रमाणे दृढ स्मरण ए ज मोक्षनो उपाय छे एवी श्रुति छे ते उपरथी स्मरण दर्शननी समान छे.[६४]

ते परमात्माना दर्शनथी हृदयग्रंथि छेदाय छे, सर्व संशयनो भेद थाय छे, अने कर्मनो क्षय थाय छे.

एवीं दर्शननु स्मरण साथे एकत्व छे. तेमज 'आत्मानुं दर्शन करवु जोईए' ए श्रुतिथी पण स्मरण दर्शनसमान छे ए वातनु विधान थाय छे. भावनाना प्रकर्षथी पण स्मरण दर्शन तुल्य छे एम ठरे छे. 'वेदन छे ते उपासना छे'[६५] इत्यादि वडे वाक्यकारे आ सर्व प्रपंचित कर्युं छे. आ ज ध्याननी विशेषता श्रुति जणावे छे.—

आ आत्मा कोइना कहेवाथी, बुद्धिथी, अने बहु श्रवण कर्याथी लभ्य नथी. जेने ते आत्मा प्रसन्न थाय छे तेने तेनी प्राप्ति थाय छे, अने तेना ज आगळ आत्मा पोतानुं शरीर विकासे छे.[६६]

वळी जे प्रियतम छे ते ज वरणीय छे, अने जेम जीव पोताने प्रियतम माने छे तेम भगवान् पोते ज प्रियतम छे ए प्रमाणे भगवान् पोते कहे छे के

म्हारा तरफ सततयुक्त अने मने प्रीतिपूर्वक भजनारने हुं बुद्धियोग आपुं छुं, जे वडे ते म्हारी पासे आवे

छे. हे अर्जुन! ते उत्तम परपुरुष अनन्य भक्तिथी लभ्य छे.

भक्ति एटले जेमां निरतिशय आनंद छे, जे प्रिय छे, जेमां बीजुं कंइ प्रयोजन नथी, अने जेमां सकल इतर पदार्थनी तृष्णानो अभाव छे एवुं ज्ञान विशेष. अने तेनी सिद्धि विवेकादिथी थाय छे. वाक्यकारे कह्युं छे केः—तेनी प्राप्ति संभव अने निर्वचनानुसार विवेक, विमोक, अभ्यास, क्रिया, कल्याण, अनवसाद अने अनुद्धर्षथी थाय छे. त्यां विवेक एटले पवित्र अन्नथी सत्त्वशुद्धि. अहीं निर्वचन एम छे के 'आहारशुद्धिथी सत्त्वशुद्धि थाय छे अने सत्त्वशुद्धिथी दृढस्मृतिनी प्राप्ति थाय छे.' विमोक एटले कामनाओनो अनभिष्वंग. अहीं निर्वचन एम छे के 'शांत पुरुषे उपासना करवी जोईए.' वारंवार मनमां लाव्या करवुं ए अभ्यास. अहीं भाष्यकार स्मृतिमांथी निर्वचननुं उदाहरण टांके छे के 'सर्वदा तेना भावथी भावित—'. शक्तिप्रमाणे श्रौतस्मार्त कर्मनुं अनुष्ठान ते क्रिया अने 'क्रियावान् ए ज ब्रह्मविद्‌मां वरिष्ठ छे' ए निर्वचन छे. सत्य, आर्जव, दया, दान इत्यादि कल्याण छे, अने 'सत्य वडे प्राप्ति थाय छे' इत्यादि निर्वचन छे. दैन्यनो विपर्यय ते अनवसाद. 'आ आत्मा बळहीनने लभ्य नथी' ए निर्वचन छे. दैन्यना विपर्ययथी उत्पन्न थनारी तुष्टि ते अनुद्धर्ष. 'शान्त, दान्त—' इत्यादि निर्वचन छे. ए प्रमाणे आ प्रकारना नियमविशेषथी प्राप्त करेला पुरुषोत्तमना प्रसाद वडे जेना आन्तर अंधकारनो विध्वंस थयो छे एवा पुरुषनी, जेमां अन्य प्रयोजन नथी, जे नित्य अने निरतिशय प्रिय छे, अने जे आत्मानी प्रतीतिनी अवभासतायुक्त ध्यानरूप छे, ते भक्ति वडे, पुरुषोत्तमपदनी प्राप्ति थाय छे एम सिद्ध थयुं. यामुन कहे छे केः—

उभय (कर्म अने ज्ञान) थी जेनुं अंतर शुद्ध थयुं छे एवा पुरुषना ऐकान्तिक अने आत्यन्तिक भक्ति योग वडे

ते लभ्य छे; अर्थात् ज्ञान अने कर्मना योगथी जेनुं अंत करण संस्कृत थयु छे एवा पुरुषना भक्तियोग वडे.

जे ब्रम्हना ज्ञाननी इच्छा करवी जोईए ते ब्रम्ह ते शु? एवी अपेक्षामा.

जन्माद्यस्ययत:

' आ(दृश्य जगत्)नो जेमाथी जन्मादि छे (ते) '

एम लक्षण कह्यु छे. जन्मादि एटले सृष्टि, स्थिति अने प्रलय. आ अचिंत्य विविध रचनाथी रचाएला, अने नियतदेशकालभोगवाळा ब्रम्हाथी तृण पर्यन्तना क्षेत्रज्ञो (आत्मा) वडे मिश्र, एवा जगत्नो[६८] जे सर्वेश्वर छे, जेनु स्वरूप सकल हेयगुणथी रहित छे, जेनामा सत्यसंकल्पादि अनवधि अतिशय असंख्येय कल्याण गुण छे, एवा सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् पुरुषमाथी उत्पत्ति स्थिति अने लय प्रवर्ते छे एम सूत्रार्थ छे.

आ प्रकारना ब्रम्हमा शु प्रमाण छे? एम जाणवानी इच्छाना संबंधमा

शास्त्रयोनित्वात्

(शास्त्र एज प्रमाण छे तेथी)

एम कह्यु छे. ' शास्त्रयोनित्वात् ' ए सूत्रमां शास्त्र छे योनि कारण प्रमाण जेनु ते शास्त्रयोनि, शास्त्रयोनिनो भाव ते शास्त्रयोनित्व. ब्रम्हज्ञाननु कारण आत्मज्ञान छे, अने शास्त्रज्ञान आत्मज्ञाननु कारण छे माटे ते ब्रम्हनु कारण छे, एम सूत्रार्थ छे[६९]

ब्रम्ह प्रमाणान्तर गम्य थयी शकाय नहि, कारण के ते अतीन्द्रिय होवाथी प्रत्यक्षनी प्रवृत्ति अनुपपन्न छे. महार्णवादि सकर्तृक छे, कार्य होवाथी, घटनी पेठे. एवु अनुमान पण

कर्ता शकाय नहि, कारण के ए अनुमान कोही गएला कोळा जेवुं छे. आवा प्रकारना लक्षणवाळा ब्रह्मने 'जेमांथी आ सर्वभूत उत्पन्न थयां छे' इत्यादि वाक्य प्रतिपादन करेछे एम स्थित थयुं.

जो के ब्रह्म प्रमाणान्तरगोचर नथी तो पण प्रवृत्तिपर पण नहि अने निवृत्तिपर पण नहि एवुं जेनुं रूप सिद्ध छे ते ब्रह्मने शास्त्र प्रतिपादन करवाने असमर्थ छे. आ प्रकारनी शंकानो परिहार करवाने कह्युं छे के:—

तत्तुसमन्वयात्

('ते समन्वयथी थाय छे').

आ सूत्रमां 'तु' शब्द प्रसंगनी शंकाने दूर करवा माटे छे. ब्रह्मनु शास्त्रप्रमाणत्व संभवे छे ज; शाथी? तो के समन्वयथी. परम पुरुषार्थभूत ब्रह्मनो अभिधेयता वडे अन्वय थाय छे माटे एवो अर्थ. वळी प्रवृत्ति के निवृत्तिथी रहित वाक्य प्रयोजनशून्य नथी. 'तने छोकरो थयो' 'आ सर्प छे' इत्यादि स्वरूपपर वाक्यमां पण हर्ष अने भयनिवृत्तिरूप प्रयोजनत्व देखाय छे ज." माटे कंइ पण अनुपपन्न नथी. आ स्थळे मात्र हमे दिग्दर्शन कराव्युं छे. विस्तार मूळ ग्रन्थोमांथी जोई लेवो. माटे विस्तारना भयथी हमे अहीं विरमीए छीए. आ प्रमाणे सघळुं स्पष्ट छे.

पूर्णप्रज्ञ दर्शन.

जो के आ रामानुजमत जीवनु अणुत्व, दासत्व, वेदोनु अपौरुषेयत्व, वेदनु सिद्धार्थ-बोधकत्व, वेदनु स्वत प्रमाणत्व, त्रण प्रमाण, पांचरात्र उपर आधार, प्रपंचभेदनु सत्यत्व इत्यादि सिद्धांतमा पोताना सिद्धांतनी समान होवा छता पण परस्परविरुद्ध भेदादि त्रण पक्षनो स्वीकार करवाने लीधे जैन मत साथे मळतु आवे छे एम विचार करीने 'स आत्मा तत्त्वमसि' इत्यादि वेदान्त वाक्योना समूहनी जूदी रचनाथी जूदो अर्थ उपजाव्ये करीने ब्रह्ममीमांसानु विवरण करवाना मिषथी आनंदतीर्थे बीजु प्रस्थान चलाव्यु छे. तेना मत प्रमाणे तत्त्व बे प्रकारनु छे; स्वतंत्र अने अस्वतंत्र. तत्त्वविवेकमा कह्यु छे के —

स्वतंत्र अने अस्वतंत्र एम बे प्रकारनुं तत्त्व इष्ट छे भगवान् विष्णु स्वतंत्र, निर्दोष, अने अशेष सद्गुणयुक्त छे.

हवे कोइ शंका करे के सजातीय, विजातीय, अने स्वगतभेदथी रहित एवा ब्रह्मतत्त्वनु प्रतिपादन करनार वेदांत जाग्रत् छे ते छता तेनु (ब्रह्मतत्त्वनु) अशेषसद्गुणत्व शी रीते अंगीकार कराय ? तो तेना उत्तरमां हमे कहीशु के एम शंका करवी नहि, कारण के भेदने सिद्ध करनार अनेक प्रमाणसाथे विरोध होवाथी तेओनु (वेदान्त वाक्योनु) प्रामाण्य ग्रहण नाखावरहित छे एम

सिद्ध करवामा उपपन्न नथी[1] प्रथम तो प्रत्यक्ष ज 'आ हमाराथी भिन्न छे ' ए प्रकारे नीलपीतादिनो भेद बतलावे छे.

पूर्व पक्षी कहे छे—शु तमे एम मानो छो के प्रत्यक्ष केवल भेदनु स्वत अवगाहन करे छे अथवा धर्मिप्रतियोगिघटित भेदनु अवगाहन करे छे?[2] *प्रथम पक्ष लेवाय नहि, कारण* के धर्मना प्रतियोगीना ज्ञान वगर तेनी अपेक्षा करनार भेदनु ज्ञान थवु अशक्य छे[3] बीजो पक्ष पण स्वीकाराय नहि, कारण के बीजो पक्ष स्वीकारो तो हमे पुछाए के धर्मना प्रतियोगीना ग्रहण पछी भेदनु ग्रहण मानो छो के ते सर्वनु ग्रहण सगाते मानो छो?[4] प्रथमनो पक्ष घटतो नथी, कारण के बुद्धिनो व्यापार विराम लई लईने थतो नथी, तेम ज एम मानता अन्योन्याश्रय दोष आवे छे[5] बीजो पक्ष पण लेवाय नहि, कारण के कार्यकारणबुद्धिना यौगपद्यनो अभाव छे अने धर्मीनी प्रतीति ते भेदना प्रतीतिनु कारण छे कारण के धर्मी पासे होय तो पण व्यवहित प्रतियोगीना ज्ञान वगर भेद अज्ञात छे, ए उपरथी अन्वयव्यतिरेक वडे तेओना कार्य कारण सबधनी अवगति थाय छे. माटे भेद प्रत्यक्ष छे ए मत चालशे नहि[6]

सिद्धाती कहे छे—आ प्रमाणे कहेनारने हमे कहीए छीए के आ दूषणनो पोकार वस्तुस्वरूपभेदवादीनी प्रति करो छो के धर्मभेदवादीनी प्रति? वस्तुस्वरूपभेदवादीना प्रति होय तो चोरना अपराधथी माडव्यनो निग्रह थवा जेवु थाय छे, कारण के तमारा दूषणनो ते विषय नथी[7] जो कहो के वस्तुस्वरूप भेद मानता घटना पेठे प्रतियोगिसापेक्षत्व घटतु नथी अने भेद प्रतियोगिसापेक्ष छे एम सर्वत्र प्रथित छे, तो हमे कहीशु के आ मानवु अयोग्य छे,[8] कारण के वस्तुस्वरूप सर्वथी विलक्षण छे एम प्रथम जणाता प्रतियोगीना अपेक्षाए करीने विशिष्ट व्यवहार उपपन्न छे[11] जेमके परिमाणघटित

वस्तुस्वरूप प्रथम जणाय छे, पछी प्रतियोगिविशेषणनी अपेक्षाए करीने ते न्हस्व दीर्घ ए प्रमाणे विशिष्ट व्यवहारनुं पात्र थाय छे[१२] विष्णुतत्त्व निर्णयमा कह्यु छे के ' विशेषणविशेष्यताए करीने भेदनी सिद्धि थती नथी, कारण के विशेषणविशेष्य-भाव भेदनी अपेक्षा राखे छे, धर्मीना प्रतियोगीनी अपेक्षाए करीने भेदनी सिद्धि छे, अने धर्मिप्रतियोगित्व भेदनी अपेक्षा करे छे एम अन्योन्याश्रय दोष आवे छे, अने तेथी उक्त प्रकारे भेद अयुक्त छे, माटे भेद ए पदार्थस्वरूप छे[१३]' इत्यादि. माटे ज गवार्थी गवयदर्शनथी प्रवृत्त थतो नथी, अने गो-शब्दनु स्मरण करतो नथी[१४] भेद वस्तुस्वरूप लईए तो दूध अने पाणीना मिश्रणमा भेदनो प्रतिभास पण थाय ज एवी शंका करी शकाय नहि, कारण के समान अभिहारादि प्रतिबंधक-बळथी भेदबुद्धिना व्यवहारनो अभाव उपपन्न छे[१५] कह्यु छे के -

अतिदूरत्वने लीधे, अतिसामिप्यने लीधे इन्द्रिय-दोषथी, मननी अव्यवस्थितिथी, सूक्ष्मताने लीधे, व्यवधानथी, अभिभवथी अने समान अभिहारथी (भेदज्ञान थतुं नथी).

अतिदूरत्वने लीधे पर्वतना शिखर उपरना वृक्षादिनु, अति-सामिप्यथी नेत्रगत अजनादिनु, इन्द्रियघातथी विद्युदादिनु, मननी अनवस्थाथी कामादिथी अव्यवस्थित थएला मनवाळाने स्पष्ट प्रकाशमा रहेला घटादिनु, सूक्ष्मताने लीधे परमाणु आदिनु, व्यवधानथी भीत पाछळना पदार्थनु, अभिभवथी दिवसे प्रदीप-प्रभादिनु, अने समानाभिहारथी क्षीरनिरादि (ना मिश्रण) नु यथावत् ग्रहण थतु नथी एम आ कारिकानो अर्थ छे धर्मभेद-वादनो अंगीकार करीए तो पण कइ दोष नथी, कारण के धर्मिप्रतियोगीनु ग्रहण मानता धर्मभेदना माननो संभव छे[१६] एम पण धारवु नहि के धर्मभेदवादमा ते ते भेदमा बीजा भेद मानवा पडशे अने तेथी दूर न कराय एवी अनवस्था आवशे, कारण के मूळ जे भेद तेनो उच्छेद थतो नथी अने भेद अने

भेदी बे भिन्न छे ए व्यवहार अटकवानो नथी.[१७] एक भेदथी अन्यभेदनुं अनुमान थाय छे एम पण नथी, कारण के दृष्टांत-रूप जे भेद तेनो घात कर्या सिवाय एवुं जे अनुमान थाय ते दोषरूप नथी, अने आ प्रमाणे खोळ मागनारने घडो भरीने तेल आपवा जेवुं थाय छे.[१८] दृष्टांतरूप भेदनो घात थाय एम मानो तो दोषनुं अनुत्थान ज रहे.[१९] वरने मारवा माटे कन्या परणाववामां आवती नथी; माटे मूलक्षयना अभावथी अनवस्था दोष आवतो ज नथी.[२०] अनुमान वडे पण भेद सिद्ध थाय छे. परमेश्वर जीवथी भिन्न छे, कारण के ते तेना प्रति सेव्य छे. जे जेना प्रति सेव्य होय ते तेनाथी भिन्न होय, जेमके चाकरथी राजा. मने सुख थाओ, मने जरा पण दुःख न थाओ, ए प्रकारे पुरुषार्थने इच्छनार पुरुषो जो पोताना पतिना पदनी कामना करे तो तेमनो सत्कार थवानो नहि, उलटा ते सर्व अनर्थने पात्र थवाना. जे पोतानुं दीनत्व कहे छे अने पारका गुणोनो उत्कर्ष कहे छे ते स्तुत्य छे. अने पति प्रीतियुक्त थाय छे तो स्तुति करनारने अभीष्ट आपे छे. कह्युं छे के:—

> हुं राजा छुं एम कहेनारने राजा मारी नंखावे छे, अने जे तेना गुणोत्कर्ष बोले छे तेने ते सर्व अभीष्ट आपे छे.

आप्रमाणे परमेश्वरनी साथे पोतानो अभेद करवानी तृष्णा वडे विष्णुनो गुणोत्कर्ष मृगतृष्णिका जेवो छे एम कहेवुं ते म्होटा केळानी लालचे जीभ छेदवा जेवुं छे; कारण के आ प्रकारना विष्णुना विद्वेषथी अंधतमसमां प्रवेश करवानो प्रसंग आवे छे. आ सर्व महाभारततात्पर्यनिर्णयमां मध्वमंदिरे प्रतिपादित कर्युं छे:—

> हे अनादि कालथी द्वेष करनारा दैत्यो! तमे विष्णुनो द्वेष विरुद्ध कर्यो छे. अंधकारमां निश्चय करवाने लीधे विष्णु दैत्योने अंधतमसमां पाडे छे.

अंकन, नामकरण, अने भजन ए रीते सेवा त्रण प्र-

कारनों छे. नारायणना रूपना स्मरण ने माटे अने अपेक्षित अर्थनी सिद्धिने माटे नारायणनां आयुधादिनुं (शरीर उपर) अंकन ते अंकन छे. शाकल्यसंहिताना परिशिष्टमां कर्युं छे के:—

देव लोपोनुं बल जे अमृत एवा विष्णु तेमनुं चक्र अभितप्त करीने जे पुरुष धारण करे छे ते पोतानां दुरितने दूर करीने वैकुंठने पामे छे के ज्यां रागथी मुक्त एवा यतिओ प्रवेश करे छे.

जे सुदर्शनने हाथ उपर धारीने देवलोको स्वर्ग (वैकुंठ)मां गया, जे वडे अंकित थएला मनुओ लोकसृष्टिने विस्तृत करे छे, तेने ब्राह्मणो धारण करे छे, अने ते वडे लांछित थईने तेओ विष्णुना परम पदने पामे छे.

उरुक्रम विष्णुनां चिन्ह वडे अंकित थईने आपणे लोकमां सुभग थवुं जोईए

तैत्तिरीयक उपनिषद्मां पण कहे छे के —

जे अतप्ततनु छे ते अपक्व छे अने ते तेने (विष्णुपदने) पामतो नथी. जे श्राधितो तेने वहन करे छे ते तेने पामे छे.

स्थानविशेष आग्नेय पुराणमां दर्शावे छे —

ब्राह्मणे पोताना जमणा हाथ उपर सुदर्शन धारण करवुं, अने डावा हाथ उपर शंख धारण करवो एम ब्रह्मवित् पुरुषो जाणे छे.

बीजी जग्याए चक्रधारणने माटे मंत्रविशेष कह्यो छे —

हे सुदर्शन! हे महाज्वाल! हे कोटिसूर्यना जेवी कांतिवाळा! अज्ञानथी अंध थएलो जे हुं तेने विष्णुनो नित्यमार्ग देखाड.

तुं पहेलां सागरमांथी उत्पन्न थयो छे, तने विष्णुए हाथमां धारण कर्यो छे सर्व देवो तने नमस्कार कर्यो छे हे पांचजन्य! तने नमस्कार हो

नामकरण एटले पुत्रादिनुं सर्वदा विष्णुना नामस्मरणने अर्थे केशवादि नाम पाडवुं ते.

भजन दश प्रकारनुं छे; वाणी वडे सत्य, हित अने प्रिय बोलवुं तथा शास्त्रनुं अध्ययन करवुं, शरीर वडे दान करवुं; तथा पोतानुं अने परनुं रक्षण करवुं; अने मन वडे दया, स्पृहा अने श्रद्धा राखवी. आमाना एक एकने संपादित करीने ते नारायणने समर्पण करवु तेनुं नाम भजन. कह्युं छे के:—

अंकन, नामकरण, अने दशप्रकारनुं भजन.

ए प्रमाणे ईत्यादिए करीने पण भेदनुं अनुमान थाय छे."

तेजप्रमाणे श्रुतिथी पण भेद समजाय छे.—

सर्वने प्राप्त करेला सत्यथी आनंद थाय छे. इंद्रदेवनी प्रशंसा करता सत्ययुक्त (पुरुषो) तेना महिमाने वखाणे छे.

हे विप्र! सर्व अर्थज्ञोमां आत्मा सत्य छे, जीव सत्य छे, भेद सत्य छे, भेद सत्य छे; महारामां वारण्य (अज्ञान) छे, महारामां वारण्य छे, महारामां वारण्य छे.

इत्यादि मोक्ष अने आनंदना भेदनु प्रतिपादन करनारी श्रुतिओ छे.

वळी

आ द्वारा मेळवीने महारा सामर्थ्यने पामेला सृष्टि वखते उत्पन्न थता नथी अने प्रलय वखते लयने पामता नथी.

(ईश्वर) जगद्व्यापाररहित छे, कारण के प्रभु तेनु करण छे अने ते पासे नथी.[२२]

इत्यादि वडे पण भेद सिद्ध थाय छे.

'ब्रह्मने जाणे छे ते ब्रह्म ज थाय छे' ए श्रुतिना बळथी जीवनु परमेश्वरपणु धारी शकाय नहि, कारण के ए वाक्यमा

'ब्राह्मणने भक्ति वडे पूजिने शूद्र पण ब्राह्मण थाय छे' इत्यादिनी पेठे 'ते महोटो थाय छे' एम अर्थ छे.[२३]

कोइ कहेशे के जो प्रपंच होय तो ते निःसंशय निवृत्तिने पामे. आ द्वैतमाया मात्र छे. परमार्थ दृष्टिथी ते अद्वैत छे.

ए वचन वडे द्वैत कल्पित छे एम समजाय छे तो हुगे कहीशुं के ठीक पण तमे ए वचननो भाव *समज्या वगर* एम बोलो छो, कारण के ते आ प्रमाणे छेः— जो आ विश्व उत्पन्न थतुं होय तो ते निवृत्तिने पामतुं होय तेमां संशय नथी; माटे आ महोटो पंचविध भेदप्रपंच अनादि छे. आ मायामात्र छे एम कह्युं तेथी ते असत् छे एम कंइ कहेवाय नहि. नीचेना वचनोने आधारे *माया एटले भगवदिच्छा एम सिद्ध थाय छे;*

महामाया, अविद्या, नियति, मोहिनी, प्रकृति, वासना इत्यादि जे कहेवाय छे ते हे अनंत! तहारी इच्छा छे.

ते प्रकर्षे करीने करे छे माटे प्रकृति छे ते वासनाओने उत्पन्न करे छे माटे ते वासना छे. अ एटले विष्णु अने तेनी जे विद्या—माया ते अविद्या कहेवाय छे. ते प्रकृष्ट छे अने मय शब्द प्रकृष्टनो वाचक छे माटे ते माया कहेवाय छे. ते मात्र विष्णुनी एकानी एक प्रज्ञप्ति आ शब्दो वडे करीने बोलाय छे, विष्णु प्रज्ञप्तिरूप छे अने प्रज्ञप्तिनुं लक्षण स्वानंद छे.

आ **प्रज्ञा—माया** जेनुं **मान** (ज्ञान) अने **त्राण** (रक्षण) करे छे ते मायामात्र कहेवाय छे. आप्रमाणे द्वैत परमेश्वरे करीनी (पोतानी प्रज्ञा—माया वडे) **ज्ञात** अने **रक्षित** होवाथी ते **मायामात्र** कहेवाय छे अने तेथी कंइ ते भ्रांतिकल्पित ठरतुं नथी. वळी ईश्वरमां सर्व(विश्व)नी भ्रांती संभवती नथी, कारण के भ्रांति विशेषना अदर्शन उपर आधार राखे छे[२४]. हवे कोइ पूछे के एम छे तो ते पद शा माटे वपराय छे? तो तेना उत्तर-

मा कहे छे के ' परमार्थथी अद्वैत छे. ' परमार्थथी एटले परमार्थ (विष्णु)नी अपेक्षाए करीने. आ प्रमाणे सर्वथी उत्तम जे विष्णुतत्त्व तेनी बराबर अथवा तेथी अधिक आ नथी एम कह्यु छे.[२५] परमश्रुतिमा पण कह्युं छे के —

जीव अने ईश्वरनो भेद, जड अने ईश्वरनो भेद, जीवोनो परस्पर भेद, जड अने जीवनो भेद अने जडनो परस्पर भेद ए पाच भेदथी प्रपच पचभेदयुक्त छे. ते सत्य छे अने अनादि छे, जो आदिमान् होय तो ते नाशने पामे. तेनो नाश पण नथी अने ते भ्रांतिकल्पित पण नथी. जो कल्पित होय तो ते निवृत्त थाय; पण तेनी निवृत्ति थती नथी; माटे द्वैत नथी जणातु ए अज्ञानीनु मत छे. ज्ञानीओनु मत तो ए छे के विष्णुथी जे ज्ञात तथा त्रात छे ते मायामात्र छे अने परम छे ते हरि ज छे.

माटे सर्व आगमनुं तात्पर्य विष्णुनो सर्वोत्कर्ष बतावनो एटलु ज छे. अने आ वात हृदयमा राखीने ज परमात्माए पण कह्यु छे के —

लोकमां आ बे पुरुषो छे, क्षर अने अक्षर. सर्व भूत क्षर छे अने कूटस्थ अक्षर छे.

अन्य उत्तम पुरुष ते परमात्मा कहेवाय छे अने ते अव्यय ईश्वर त्रण लोकमां प्रवेश करीने तेनु भरण करे छे.

हुं क्षरथी अतीत छुं अने अक्षरथी पण उत्तम छु माटे लोक अने वेदमां हुं पुरुषोत्तम एम प्रसिद्ध छुं

मने पुरुषोत्तमने जे ए प्रकारे समोह पाम्या वगर जाणे छे ते सर्ववित् पुरुष सर्व भावे करीने मने भजे छे.

हे पापरहित अर्जुन! आ अतिगुह्यशास्त्र में कह्युं छे;

एने समजीने हे भारत! बुद्धिमान् तथा कृतकृत्य थवाय छे.

महावराहमां पण

सर्व वेदनुं मुख्य तात्पर्य पर जे श्रीपति तेने विषे छे. तेथी अन्य देवना उत्कर्षमां जे तात्पर्य होय ते अवान्तर छे.

इत्यादि वडे विष्णुना सर्वोत्कर्षमां सर्व वेदनुं महातात्पर्य छे एम कहेलुं छे ते युक्त छे.

'धर्मार्थकाम अनित्य छे, मोक्ष ए ज नित्य छे माटे जे नित्य छे तेने माटे मतिमान् पुरुषे यत्न करवो जोईए.' ए भाल्लवेय श्रुतिथी मोक्ष सर्व पुरुषार्थोमां उत्तम छे. मोक्ष विष्णुना प्रसाद वगर मळतो नथी, कारण के नारायण श्रुतिमां कह्युं छे के:—

जेना प्रसादथी परम (गति) प्राप्त थाय छे, जेना स्वरूपथी (पुरुष) संसारमांथी मुक्त थाय छे, तथा जेनाथी अन्य बीजा सुरलोकने आराधतां जीवो मुक्त थता नथी ते, कर्मपाशमांथी मुक्त थवानी इच्छा करनाराओने परम चिंत्य छे.

विष्णुपुराणमां पण कह्युं छे के:—

ते ज्यारे प्रसन्न थाय त्यारे अहीं शुं अलभ्य छे? सर्व अर्थ अने कामथी दूर रहेवुं, कारण के ते क्षुद्र छे. अनन्त ब्रह्मवृक्षनो सम्यग् आश्रय करवाथी पुरुष निःसंशय मुक्तिफलने पामे छे.

वळी कह्युं छे के:—

प्रसाद (विष्णुना) गुणोत्कर्षना ज्ञानथी थाय छे, अभेदज्ञानथी थतो नथी.

वळी आ सिद्धांतमां तत्त्वमस्यादि तादात्म्य प्रतिपादक

श्रुतिनो व्याकोप थतो नथी, कारण के श्रुतिना तात्पर्यना अपरिज्ञानथी एवा अर्थनो उदय छे.

अविशेप तत् शब्द नित्यपरोक्षनो वाचक छे; त्वं शब्द अपरोक्षवाचक छे तो उभयनुं ऐक्य शी रीते थाय? माटे 'आदित्य यूप छे' ए वाक्यनी पेठे आ श्रुति सादृश्यार्थ वाचक छे.

परमश्रुतिमा कहे छे के:—

जीवनुं परमऐक्य कांतो बुद्धिसारूप्य होय, कांतो एक स्थानमां निवेशरूप होय, अथवा व्यक्तिस्थाननी अपेक्षाए करीने होय; जीवनी स्वरूपएकता छे ज नहि, कारणके मुक्त पण विरूप होय छे. (परमात्मानी) स्वतंत्रता अने पूर्णता अने (जीवनी) अल्पता अने परतंत्रता ए विरूपता छे.

अथवा आत्मा (ऽ) तत्त्वमसि ए वाक्यमां ते आत्मा स्वातंत्र्यादि गुणोपेत छे माटे (अतत्त्वमसि) तुं ते नथी, कारण के तुं तेथी रहित छे, एम अर्थथी एकत्वनुं सारी रीते निराकरण थाय छे. कह्युं छे के:—

अतत्त्वम् एम पदच्छेद करतां ऐक्य सारी रीते निराकृत थाय छे.

अने ए ज कारणथी दृष्टांतनवकमा 'ते शकुनि जेम सूत्रे करीने बद्ध छे.' इत्यादि वडे भेद ज प्रतिपादित कर्यो छे. दृष्टांतने माटे अभेदनो उपदेश लीधो छे एम तत्त्ववादनुं रहस्य छे."

महोपनिषद्मां पण कह्युं छे के.—

जेम पक्षी सूत्र अने नाना वृक्षना रस, जेम नदीओ अने समुद्र, जेम लवणोदक अने शुद्धोदक, जेम चोर अने मालधणी, जेम पुरुष अने विषय भिन्न छे तेम जीव अने ईश्वर पण भिन्न छे; ते सर्वदा विलक्षण छे.

तोपण सूक्ष्मरूपताने लीधे परम जे हरि ते मंददृष्टि पुरुषोने जीवथी भिन्न जणातो नथी, जो के ते तेओनो प्रेरक छे. तेमनी विलक्षणता जाणवाथी मोक्ष थाय छे अन्यथा बंध थाय छे ब्रह्मा, शिव अने सर्व देव शरीरना नाशथी क्षर छे लक्ष्मीनो देह अक्षर होवाथी ते अक्षरा छे, माटे परमेश्वर पण अक्षर छे स्वातन्त्र्य, शक्ति, विज्ञान, सुख इत्यादि अखिल गुणोए करीने ते सर्वदेवता तेने अत्यत वश छे.

• वळी

सर्वगुणथी पूर्ण विष्णुने जाणीने मनुष्य ससारमांथी मुक्त थाय छे अने नित्य दुःखरहित आनदने भोगवतो तेना समीपमां आनदमां रहे छे मुक्तनो आश्रय विष्णु छे अने ते सर्वनो महोटो अधिपति छे तेओ सर्व तेने वश छे अने ते सर्वदा ईश्वर छे

एकना विज्ञानथी सर्वनु विज्ञान ए श्रुति वाक्य पण ते प्रधान छे तथा ते कारण छे एम मानवाथी योग्य ठरे छे, सर्व मिथ्या छे ए रीते योग्य ठरतु नथी, कारण के सत्याना ज्ञानथी मिथ्याज्ञान सभवतु नथी आपणे लोकमा साभळीए छीए के प्रधान पुरुषना ज्ञानाज्ञानथी गामनु ज्ञानाज्ञान थाय छे अने बाप (कारण) ने जाणता मनुष्य छोकरा (कार्य) ने जाणे छे[१६] (ते प्रमाणे प्रधान अने कारण जाणता अप्रधान अने कार्य जणाय छे)

जो ए प्रमाणे न लईए तो 'हे सौम्य! एक मृत्पिंड (ना ज्ञान) थी सर्व मृण्मय (पदार्थो) विज्ञात थाय छे' ए श्रुतिमा एक अने पिंड ए शब्द वृथा थवानो प्रसग रहे छे, कारण के 'माटीनु ज्ञान थता' एटलाथी ज वाक्य पूर्ण थाय छे[१७] वळी 'वाचाथी उच्चार विकार अने नाम ए मिथ्या छे, मृत्तिका एज सत्य छे' ए वाक्यथी कार्यनु मिथ्यात्व प्रति

पादित कर्युं छे एम पण मानवुं जोईए नहि, कारण के वाचार्थी उच्चारण छे विकार जेनो ते अविकृत अने नित्य छे अने मृत्तिका इत्यादि नाम छे ए वाक्य सत्य छे ए प्रमाणे अर्थ लई तथ्यनो स्वीकार करवामां आवे छे.[२८] जो आ प्रमाणे (अर्थ) न होय तो नामधेय अने एव ए बे पद व्यर्थ थाय; माटे कोइ पण स्थळे जगत्नुं मिथ्यात्व सिद्ध थतुं नथी.[२९] वळी 'प्रपंच मिथ्या छे' ए वाक्यमां मिथ्यात्व सत्य छे के मिथ्या छे? जो कहो के सत्य छे तो सत्य अद्वैतना भंगनो प्रसंग आवे छे, जो मिथ्या कहो तो तेथी प्रपंच सत्य ठरे छे.[३०]

पुर्वपक्षीः—'अनित्यत्व नित्य छे के अनित्य छे ? गमे ते पक्ष लो तो पण ते अनुपपन्न थाय छे.' आ प्रकारना आक्षेपनी पेठे आ विकल्पमां पण नित्यसमजाति भेद प्राप्त थाय छे.[३१] न्याय निर्वाणकार कहे छे केः—

अनित्यभावथी नित्य अने नित्यत्वोपपत्तिथी अनित्य तेनुं नाम नित्यसमें.

तार्किक रक्षामां पण कह्युं छे केः—

धर्मना तद्रूप अने अतद्रूप विकल्पनी अनुपपत्तिथी धर्मीनो तद्विशिष्टत्वभंग ते नित्यसम कहेवाय छे.

उपली संज्ञाने उपलक्षण रूपे लइने प्रबोध सिद्धिमां कह्युं छे केः—

अन्यार्थत्वथी उपरंजक धर्मनी समता उत्पन्न थाय छे.[३४]

माटे हमे जे उत्तर आपीए छीए ते सत् छे.

सिद्धांती कहे छेः—आ प्रमाणे कहेनार पूर्वपक्षीने हमे उत्तर आपीए छीए के ए तो भमणने भडकाववानुं कहेवाय, कारण के दोषनुं मूळ देखाडवामां आवतुं नथी. ते बे प्रकारनुं छे, साधारण अने असाधारण. आमांनुं प्रथम सव्या-

घातक छे; बीजुं त्रण प्रकारनुं छेः युक्तांगहीनत्व, अयुक्तांगाधिकत्व अने अविषयवृत्तित्व. आमांनुं साधारण असंभावित छे, कारण के उक्त आक्षेप (अनित्यत्व नित्य के अनित्य इ०) मां पोते पोतपोतानो व्यापक नथी एम जणाय छे; ए प्रमाणे असाधारण पण घटतुं नथी, कारण के घटनी नास्तितामां नास्तिता कहेवामां जेम अस्तित्व आवे छे तेम आ चालता विषयमां पण थाय छे.[३५]

जो एम कहो के प्रपंचनुं मिथ्यात्व मानवामां आवे छे, पण असत्त्व मानवामां आवतुं नथी तो ते माथुं जतां पण सो रूपिया नहि आपनार पण विश पंचोळां आपनार गाडावाळाना दृष्टांत जेवुं छे, कारण के मिथ्यात्व अने असत्त्व पर्याय छे. आटलुं कहीने ज हमे व्याख्यान करवानुं बंध करीए छीए. त्यां

अथातो ब्रह्म जिज्ञासा

ए प्रथम सूत्रनो अर्थ आ प्रमाणे छे. अहीं अथ शब्द मंगळवाचक, तथा अधिकार अने आनन्तर्यनो वाचक छे एम स्वीकारवामां आवे छे. अतः शब्द हेत्वर्थ छे. गरुडपुराणमां कह्युं छे केः—

सर्व सूत्र अथातः ए शब्दपूर्वक सामान्य रीते आरंभवामां आवे छे. आनुं कारण शुं ? हे विद्वन् तेओनो अर्थ शुं छे ? तेओनी उत्तमता शा माटे छे ? हे ब्रह्मदेव ! ए मने कहो जेथी हुं ते तत्त्वतः जाणुं. ए प्रकारे नारदे पुछ्युं त्यारे सत्पुरुषोने विषे उत्तम एवा ब्रह्मदेव बोल्याः—आनन्तर्य अधिकार अने मंगलार्थे अथ शब्द वपराय छे, अने अतः शब्द हेत्वर्थमां कहेलो छे.

माटे नारायणना प्रसाद विना मोक्ष मळतो नथी अने प्रसाद ज्ञान विना मळतो नथी. माटे ब्रह्मज्ञाननी इच्छा करवी जोईए एम सिद्ध थयुं.

जिज्ञास्य ब्रह्मनुं लक्षण

जन्माद्यस्ययतः

ए सूत्रे करीने कह्युं छे. सृष्टि, स्थिति इत्यादि जेमाथी थायछे ते ब्रह्म एम वाक्यार्थ छे. स्कन्दपुराणमा कह्यु छे के —

उत्पत्ति, स्थिति, संहार, नियति, ज्ञान, आवरण, बंध, मोक्ष, ये सर्व जे पुरुषमांथी थाय छे ते एकराज हरि छे.

तेमज यतोवाइमानि (जेमाथी आ०) इत्यादि श्रुति पण तेनुं ते ज कहे छे. आने माटे प्रमाण पण कह्यु छे के

' जे वेदने जाणतो नथी ते ते बृहत् (परमेश्वर) ने ओळखतो नथी ' इत्यादि श्रुति वडे ब्रह्म अनुमानथी समजाय ए वात निराकृत करी छे. वळी अनुमान ए स्वतंत्र प्रमाण पण नथी. कूर्मपुराणमां कह्युं छे के —

श्रुतिना साहाय्य वगरनु अनुमान तेमज बीजु कोइ पण प्रमाण कोइ स्थळे निश्चयपूर्वक अर्थनी सिद्धि करी शके नहि. श्रुति स्मृतिना साहाय्य वाळु जे कोइ अन्य प्रमाण होय ते ज खरुं प्रमाण गणाय. आ वातमां कंइ विचार करवानो नथी.

शास्त्रनुं स्वरूप स्कंदपुराणमां कह्यु छे —

ऋग्, यजुर्, साम, अथर्व, भारत, पांचरात्र, मूळरामायण एटला शास्त्र कहेवाय छे. वळी जे आने अनुकूळ होय तेने पण शास्त्र कह्युं छे. एथी अन्य ते ग्रथविस्तार कहेवाय ते शास्त्र कहेवाय नहि. ते तो कुमार्ग कहेवाय.

आरीते शास्त्रार्थ अन्यमांथी लभ्य नथी ए न्याय वडे

त्यां (शास्त्रोमां) भेदनुं प्रामाण्य ए तात्पर्य नथी पण अद्वैत एज वेदवाक्योनुं तात्पर्य छे एवा प्रकारनी अद्वैतनी प्रत्याशानो प्रतिक्षेप थयो कारण के जेम अनुमानथी ईश्वरनी सिद्धिनो अभाव छे तेम तेथी तेनी भेदनी सिद्धिनो पण अभाव छे. माटे भेद जे अनुवादक गणवामा आवे छे तेम नथी, पण वेद भेदपर छे एम समजाय छे[३६] माटेज कह्यु छे के —

जे सच्छास्त्रमात्रथी विज्ञेय छे, जे क्षर अने अक्षरथी पण अतीत छे एवा निर्दोष अने अशेष सद्गुणयुक्त नारायणने हुं सदा वंदु छुं.

त्यां शास्त्रनुं प्रामाण्य केवीरीते लेवुं ते

तत्तुसमन्वयात्

ए सूत्रथी कह्युं छे. समन्वयनां उपक्रमादि लिंग बृहत्संहितामां कह्यां छेः—

उपक्रमोपसंहार, अभ्यास, अपूर्वता, फल, अर्थवाद, उपपत्ति एलिंगथी तात्पर्यनो निर्णय थाय छे.

ए प्रकारे ब्रह्म वेदांतनुं तात्पर्य होवाथी ते शास्त्रगम्य छे एम केहवाय छे. आ स्थळे अमे मात्र दिग्दर्शन कराव्युं छे. बाकीनुं आनंदतीर्थे भाष्यव्याख्यानमांथी जोई लेवुं. ग्रन्थ बहु महोटो थई जाय ते भयथी हमे विरमीए छीए. आ रहस्य पूर्णप्रज्ञमध्यमदिर जे पोताने वायुनो तृतीय अवतार मानता तेमणे निरूपित कर्युं छे.

भगवत्कार्य साधवा माटे वायुनो प्रथम अवतार हनुमान् बीजो भीम अने त्रीजो पूर्णप्रज्ञ थयो. आ अभिप्रायने लईने जूदे जूदे स्थळे ग्रंथ समाप्तिमा आ श्लोक लखे छे.

वेदने विषे जेनां त्रण दीव्यरूप कह्यां छे, जेवुं ए प्रकारनुं अखिल महस् वेदना गर्भमां पूर्ण रीते दर्शित करवामां आव्युं छे; तथा जे वायुनो त्रीजो अवतार छे, (प्रथमावतार रामनां वचनने नमन करनार अने बीजो भीम) ते मध्वे आ ग्रन्थ विष्णुनी प्रीतिमाटे कर्यो छे.[३७]

ए पद्यनो अर्थ 'बलित्थातद्वपु'—(जे बलिष्ठताथी ईश्वरनो महिमा प्रकट थाय छे तेमाथी ते उपपन्न थाय छे) इत्यादि श्रुतिना पर्यालोचनथी समजाशे. माटे सर्व शास्त्रनुं तात्पर्य विष्णुतत्त्व सर्वोत्तम छे एम कहेवा उपर छे एम जणातां हमे जे अहीं कह्युं ते निरवद्य छे.

नकुलीशपाशुपत दर्शन.



दासत्वादि पदथी ओळखातु आ वैष्णव मत परतन्त्रतादि दु ख भरेलु होवाथी दु खनो अत इत्यादि ईप्सित पदार्थनु सा धक नथी एम धारीने अरुचि करनारा, ऐश्वर्यने इच्छनारा, 'पर उपर आधार राखनार मुक्त थता नथी परतत्रताने लीधे तथा पारमैश्वर्यथी रहित होवाने लीधे, आपणा जेवानी पेठे.' 'मुक्त आत्माओ परमेश्वरना गुणयुक्त होय छे, पुरुषत्व रहेता छतां समस्त दु खबीजनो नाश थवाने लीधे, परमेश्वरनी पेठे'. इत्यादि अनुमानने प्रमाण माननारा केटलाक माहेश्वरो परम-पुरुषार्थना साधनरूप पाच अर्थनु प्रपचन करनार पाशुपत शास्त्रनो आश्रय ले छे' आशास्त्रमां प्रथम सूत्र आप्रमाणे छे.

अथातः पशुपतेः पाशुपतयोगविधिं व्याख्यास्यामः

(अत्रथी पशुपतिना पाशुपत योगविधिनु व्याख्यान हमे करीशु.)

तेनो अर्थ आप्रमाणे छे —आसूत्रमा अथ शब्द कोइ पूर्वप्रकृतनो अपेक्षक छे पूर्वप्रकृत ते गुरु प्रति शिष्यनो प्रश्न छे गुरुस्वरूपनु गणकारिकामा आप्रमाणे निरूपण कर्युं छे —

पंचक आठ छे अने त्रण भेदयुक्त गण एक छे आ नवना समूहने जाणनार तथा तेनो अन्यने सस्कार करनार गुरु कहेवाय छे

लाभ, मल, उपाय, देश, अवस्था, विशुद्धि, दिक्षा कारिक अने वल ए आठ पचक छे अने त्रण प्रवृत्तिओ छे.

निर्धीयमान जे उपायफल ते लाभ ते ज्ञान, तप, देहनित्यत्व, स्थिति अने शुद्धिना भेदथी पाच प्रकारनो छे. हरदत्ताचार्य कहे छे के —

ज्ञान, तप, नित्यत्व, स्थिति अने पांचमी शुद्धि

आत्माश्रित दुष्टभाव ते मल. ते मिथ्याज्ञानादिना भेदथी पाच प्रकारनो छे. ते पण कह्यु छे —

मिथ्याज्ञान, अधर्म, आसक्ति, हेतुच्युति ए पांच पशुत्वनां मूल छे आतरमां ते विवेकथी त्यजवा योग्य छे

साधकनी शुद्धिनो हेतु ते उपाय, ते वासचर्यादि भेदथी पाच प्रकारनो छे ते पण कह्यु छे के —

वासचर्या, जप, ध्यान, सदा रुद्रस्मृति अने प्रतिपत्ति ए पाच लाभना उपाय निश्चित करवामां आव्या छे

जेणे करीने मनुष्य अर्थानुसधानपूर्वक ज्ञान अने तपनी वृद्धिने पामेछे ते देश, जेवा के गुरुजनादि. कह्यु छे के —

गुरुजन, गुहा, देश (अमुकस्थान), स्मशान, अने रुद्र

लाभप्राप्ति थाय त्या सुधी आ अष्ट पचकमाना एक या वधारेमा अवस्थान ते अवस्था. ते व्यक्तादि विशेषणोए करीने विशिष्ट छे. कह्यु छे के —

व्यक्ता, अव्यक्ता, जप, दान अने पांचमी निष्ठा.

मिथ्याज्ञानादिनो आत्यंतिक उच्छेद ते विशुद्धि. ते प्रतियोगीना भेदथी पांच प्रकारनी छे. कह्युं छे केः—

अज्ञाननी हानि, असंगनी हानि, संगकरनी हानि, च्युतिनी हानि अने पशुत्वनी हानि ए प्रकारे पांच प्रकारनी विशुद्धि स्मृतिमां कही छे.

दीक्षाकारिपंचकें पण कहेलुं छेः—

द्रव्य, काल, क्रिया, मूर्ति अने पांचमा गुरु.

बलपंचर्क पण आ प्रमाणे छेः—

गुरुभक्ति, प्रसाद, मतिनाद्वंद्वनो जय, धर्म अने अप्रमाद ए रीते पांच प्रकारनुं बल कहेलुं छे.

पंचमल लघुकरवाने माटे मानामानना अविरोधी अन्नप्राप्तिना उपायो ते **वृत्तिओ**[10] छे जेवांके भैक्ष्य, उत्सृष्ट अने यथालब्ध. बाकीनुं पूर्णरीते मूलमांथी जोई लेवुं.

(उपर कहेला सूत्रमां) अथ शब्द दुःखान्तनो प्रतिपादक छे, कारण के (शिष्यनो गुरुप्रतिनो प्रश्न आध्यात्मिकादि दुःखना उच्छेदने माटे छे. कार्य परतंत्र छे माटे ते पशु छे अने पति शब्दथी कारण जे ईश्वर तेनुं ग्रहण थाय छे, कारण के पत्ति, ईशिता इत्यादि शब्दथी जगत्ना कारणभूत ईश्वरनुं ग्रहण कराय छे. योग अने विधि शब्द प्रसिद्ध छे. त्यां दुःखान्त बे प्रकारनो छे. अनात्मक अने सात्मक. अनात्मक सर्व दुःखना आत्यंतिक उच्छेदरूप छे. सात्मक एटले **दृक्शक्ति** अने **क्रियाशक्तिनुं** ऐश्वर्य त्यां **दृक्शक्ति** एक छे. पण विषयना भेदे करीने ते पांच प्रकारनी छे एम औपचारिक रीते गणाय छे.[11] ते पांच प्रकार आ प्रमाण छेः—

दर्शन, श्रवण, मनन, विज्ञान अने सर्वज्ञत्वं.

त्यां सूक्ष्म,व्यवहित, विप्रकृष्ट इत्यादि सर्व पदार्थोनुं चाक्षुपस्पर्श इत्यादिथी थतुं जे ज्ञान ते **दर्शन**. समस्त पदार्थोनुं

चिंतन छे विषय जेनो एवुं जे सिद्धिज्ञान ते **मनन.** ग्रन्थ अने अर्थथी निरवशेष शास्त्रविषयक सिद्धिज्ञान ते **विज्ञान.** उक्त, अनुक्त अशेष पदार्थोनुं समासपूर्वक के विस्तारपूर्वक विशेष विभागे करीने तत्त्वव्याप्त अने सदोदित जे सिद्धिज्ञान ते **सर्वज्ञत्व.** आ प्रमाणे आ **धीशक्ति** छे. **क्रियाशक्ति** जो के एक छे तोपण औपचारिक रीते त्रण प्रकारनी गणाय छे. जेमके **मनोजवित्व, कामरूपित्व** अने **विक्रमणधर्मित्व.** त्यां निरतिशय शीघ्रताथी करवापणुं ते **मनोजवित्व.** कर्मादिनी अपेक्षा विना मात्र पोतानी इच्छावडे अनंत सलक्षण, विलक्षण के सरूप करणोने विषे अधिष्ठातृत्व ते **कामरूपित्व.** करण उपसंहृत होय तोपण निरतिशय ऐश्वर्यसंबंधित्व ते **विक्रमणधर्मित्व.** आप्रमाणे ए क्रियाशक्ति.

जे अस्वतंत्र छे ते सर्व कार्य छे. ते त्रण प्रकारनुं छे. **विद्या, कला** अने **पशु.** त्यां विद्या ए पशुनो गुण छे. ते बे प्रकारनी छे. **बोधस्वभावा** अने **अबोधस्वभावा. बोधस्वभावा विवेकप्रवृत्ति** अने **अविवेकप्रवृत्तिना** भेदथी बे प्रकारनी छे. तेमा जे विवेकप्रवृत्ति छे ते प्रमाणमात्रथी व्यक्त थई शके एवी छे, तेने चित्त कहे छे. कारण के चित्त वडे करीने सर्व प्राणी बाह्यार्थात्मक प्रकाशथी सूचित सर्व पदार्थने सामान्य रीते विवेचित के अविवेचित रूपमां अनुभवे छे. वळी **अबोधात्मकविद्या** पशु पदार्थना धर्म अथवा अधर्मथी विशिष्ट छे. अने तेथी ते स्वशास्त्र कहेवाय छे: **कला** चेतनपरतंत्र होईने अचेतन छे. ते पण बे जातनी छे. **कार्याख्या** अने **कारणाख्या.** तेमां **कार्याख्या** दश प्रकारनी छे: पृथिव्यादि पंचतत्त्व अने रूपादि पंचगुण. **कारणाख्या कला** तेर प्रकारनी छे. पाच ज्ञानेन्द्रिय, पांच कर्मेन्द्रिय, अने अध्यवसाय

अभिमान अने संकल्प ए नामनी वृत्तिओना भेदे करीने बुद्धि, अहंकार, अने मन ए रीतनां त्रण अंतःकरण.

पशुत्व संबंधी ते **पशु.** तेना पण बे प्रकार छे **सांजन** अने **निरंजन.** तेमां **सांजन** शरीरेन्द्रिय संबंधी छे अने निरंजन तद्रहित छे. तेनो प्रपंच **पंचार्थभाष्यदीपिकादि**मांथी जोई लेवो.

समस्त सृष्टि संहार अने अनुग्रह करनार ते कारण. ते एक छे तोपण गुणकर्मना भेदनी अपेक्षाए करीने तेना **पति**, साद्य इत्यादि भेद कह्या छे. त्यां **पतित्व** एटले समस्त दृक्-क्रियाशक्तिमत्त्व, ते ऐश्वर्य वडे नित्यसंबंधित्व, आद्यत्व, अनागंतुकऐश्वर्यसंबंधित्व इत्यादि आदर्शकारादि तीर्थकरोए निरूपित कर्युं छे.

चित्तद्वारा आत्मेश्वर संबंध ते **योग.** ते बे प्रकारनो छे. **क्रियालक्षण** अने **क्रियोपरमलक्षण.** तेमां जप ध्यानादि-रूप ते क्रियालक्षण. क्रियोपरमलक्षण ते संविद्, गति इत्यादिथी संज्ञित छे. धर्मार्थ साधक व्यापार ते **विधि.** ते बे प्रकारनो छे. **प्रधानभूत** अने **गुणभूत** तेमां **प्रधानभूत** छे ते साक्षात् धर्महेतु छे अने ते **चर्या** छे. ते बे प्रकारनी छे. **व्रत** अने **द्वार.** त्यां भस्मस्नान, भस्मशय्या, उपहार, जप, प्रदक्षिणा ए व्रत छे. भगवान् नकुलीशे कह्युं छे केः—

भस्मथी त्रण वार स्नान करवुं, भस्ममां शयन करवुं इत्यादि.

अहीं **उपहार** ए एक नियम छे अने तेनां छ अंग छे. सूत्रकारे कह्युं छे केः—

हास्य, गीत, नृत्य, हुडुक्कार, नमस्कार अने जप ए षडंग उपहारथी सेवा करवी जोईए.

त्यां हास्य एटले कंठ अने ओठना विस्तारपूर्वक अहहह

एम करवुं ते अट्टहास छे. गांधर्वशास्त्रना समयने अनुसरीने महेश्वरसंबंधी गुणधर्मादि निमित्तनुं चिंतन ते **गीत. नृत्य** पण नाट्यशास्त्रानुसार हस्तपादादिना आक्षेपण पूर्वक अंग, प्रत्यंग अने उपांग सहित अने भावाभाव सहित करवुं. **हुडुकार** एटले जिन्हा अने तालुना संयोगथी उत्पन्न थतो वृषनादना जेवो पवित्र नाद; ते (वृषना) हुडुग् ए शब्दनुं अनुकरण करे एवी रीते वषट्ना उच्चारनी पेठे करवो. ज्यां लौकिक मनुष्यो होय त्यां आ सर्व गुप्तरीते करवुं. बाकीनां अंग प्रसिद्ध छे.

क्राथन, स्पन्दन, मन्दन, शृंगारण अवितत्करण अने **अवितद्भाषण** ए द्वार छे. त्यां उंघ्या वगर उघेलाना जेवां चिन्ह देखाडवा ते **क्राथन.** शरीरमां वा आव्यो होय ते रीते शरीरने कंपाववुं ते **स्पन्दन.** पग भागी गयो होय एम चालवुं ते **मंदन.** रूप अने यौवनसंपन्न कामिनीने जोईने पोताने कामुक होय तेम विलास वडे देखाडवुं ते **शृंगारण.** कार्य अकार्यनो विवेक न होय तेम लोकनिंदित कर्म करवां ते **अवितत्करण** अने अर्थ रहित अने परस्पर विरुद्ध एवुं भाषण करवुं ते **अवितद्भाषण.**

भिक्षान्न अने उच्छिष्टादिथी थएली अयोग्यतानो प्रत्यय दूर करवा माटे पवित्र थवाने अनुस्नादि करवुं ते गुणभूत चर्या छे. सूत्रकारे कह्युं छे केः—

'अनुस्नानथी निर्माल्य (पवित्रता)नां चिन्ह धारण करनार' इत्यादि.

त्यां (सर्वज्ञत्वना लक्षणमां) समासे एटले धर्मिमात्रनुं अभिधान ते प्रथम सूत्रमां कहेवामां आव्युं छे. पांच पदार्थोनुं प्रमाण पूर्वक पंचाभिधान ते विस्तर. ते राशीकर भाष्य-

मांथी जोई लेवुं. तेओनुं यथासंभव लक्षणथी संकर न थाय तेम अभिधान करवुं ते विभाग, ते विहित शास्त्रान्तरमांथी जोई लेवो. आ (पदार्थो)नुं गुणातिशयपूर्वक कथन ते विशेष. जेमके बीजां (सांख्यादि शास्त्रो) मां दुःखनी निवृत्ति तेज दुःखान्त, आ शास्त्रमां पारमैश्वर्यप्राप्ति ते दुःखान्त. बीजां शास्त्रोमां जे थयुं अने जे थशे ते कार्य, आ शास्त्रमां पश्वादि (जीव वगेरे) जे नित्य छे ते कार्य. बीजां शास्त्रोमां कारण सापेक्ष छे, अहीं ते निरपेक्ष भगवान् छे. बीजां शास्त्रोमां कैवल्यादि फलने माटे योग करवानो छे, आ शास्त्रमां पारमैश्वर्यप्राप्ति अने दुःखनो अंत ए छे फल जेनां ते योग छे. बीजां शास्त्रोमां पुनरावृत्ति अने स्वर्गादि छे, पण अहीं पुनरावृत्ति रहित सामीप्यादि फल वाळां स्वर्गादि छे.

पूर्वपक्षीः—एतो एक महोटा आश्चर्यनी वात छे के परमेश्वर ए निरपेक्षक कारण छे, कारण के एम मानतां कर्मवैफल्य अने सर्व कार्यनी एक ज वखते सरखीरीते उत्पत्ति ए बे दोष आवे छे.

सिद्धान्तीः—एम मानवुं नहि, कारण के ए बे (कर्म अने ईश्वर) व्यधिकरण छे. जो निरपेक्ष भगवान् कारण होय अने तेथी कर्मनुं वैफल्यथाय तो तेमां शुं थयुं ? कहो के प्रयोजननो अभाव तो हमे पूछीशुं के कोना प्रयोजननो अभाव ? कर्मवैफल्यमां कारण कर्मनुं के भगवत्नुं ? जो कर्मनुं कहो तो ते घटतुं नथी, कारण के ईश्वरेच्छाथी अनुगृहीत कर्म ते सफल थाय छे, ययाति वगेरेनां कर्मनी पेठे. अने कोइ कोइ वार ईश्वरेच्छाथी अनुगृहीत नहि ते निष्फल थाय छे. आथी कांइ एम सिद्ध नहि करी शकाय के कर्ममां लोकोनी प्रवृत्ति न थाय, कारण के कृषिनां फल अनित्य छे तोपण त्यां प्रवृत्ति थाय छे तेम अहीं पण थवी संभवित छे. वळी ईश्वरेच्छाने आधारे पशुनी प्रवृत्ति छे. जो कर्मना वैफल्यमां कारण भगवत्नुं होय

तो ते पण घटतुं नथी, कारण के परमेश्वर पर्याप्तकाम छे अने तेथी कर्मसाध्य प्रयोजननी अपेक्षानो अभाव रहे छे. सर्व कार्यनी एक ज वखते सरखी रीते उत्पत्ति थवानो जे दोष कह्यो ते पण अयुक्त छे. अचिंत्य शक्तिवाळा परमेश्वरनी इच्छाने अनुसार चालनारी अव्याहत क्रिया शक्ति कार्य करनारी छे एम हमारो सिद्धांत छे.[२०]

संप्रदाय जाणनाराओए कह्युं छे के:—

ते कर्मादि निरपेक्ष छे, स्वेच्छाचारी छे, माटे शास्त्रमां तेने सर्व कारणनुं कारण एम कहेवामां आवे छे.

पूर्वपक्षी:—परंतु बीजां दर्शनोमां पण ईश्वरना ज्ञानथी मोक्ष तो मळे छे ज, तो आ दर्शननो विशेष क्यांथी[२१]?

सिद्धान्ती:—जो एम कहो तो हमे कहीशुं के एम बोलशो नहि, कारण के नीचेना विकल्पनुं समाधान थई शकशे नहि. शुं ईश्वरविषयक ज्ञान ते ज निर्वाणनुं कारण छे के ईश्वरनो साक्षात्कार कारण छे के यथावत् तत्त्वनो निश्चय कारण छे? प्रथम पक्षनो स्वीकार कराशे नहि, कारण के शास्त्र वगर पण साधारण माणसनी पेठे देवोनो अधिपति महादेव छे एटलुं ज्ञान थतां मोक्षनी सिद्धि थाय तो शास्त्राभ्यास निष्फल थशे. बीजो पक्षपण लेवाशे नहि, कारण के अनेक मलना समूहमां वींटाइ रहेला अंध पशुने साक्षात्कार थाय ते संभवतुं ज नथी. त्रीजा पक्षमां हमारे इष्टापत्ति छे, कारण के पाशुपत शास्त्र वगर यथावत् तत्त्वनिश्चय उपपन्न ज नथी.[२२] आचार्य कहे छे के:—

ज्ञानमात्रथी यथाशास्त्र साक्षात् दृष्टि दुर्लभ छे. पंचार्थथी बीजी रीते यथावत् तत्त्वनो निश्चय थतो नथी.

माटे पुरुषार्थनी इच्छा करनारा उत्तम पुरुषोए पंचार्थ प्रतिपादन करनार पाशुपतशास्त्रनो आश्रय लेवो.

शैव दर्शन.

कर्मादिनिरपेक्षक परमेश्वर कारण छे ए नकुलीशनो पक्ष वैषम्य अने नैर्घृण्य दोषथी दूषित होवाथी तेनो प्रतिक्षेप करता केटलाक माहेश्वरमतना अनुयायीओ शैवागम सिद्धान्तना तत्त्वने यथावत् मानीने बीजो पक्ष स्वीकारे छे. आ पक्षमां कर्मादिसापेक्ष परमेश्वर कारण छे एम स्वीकारवामा आवे छे, अने पशु, पति, अने पाशना भेदथी त्रण पदार्थ मानवामा आवे छे ते तत्रना तत्त्वने जाणनाराओ आप्रमाणे कहे छे:—

जगत्ना गुरु त्रिपदार्थ अने चतुष्पाद महातंत्रने एक सूत्रे करीने संक्षेपथी कहीने पछी विस्तारथी कहे छे.

आनो अर्थ आप्रमाणे छे:—जेमा त्रण पदार्थ कह्याछे ते त्रिपदार्थ. विद्या, क्रिया, योग, अने चर्या ए चार छे पाद जेमां ते चतुष्पाद कहेवाय. एवुं त्रिपदार्थ अने चतुष्पाद महातंत्र छे. त्यां पशु अस्वतंत्र होवाथी अने पाश अचेतन होवाथी ते बेथी विलक्षण पतिनो उद्देश प्रथम कर्यो छे. (पतिनी साथे) पशुना चेतनत्वनुं साधर्म्य होवाथी ते पछी तेनो उद्देश छे. अने बाकी (रहेला) पाशनो उद्देश ते पछी

छे; आप्रमाणे क्रमनो नियम छे. दीक्षा परमपुरुषार्थनो हेतु छे अने ते पशु, पाश, अने ईश्वरना स्वरूपना निर्णयनु साधन छे. अने ते मंत्र अने मंत्रेश्वरना माहात्म्यनो निश्चय करावनार ज्ञान वगर निष्पन्न थवाने अशक्य छे माटे ज्ञाननु बोधक जे विद्यापाद तेने प्रथम मूकवामा आव्यु छे. अनेक प्रकारना अंगसहित दीक्षाविधिनु प्रदर्शक जे क्रियापाद ते पछी आवे छे. योग वगर अभिमतनी प्राप्ति थती नथी माटे साग योगनु ज्ञान करावनार योगपाद तेनी पछी छे. विहितनु आचरण अने निषिद्धनो त्याग ए रूप चर्या वगर योगनो पण निर्वाह थतो नथी माटे तेनु प्रतिपादन करनार चर्यापाद छेल्लु आवे छे. एप्रमाणे पादक्रमनो निवेक छे. त्या पतिपदार्थ शिवने मानवामा आवे छे. जो के विद्येश्वरादि मुक्तात्माओमा शिवत्व छे तो पण परमेश्वर प्रति तेओनु पारतंत्र्य होवाथी तेओमा स्वातंत्र्य नथी अने तेमनु अनुकरण करनार भुवनादि भाव संनिवेशविशिष्ट होवाथी तेओ कार्यरूप छे एम बोध थाय छे. अने ते कार्य छे माटे ते बुद्धिमान् कर्तानी अपेक्षापूर्वक छे एम अनुमान थाय छे. अने ए अनुमानथी परमेश्वरनी प्रसिद्धि उपपन्न ठरेछे[3]

पूर्वपक्षी —पण प्रथमतो देहनु ज कार्यत्व असिद्ध छे, कोइए कोइवार कोइ ठेकाणे पण देहने करातो जोयो नथी.

सिद्धान्ती —देहने करातो कोइए जोयो नथी एथी कर्ता नथी एम कहेवु योग्य नथी, कारणके अनुमानथी कर्ता समजाय छे. देहादि कार्य गणी शकाय तेम छे, कारण के ते संनिवेशविशिष्ट छे अथवा विनश्वर छे, घटादिनी पेठे. अने ते कार्य छे तेथी ते बुद्धिमान् कर्त्तानी अपेक्षापूर्वक छे एम अनुमान पण सारी रीते थई शके छे[4]. ते आप्रमाणे —

देहादिक सकर्तृक छे, कार्य होवाथी, घटनी पेठे. जेने जेने उक्त साधन छे (जे जे कार्य छे) तेने तेने उक्त साध्य छे (ते ते सकर्तृक छे.) जे एम नथी ते एम पण नथी, जेमके आत्मादि. परमेश्वरना अनुमानना प्रामाण्यने सिद्ध करनार अनुमान अन्यस्थळे (पूर्णप्रज्ञदर्शनमां) कराव्युं छे माटे आस्थळे हमे वधारे विस्तार करतां विरमीए छीए.

'आअज्ञानी जंतु (जीव) जे पोताना सुखदुःखनो धणी नथी ते मात्र ईश्वरनी प्रेरणाथी स्वर्गमा जाय छे के नरकमां जाय छे' ए न्यायथी प्राणिकृत कर्मनी अपेक्षाए करीने परमेश्वरनुं कर्तृत्व उपपन्न छे. करणनी अपेक्षा छे माटे कर्तानां स्वातंत्र्यनो नाश थाय छे एम काइ कहेवाय नहिं, कारण के स्वातंत्र्यहानि जणाती नथी. जेमके कोशाध्यक्षनी अपेक्षा करनार राजा प्रसादादिथी दान करनारा स्वतंत्र नथी एम न कहेवाय. सिद्धगुरुए कह्युं छे के.—

स्वतंत्र कर्तानुं अप्रयोज्यत्व अने करणादिनी प्रयोक्तता ए ज कर्तानुं स्वातंत्र्य छे. कांइ कर्मादिनी अनपेक्षा ए स्वातंत्र्य नथी.

ए प्रमाणे ते ते कर्मना आशय प्रमाणे भोग, तेनां साधन अने तेनुं उपादान इत्यादिने विशेषे करीने जाणनार कर्ता अनुमानादिथी सिद्ध छे, एम सिद्ध थयु. भगवान् बृहस्पति कहे छे के:—

जे अहीं भोग्य, भोगसाधन, तेनुं उपादान, इत्यादिने विशेषे करीने जाणे छे ते पुरुषना कर्म आशय अने विपाकने जाणनार (परमेश्वर) वगर आ थयुं नथी.

बीजे ठेकाणे पण कह्युं छे के.—

जेम आपणे घटादि पदार्थने बुद्धिमान् कर्तावाळा मानीए छीए तेम आसर्व (विश्व) के जे आपणा विवादनो

विषय छे ते बुद्धिमान् कर्तावाळुं होवुं जोईए, कारण के ते कार्य छे.

ईश्वर सर्वात्मक छे माटे ते सर्वज्ञ छे एम पण सिद्ध थाय छे, कारण के जे अज्ञ छे ते करे एवात असंभवित छे.

श्रीमृगेन्द्रकहे छे के —

ईश्वर सर्वज्ञ छे कारण के साधन, अंग, अने फल वडे ते सर्वनो कर्ता छे. जे जे जाणे छे ते ते करे छे ए वात निर्विवाद छे.

- पूर्वपक्षी —भले त्यारे ईश्वरने स्वतंत्र कर्ता मानो. पण ते सशरीर ठरे छे' हवे आपणे जोईए छीए के घटादि कार्यनो कर्ता शरीरवाळो कुलालादि होय छे अने ईश्वरने शरीरी मानीए तो आपणी पेठे ते क्लेशयुक्त अने असर्वज्ञ थई परिमितशक्तिवाळो थाय.

सिद्धान्ती —आवी शका कोइ करे तो तेने हमे कहीशु के एम मानवु नहि, कारण के अशरीर आत्मा पोताना शरीरने हलावना वगेरेमा कर्तारूपे जोवामा आवे छे. जो शरीरवान् लईए तोपण भगवान्ने पाछळ कहेला दोष वळगता नथी. मल्कर्मादि पाशजालनो असभव होवाथी परमेश्वरने प्राकृत शरीर होतु नथी. पण शाक्तशरीर होय छे कारण के शक्तिरूप ईशानादि पाच मंत्र वडे मस्तकादिनी कल्पना करवामा 'ईशान' ते ईश्वरनु मस्तक छे' 'तत्पुरुष' मुख छे, 'अघोर' हृदय छे, 'वामदेव' गुह्य छे अने 'सद्योजात' पग छे ए प्रसिद्ध श्रुति उपरथी जोता अनुक्रमे अनुग्रह, तिरोभाव, आदान, स्थिति अने उद्भव ए पाच कृत्य छे कारण जेना एवो तेनो देह स्वेच्छानिर्मित छे—आपणा शरीर जेवो नथी." श्रीमन्मृगेन्द्रे कह्युं छे के.—

मलादिना असंभवथी प्रभुनुं शरीर शाक्त छे आवुं (आपणा शरीर जेवुं) नथी.

अन्यत्र पण कह्युं छे के:—

तेनुं शरीर पंचकृत्यने माटे उपयोगी एवा ईशान, तत्पुरुष, अघोर, वामदेवादि पंचमंत्र वडे मस्तकादि वाळुं छे.

जो कहो के शिव पंचवक्त्र छे अने पंदर नेत्र वाळा छे एम मुख्यत्वे करीने तेनो शरीरइंद्रिययोग सांभळवामां आवे छे तो हमे कहीशुं के ते खरुं छे, कारण के निराकारनां ध्यानपूजादि असंभवित छे अने तेथी भक्त उपर अनुग्रह करवाने ते जूदा जूदा आकारनुं ग्रहण करे छे एम लेतां कंइ विरोध आवतो नथी. श्रीमत्पौष्करमां कह्युं छे के.—

साधकनी रक्षाने माटे तेनुं आ रूप स्मृतिओमां छे.

अन्यत्र पण

अनाकार वस्तुने बुद्धि ग्रहण करी शकती नथी (माटे) आपने आकारवान् लई उपासना करवी जोईए.

नित्य छे उदय जेनो एवा शिवनां पांच प्रकारनां कृत्य पण भोजराजाए सविस्तर वर्ण्यां छे:—

ते कृत्य पांच प्रकारनां छे; सृष्टि, स्थिति, संहार, तिरोभाव अने अनुग्रहकरण.[1]

आ पंचकृत्यने शुद्धाध्वमां साक्षात् शिवकर्तृक मान्यां छे, अने कृच्छ्राध्वमां अनंतादि द्वारा मान्यां छे. श्रीमत्करणमां कह्युं छे के:—

शुद्ध मार्गमां शिव साक्षात् कर्ता कहेला छे. परंतु जे शास्त्र प्रभुनुं अहित छे तेमां अनंतने कर्ता कहेलो छे.[2]

एप्रमाणे शिव शब्दे करीने जे मंत्रेश्वरो महेश्वरो अने मुक्तात्मपुरुषो शिवत्वने पाम्या छे तेओनो तथा वाचकनो (गुरु)

नो अने शिवत्वनी प्राप्तिना साधन जे दीक्षादिउपायसमूह तेनो पति पदार्थमां सग्रह कर्यो छे एम जाणवु. ए प्रकारे पति पदार्थनु निरूपण कर्यु.

हवे पशु पदार्थनु निरूपण करीए छीए.

अनणु, क्षेत्रज्ञ इत्यादि सज्ञाथी ओळखातो जीवात्मा ते पशु. चार्वाकादिना मतप्रमाणे देहादिरूप जीव ते नहि, कारणके 'एकनु जोएलु बीजाने साभरतू नथी' ए न्यायथी चार्वाक मतनो जीव लेता प्रतिसधान (स्मृति) उपपन्न थतु नथी[१४] तेम ज नैयायिकादिनी पेठे जीवने मनथी प्रकाश्य पण मानवामा आवतो नथी, कारणके तेम करता अनवस्था दोष आवे छे[१५] कहु छे के, —

आत्मा जो मेय होय तो तेनो माता बीजो होवो जोईए जो आ बीजो दृश्य होय तो तेनो द्रष्टा कोइ त्रीजो थवो जोईए.

तेम ज जैननी पेठे आत्माने हमे अव्यापक अने बौद्धनी पेठे क्षणिक पण मानता नथी, कारण के ते देशकालादिथी अनवच्छिन्न छे[१६] कहु छे के —

जे देश अने कालथी अनवच्छिन्न सद्भाववाळी वस्तु ते नित्य अने विभु मनाय छे माटे आत्मा नित्य अने विभु ठरे छे.

अद्वैतवादीओनी पेठे हमे आत्मा एक पण मानता नथी, कारण के पुरुषबहुत्वना ज्ञापक भोगप्रतिनियमनो सभव छे[१७] ते साख्यवाळानी पेठे अकर्ता पण मानवामा आवतो नथी, कारण के पाशजाळने दूर करवामां आवे छे त्यारे नित्य अने निरतिशय दृक्क्रियारूप चैतन्यात्मक शिवत्वनी प्राप्ति थाय छे एम श्रुति छे[१८]

श्रीमन्मृगेन्द्रमां कह्युं छे के —

पाशनो अंत आवतां शिवत्व मळे छे एम श्रुति छे तेथी—.

वळी,

दृक्क्रियानुं जे रूप ते चैतन्य छे अने ते (चैतन्य) पोतामां सर्वदा छे, कारण के मुक्ति वखते श्रुति तेने सर्वतोमुख कहे छे

तत्त्वप्रकाशमां पण कह्यु छे के —

जो के मुक्त जीवो शिव छे तोपण ते तेना प्रसादथी मुक्त थया छे ते अनादि मुक्त, एक, अने पचमन्त्र छे शरीर जेनुं एवो छे

पशु त्रण प्रकारनो छे विज्ञानाकल, प्रलयाकल अने सकल. त्यां विज्ञान, योग, अने सन्यास वडे अथवा भोगे करीने कर्मनो क्षय थता जेना कर्म निर्मूल थया छे तेना पदार्थमा कलादि भोगबन्धनो अभाव होवाथी ते केवल मल मात्रथी युक्त होय छे, अने आ प्रथम प्रकारना पुरुषो विज्ञानाकल कहेवाय छे. प्रलयथी कलादिनो उपसंहार थवाथी जे बीजा प्रकारना पशु मलकर्मयुक्त होय छे ते प्रलयाकल कहेवाय छे. जे त्रीजा प्रकारनो पशु मल, माया, कर्मात्मक त्रण बंध युक्त होय छे ते सकल कहेवाय छे. तेमां प्रथमना बे भेद छे समाप्तकलुष अने असमाप्तकलुष त्यां प्रथमना पशुओ के जेओना कालुष्यनो परिपाक थयो छे, जे उत्तम पुरुषो छे अने जे अधिकारने योग्य छे तेओनो अनुग्रह करीने शिव तेने अनन्तादि विद्येश्वरना अष्टपदने पहोंचाडे छे. ते आठ प्रकारना विद्येश्वरनो बहुदैवत्यमां निर्देश करेलो छे.—

अनंत, सूक्ष्म, शिवोत्तम, एकनेत्र, एकरुद्र, त्रिमूर्तिक श्रीकंठ अने शिखंडी ए आठ विद्येश्वर छे.

बीजा प्रकारना (असमाप्तकलुष) पशुओने शिव अनुग्रह करीने सप्तकोटिसख्यात मत्रने पहोचाडे छे. तत्त्वप्रकाशमा कह्यु छे के —

पशु त्रण प्रकारना छे विज्ञानकेवल, प्रलयकेवल अने सकल

प्रथम प्रकारना पशु मलयुक्त छे. बीजा मलकर्मयुक्त छे, अने सकल मलमाया अने कर्मयुक्त छे. तेमा प्रथम प्रकारना बे भेद छे. समाप्तकलुष अने असमाप्तकलुष. प्रथमनाओनो अनुग्रह करीने शिव तेने आठ प्रकारना विद्येश्वरोना पदने पमाडे छे. बीजा प्रकारनाओने ते सप्तकोटि मत्रने पमाडे छे. सोमशभु पण कहे छे के —

एक (पशु) विज्ञानाकल छे, बीजो प्रलयाकल छे, अने त्रीजो सकल छे आ त्रण वर्गने शास्त्र अनुग्राह्य माने छे तेमां प्रथम प्रकारना पशु मात्र मलथी युक्त छे बीजा प्रकारना मल अने कर्म थी युक्त छे अने सकल कलाथी ते पृथ्वी सुधीनां तत्त्वथी युक्त छे.

प्रलयाकल पशु पण बे प्रकारना छे (१) जेना बन्ने पाश पक्व थया छे एवा अने (२) तेथी विलक्षण. तेमा प्रथम प्रकारना मोक्षने पामे छे; बीजा पुर्यष्टक (आठ शरीर) थी युक्त होईने कर्मना योगथी नानाविध जन्मने पामे छे. तत्त्वप्रकाशमा कह्यु छे के —

प्रलयाकल पशुओमां जेओनां मल अने कर्म अपक्व छे ते पुर्यष्टकथी युक्त होई कर्मवलथी अखिल योनिओमां भ्रमण करे छे.

पुर्यष्टकनो निर्देश पण त्या ज कर्यो छे —

अंत.करण,धीकर्म,अने करण ए पुर्यष्टक कहेवाय छे

अघोरशिवाचार्य आ प्रमाणे उपरना वाक्यनुं विवरण करे छेः—

पुर्यष्टक एटले प्रतिपुरुषने विषे नियत, सर्गथी आरंभी कल्पांत के मोक्ष सुधी स्थित, पृथ्वीथी लई कला सुधीनां त्रीश तत्त्वोनो बनेलो सूक्ष्म देह. तत्त्वसंग्रहमां पण कह्युं छे केः—

पृथ्वीथी आरंभी कला सुधीनो प्रतिपुरुषने विषे नियत एवो तत्त्वगण कर्मना योगथी सर्व भुवनज देहोमां पर्यटन करे छे.

आ सर्गनो अर्थ आ प्रमाणे थाय छे. मन, बुद्धि, अहंकार अने चित्त ए अंतःकरण शब्दे करीने पुरुषोनी भोगक्रियाना अंतरंग जेवां के कला, काळ, नियति विद्या, राग, प्रकृति अने गुण ए सात तत्त्वोनी लक्षणा थाय छे. धीकर्म शब्दे करीने पांच ज्ञेयभूत तेनां कारण अने तन्मात्रानी विवक्षा थाय छे. करण शब्दे करीने ज्ञानेन्द्रिय अने कर्मेन्द्रिय ए दशनुं ग्रहण थाय छे.

पूर्वपक्षीः—पण श्रीमत्कालोत्तरमां कह्युं छे केः—

शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध ए पांच, अने बुद्धि मन अने अहंकार ए आठते पुर्यष्टक छे.

तो तेनाथी आ अन्यथा केम ?

सिद्धान्तीः—एम पूछनारने हमे कहींए छीए के ए बरोबर छे अने भगवान् रामकंठे ए सूत्रनुं अक्षरशः व्याख्यान कर्युं छे माटे हमे वधारे विस्तार करता नथी. परंतु तमारी रीते लेतां ते पुर्यष्टक शी रीते कहेवाय एम जो तमे कहो तो हमे कहीशुं के भूत, तन्मात्रा, बुद्धि-इन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय अने अंतःकरण ए संज्ञावाळा पांच वर्ग, तेनां कारण, प्रधानतत्त्व अने कलादि पांचनो वर्ग एवी ते आरब्ध

होवाथी पुर्यष्टक कहेवाय छे एम कहेतां कांइ विरोध आवतो नथी. तेमांना पुर्यष्टकयुक्त विशिष्टपुण्यसंपन्न केटलाक पशुना उपर अनुग्रह करीने अनंत भगवान् तेमने आ लोकमां भुवनपतित्व आपे छे. कह्युं छे के:—

केटलाक उपर अनुग्रह करीने महेश्वर तेओने भुवनपतित्व आपे छे.

सकल पशुवर्ग पण बे प्रकारनो छे; पक्वकलुष अने अपक्वकलुष. तेमांना प्रथमने परमेश्वर तेओनां कलुष जेम जेम पक्व थाय ते प्रमाणे तदनुसार शक्तिपात वडे मंडळी आदि एकसो अढार मंत्रेश्वर पदने पमाडे छे. कह्युं छे के:—

दिवस छे मुख जेनुं एवा कालने विषे कलादिना योगथी शेष (पशुओ) सकल कहेवाय छे.

स्वयं (महेश्वर) तेओमाना एकसो अढारने मंत्रेश्वर करे छे. तेमांना आठ मंडलिन् कहेवाय छे. आठ क्रोध इत्यादि नामथी ओळखाय छे ते तथा वीरेश, श्रीकंठ अने सो रुद्र ए . प्रकारे एकसो अढार थाय छे.

वळी आचार्यमूर्ति परमेश्वर तेओना परिपाकना आधिक्यना निरोधे करीने अने शक्तिनो उपसंहार करीने दीक्षा आपी तेओने मोक्ष आपे छे. कह्युं छे के:—

जेओनो मल परिपक्व थयो छे तेओनामां उत्सादन (मदादी देवानी) शक्तिपात वडे परमेश्वर आचार्यमूर्ति थई तेओने दीक्षा वडे परतत्त्वमां योजे छे.

श्रीमन्मृगेन्द्रमा पण कह्युं छे के.—

ते अणुना पूर्वमां व्यत्यय करनार पाशजालने कापी नाखे छे.[२२]

नारायणकंठे तेनुं विवेचन कर्युं छे ते सर्व तेमांथी जोई लेवुं. विस्तारना भयथी हमे ते लखता नथी.

जेओना कलुप अपक छे एवा बद्ध अनणुओने परमेश्वर कर्मवशात् भोग भोगवता करे छे. कह्यु छे के —

बीजा बाकी रहेला बद्ध पुरुषोने ते पोताना कर्म प्रमाणे भोग भोगववा माटे नियोजे छे. आप्रमाणे पशुनु वर्णन कर्युं.

हवे पाश पदार्थ विषे कहेवामा आवे छे.

पाश चार प्रकारना छे. मलशक्ति, कर्मशक्ति, मायाशक्ति, अने रोधशक्ति[23] कोइ कहेशे के शैवागममा 'पति पशु अने पाश ए रीते क्रमवार त्रण पदार्थ मुख्य छे. त्या पति शिव छे, पशु अणु जीवो छे अने पाच अर्थ ते पाश छे' एम पाच प्रकारना पाश कह्या छे तो तमे चार शी रीते कहोछो ? तो तेना प्रत्युत्तरमा हमे कहीए छीए के मायात्मा शिवतत्त्ववेदनीय बिंदु जो के शिवपद प्राप्तिरूप परम मुक्तिनी अपेक्षाए करीने पाशरूपे गणाय छे, तो पण तेनो योग विद्येश्वरादि पदप्राप्तिनो हेतु होवाथी ते अपर मुक्ति छे अने तेथी तेने पाशरूपे गणता नथी, ए रीते निरोधनो परिहार थाय छे[24] माटे ज तत्त्व प्रकाशमा कह्यु छे के —

पाश चार प्रकारना छे.

श्रीमन्मृगेन्द्रमा पण कह्युं छे के —

प्रावृतीश (मल), बल (रोध), कर्म; अने मायाकार्य ए चारनो ***पाशजाल समग्र लेतां धर्म शब्दथी व्यवहाराय छे***

एनो अर्थ आ प्रमाणे छे —

जे आत्मानी दृक्रियाने प्रावरण करे छे अर्थात् प्रकर्षे करीने आवरण—आच्छादन करे छे ते प्रावृति एटले स्वाभाविक अशुचि जे मल ते, स्वतन्त्रताथी जे ईशिता छे ते ईश. प्रावृति एवो जे ईश ते प्रावृतीश[25] कह्यु छे के —

जे एक छे, जे अनेक शक्ति छे, जे जीवनी दृक्-

क्रियानुं आच्छादन करे छे ते मल छे; ते चोखा उपरना छाला जेवो के त्रांबा उपरना काट जेवो छे.

बल[२६] एटले रोधशक्ति. आ शिव शक्ति पाशना अधिष्ठाने करीने पुरुषनुं तिरोधान करे छे, माटे लाक्षणिक रीते ते पाश कहेवाय छे. कह्युं छे केः—

सर्वनो अनुग्रह करनारी हुं शिवा तेओमां मुख्य शक्ति छुं. धर्म प्रमाणे हुं अनुवर्तन करुं छुं माटे मने पाश एम औपचारिक रीते कहे छे.

जे फलार्थी पुरुषोथी कराय छे ते कर्म.[२७] ते धर्म अने अधर्मरूप बीज अने अंकुरनी पेठे प्रवाहरूपे अनादि छे. श्रीमत् किरणमां कह्युं छे केः—

जेम मल अनादि छे तेम तेनां अल्प कर्म पण अनादि छे जो तेने अनादि सिद्ध करवामां आव्युं छे तो त्यां कयो हेतु वैचित्र्य उत्पन्न करे?

जेने विषे सर्व जगत् शक्त्यात्मा वडे प्रलय वखते समाई जाय छे (माति) तथा उत्पत्ति वखते जेमांथी ते व्यक्तिने पामे छे (याति) ते मायी. श्रीमत् सौरभेयमां कह्युं छे के—

महाप्रलय वखते सर्व कार्य शक्तिरूपे तेनामां लीन थई जाय छे तथा सृष्टि वखते फलादि कार्य करीने व्यक्तिने पामे छे (ते माया).

जो के आना संबंधमां बहु कहेवानुं छे तोपण ग्रन्थ बहु मोटो थई जाय माटे हमे विरमीए छीए.

आ प्रकारे पति, पशु अने पाश ए त्रण पदार्थनुं प्रदर्शन नीचेना श्लोकथी कराव्युं छे.

पति, विद्या, अविद्या, पशु, पाश अने तेनी निवृत्तिनुं कारण ए छ पदार्थ टुंकामां कह्या छे[२८]

प्रकारान्तर ज्ञानरत्नावली वगेरे ग्रन्थोमां कह्यो छे, तेमांथी सर्व जोई लेवुं. एम आ सर्व सुश्लिष्ट छे.

प्रत्यभिज्ञदर्शन.

उपरना शैवमतमां अपेक्षारहित जडने (पशुना बंधमोक्षनुं) कारण मानवुं ते दोष छे एम कही तेथी संतुष्ट नहि थनारा, बीजा कोइ मतनुं अन्वेषण करनारा, परमेश्वरनी इच्छामात्रथी जगत् थयुं छे एम बोलनारा 'स्वसंवेदन, उपपत्ति अने आगमथी सिद्ध प्रत्यगात्मा साथे तादात्म्यवाळो, नाना प्रकारना मान मेयादिनी एकी वखते भिन्न अने अभिन्न, अनन्य द्वाराएथी जोनारूप स्वतंत्रतावाळो परमेश्वर स्वात्मार्पणने विषे प्रतिबिंबनी पेठे सर्वभावने अवभासित करे छे' ' एम बोलनारा, बाह्य अने आभ्यंतर चर्या प्राणायाम इत्यादि—क्लेश अने प्रयासना अंश वगर पण सर्वने सुलभ अने अभिनव प्रत्यभिज्ञामात्रने पर अने अपर सिद्धिनो उपाय माननारा बीजा केटलाक माहेश्वरो प्रत्यभिज्ञा शास्त्रनो अभ्यास करे छे. आ शास्त्रनी इयत्ता पण परीक्षकोए निरूपित करी छे.

सूत्र, वृत्ति, विवृत्ति, लघ्वी विमर्शिनी अने गुर्वी विमर्शिनी बे टीकाओ, प्रकरणपंचक अने निरूपणपंचक ए प्रत्यभिज्ञाना शास्त्र छे.

त्या प्रथम सूत्र आ प्रमाणे छे.

कोई पण प्रकारे महेश्वरना दासत्वनुं आसादन करीने अने मनुष्य उपर पण उपकार करवो इच्छीने समस्तसंपत्प्राप्तिहेतु जे महेश्वरनी प्रत्यभिज्ञा तेनुं उपादान करूं छुं.

कोइ पण प्रकारे एटले ईश्वरथी घटित थएला, ईश्वरथी अभिन्न एवा गुरुना चरणकमलयुगलनी आराधना वडे.

आसादन करीने एटले चोतरफ परिपूर्णता वडे निरर्गल स्वात्मोपभोग्यता प्रति आणीने[२]. आ प्रमाणे प्राप्तव्यने प्राप्त करीने पारकाने माटे शास्त्र करवामां पोतानो अधिकार दर्शाव्यो, अन्यथा ए सर्व ठगाई गणाय. मायाने उतरी गएला तोपण महामायाथी अधिकृत थएला विष्णुब्रह्मादि देवलोको जेना ऐश्वर्यना अंश मात्रथी ईश्वर थया ते अनवच्छिन्नप्रकाश अने आनन्दवाळो अने स्वतंत्र परम पदार्थ ते महेश्वर. जेने स्वामी वडे सर्व यथेच्छ अपाय छे (दीयते) अर्थात् जे परमेश्वर स्वरूपनी स्वतंत्रतानु पात्र छे ते दास, दासनो भाव ते दासत्व. मनुष्य शब्द वडे अधिकारी अने विषयना नियमनो अभाव बताव्यो. जेना जेना प्रति आ स्वरूपनु कथन थाय तेने तेने महाफळ मळे छे कारण के प्रधाननु फल ज परमार्थ छे[२]. शिवदृष्टिमां परमगुरु भगवान् सोमानन्दनाथ ते ज प्रमाणे उपदेश करे छे —

प्रमाणथी, शास्त्रथी के गुरुवाक्यथी एक वार सर्ववस्तुगत शिवतत्त्वनु दृढ प्रतिपत्तिपूर्वक ज्ञान थयुं एटले पछी कांइ साधन के भावना करवानी रहेती नथी-सुवर्ण (शिवत्व) जणाय एटले साधन के भावनानो परित्याग करवो

पण शब्द पोते महेश्वरथी अभिन्न छे एम सूचवता पोताना पूर्णत्वने लीधे पारकाना अर्थनी सिद्धि सिवाय अन्य

प्रयोजनना अवकाशने निराकृत करे छे[४]. परार्थ पण प्रयोजन थाय छे ज, कारण के प्रयोजननुं लक्षण एवुं छे. एवो काई ईश्वरनो शाप नथी के प्रयोजन मात्र स्वार्थमां होय परार्थमां न होय. आ माटे ज भगवान् गौतम पण कहे छे के—

अर्थने अधिकृत करीने (आगळ मूकीने) (पुरुष) जे प्रवृत्ति करे छे ते प्रयोजन.[५]

(उपपादन करवामां) उप शब्द सामीप्यवाचक छे. तेथी मनुष्यनुं परमेश्वरसमीपताकरण मात्र फल छे अने तेथी ज समस्त निगेरे पद छे,[६] कारण के परमेश्वरतानो लाभ थयो एटले जे सर्व संपत्ति तेमांथी उद्भवे छे ते मळी चूकी, जेमके रोहणाचलना लाभथी सर्व रत्नसंपत्ति मळे छे ज, ए रीते परमेश्वरतानो लाभ थता बीजुं शुं मागवा योग्य रहे छे ? उत्पलाचार्य कहे छे के.—

भक्ति अने लक्ष्मीथी समृद्ध पुरुषोने बीजुं शुं मागवानुं रहे छे ? दरिद्रीने ते सिवाय बीजुं शुं मागवानुं छे ?[७]

आ प्रमाणे समस्तसंपत्प्राप्ति हेतु ए पदमा सपत्नी प्राप्तिनो हेतु ए रीते षष्ठितत्पुरुष पक्ष प्रमाणे प्रयोजननो निर्देश कर्यो.[८] हवे बहुव्रीहि पक्ष लईए; उपाय एटले समस्त बाह्याभ्यंतर नित्य सुखादिनी जे संपत् सिद्धी अर्थात् तथात्वप्रकाश तेनी रूडे प्रकारे प्राप्ति जे प्रत्यभिज्ञानो हेतु छे ते उत्तम प्रकारनी महेश्वरनी प्रत्यभिज्ञा एटले प्रतिमाभिमुख्ये करीने ज्ञान छे.[९] लोकमां आ ते ज चैत्र छे ए प्रकारनुं प्रतिमान वडे अभिमुख थएली वस्तुमां जे ज्ञान ते प्रत्यभिज्ञा एम व्यवहार छे. आ[१०] दर्शनमां पण प्रसिद्ध पुराण अने सिद्ध आगम तथा अनुमान इत्यादिथी ज्ञात छे परिपूर्ण शक्ति जेनी एवा ईश्वर ज्यारे पोताना

आत्मामां अभिमुख थाय छे त्यारे तेनी शक्तिना प्रतिसंधाने करीने ज्ञान थाय छे के निःसंशय हुं ते ज परमेश्वर छुं.[११] उपपत्ति एटले संभव, संभवित छे तेथी ते कार्य, माटे समर्थ एवा प्रयोजनव्यापार वडेते हुं सिद्ध करुं छुं.[१२] एम ईश्वर स्वभाववाळो आत्मा स्वतः प्रकाशे छे तो पछी प्रत्यभिज्ञा प्रदर्शननुं शुं प्रयोजन छे? एम जो कोई शंका करे तो तेनुं समाधान आ रीते छे. स्वप्रकाशताने लीधे आत्मा सतत अवभासमान छे तोपण मायाने लीधे ते एक भागे करीने प्रकाशमान छे तेथी पूर्ण अवभासनी सिद्धिने अर्थे दृक्शक्ति अने क्रियाशक्तिना आविष्करण द्वारा प्रत्यभिज्ञा प्रदर्शाववानी जरूर छे.[१३] आ सर्वने प्रयोगना रूपमां आ प्रमाणे मूकाय छे.

आ आत्मा परमेश्वर छे

कारण के ते ज्ञान अने क्रियाशक्तिवाळो छे;

जे जेटले अंगे ज्ञाता अने कर्ता छे ते तेटले अंशे ईश्वर छे जेमके प्रसिद्ध ईश्वर अथवा राजा.

आत्मा विश्वनो ज्ञाता अने कर्ता छे, माटे ते परमेश्वर छे.

ए प्रमाणे पंचावयव वाक्यथी ए वात सिद्ध थाय छे, कारण के मीमांवादमां नैयायिक मतनो समावेश थाय छे.[१४]

उदयकरना पुत्रनुं कहेवुं छे केः—

कयो अजड आत्मा पोतानो आत्मा जे कर्ता अने ज्ञाता छे ते अनादि सिद्ध महेश्वर छे ए वातने सिद्ध मानशे के तेनो निषेध करशे? परंतु मोहने लीधे अनुपलक्षित ते आत्मा छे तोपण शक्तिना आविष्करणे करीने ते दृष्ट थाय छे.[१५]

आ प्रमाणे ते प्रत्यभिज्ञानु प्रयोजन जणावे छे.

वळी,

आ जगत्मां सर्व भूतनी स्थिति जिवदाश्रय छे जिवतां प्राणीओनु जीवन ज्ञान अने क्रिया छे एम मानवामां आवे छे; तेमां ज्ञान छे ते स्वतः सिद्ध छे; अने क्रिया के जे प्रकाशमान पदार्थमां आश्रित छे ते अन्यथी जोवाय छे, अने ज्ञानथी ते अन्य छे एम कहेवाय छे जोनारनी जे प्रतिमा ते पदार्थोना क्रमनु रूप छे, अने क्रमरहित जे आनंदरूप अने चिद्रूप प्रमाता ते महेश्वर छे''

सोमानंदनाथ कहे छे के —

पुरुष सर्वदा शिवात्माथी ज्ञानने पामे छे; ते सर्वदा अहंप्रत्यरूप आत्माथी ज्ञानने पामे छे.

ज्ञानाधिकारप्रकरणनी परिसमाप्तिमा कहे छे के —

शिवनी साथेना ऐक्य वगर व्यावहारिक प्रत्यभिज्ञानो असंभव छे; प्रकाश साथेना ऐक्य (नाद्दष्टांत)थी शिवसाथेनु एक्य सिद्ध थाय छे; शिव ए एकज प्रमाता छे''

एनो एज महेश्वर नियतभावेकरीने पदार्थसमूह पण छे, कारण के पदार्थस्वरूप तेनो संकल्प छे, अने ज्ञान अने क्रियातो सर्वदा शुद्ध छे''

अभिनवगुप्ताचार्य आ श्लोकोनु विवरण आ प्रमाणे करे छे —

'ते जेम प्रकाशे छे तेने अनुसार आ सर्व प्रकाशे छे. तेना प्रकाश वडे करीने आ सर्व विविधरूपमा भासे छे' ए श्रुति प्रमाणे सप्रकाश चिद्रूप शिवना महिमा वडे सर्व भाव प्रकाशित छे एम मानवामा आवे छे. विषयनो प्रकाश नील-पीतादि विविधरूपमा जणाय छे, ते विषयना उपरागना भेदे करीने छे. वस्तुत ते देश काळ अने आकारना संकोचनथी रहित होवाथी अभेद छे. ते चैतन्यरूप प्रकाश ज

प्रमाता छे. शिवसूत्रमां पण कह्यु छे के 'चैतन्य छे ते ज आत्मा छे.' चिद्रूप, अनवच्छिन्नसंकल्प, अनन्योन्मुख, आनंदैकघन, महेश्वर इत्यादि तेना पर्याय छे, कारण के आ भावरूप विश्व तेनो संकल्प छे, ज्ञान अने क्रिया शुद्ध छे अर्थात् पारमार्थिक छे, त्या प्रकाशरूपता ते ज्ञान छे, अने पोतानी मेळे जगत् उत्पन्न करवापणु ते क्रिया छे. तेनु निरूपण क्रियाधिकारमा आ प्रमाणे कर्यु छे —

ते आनदशक्तित्वथी आ सर्व भावने इच्छावशात् प्रकाशे छे, अने आ क्रिया ते तेनी निर्मातृता छे

उपसहारमा पण कह्यु छे के —

ए प्रकारे घटपटादि आकारवाळा जगद्रूपमां स्थित थवानी इच्छा करनार ईश्वरनी ए कर्तृता इच्छा एज तेनी हेतुरूता क्रिया छे[१८]

ते होय तो आ होय ए प्रकारनी जे कार्यकारणता ते पण अपेक्षाहीन जडमा उपपन्न नथी

आ प्रमाणे जोता जडनी के अनीश्वर चेतननी कारणता सभवती नथी अने तेटला माटे जुदा जुदा जगत्गत जन्म स्थिति आदि भावविकार तथा तत्तत्भेदक्रिया इत्यादि सहस्ररूप वडे स्थित थवानी इच्छा करनार स्वतत्र भगवान् महेश्वरनी इच्छा एज उत्तरोत्तर उच्छ्वसभाव क्रिया अथवा विश्वकर्तृत्व कहेवाय छे[१९] इच्छा मात्रथी जगतनु निर्माण छे एना सबधमा दृष्टात पण सुस्पष्ट छे

मृत्तिका के बीज विना योगीनी इच्छामात्र वडे जे घटादि उत्पन्न थाय छे ते पण घटादिनो सपूर्ण अर्थ सारे छे[२०]

जो घटादिप्रति मृत्तिकादि ए परमार्थत कारण होय तो योगीनी इच्छामात्रथी घटादिनी उत्पत्ति शी रीते थाय? कोई कहे के मृत्तिका तथा बीजादिथी उत्पन्न थनार घटाकुरादि

जुदा होय छे अने योगीच्छाजन्य घटांकुरादि जुदा होय छे तो हमे तेने जणावीशुं के सामग्रीभेदथी कार्यभेद होय छे ए वात प्रसिद्ध-ज छे. उपादान वगर घटादिनी उत्पत्ति थती नथी अने योगी पोतानी इच्छाए करीने परमाणुओनो व्यापार करावी ते-ओने संघट्ट करे छे. आप्रमाणे जे माने छे तेओने पण हमारे आ प्रमाणे जणाववुं जोइए के ज्यां सुधी परिदृष्ट कार्यकारण भावनो विपर्यय जणाय नहि त्यांसुधी घटमां मृत्तिका, चक्र, दंड इत्यादि अने देहमां स्त्रीपुरुषसंयोगादिनी अपेक्षा थाय छेज अने ए प्रमाणे जोतां तो योगीनी इच्छा थतांज उत्पन्न थएला घट, देह, इत्यादिनो संभव शक्य थवो कठण पडे. परंतु चेतन अने अनेकसंपत्तियुक्त भगवान् जे निर्णयनुं अनुवर्तन के उल्लंघन करवाने घनतरस्वातंत्र्ययुक्त छे तेज ए प्रमाणे (जगद्रूपे) भासमान छे ए पक्ष लईए तो कोई अनुपपत्ति आवती नथी.[21] माटेज वसुगुप्ताचार्य कहे छे केः—

वगर उपादाने, वगर सामग्रीए अने वगर भींते जे आ जगच्चित्रनो चितरनार छे ते चंद्रकलाए करीने श्लाघ्य शूलपाणिने नमस्कार हो.

हवे कोई पुछे के प्रत्यग् आत्मा परमेश्वरथी अभिन्न छे तो संसारसंबंध शी रीते होय तो तेनो प्रत्युत्तर आगमाधिकारमां आ प्रमाणे कह्यो छेः—

आ प्रमाता मायाथी अंध कर्मना-बंधवाळो अने संसारी छे; पोते ईश्वर छे एम ज्यारे विद्यादिए करीने तेने समजावाय छे त्यारे ते चिद्घन थाय छे अने ते मुक्त छे एम कहेवाय छे.

वळी कोई कहे के प्रमेय प्रमाताथी अभिन्न छे तो प्रमेय प्रति बद्ध अने मुक्तनो शो विशेष होय तो तेनो उत्तर पण तत्त्वार्थसंग्रहना एक अधिकारमां आप्यो छेः—

मुक्त महेश्वरनी पेठे मेयने पोतासाथेना अभेदे करीने जुए छे, अने बद्ध मेयने अत्यंतभेदयुक्त जुए छे.

पूर्वपक्षी –जो आत्मा स्वाभाविक रीते परमेश्वर होय तो प्रत्यभिज्ञानु काई प्रयोजन नथी. बीज अप्रत्यभिज्ञात होय तो पण शु तेने उगवा माटे जरूरना सर्वे सहकारीओ हशे तो अकुर उत्पन्न नहि थाय ? थशे ज, तो पछी आत्मप्रत्यभिज्ञा-नने माटे श्रम अने प्रयत्न शु करवाने जोईए ?

सिद्धान्ती –ते ठीक छे पण आ रहस्य तमे प्रथम साभळो. अर्थक्रिया बे प्रकारनी होय छे. बाह्य अने आभ्यतर. बाह्य अर्थक्रिया ते अकुरादिने स्फुट रूपमा लाववा माटे बीजादिने-विषे जे थाय छे ते छे, आभ्यतर अर्थक्रिया प्रीतिआदिने रूपमा लावे छे अने प्रमातामा विश्राति पामनार चमत्कार तेनो सार छे. प्रथम प्रकारनी अर्थक्रियामा प्रत्यभिज्ञाननी अपेक्षा नथी, परतु बीजा प्रकारमा ते छे. प्रत्यभिज्ञानमतमा जे अर्थक्रिया छे ते जीव अने ईश्वरनु एकत्व सिद्ध करवाने जोइती शक्तिनो व्यापार छे. परसिद्धि अने अपरसिद्धि ए आ शक्तिनु लक्षण छे अने हु ईश्वर छु एवो जे चमत्कार ते आ अर्थक्रियानो सार छे[२४] आ प्रमाणे जोता आ मतता जे अर्थ क्रिया छे तेमा स्वरूपना प्रत्यभिज्ञाननी अपेक्षा रहेछे ज.

कोई कहेशे के वगर प्रत्यभिज्ञाने पण प्रमातृमा विश्राति पामनारी अर्थक्रिया जोवामा आवे छे[२५] तो तेने हमे आ प्रमाणे कहीशु –नायकना अनेक गुणना श्रवणथी जेनो अनुराग प्रवृद्ध थयो छे एवी विरहक्लेशने नहि सहन करती मदन विव्हल थएली कोई कामिनी मदनलेख लखीने पोतानी अवस्था जणावे छे, पछी ते नायक उतावळथी तेनी पासे आवे छे. पेली का-मिनी तेने जुए छे खरी पण तेना गुणनो विचार करती नथी अने तेथी ते साधारण पुरुष जेवो तेने लागे छे अने तेने जोवामा तेने कई आनद मळतो नथी. परतु ज्यारे दूतीना कहेवाथी ते तेना गुणनो परमार्श करे छे त्यारे ते तत्क्षण पूर्ण

संतोषने पामे छे. तेजप्रमाणे प्रत्यग् आत्मा विश्वेश्वररूपे भासमान छे तो पण निर्भासन तेना गुणना परामर्श वगरनुं होवाथी पूर्ण भावनुं संपादन करावतुं नथी. परंतु ज्यारे गुरुवचनादिथी सर्वज्ञत्व, सर्वकर्तृत्व, ए वगेरे लक्षणयुक्त परमेश्वरना उत्कर्षनो परामर्श थाय छे त्यारे तत्क्षण पूर्णात्मतानो लाभ थाय छे[२८]

चतुर्थ विमर्शमा कह्यु छे के —

अनेक उपयाचनाओ वडे पासे आवेलो कान्त तेनी पासे उभो छे तो पण ते अपरिज्ञात होवाथी साधारण पुरुष जेवो भासे छे, अने तेनी साथे रमण करवानी तेनी इच्छा थती नथी आज प्रमाणे मनुष्यनो आत्मा जो के विश्वेश्वर छे तो पण तेना गुणनो विचार ज्यां सुधी करवामां आवतो नथी त्यां सुधी ते पोतानो वैभव प्रकाशतो नथी. आ हेतुथी आ शास्त्रमां आ तेनी प्रत्यभिज्ञा कहेवामां आवी छे.'

अभिनवगुप्तादि आचार्योए आ संबंधमा पुष्कळ कह्यु छे; हमे मंग्रहमात्र करीए छीए माटे विस्तारना भयथी वधारे कहेता नथी. आटलु पूर्ण छे.

रसेश्वरदर्शन.

बीजा केटलाक माहेश्वरो जो के परमेश्वर तादात्म्यवादी छे तो पण पिंड स्थिर होय तो सर्व शास्त्रने अभिमत एवी जीवन्मुक्ति मळे ए सिद्धांतने वळगीने पिंडना स्थैर्यनो उपाय पारदादिपदवेदनीय रस एज छे एम कहे छे. रस पारद छे कारण के ते संसारना पर पारने प्राप्त कराववानो हेतु छे. कह्यु छे के —

जे संसारना पर पारने दे छे ते पारद छे एम स्मृति कहे छे

रसार्णवमां पण कह्यु छे के —

उत्तम साधको तेने पारद कहे छे, कारण के परार्थने माटे ते उपयुक्त थाय छे हे देवि ! ते ज्यारे सुप्त होय छे त्यारे महारा समान छे. ते महारा प्रत्येक अगमांथी उत्पन्न थयो छे ते महारा देहनो रस छे माटे तेने रस कहे छे

कोई एम कहे के प्रकारान्तर वडे पण (आ श्लोकोनो अर्थ बीजी रीते करता पण) जीवन्मुक्ति सयुक्तिक जणाय छे तो आ वाचोयुक्ति सयुक्तिक नथी तो तेने कहेवानु के एम कहेवु खोटु छे, कारण के छ ए दर्शनोमा देहपात पछी मुक्ति कहेवामा आवे छे अने तेथी तेना उपर विश्वास आवतो

नथी अने तेथी तेने माटे निर्विचिकित्स प्रवृत्ति थवी अनुपपन्न छे. रसार्णव (ग्रन्थ)मां कह्युं छे केः—

छ ए दर्शनमां मुक्ति देहपात पछी दर्शावी छे. ते करतलामलकवत् प्रत्यक्ष जणाती नथी.

माटे रस अने रसायन वडे ते देहनुं रक्षण करवुं.

आचार्य गोविंद भगवान् पण कहे छे केः—

ए प्रकारे धन, शरीर, अने भोगने अनित्य मानीने मनुष्ये सदा मुक्तिने माटे प्रयत्न करवो; ते मुक्ति ज्ञानथी मळे छे, ज्ञान अभ्यासथी मळे छे, अने ते देह स्थिर होय तो थाय छे.

कोई कहेशे के विनश्वर एवो दृश्यमान देह नित्य शी रीते होय? तो तेने कहेवानुं के एम मानवुं नहि, कारण के षाटकौशिक शरीर अनित्य छे तो पण रस अने अभ्रक पदथी कहेवामां आवती हर अने गौरीनी सृष्टिथी उत्पन्न थएलो देह नित्य छे.

रस हृदयमा कह्युं छे केः—

जेओए देहनो त्याग कर्या वगर हर अने गौरीनी सृष्टिथी उत्पन्न थएला बीजा देहने प्राप्त कर्यो छे ते रससिद्ध पुरुषो वंद्य छे मंत्र गणतो तेओनो दास छे.

माटे जीवन्मुक्तिनी इच्छा करनार योगीए प्रथम तो दिव्य तनु करवु. हर अने गौरीना सृष्टिसयोगथी उत्पन्न थएलो एम कहेवानुं तात्पर्य ए छे के पारो हरथी उत्पन्न थयो छे अने अभ्रक गौरीथी उत्पन्न थई छे माटे तेओनु ते साथे तादात्म्य छे. कह्युं छे केः—

हे देवि! अभ्रक तारु बीज छे अने पारो मारुं बीज छे; ए बेनुं मेलन मृत्यु अने दारिद्र्यनो नाश करनार छे.

आतो आ संबंधमां घणुंज थोडु कह्युं छे; रसेश्वर सिद्धांतमां तो देव दैत्य मुनि मानवादि अनेक पुरुषो रसना सामर्थ्यथी

दिव्य देह ने पामीने जीवनमुक्त थया ए वात साभळवामा आवे छे.

महेशादि देव, शुक्रादि दैत्य, वालखिल्यादि मुनिओ, सोमेश्वरादि राजाओ, गोविंदभगवत्, गोविंदनायक, चर्वटि, कपिल, व्यालि, कापालि, कंदलायन, ए अने बीजा घहु सिद्धो रसमय शरीरने पामीने अने ते साथे तदात्म थईने जीवनमुक्त रूपे फरे छे.

महादेवे पार्वतीने आज अर्थ कह्यो छे.----

हे देवेशि! कर्मयोगे करीने देहधारणनी प्राप्ति थाय छे. रस (पारो) अने पवन ए वे प्रकारनो कर्मयोग छे ज्यारे रस अने वायु हे भैरवि! मूर्च्छित होय छे त्यारे ते व्याधिने हरी ले छे. ज्यारे मृत होय छे त्यारे पुन सजीवन करी शके छे अने ज्यारे बद्ध होय छे त्यारे ते उडवानी शक्ति आपे छे

पारद मूर्च्छित थयो क्यारे कहेवाय तेनु स्वरूप पण कह्यु छे —

पारो नाना वर्णनो थाय छे अने पोतानी घणी चपळताने छोडी देछे; आ प्रमाणेनां लक्षण ज्यारे तेमां जोवामां आवे त्यारे तेने मूर्च्छित थयो एम कहे छे

आर्द्रत्व, घनत्व, तेज, गौरव, अने चपलता एटलु जेमां जणातु नथी ते मृत पारो जाणवो

बीजे स्थळे बद्धनु लक्षण पण कह्यु छे —

अक्षत होवा पणु, थोडा वखतमां द्रव थवा पणु, तेजस्वी पणुं निर्मलता, गुरुत्व, अने घसतां कडका थवा पणु ए बद्ध पारदनां लक्षण छे

हवे कोई शका करे के 'जो हर गौरीनी सृष्टि सिद्ध थाय तो पिंडनु स्थैर्य पण पामी शकाय. परतु ते सिद्धज थाय शी रीते?' आम कहेनारने कहेवानु के आवी शका खोटी छे, कारण के अष्टादश सस्कारने लीधे ते सिद्ध थई शके तेम छे.

आचार्यो कहे छे के,—

पाराना साधनना विधिमां सारा माणसना दरेक कर्ममां निर्मल एवा अष्टादश संस्कार प्रथम तो प्रयत्न वडे जाणवा जोइए

ते संस्कारनु निरूपण पण कर्यु छे.—

स्वेदन, मर्दन, मूर्च्छन, स्थापन, पातन, निरोधन, नियमन, दीपन, गमन, जीणा जीणा दाणा थवा पणुं, जारणाविधान (छांकी देवुं ते), गर्भद्रुति, बाह्यद्रुति, क्षारण, रागसारण, क्रमसारभक्षण अने वेध करीने भक्षण ए अढार प्रकारनां रस कर्म छे.

आ सर्व क्रियाओ आचार्य गोविंदभगवत् तथा सर्वज्ञ रामेश्वरभट्टार्क वगेरे प्राचीन आचार्योए निरूपित करी छे माटे ग्रन्थ महोटो थईजवाना भयथी हमे निरमीए छीए.

वळी रसशास्त्र धातु वादने माटे छे एम पण न मानवुं. देहनेद्वारा मुक्ति आपवी ए तेनु परम प्रयोजन छे.

रसार्णवमा कह्यु छे के—

हे ईश्वर! मने लोहवेध कहो के जे उत्तम दान छे, अने जे देहवेधथी खेचरी गति थाय छे ते देहवेध पण मने कहो, (एम पार्वतीए पूछ्युं त्यारे शिव बोल्या) हे देवि! डाह्या माणसे लोह तथा देह उभयमां पारानो उपयोग करवो; ते देह अने लोहनो समान देखाव करे छे. प्रथम तेनी परीक्षा लोह उपर करवी अने पछी देह उपर करवी.

कोई कहेशे के सच्चिदानंदात्मक परतत्त्वना स्फुरणथी मुक्ति सिद्ध छे तो आ दिव्य देह संपादन करवानो प्रयास शु करवाने जोईए? तो तेने कहेवानु के आम बोलवु योग्य नथी, कारण के दृढ शरीर न होय त्या सुधी ए वार्ता (मोक्ष मळशे) थवी असंभवित छे. रस हृदयमा कह्यु छे के —

अनेक विकल्प जेमांथी दूर थईगया छे तथा जेनी सर्व मार्गमां विश्रांति करवामां आवी छे ते चिदानंदनी

स्फुरणा थाय तोपण जे प्राणीओनां शरीर अस्फुरित होय तेमने ते शा कामनी?

जे जराए करीने जर्जरित छे, कास अने श्वासादि-दुःखथी जे भरेलो छे, अने जेनी बुद्धि अने इंद्रियनो प्रसार प्रतिहत छे तेने समाधिमां योग्य गणवामां आवतो नथी. विषयरसनो स्वाद लेवामां लंपट एवो सोळवर्षनोबाळक अने विवेकरहित वृद्ध एओ मुक्तिने शी रीते पामे?

वळी कोई शंका करे के जीवत्व एटले ससारित्व, तेथी विपरीतता ते मुक्तता, आ प्रमाणे उभय परस्पर विरुद्ध छे तो ते केवी रीते एकज स्थानमा संभवे? आम कहेनारने कहेवुं के आ प्रमाणे धारवुं खोटु छे, कारण के विकल्पनुं समाधान थतुं नथी. मुक्ति तो सर्व तीर्थकरथी समत छे; हवे ते शु ज्ञेय छे के नहि? जो कहो के ते ज्ञेय नथी तो शशविषाण जेवी छे. जो कहो के ज्ञेय छे तो जीवन वर्जनीय नथी, कारणके जीवितरहितने ज्ञातृत्व अनुपपन्न छे.

रसेश्वर सिद्धातमा कह्युं छे के —

हे अधोमन! जीवनो मोक्ष रसांकमेयमार्गमां कहेलो छे अने युक्तिभेदनु अवलंबन करनार बीजा शास्त्रवादमां पण ते कह्यो छे, सर्व मंत्रने विषे मुक्तित्वने ज्ञान वडे ज्ञेय मानेलुं छे. जे जीवत् नथी ते ज्ञेयने जाणतो नथी, माटे जीवन छे ज.

वळी नित्यजीवत्व अदृष्टपूर्व पण नथी, कारण के विष्णु स्वामिमतानुयायीओ नृसिंहना शरीरने नित्य माने छे.

साकार सिद्धिमा कह्यु छे के —

जेनु शरीर सत्, चित्, नित्य, अचिंत्य अने पूर्ण निजानंद छे एवा श्री विष्णुस्वामिसमत नृसिंहने हुं वदन करं छुं.

कोई कहेशे के सावयव अने रूपवत् अवभासमान एवुं नृसिंहनु अंग सत् शी रीते सभवे? आम कहेनारने कहेवानुं

के आ आक्षेप कंई आक्षेप कहेवाय नहि, कारण के ते सनकादि ने प्रत्यक्ष सिद्ध छे, सहस्रशीर्षादि शद्बमां श्रुतिपण तेने गाय छे, ' अंबुजना जेवा नेत्रवाळा चतुर्भुज शंख चक्र गदाधारी अद्भुत बाळकने ' एम पुराणमां पण जोवामां आवे छे, ए प्रमाणे त्रण प्रमाणथी सिद्ध नृसिंहनुं अंग शी रीते असत् होय ? विष्णुस्वामीना सेवक गर्भश्रीकान्तमिश्रे सदादिविशेषण प्रतिपादित कर्या छे. माटे हमारुं इष्ट जे देहनित्यत्व ते अत्यंत अदृष्ट होई शके नहि, माटे पुरुषार्थनी इच्छा करनार पुरुषोए तेनी इच्छा करवी जोईए.[3] माटेज कह्युं छे केः—

विद्यामात्रनुं स्थान अने धर्म, अर्थ, काम अने मोक्षनुं मूल एवुं जे शरीर तेने अजरामर करवाना काम करतां बीजुं कयुं काम श्रेयस् छे ?

रसेंद्र अजरामर करवाने समर्थ छे ते पण कह्युं छे——

एक आ रसराजे शरीरने अजरामर करे छे.

अरे पाराना माहात्म्यनी तो वातज शी करवी ? दर्शन के स्पर्शथी पण महाफल थाय छे. रसार्णवमां कह्युं छे केः——

तेना दर्शन अने स्पर्शथी, भक्षण अने पूजनथी तथा दानथी छ प्रकारनां फल थाय छे, पृथ्वीउपर केदारादि जे जे लिंग छे तेनुं दर्शन करवाथी जे पुण्य थाय छे ते रसनुं दर्शन करवाथी थाय छे.

बीजे स्थळे पण कह्युं छे केः—

काशी आदिनां सर्वलिंग करतां रसनालिंगनुं अर्चन वधारे कल्याणकारक छे, कारणके तेथी भोग, आरोग्य, अमृतत्व अने अमरत्वनी प्राप्ति थाय छे.

रसनी निंदा करनारने पाप लागे छे एम पण कह्युं छे.—

जो प्रमादथी रसनिंदानुं श्रवण थयुं होय तो तेनुं स्मरण करवुं अने निंदाने लीधे अशुभथी पूर्ण थएला ते निंदकनो एकदम परित्याग करवो.

माटे हमारी कहेली रीत प्रमाणे दिव्य देह पामीने योगा-

भ्यास करता परतत्त्वनु दर्शन थये पुरुषार्थनी प्राप्ति थाय छे. ते नखने

केटलाएक पुण्यदृष्टिवाळा पुरुषोने चिन्मय ज्योति भासे छे, जे भ्रयुगना मध्यमां छे, अने जे अग्नि, विद्युत् अने सूर्यनी पेठे जगत्‌ने प्रकाशे छे, जे परमानदैक रस छे, जे परमज्योतिः स्वभाव छे, जे अविकल्प छे, जेना सकल क्लेश विनष्ट थया छे, जे ज्ञेय, शांत अने स्वयंवेद्य छे तेमां मननुं आधान करीने अखिल स्फुरद् जगत्‌ने चिन्मय जोनार पोताना कर्मबंधने तोडीनारो आ लोकमांज ब्रह्मतत्त्वने पामे छे.

श्रुतिमा पण कह्यु छे के.

ते रस छे रसनेपामीने आ (पुरुष) आनंदी थाय छे''

तेथी आप्रमाणे भवदु खने तरवानो उपाय रस एज छे एम सिद्ध थयु. वळी रसनु ब्रह्म साथे साम्य प्रतिपादन करनार श्लोक पण छे.

जे स्वाभाविक आवरणमांथी मुक्त थवानी इच्छा करनार पुरुषोने साध्य छे, जे पूर्ण होई सर्वने सहन करे छे, जे वैश्वानर जाग्रत् होतां क्रीडा करतो नथी, जे उत्पन्न थया पछी बीजाने दुःख देतो नथी अने जे पोते पोतामांथी प्रकाशे छे ते पारद दीनता अने संसारना भयमांथी रमारु रक्षण करो.''

औलुक्यदर्शनं.



आ लोकमां दुःखनुं भान सर्व प्राणीने होवाथी ते सिद्ध छे, अने स्वाभाविक रीते ते सर्वने प्रतिकूळ लागे छे तेथी सर्व प्रेक्षावान् पुरुषो तेनो त्याग करवानी इच्छा करीने तेने माटे उपाय जाणवानी इच्छा करे छे अने परमेश्वरसाक्षात्कार ए तेनो उपाय छे;[२] कह्युं छे के —

जो माणसो चर्मनी पेठे आकाशनो वींटो वाळवाने शक्तिमान् थाय तोज ते शिवतत्त्वना ज्ञान वगर दुःखनो अंत आणी शके.

परमेश्वर साक्षात्कार श्रवण, मनन अने भावना वडे थाय छे; कह्युं छे के —

आगमन अनुमान अने ध्यानाभ्यास ए त्रण वडे प्रज्ञा प्राप्त करी मनुष्य उत्तम योगने पामे छे.

आ मनन अनुमानने अधीन छे, अनुमान व्याप्ति ज्ञानने अधीन छे, अने व्याप्तिज्ञान पदार्थना विवेकनी अपेक्षा करे छे. आ उपरथी भगवान् कणादे 'हवे हमे धर्मनुं व्याख्यान करीशुं' ए सूत्रथी आरंभ थता दश लक्षणना ग्रन्थमां छ पदार्थनी व्यवस्था करी छे. तेना बे आह्निकवाळा प्रथमाध्यायमां समवाय संबंधवाळा सर्व पदार्थोनुं कथन करे छे. तेमां पण प्रथम

आन्हिकमां जे जे पदार्थो जातिमान् छे तेमनुं निरूपण कर्युं छे अने बीजामां जाति अने विशेषनुं कथन कर्युं छे. बे आन्हिकवाळा बीजा अध्यायमां द्रव्यनुं निरूपण कर्युं छे; तेमां पण प्रथमान्हिकमां (पंच) भूतनां विशेष लक्षणोनुं अने बीजामां दिक् अने काळनुं प्रतिपादन कर्युं छे. आन्हिकद्वययुक्त त्रीजा अध्यायमां आत्मा अने अंतःकरणनां लक्षण आप्यां छे, तेमां पण प्रथमान्हिकमां आत्मानुं लक्षण अने बीजामां अंतःकरणनां लक्षण आप्यां छे. बे आन्हिकवाळा चतुर्थाध्यायमां शरीर अने तेना उपयोगी पदार्थोनुं विवेचन आवे छे, तेमां पण प्रथमान्हिकमां शरीरोपयोगी पदार्थोनुं विवेचन आवे छे अने बीजामां शरीरनुं विवेचन आवे छे. बे आन्हिकवाळा पांचमा अध्यायमां कर्मनुं प्रतिपादन कर्युं छे, तेमां पण प्रथमान्हिकमां शरीर संबंधी कर्मनुं चिंतन छे अने बीजामां मानस कर्मनुं चिंतन छे. बे आन्हिकवाळा छठ्ठा अध्यायमां श्रौत धर्मनुं निरूपण कर्युं छे, तेमां पण प्रथमान्हिकमां दान अने प्रतिग्रहना धर्मनो विवेक आवे छे अने बीजामां आश्रमचतुष्टयने उचित धर्मनुं निरूपण छे. एज रीतना सातमामां गुण अने समवायनुं प्रतिपादन आवे छे, तेमां पण प्रथमना आन्हिकमां बुद्धिनिरपेक्ष गुणनुं प्रतिपादन छे अने बीजामां बुद्धिसापेक्ष गुणनुं तथा समवायनुं प्रतिपादन छे. आठमामां निर्विकल्प अने सविकल्प प्रत्यक्ष अने तेनां प्रमाणनुं चिंतन छे. नवमामां बुद्धिना विशेषनुं प्रतिपादन छे. अने दशमामां अनुमानभेदनुं प्रतिपादन छे.

त्यां उद्देश, लक्षण अने परीक्षा ए रीते त्रण प्रकारनी आ शास्त्रनी प्रवृत्ति छे. कोइ कहेशे के विभागनी अपेक्षाए करीने चार प्रकार कहेवा जोइए तो शा माटे त्रण कहेवामां आवे छे? तो तेने कहेवानुं के एम मानवुं नहि, कारण के विभागनो एक विशेष उद्देशमां अंतर्भाव थाय छे. त्यां द्रव्य,

गुण, कर्म, सामान्य, विशेष अने समवाय ए छज पदार्थ छे एम जे कहेवुं ते उद्देश, कोइ पूछे के आ प्रकारना क्रमना नियममां शुं कारण छे तो कहेवामां आवे छे के द्रव्य समस्त पदार्थनुं आयतन (अधिकरण) होवाने लीधे प्रधान होवाथी तेनो प्रथम उद्देश छे. पछी गुण गुणत्वउपाधिए करीने सकल द्रव्यमां रहे छे माटे तेनो उद्देश छे. पछी कर्म सामान्यवत् होवाथी तेनु द्रव्य अने गुणसाथे साम्य होवाथी तेनो उद्देश छे. सामान्य ए त्रणमां आश्रित होवाथी ते पछी तेनो उद्देश छे. ते पछी समवायनुं अधिकरण जे विशेष तेनो अने अंते अवशिष्ट रहेला समवायनो उद्देश छे. ए प्रकारे क्रमनो नियम छे.

पूर्वपक्षीः—एम शी रीते कहो छो के छज पदार्थ छे ? कारण के अभाव पण एक सद्भाव छे.

सिद्धान्तीः—एम कहो नहि; कारण के नञर्थे करीने अनुल्लिखित एवी बुद्धिनी विषयता जे भावरूपता तेणे करीने ते छ ज छे एम विवक्षित छे.

पूर्वपक्षीः—तो पण शी रीते छज एम नियम थई शके ? कारण के नीचेनो विकल्प असह्य छे ते आ प्रमाणे. व्यवच्छेद्य पदार्थ प्रमित छे के नहि ? जो प्रमित छे तो शामाटे तेनो निषेध होवो जोइए ? जो अप्रमित होय तो कोइ पण प्रेक्षावान् उंदरनां शिंगडानो प्रतिषेध कराने शी रीते प्रयत्न करे ! माटे आ विकल्पनुं समाधान न थाय त्यांसुधी पदार्थ छज एम नियम करी शकाय नहिं.

सिद्धान्तीः—एम कहेवानु काइ प्रयोजनथी, कारण के सप्तम थईने प्रमित करेला अंधकारादिना भाववनो अने भाव थईने प्रमितकरेला शक्तिसदृश्यादिना सप्तमत्वनो निषेध कर्यो छे. माटे अहीं विस्तार करवो अनुचित धारीए छीए.

त्यां द्रव्यादि त्रणनां द्रव्यत्वादि जाति लक्षण छे. द्रव्यत्व

ए के जे गगन (नित्य) अने कमळ (अनित्य)साथे समवाय सबधमा होइने नित्यगध साथे समवाय सबधमा होतु नथी. जे समवायी कारण अने असमवायी कारणथी अने जे सत्ता (नामनी जाति)थी साक्षात् व्याप्य छे ते गुणत्वं. जे जाति सर्व अनित्य पदार्थ साथे समवेत छे अने सत्ताए करीने साक्षात् व्याप्य छे ते कर्मत्वं. सामान्य एटले जे प्रध्वसाभावनु प्रतियोगी नथी अने जे अनेक साथे समवेत छे ते[12] विशेष एटले जे अन्योन्याभावविरोधि सामान्यरहित अने समवेत छे ते[13] समवायरहित सबधते समवायं. ए प्रकारे छ पदार्थोना लक्षणनी व्यवस्था करी छे.

द्रव्य नव प्रकारनु छे. पृथ्वी, जळ, तेज, वायु, आकाश, काळ, दिशा, आत्मा अने मनस्. तेमा पृथ्वीने आदि लइ चारनी पृथ्वीत्वादि जाति लक्षण छे. पृथ्वीत्व ए एक जाति छे जे पाक (उष्णता)थी उत्पन्न थएला रूपनी साथे समानाधिकारण छे अने द्रव्यत्व जातिनी साक्षात् व्याप्य छे[14] अप्त्व ए एक जाति छे ते सरित्सागर साथे अने जळसाथे समवेत छे.[15] तेजस्त्व ए एक जाति छे जे चन्द्र सुवर्ण साथे समवेत छे अने ज्वलन साथे समवेत छे[17] वायुत्व ए एक जाति छे जे त्वगिन्द्रियनी साथे समवेत छे अने द्रव्यत्व जातिथी साक्षात् व्याप्य छे[18] आकाश, काळ, अने दिक् एक एक छे तेथी तेमने अपर जाति होती नथी अने तेथी आकाश काळ, अने दिक् ए शब्दोज तेमनी पारिभाषिक संज्ञाओ छे.[19] संयोगे करीने अजन्य एवो जे अन्य विशेष गुण तेनी साथे समानाधिकरण होई विशेषनु जे अधिकरण छे ते आकाशं. जे विभु छे, अने जे दिक् साथे समवेत् एवा परत्वना असमवायीकारणनुं अधिकरण छे ते काळं. जेने विशेष गुणनथी एवुं जे काळव्यतिरिक्त विभुद्रव्यते दिक्.[20] आत्मा अने मन-

त्तुनां आत्मत्व अने मनस्त्व ए लक्षण छे. जे अमूर्त (द्रव्य) साथे समवेत एवी द्रव्यत्वती अपर जातिते आत्मत्वं. जे समवायिकारणत्वरहित अने अणु साथे समवेत एवी द्रव्यत्वनी अपर जाति ते मनस्त्वं. रूप, रस, गंध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, बुद्धि सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष अने प्रयत्न एटला सत्तर कंठोक्त अने च शब्दथी सूचित गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह, संस्कार, अदृष्ट (धर्म अने अधर्म) ने शब्द ए सात ए रीते चोवीश गुण छे.[२२] रूपादिथी शब्दान्त सुधीना गुणोनां रूपत्वादि जाति लक्षण छे. रूपत्व एटले नील साथे समवेत एवी गुणत्वनी अपर जाति[२३] आ प्रमाणे बाकी रहेला गुणोनां लक्षण पण जाणी लेवां. कर्म पांच प्रकारनां छे; उत्क्षेपण, आक्षेपण, आकुंचन, प्रसारण अने गमन; भ्रमण रेचनादिनो गमनमां अंतर्भाव थाय छे. उत्क्षेपणादिनां उत्क्षेपणत्वादि जातिओ लक्षण छे. जे ऊर्ध्व देश साथेना संयोगनु असमवायि करण छे अने जे समवेत छे एवी जे कर्मत्वनी अपर जाति ते उत्क्षेपणत्वं. ए रीते आक्षेपणादिनां लक्षण पण जाणीलेवां. सामान्य बे प्रकारनुं छे, पर अने अपर पर सामान्य सत्ता छे जे द्रव्य गुण साथे के गुण कर्म साथे समवेत छे,[२४] अपर सामान्य द्रव्यत्वादि छे, तेओनां लक्षण पूर्वे कह्यां छे. विशेष अनंत छे अने समवाय एक छे तेथी तेओना विभागनो संभवनथी; तेओनां लक्षण पूर्वे कह्यां छे.

"द्वित्व, पाक (उष्णता) थी थती उत्पत्ति, अने विभागथी थतो विभाग, ए त्रणमां जेनी बुद्धि स्खलित थती नथी ते खरो वैशेषिक छे."[२५]

आ प्रकारनुं आभाणक होवाथी हमे हवे द्वित्वादिनी उत्पत्ति प्रकार दर्शावीए छीए.

त्यां प्रथम इंद्रिय अने अर्थनो संनिकर्ष थाय छे; ते पछी

एकत्व-जातिनुं ज्ञान, तेथी अपेक्षा बुद्धि, तेथी द्वित्वनी उत्पत्ति तेथी द्वित्व-जातिनु ज्ञान, तेथी द्वित्व गुणनु ज्ञान अने तेथी संस्कार. कह्युं छे के –

प्रथम अर्थ साथेना इंद्रियना सनिकर्षथी एकत्व-सामान्यनुं ज्ञान थाय छे, एकत्वथी उभयगोचर मति उत्पन्न थाय छे, अने तेथी द्वित्वनुं ज्ञान थाय छे पछी द्वित्वनी प्रमिति थाय छे. अने ते पछी बीजा पदार्थोथी द्वित्वनी प्रमा थाय छे. आ प्रमाणे बे द्रव्य छे एम बुद्धि थाय छे.[31]

आ द्वित्वोदयनी प्रक्रिया कही.

पूर्वपक्षी —द्वित्वादि अपेक्षा बुद्धिजन्य छे एनु शु प्रमाण छे ?

सिद्धान्ती —आ प्रश्नना प्रत्युत्तरमा आचार्य (उदयन) कहे छे के —

अपेक्षाबुद्धि द्वित्वादिनी उत्पादक छे, कारण के ते व्यजक (ज्ञापक) छे एम कही शकातु नथी अने ते साथे जेम संयोग पछी शब्द लागलोज छे तेम ते पछी द्वित्वादि छे.[32]

आ विषयना सबधमा हमारु कहेवु आ प्रमाणे छे —

बे अथवा वधारे एकत्व छे विषय जेनो एवी अनित्य बुद्धिथी द्वित्वादि व्यग्य नथी, कारण के पृथक्त्वादिनी पेठे द्वित्वादि ए अनेकाश्रित गुणो छे.[33]

हवे निवृत्तिक्रमनु निरूपण करीए छीए. अपेक्षा बुद्धिथी एकत्व-सामान्यना ज्ञाननी द्वित्वोत्पत्तिना समकालमा निवृत्ति थाय छे. द्वित्व-सामान्यना ज्ञानथी, अपेक्षा बुद्धिनी, द्वित्व-गुणबुद्धिना समकालमा निवृत्ति थाय छे. अपेक्षा बुद्धिनी निवृत्तिथी बुद्धिना समकालमा द्वित्व-गुणनी निवृत्ति

थाय छे. द्रयबुद्धिथी संस्कारोत्पत्तिना समकालमां गुणबुद्धिनी निवृत्ति थाय छे. अने ते पछी संस्कारथी द्रव्यबुद्धिनी निवृत्ति थाय छे.[३४]

आ सर्वना संग्रहना श्लोक आ प्रमाणे छे.—

प्रथम अपेक्षाबुद्धिथी एकत्व—सामान्यनी बुद्धि द्वित्वोदयना समकालमां नाश पामे छे. द्वित्व-सामान्यनी बुद्धिथी द्वित्व—गुण ना उदयना समकालमां अपेक्षाबुद्धि नाश पामे छे. अपेक्षाबुद्धिना समकालमां गुणबुद्धि नाश पामे छे. द्रयबुद्धिथी संस्कारोदयना समकालमां गुणबुद्धि नाश पामे छे अने संस्कारथी द्रव्यबुद्धि नाश पामे छे. ए प्रमाणे नाशनो क्रम मानवामां आवेलो छे.[३५]

एक बुद्धि बीजी बुद्धिथी नाश पामे छे, अने बीजी बुद्धि संस्कारे करीने नाश पामे छे. ते आ प्रमाणे छे.

आ ज्ञानो (बुद्धिओ) जे आपणी चर्चानो विषय छे ते तेओना उत्तरोत्तर कार्योए करीने विनाश्य छे, कारण के ज्ञान शब्दनो पेठे एक विभु पदार्थनो विशेष गुण छे अने ते क्षणिक छे.[३६] संक्षेपमां कहीए तो द्रव्यारंभक संयोगना प्रतिद्वंद्वि विभागने उत्पन्न करनार जे कर्म तेना समकालमां थता एकत्व सामान्यना ज्ञानथी आश्रयनी निवृत्तिथीज द्वित्वनि निवृत्ति थाय छे, परंतु कर्मना समकालमा अपेक्षा बुद्धिना चिंतनथी आश्रय-नाश अने कर्म उभय वडे द्वित्वनी निवृत्ति थाय छे.[३७]

विनाशक एवो जे प्रध्वंसाभाव तेनी प्रतियोगिनी जे बुद्धि ते अपेक्षा बुद्धि.

हवे द्वयणुकना नाशथी आरंभी केटली क्षणमा बीजुं द्वयणुक थाय छे तथा रूपादिमत् थाय छे ते जाणवानी इच्छा थाय माटे उत्पत्तिप्रकार कहेवामा आवे छे. नोदनादिना (अग्निसंयोगादिना) क्रमे करीने द्वयणुकनो नाश थाय छे

द्व्यणुक नष्ट थता परमाणुने विषे अग्निसयोगथी श्यामादिनी निवृत्ति थाय छे. श्यामादिनी निवृत्ति थता अन्य अग्निसयोगथी रक्तादिनी उत्पत्ति थाय छे. रक्तादि उत्पन्न थता अदृष्टयुक्त आत्माना सयोगथी परमाणुने विषे द्रव्यना आरभणने माटे क्रिया ए करीने ते (परमाणु) नो पूर्व देशथी विभाग थाय छे. विभागे करीने पूर्वदेशसयोगनी निवृत्ति थाय छे. आ सयोग निवृत्त थता ते (परमाणु) ना बीजा परमाणु साथेना सयोगनी उत्पत्ति थाय छे. बे परमाणु सयुक्त थया एटले द्व्यणुकनो आरभ थाय छे. द्व्यणुकनो आरभ थता कारण (परमाणु) ना गुणादिथी कार्य (द्व्यणुक) ना गुणादि जे रूपादि तेनी उत्पत्ति थाय छे. ए रीते क्रमवार नव क्षण थाय छे.[३१]

दशक्षणादि बीजा प्रकार विस्तारना भयथी जणाववामा अवता नथी. आ रीते पीलुपाकप्रक्रिया छे, परतु पीठरपाक प्रक्रियाँ नैयायिकने समत छे.

विभागथी उत्पन्न थतो विभाग बे प्रकारनो छे, कारण मात्रना विभागथी उत्पन्न थतो अने कारणाकारणना विभागथी उत्पन्न थतो. प्रथम तेमानो पहेलो प्रकार लईए कार्य (घट) साथे व्याप्त कारण (कपाल) ने विषे उत्पन्न थएलु कर्म (विभाग) ज्यारे बीजा अवयव (कपाल) थी विभाग करे छे त्यारे आकाशादि देशथी विभाग थतो नथी. ज्यारे आकाशादि देशथी विभाग थाय छे त्यारे बीजा अवयवथी विभाग थतो नथी, कारण के आकाशथी विभागने नहि करनार कर्म द्रव्यारम्भक सयोगनो विरोधी जे विभाग तेनु आरभक छे एम लेता तेमा व्यभिचार दोष आवतो नथी, जेम के धूम अने अग्निना सबधमा. आ उपरथी सिद्ध थाय छे के अवयवगत कर्म अवयवान्तरथीज विभागने करे छे, आकाशादि देशथी नहि. आ पछी ते विभागथी द्रव्यारभक सयोगनी निवृत्ति थाय छे

पछी कारणाभावथी कार्याभाव छे ए न्यायथी अवयवी (घट) नी निवृत्ति याय छे. अवयवी निवृत्त थतां तेना कारणभूत अवयवोमां रहेनार विभाग कार्यना विनाशे करीने विशिष्ट एवा काळनी अथवा स्वतंत्र अवयवनी अपेक्षा करीने, सक्रिय (क्रिया=विभाग) अवयवनो कार्यसंयुक्त आकाश अने देशथी विभाग आरंभे छे, निष्क्रियनो विभाग आरंभतुं नथी, कारण के तेम थवाने कंई कारण नथी.[81]

कारण अने अकारणना विभागथी उत्पन्न थतो विभाग आ प्रमाणे छेः हस्तमां उत्पन्न थएलुं अने अवयवान्तरमांथी विभागने करतुं कर्म आकाशादि देशथी विभागोने आरंभे छे. आ विभाग ते कारणाकारण विभाग. जे दिशा प्रति कार्यनो आरंभ करवाने कर्म अभिमुख होय छे, तेनी अपेक्षा करीने (तेना तरफ) ते कार्याकार्यना विभागने आरंभे छे, जेम के हस्त अने आकाशना विभागथी शरीर अने आकाशनो विभाग छे. आ कंइ शरीरनी क्रियाथी थतो नथी, कारण के शरीर ते-समये निष्क्रिय छे. तेज प्रमाणे ते हस्तक्रियाथी पण थतो नथी, कारणके व्यधिकरण कर्म विभागनुं कर्ता होय ए वात अ-नुपपन्न छे; माटे पारिशेष्यथी कारणाकारणविभागना कारण-त्वनो अंगीकार करवो जोईए.[82]

पूर्वपक्षीः—तमे पूर्वे कह्युं के अंधकारादिमां भावत्व निषिद्ध करवामां आव्युं छे ते असंगत छे, कारण के ए वातमां चार प्रकारना विवादनो संभव छे. ते आ प्रमाणेः—

कुमारिल भट्टना अनुयायीओ अने वेदान्तीओ अंधकारने द्रव्य माने छे. श्रीधराचार्य माने छे के नील रूप आरोपित छे (अने तेथी अंधकार गुण छे); प्रभाकरना केटलाक अनुया-यीओ एम माने छे के ते आलोकज्ञाननो अभाव छे, अने नै-यायिकादि एम माने छे के ते आलोकनो अभाव छे.[83]

सिद्धान्ती —आ विवादनु समाधान आ प्रमाणे छे —

द्रव्यत्वपक्ष घटतो नथी, कारण के नीचेना विकल्पनु समाधान थतु नथी. अधकार जेने तमे द्रव्य कहो छो ते पृथिव्यादि द्रव्योमानु एक छे के अन्य छे ? ते पृथिव्यादि द्रव्योमानु एक नथी, कारण के जो तेम होय तो जेमा तेनो अतर्भाव थतो होय तेना सघळा गुण तमस्मा आववा जोईए. (पण तेम होय एवु जणातु नथी). ते पृथिव्यादिथी बहारनु द्रव्य पण नथी, कारणके ते निर्गुण छे तेथी ते द्रव्यज नथी तो पछी ते नवद्रव्यनी बहारनु द्रव्य होवानो तो सभवज क्याथी[??] कोई शका करके तमाल जेवु श्याम एम तमस् कहेवाय छे तो पछी ते निर्गुण शी रीते ? तो तेने कहेवानु के जेम आकाशनील छे एम जेवी रीते भ्रान्तिथी जणाय छे ते प्रमाणे अधकार पण जणाय छे माटे वृद्धना पक्षनो वध करवानी कई जरुर नथी[??] आथीज अधकार आरोपित पण नथी, अधिष्ठाननी प्रतीति वगर आरोप अयुक्त छे अने बाह्य प्रकाशरूप सहकारिरहित नेत्र रूपने आरोपित करवाने समर्थ नथी. वळी अधकारनी प्रतीति अचाक्षुप पण नथी, कारण के नेत्रनु अनुविधान अन्यथा सिद्ध नथी[??] वळी अभाव विधिप्रत्यय वडे वेध थवाने अयोग्य छे एम पण कहेवाय नहि, कारण के एम कहेता प्रलय, विनाश, अनवधान, इत्यादिमा व्यभिचार आवशे[??] वळी तमस् आलोकज्ञाननो अभाव छे एम पण कहेवाय नहि, कारणके अभावना प्रतियोगीने ग्रहण करनार इद्रिये करीने अभाव पण ग्राह्य होय छे, ए नियमथी ते मानस नथी[??] माटे आलोकाभाव तेज तमस्. अभावमा (चलनादि) भावधर्मनो अध्यारोप थईज शके नहि एम धारवु नहि, कारणके दु खाभावमा सुखत्वनो आरोप अने सयोगाभावमा विभागत्वनो आरोप आपणे जोईए छीए[??] आलोकाभाव घटादिना अभावनी पेठे रूपवत् पदार्थनो

अभाव होईने आलोकसापेक्षचक्षुर्जन्य ज्ञाननो विषय होई शके एम पण मानवु जोईए नहि, कारण के जेनु ग्रहण करवामा नेत्र जेनी अपेक्षा करे छे, तेना अभावनु ग्रहण करवामा पण ते तेनी अपेक्षा करे ए (जेना उपर तमे आधार राखो छो ते) न्यायथीज सिद्ध थाय छे के आलोकनु ग्रहण करवामा आलोकनी अपेक्षानो अभाव छे तो तेना (आलोकना) अभावनु ग्रहण करवामा पण ते अपेक्षानो अभाव होयजं अभावनी प्रतीति थवामा तेना अधिकरणनु ग्रहण आवश्यक छे एम पण कहेवाय नहि, कारण के अधिकरणग्रहण आवश्यक छे एम हमे अगीकार करता नथी, जो अगीकार करीए तो 'कोलाहल निवृत्त थयो छे' एम कहेवाथी थतु जे शब्दप्रध्वसनु प्रत्यक्ष ज्ञान ते सभवेज नहि, माटे अधिकरणग्रहण आवश्यक छे एम कहेवु अप्रमाण छे[१] आसर्वनु अभिसधान करावे भगवान् कणाद आप्रमाणे सूत्र बांधे छे 'द्रव्यगुणकर्मनिष्पत्तिवैधर्म्यादभावस्तमः' द्रव्य, गुण अने कर्मनी निष्पत्तिसाथे तेनु वैधर्म्य होवाथी तमस् अभाव छे. वळी प्रत्यक्षवेद्य होवाथी पण तमस् अभाव छे एम निरूपित कर्यु छे[३]

अभाव निषेधमुखप्रमाणे करीने गम्य होवाथी तेने सातमो ठराव्यो छे सक्षेपमा तेनु लक्षण आप्रमाणे छे "जेने समवायनथी अने जे समवाय नथी[४]" ते बे प्रकारनो छे, ससर्गाभाव अने अन्योन्याभाव. ससर्गाभाव त्रण प्रकारनो छे, प्रागभाव, प्रध्वसाभाव अने अत्यन्ताभाव प्रागभाव अनादि छे अने अनित्य (सान्त) छे[५] उत्पत्तिमान् अने अविनाशी प्रध्वसाभाव छे[६] पोतानो प्रतियोगी एज जेनो आश्रय छे ते अत्यन्ताभाव अत्यन्ताभावथी व्यतिरिक्त एवो अनवधि अभाव ते अन्योन्याभाव छे जो कोई कहेके अन्योन्याभाव एज

अत्यन्ताभाव तो ते राजमार्गमा भूलापडवा जेवुं छे, कारण के अन्योन्याभाव तादात्म्यप्रतियोगिक छे, जेम के घट पट नर्थी; अने अत्यन्ताभाव संसर्गप्रतियोगिक छे जेम के वायुमा रूपसंबंध नर्थी.[८८] आ अभाव पुरुषार्थने माटे उपयोगी नर्थी एम पण शंका थईशके नहि, कारणके दुःखनो अत्यन्तोच्छेद ए छे अपर पर्याय जेनो एवा निःश्रेयसरूप होवाथी ते परम पुरुषार्थ छे.[८९]

अक्षपाददर्शनं.

दुःखनो अत्यन्तोच्छेद छे लक्षण जेनुं एवुं निःश्रेयस तत्त्वज्ञानथी उत्पन्न थाय छे, एम जो के सर्वदर्शनमां समानतंत्र छे तो पण न्यायमां तेनुं (विशेषेकरीने) प्रतिपादन कर्युं छे. सूत्रकार कहे छे के, *प्रमाण प्रमेय इत्यादि तत्त्वना ज्ञानथी निःश्रेयसनी प्राप्ति थाय छे.* आ न्यायशास्त्रनुं प्रथम सूत्र छे. ते न्यायशास्त्रना पांच अध्याय छे, अने तेमांना दरेक अध्यायमां बे बे आन्हिक छे. प्रथमाध्यायना प्रथम आन्हिकमां भगवान् गौतम प्रमाणादि नवपदार्थना लक्षणनुं निरूपण करे छे; अने बीजा आन्हिकमां वादादि सात पदार्थनुं निरूपण करे छे; अने बीजा अध्यायना प्रथम आन्हिकमां संशयनुं परीक्षण तथा चार प्रमाणना अप्रामाण्यनी शंकानुं निराकरण करे छे, अने बीजा आन्हिकमां अर्थापत्ति विगेरेना अंतर्भावनुं निरूपण करे छे. तृतीय अध्यायना प्रथम आन्हिकमा आत्मा, शरीर, इंद्रिय अने तेना अर्थनुं परीक्षण तथा बीजा आन्हिकमां बुद्धि अने मननुं परीक्षण करे छे. चतुर्थ अध्यायना प्रथम आन्हिकमा प्रवृत्ति, दोष, प्रेत्यभाव, फल, दुःख अने अपवर्गनुं परीक्षण करे छे; अने बीजा आन्हिकमां दोषनां निमित्तोना तत्त्वनुं तथा अवयवी विगेरेनुं

निरूपण करे छे. पाचमा अध्यायना प्रथमान्हिकमां जातिना भेदोनु निरूपण तथा बीजा आन्हिकमा निग्रहस्थानना भेदोनुं निरूपण करे छे.

"मानने अधीन मेयनी सिद्धि छे. ए न्यायथी प्रमाणनो उद्देश प्रथमकरी तदनुसार लक्षण कहेवुं जोईए माटे प्रथम उद्देश करेला प्रमाणनु लक्षण पण प्रथम कहेवामा आवे छे. जे साधन अने आश्रयथी अन्यतिरिक्त होई प्रमाएकरीने व्याप्त छे ते प्रमाणँ. ए रीते लक्षण लेता तेमा प्रतितंत्रना सिद्धान्तोमां सिद्ध परमेश्वरना प्रामाण्यनो संग्रह थशे. सूत्रकार कहे छे के —' **मंत्र अने आयुर्वेदना प्रामाण्यनी पेठे तेनुं (वेदनुं) प्रामाण्य छे कारण के आप्तनुं प्रामाण्य छे**.' तेमज न्याय-समुद्रना पारने पामेला विश्वविख्यात कीर्तिवाळा उदयनाचार्य पण कुसुमाजलिना चतुर्थ स्तबकमा कहे छे के.—

मिति (यथार्थ ज्ञान) एटले सारीरीते परिच्छेद करवो ते जेने ते छे तेनामां प्रमातृता छे. तेना अयोगनो व्यवच्छेद ते गौतमना मत प्रमाणे प्रामाण्य छे.

जेना साक्षात्कारी, नित्ययोगी, अने परद्वारानपेक्ष एवा यथार्थ अनुभवमां सकल प्रस्तावि वस्तुओनो क्रम आवेलो छे, तथा दृष्टिनिमित्त क्षुद्र दोषथी उत्पन्न थएली शंकाओनां तुष जेमांथी उडी गयां छे, एवा शिव महारुं प्रमाण छे, शंकाना उदयथी कलंकित थएलां अन्यप्रमाणोनुं महारे शुं प्रयोजन छे ?

ते प्रमाण चार प्रकारनु छे; प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, अने शब्द. प्रमेयना बार प्रकार छे, आत्मा, शरीर, इंद्रिय, अर्थ, बुद्धि, मनस् प्रवृत्ति, दोष, प्रेत्यभाव, फल, दु:ख अने अपवर्ग. अनिश्चयात्मक ज्ञानते सशय, ते त्रण प्रकारनो छे, साधारण धर्मथी उत्पन्न थएलो, असाधारण धर्मथी उत्पन्न थएलो अने विप्रतिपत्तिथी

उत्पन्न थएलो. जेने लईने पुरुषो प्रवर्ते छे ते प्रयोजन; ते बे प्रकारनुं छे; दृष्ट अने अदृष्ट. व्याप्तिना संवेदननी भूमी ते दृष्टांत; ते बे प्रकारनुं छे; साधर्म्य अने वैधर्म्य. प्रमाणसिद्ध छे एम मानवामां आवतो अर्थ ते सिद्धान्त; ते चार प्रकारनो छे; सर्वतंत्र, प्रतितंत्र[8]; अधिकरण अने अभ्युपगम. परार्थानुमानना वाक्यनो एक देश ते अन्वय; ते पांच प्रकारनो छे; प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय अने निगमन[9]. व्याप्यनो आरोप थतां व्यापकनो आरोप थाय ते तर्क[10]. ते अगिआर प्रकारनो छे; व्याघात, आत्माश्रय, इतरेतराश्रय, चक्राश्रय, अनवस्था, प्रतिबंधी, कल्पनालाघव, कल्पनागौरव, उत्सर्ग, अपवाद अने वैजात्य[11]. यथार्थानुभव छे पर्याय जेनो एवी प्रमिति ते निर्णय; तेना चार प्रकार छे; साक्षात्कृति, अनुमिति, उपमिति, अने शाब्दी[12]. तत्त्वनो निर्णय ए छे फल जेनुं एवो जे कथाविशेष ते वाद. उभयसाधनयुक्त विजय इच्छनारनी कथा ते जल्प. स्वपक्षनी स्थापनारहित कथाविशेष ते वितंडा. वादी अने प्रतिवादीए पक्ष अने प्रतिपक्षनुं ग्रहण करवुं तेनुं नाम कथा. जेने हेतुरूपे लेवामां आव्यो छे पण जे असाधक छे ते हेत्वाभास[13]; ते पांच प्रकारनो छे; सव्यभिचार, विरुद्ध, प्रकरणसम, साध्यसम, अने अतीतकाल[14]. शब्दनी वृत्तिना व्यत्यये करीने प्रतिषेधनो हेतु ते छल; ते त्रण प्रकारनो छे. अभिधानव्यत्ययवृत्ति, तात्पर्यव्यत्ययवृत्ति, अने उपचार व्यत्ययवृत्ति[15].

पोतानाज मतनुं खंडन करे तेवो उत्तर ते जाति; तेना चोवीश प्रकार छे; साधर्म्य, वैधर्म्य, उत्कर्ष, अपकर्ष, वर्ण्य, अवर्ण्य, विकल्प, साध्य, प्राप्ति, अप्राप्ति, प्रसंग, प्रतिदृष्टान्त, अनुत्पत्ति, संशय, प्रकरण, अहेतु, अर्थापत्ति, विशेषापत्ति, उपलब्धि, अनुपलब्धि, नित्य, अनित्य, कार्य, अने सम. पराजयनुं निमित्त ते निग्रहस्थान; तेना बावीश भेद छे; प्रतिज्ञाहानि, प्रतिज्ञान्तर,

प्रतिज्ञाविरोध, प्रतिज्ञासंन्यास, हेत्वन्तर, अर्थान्तर, निरर्थक, अविज्ञातार्थक, अपार्थक, अप्राप्तकाल, न्यूनाधिक, पुनरुक्त, अननुभाषण, अज्ञान, अप्रतिभा, विक्षेप, मत, अनुज्ञा, पर्यनुयोज्य, उपेक्षण, निरनुयोज्य, अनुयोग, अपसिद्धान्त अने हेत्वाभास. आ सर्वना अंतर्गत विभाग छे ते ते शास्त्रमां स्पष्ट छे अने विस्तारना भयथी हमे अहीं आपता नथी.

पूर्वपक्षीः—आ शास्त्रमां प्रमाणादि सोळ पदार्थनुं प्रतिपादन करवामां आवे छे, तो तेने न्यायशास्त्र एवुं नाम शी रीते अपाय ?

सिद्धान्तीः—तमे कहो छो ते ठीक छे, तो पण विशेषताए करीने नाम अपाय छे ए न्यायथी परार्थानुमान छे अपर पर्याय जेनो एवो न्याय सकळ विद्यानो अनुग्राहक होवाथी तथा सर्व कर्मना अनुष्ठाननुं साधन होवाथी प्रधान छे, अने तेथी आ शास्त्रनुं 'न्याय' एवुं नाम अपीए छीएँ. सर्वज्ञनुं पण कहेवुं छे के आ परम न्याय छे; कारण के पूर्वपक्षीना आगळ आपणा मतनुं प्रतिपादन करवामां ते उपयोगी छे तेमज ते प्रवृत्तिनो हेतु पण छे. पक्षिलस्वामी पण कहे छे के पदार्थना प्रमाणादि विभागने करनार आ आन्वीक्षिकी विद्या छे, अने ते

सर्व विद्याओनो प्रदीप, सर्व कर्मनो उपाय, अने सर्व धर्मनो आश्रय छे अने विद्याओमां तेनी गणना थई छे.

पूर्वपक्षीः—तमे कह्युं के तत्त्वज्ञानथी निःश्रेयसनी प्राप्ति थाय छे, तो शुं तत्त्वज्ञान थतांज निःश्रेयस थाय छे ?

सिद्धान्तीः—ना, परंतु तत्त्वज्ञानथी दुःख, जन्म, प्रवृत्ति, दोष, अने मिथ्याज्ञान एओनो अनुक्रमे एकनो नाश थया पछी तेनी पूर्वना बीजानो एम उत्तरोत्तर नाश थाय छे. त्यां मिथ्याज्ञान एटले देहादि अनात्म वस्तुओमां आत्मबुद्धि.

तेना (देहादिमां रहेली आत्मबुद्धिना) पोताना अनुकूल पदार्थो उपर राग अने प्रतिकूल पदार्थ उपर द्वेष तथा मोह ए दोषो छे. वस्तुतः आत्माने अनुकूल प्रतिकूल कंई छे-ज नहि. रागादि दोष परस्पर अनुबंधी होवाथी मोहने पामेलो रागयुक्त थाय छे, अने रागयुक्त मोहने पामे छे, मोह पामेलो कोपयुक्त थाय छे, अने कोपयुक्त मोहने पामे छे. पछी आ दोषथी प्रेरित थयेलो प्राणी शरीरे करीने प्रतिषिद्ध एवां हिंसा आस्तेय आदि, वाणीए करीने असत्यादि, अने मनवडे करीने परद्रोहादि आचरे छे. आ पापरूप प्रवृत्ति अधर्मने लावे छे. शरीरे करीने दान पररक्षणआदि, वाणीए करीने हित सत्य आदि, अने मन वडे करीने अहिंसादिनो आचार मनुष्य करे छे; आ पुण्यरूप प्रवृत्ति धर्म उत्पन्न करे छे. आप्रकारनी उभयरूप प्रवृत्ति पोताने अनुरूप प्रशस्त वा निंदित जन्म अर्थात् शरीरादिनो पुनः प्रादुर्भाव करे छे. तेम थतां प्रतिकूल वेदनीयतावाळु वासनात्मक दुःख उत्पन्न थाय छे. आप्रकारना मिथ्याज्ञानथी दुःख सुधीना दोष अविच्छिन्न प्रवृत्तिवाळा छे, अने तेज जेने आपणे संसार कहीए छीए ते छे, अने ते घटीचक्रनी पेठे निरवधि अनुवर्त्तन करे छे. ज्यारे कोई उत्तम पुरुष पूर्वनां करेलां सुकृतना परिपाकने लीधे आचार्यना उपदेशथी 'आ सर्व दुःखनुं स्थान छे अने दुःखथी अनुषक्त छे' एम जुवे छे त्यारे ते सर्व हेय छे एम तेने जणाय छे. पछी तेनुं निर्वहन करनार जे अविद्यादि तेनी निवृत्ति करवानुं ते इच्छे छे. तेनी निवृत्तिनो उपाय तत्त्वज्ञान छे. पछी चार विद्यामां विभक्त प्रमेयनी भावना करनारने तत्त्वज्ञान जे सम्यग् दर्शनपदथी प्रसिद्ध छे ते थाय छे. तत्त्वज्ञानथी मिथ्याज्ञाननो नाश थाय छे. मिथ्याज्ञाननो नाश थतां दोषनो नाश थाय छे. दोषनो नाश थतां प्रवृत्तिनो नाश थाय छे. प्रवृत्तिनो नाश थतां जन्मनो नाश

थाय छे. अने जन्मनो नाश थतां अत्यंतिकी दुःखनीनिवृत्ति थाय छे. आ आत्यंतिकी दुःखनिवृत्ति ते अपवर्ग. निवृत्तिनुं आत्यंतिकत्व एटले निवृत्त जे दुःख तेना सजातीयनो ते स्थानमां पुनः अनुत्पाद. परमऋषिनुं सूत्र छे केः[१७]—

दुःख, जन्म, प्रवृत्ति, दोष अने मिथ्याज्ञाननो उत्तरोत्तर नाश थतां एकनी साथेना बीजाना अभावथी अपवर्ग प्राप्त थाय छे.

पूर्वपक्षी कहे छेः–तमे कह्युं ते तो खरु के दुःखनो अत्यन्तोच्छेद ते मोक्ष, पण ते तो कोणी उपरना गोळ जेवो छे (अप्राप्य छे) तो शा माटे ते जेम सिद्ध होय तेम तेनो व्यवहार करो छो?

सिद्धान्ती कहे छेः—तमे एम कहो नहि, कारण के सर्व मोक्षवादिओने अपवर्गदशामां आत्यंतिकी दुःखनिवृत्ति अभिमत छे अने तेथी हमारुं कहेवुं सर्वतंत्रसिद्धांन्तसिद्ध होवाथी राजमार्ग जेवुं छे.[१८] खरुं जोतां अप्रवृत्तने दुःख उत्पन्न थाय छे एम कोई प्रतिपादन करतु नथी. उदाहरणरूपे 'आत्मोच्छेद ते मोक्ष' ए माध्यामिक मतमां 'दुःखनो उच्छेद छे' एटली वात तो निर्विवाद छे. जो एम मानो के शरीरादिनी पेठे आत्मा पण दुःखनो हेतु होवाथी उच्छेद्य छे तो तेम मानवुं संगत नथी, कारण के नीचेनो विकल्प सहन थतो नथी. तमे आत्मा ज्ञानसंताननें कहो छो के तेथी व्यतिरिक्त कोई अन्य वस्तुने कहो छो? जो प्रथमनो पक्ष स्वीकारो तो हमारे कंइ वाधो नथी; अनुकूल आचरनार प्रति प्रतिकूल कोण आचरे? जो बीजो पक्ष स्वीकारोतो ते नित्य होवाथी निवृत्तिनुं विधान करवुं अशक्य छे; वळी प्रवृत्तिनी अनुपपत्ती ए वधारानुं दूषण छे, कारण के कोइ पण प्रेक्षावान् 'आत्मानी कामनाने माटे सर्व प्रिय छे' ए न्यायथी सर्वमां प्रियतम एवा आत्माना

समुच्छेदने माटे प्रवृत्ति करशेज नहि. वळी सर्व 'हुं मुक्त छुं' एवो व्यवहार पण करे छे.[१] 'धर्मनी निवृत्ति थतां निर्मल ज्ञाननो उदय ते महोदय' एविज्ञानवादीनुं मत मानवा जेवुं नथी, कारण के तेमां सामग्रीनो अभाव छे अने सामानाधिकरण्यनी अनुपपत्ति छे. जो कहेशोके चार भावनाओ ए मोक्षनुं अभीष्ट कारण होवाथी सामग्रीनो अभाव छे एम कहेवुं खोटुं छे तो हमे कहीशुं के ते क्षणभंग पक्ष प्रमाणे स्थिर अने एकाधार होवी असंभवित छे. तेथी भाग्या तुट्या आभ्यासनी पेठे प्रकर्षने पामती नथी अने तेथी स्फुट अभिज्ञानने उत्पन्न करवाने सशक्त नथी; अने सोपप्लवज्ञानसंतान ते बद्ध अने निरुपप्लवज्ञान संतान ते मुक्त एम लेतां जे बद्ध छे तेज मुक्त छे एवा प्रकारनुं सामानाधिकरण्य असंगत छे.[२]

'आवरणनी मुक्ति ते मुक्ति' ए जे जैननो अभिमत मार्ग ते पण निरर्गळ नथी. हमे जैनमतानुसारीने पूछीशुं के आवरण एटले शुं? जो कहेशो के धर्म, अधर्म, अने भ्रान्ति तो ते हमने अभीष्ट छे. पण जो कहेशोके देह एज आवरण अने तेनी निवृत्ति थतां पंजरमांथी मुक्त थएला पोपटनी पेठे आत्मानुं सतत ऊर्ध्वगमन ते मुक्ति तो हमे पूछीशुं के शुं आत्मा मूर्त छे के अमूर्त छे? जो मूर्त कहोतो ते निरवयव छे के सावयव छे? जो कहो के निरवयवने मूर्त छे तो 'निरवयव मूर्त परमाणु छे' ए परमाणुनुं लक्षण तेने लागु पडशे अने तेथी परमाणु धर्मोनी पेठे आत्माना धर्मोने पण अतीन्द्रिय थवाने प्रसग आवशे. जो सावयव छे एम कहेशो तो जे सावयव छे ते अनित्य छे ए प्रतिबंधना बलथी आत्मा अनित्य थतां काइ पण प्रतिबंध वगर कृतकर्मनो नाश अने अकृतनो अभ्यागम थशे. जो कहेशोके ते अमूर्त छे तो गमन अनुपपन्न छे कारण के चलनात्मक क्रियानो आधार मूर्त उपर छे.[३]

परतन्त्रता ए बध अने स्वतन्त्रता ते मोक्ष ए चार्वाक पक्षमा पण ' स्वातन्त्र्य एटले दु.खनिवृत्ति ' एम होय तो निर्विवाद छे. ' स्वातन्त्र्य एटले ऐश्वर्य ' एम होय तो कोइ पण प्रेक्षावान्ने अभिमत नथी, कारण के ऐश्वर्यमां अतिशय थवानो तथा सदृश थवानो धर्म छे (अने मोक्षमा वधवा घटवानो धर्म होवो जोइए नहिं[२२])

वळी प्रकृति अने पुरुष परस्पर अन्य छे अने प्रकृतिनो उपरम थता पुरुषनु स्वरूपे करीने अवस्थान ते मुक्ति छे एम माननार साख्यमतमा पण दु.खनो उच्छेद स्वीकारवामा आवे छे, परतु विवेकज्ञान पुरुषाश्रय छे के प्रकृत्याश्रय छे ए वात रही जाय छे. तेमा छे एम कहेवु युक्त नथी, कारण के पुरुष छे ते कूटस्थ छे अने विवेकज्ञान पुरुषाश्रय छे एम मानता पूर्वे ते अज्ञानयुक्त हतो एम मानवु पडे छे. तेमज विवेकज्ञान प्रकृत्याश्रय छे एम पण केवाय नहि, कारण के प्रकृति जड छे. वळी प्रकृति प्रवृत्तिस्वभावा छे के निवृत्तिस्वभावा छे ? प्रवृत्तिस्वभावा कहीए तो मोक्ष सभवे नहि, कारण के स्वभावनो नाश थाय नहि, जो निवृत्तिस्वभावा कहीए तो ससारनो तरतज अस्त थइ जायँ.

नित्यनिरतिशय सुखनी अभिव्यक्ति ते मुक्ति ए भट्ट सर्वज्ञादिना मतमा पण दु खनिवृत्तिनो स्वीकार करवामा आवे छेज; परतु नित्य सुखने माटे काइ प्रमाण नथी. श्रुतिप्रमाण छे एम कहोतो ते खोटु छे, कारण के योग्यानुपलब्धिथी बाधित विषयमा श्रुतिने अवकाश नथी, जो कहोके अवकाश छे तो पत्थर तरे छे ए वात पण मानवी जोईए.

जो कहोके सुखनी अभिव्यक्ति ते मुक्ति छे ए पक्षनो त्याग करी दु खनी निवृत्ति ते मुक्ति छे एम स्वीकार करवो ए अरोचकथी पीडातो माणस दूधनो त्याग करी घेंस उपर

प्रीति करे तेना जेवुं छे तो आ तमारुं कहेवुं नाटक करनारना जेवुं छे माटे हमे तेनी उपेक्षा करीए छीए; खरुं जोता सुख सातिशय, प्रत्यक्ष, अनेक विरोधथी पूर्ण अने तेना साधनोनी इच्छाथी परिक्लिष्ट होवाथी विषयुक्त मधुनी पेठे ते दुःख साथे नित्यसंबद्ध छे अने तेथी तेनो दुःखपक्षमां समावेश थाय छे.[२५]

पूर्वपक्षी.—पण आम मानवामां एकनुं अनुसंधान करवा जतां अन्यनी च्युति करवा जेवुं थाय छे, कारण के सुखने दुःखयुक्त मानी तेने तमे उच्छेद्य गणो छो. परंतु जेमां सुखनो उच्छेद छे एवो मोक्ष तो कोइने पण इष्ट नथी.[२६]

सिद्धान्तीः—एम मानवानी कंइ जरूर नथी, कारण के सुख साथे दुःख सर्वदा संयुक्त होवाथी तेनी प्राप्तिने मोक्ष ठरावयो ए सोनानी लालचे तपावेला लोखडना गोळानुं ग्रहण करवा जेवुं छे. न्यायोपार्जित विषयोमांज केटला सुखरूप खद्योत छे अने केटला दुःखरूप वादळां छे. तो अन्यायोपार्जित विषयोमां जे थशे तेनो तो मनमां विचार पण आवतो नथी. स्वानुभवनुं आच्छादन कर्या वगर आ वात जाण पुरुषोए जाणवी जोईए. माटे परिशेषथी 'परमेश्वरना अनुग्रहथी श्रवणादि क्रमे करीने आत्मतत्त्वनो साक्षात्कार करनार उत्तम पुरुषनी आत्यंतिकी दुःखनिवृत्ति ते मोक्ष' एम मानवुं ए निर्दोष छे.[२७]

पूर्वपक्षीः—ईश्वरना अस्तित्वनुं प्रमाण शुं? प्रत्यक्ष अनुमान के आगम? प्रत्यक्ष लेवाय नहि, कारण के ईश्वर रूपादिरहित होवाथी अतीन्द्रिय छे. अनुमान पण लेवाय नहि, कारण के तेनी व्याप्ति ठरावनार हेतुनो अभाव छे. आगम पण लेवाय नहि, कारण के नीचेनो विकल्प नडेः—शुं आगम नित्य ईश्वरनो बोध करे छे के अनित्य ईश्वरनो? नित्य कहो तो अपसिद्धांत थाय, अनित्य कहो तो परस्पराश्रय दोष आवे.

उपमानादिनो तो विचारज न थई शके, कारण के तेओनो विषय नियत छे. माटे ईश्वर शशशृंगवत् ठरे छे.[२८]

सिद्धान्ती:—आ तमारुं कहेवुं चतुर पुरुषोना चित्तमा काइ चमत्कार उत्पन्न करे एवुं नथी. (कारण के नीचेना अनुमानथी ईश्वरनुं अस्तित्व सिद्ध थाय छे.) आपणा विवादनो विषय पर्वतसमुद्रादि कर्तावाळा छे, कारण के ते कार्य छे; घटनी पेठे. आ हेतु असिद्ध छे नहि, कारण के पर्वत समुद्रादिनुं सावयवत्व होनाथी तेओनुं कार्यत्व सिद्ध करी शकाय छे.[२९]

पूर्वपक्षी.—पण सावयवत्व एटले शुं? अवयवसंयोगित्व—के अवयवसमवायित्व? जो अवयवसंयोगित्व कहो तो गगनादिमा व्यभिचार आवे; अवयवसमवायित्व कहो तो तंतुत्व वगेरेमां अनेकांतता थाय; माटे सावयवत्व अनुपपन्न छे.[३०]

सिद्धान्ती:—एम कहेशो नहि, कारण के 'सावयवत्व' एटले 'समवेतद्रव्यत्व' एम तमे बोलता बंध थई जाओ तेवी रीते हमाराथी कही शकाय छे.[३१] अथवा अवान्तर महत्त्वे करीने पण कार्यत्वनुं अनुमान करवुं सुगम छे.[३२] आ प्रमाणे जोता हमारो हेतु असिद्ध नथी एम सिद्ध थयुं.[३३] वळी हमारो हेतु विरुद्ध पण नथी, कारण के साध्यना विपर्ययनी व्याप्तिनो अभाव छे[३४]; ते अनैकान्तिक पण कहेवाय नहि, कारण के पक्षथी अन्यत्र तेनी वृत्ति जोवामा आवती नथी.[३५] ते कालात्ययोपदिष्ट (बाधित) पण कहेवाय नहि, कारण के बाधक-अनुपलब्ध छे.[३६] ते सत्प्रतिपक्ष छे एम पण कहेवाय नहि, कारण के प्रतिभटनु अदर्शन छे.[३७]

पूर्वपक्षी·—पण पर्वतादि अकर्तृक छे, शरीरथी अजन्य होवाथी गगनादिनी पेठे (आ प्रमाणे विरुद्ध अनुमान पण करी शकाय छे[३८]).

सिद्धान्ती:—जेम हरिणनुं बच्चुं भयंकर सिंहनी सामे टभुं रहेवाने अशक्त छे तेम आ तमारुं कहेवुं पण परीक्षामां उत्तरवाने अशक्त छे; कारण के अजन्यत्व ए पदज समर्थ छे तो शरीर पद व्यर्थ छे.[३१]

पूर्वपक्षी.—तो अजन्यत्वनेज साधन मानो.

सिद्धान्ती:—पण तेम थई शके नहि, कारण के ते असिद्ध छे.[३२] वळी हमारो हेतु सोपाधिक छे एवी जरा पण शंका संभवती नथी, कारण के अनुकूळ तर्कनो संभव छे. 'जो आ अकर्तृक होय तो ते कार्य पण न होवें.[३] ' ए तो निर्विवाद छे के आ लोकमां एवुं एक पण कार्य नथी के जे कारक वगेरेनी अवधारणा कर्या विना पोते उत्पन्न थाय; अने तेथी सर्व कोई अमुक कर्तावाळुं ठरे छे. कर्ता एटले जे इतर कारकथी अप्रयोज्य होईने सकळ कारकनो प्रयोक्ता छे अने जेने ज्ञान चिकीर्षा अने प्रयत्न छे ते. ए प्रमाणे कर्ता नथी एम लेतां तेना उपर आधार राखनार समस्तकारकनो पण अभाव थतां वगर कारणे कार्य उत्पन्न थवानो प्रसंग आवे अने ते महोटो प्रमाद कहेवाय.

शंकरकिंकर पण कहे छे के·—

ज्यारे साधन अनुकूळ तर्कथी युक्त होय त्यारे पक्षमां साध्यव्यापकतानो भंग थाय छे एम कही उपाधि धारी शकाय नहि.[४४]

'जो ईश्वर कर्ता होय तो ते शरीरी होय इत्यादि प्रतिकूळ तर्क पण करी शकाय' एम जो कोई कहे तो ईश्वरनी सिद्धि के असिद्धि थईए तो पण तेमां व्याघात आवशे[३५] उदयनाचार्य कहे छे के·—

जो आगमादिनुं प्रामाण्य होय तो बाधन (उपाधि)थी

तेनो निषेध थई शके नहि. जो आगमादिनो आभास होय तो सुप्रसिद्ध पक्षी आश्रयासिद्धि आवे.[४६]

बीजो कोइ विशेष विरोध (हमारा अनुमानमां) आवी शकतो नथी, कारण के ज्ञातत्व अने अज्ञातत्वना विकल्पथी ते दूर करी शकाय छे.[४७]

पूर्वपक्षीः—हवे ईश्वरनी जगत् निर्माण करवामां प्रवृत्ति त स्वार्थी छे के परार्थी छे.[४८]? वळी जो स्वार्थी कहो तो इष्ट प्राप्तिने माटे के अनिष्टना परिहारने माटे ? प्रथम पक्ष लेवाय नहि, कारण के ते प्राप्तसकलकाम होवाथी इष्टप्राप्ति अनुपपन्न ठरे, अने तेज प्रमाणे बीजो पक्ष लेवाय नहि. बीजो पक्ष (परार्थ) लईए तो प्रवृत्तिज अनुपपन्न ठरे छे कारण के पारकाने माटे प्रवृत्ति करनारने डाह्यो कोण कहे ? हवे कोइ कहे के करुणाथी प्रवृत्ति थवी उपपन्न छे तो तेने कहेवानुं के ईश्वरे बधा प्राणीओने सुखी उत्पन्न करवा जोईए. अने कोइने जरा पण दुःख होवुं जोईए नहि, नहि तो करुणामां विरोध आववानो, कारण के कारुण्य एटले स्वार्थना त्याग पूर्वक परदुःखना अपहरणनी इच्छा. माटे ईश्वरे जगत् कर्युं ते युक्त नथी.[४९]

भट्टाचार्य कहे छे केः—

प्रयोजन वगर मंदनी पण बुद्धि थाय नहि; धारो के जगत् तेणे उत्पन्न नथी कर्युं तो तेमां शुं जतुं रहेवानुं हतुं ?

सिद्धान्तीः—अरे नास्तिक शिरोमणे ! प्रथम तो तारां अदेखाईना पासवाळां नेत्र मीची जरा विचार कर. ईश्वरनी प्रवृत्ति करुणाथीज छे; स्वाभाविक रीतेज सुखमय सर्गनो प्रसंग संभवतो नथी, कारण के सृज्य प्राणीओनां सुकृत दुष्कृतना विपाकोथी वैषम्य उपपन्न छे, स्वातंत्र्यभंगनी पण शंका

करवो नहि, कारण के पोतानुं अंग पोताने व्यवधान करतुं नथी एवो न्याय छे अने एटलुंज नहि पण पोतानुं अंग पोतानुं निर्वाहक छे. वळी ईश्वरना स्वातंत्र्यने माटे 'रुद्र एकज छे ते बीजानी अपेक्षा करतो नथी' इत्यादि आगम पण प्रमाण छे. कोइ कहेशे के 'जो एम होय (अर्थात् आगमथी ईश्वर सिद्ध थाय) तो परस्पराश्रय दोषरूप व्याधिनुं समाधान करो' तो हमें कहीशुं के तेवी शंकाज उठती नथी, कारण के परस्पराश्रयनी शंका उत्पत्तिमां लावोछो के ज्ञप्तिमां? प्रथम पक्ष लेवाय नहि, कारण के आगमनी उत्पत्ति ईश्वराधीन लईए तो पण ईश्वर नित्य होवाथी तेनी उत्पत्ति उपपन्न नथी. बीजो पक्ष लेवाय नहि, कारण के ईश्वरनुं ज्ञान आगमाधीन छे तो पण आगमनो अन्यथी अधिगम थाय छे. आगमना अनित्यत्वना ज्ञानमां पण शंका थई शके नहि, कारण के आगमनुं अनित्यत्व तीव्रादिथी युक्त पुरुषोने (योगीओने) सुज्ञात छे."

माटे ईश्वरप्रसाद उत्पन्न करनार धर्मना अनुष्ठानथी तेनी सिद्धि थतां अभिमत अर्थ (मोक्ष) नी सिद्धि थाय छे. आ प्रमाणे सर्व स्पष्ट छे.

•

जैमिनिदर्शन.

जो कोइ पूछे के धर्मना अनुष्ठानथी अभिमत धर्म (पुण्य) नी सिद्धि थाय छे एम तो आप वारवार कहो छो पण धर्मनु लक्षण अथवा प्रमाण शु ? तो तेने कहेवानु के ध्यान राखीने साभळो. आ प्रश्ननो उत्तर पूर्वमीमासामा जैमिनि मुनिए आप्यो छे. आ मीमासाना बार अध्याय छे. प्रथमाध्यायमा विधि, अर्थवाद, मत्र, स्मृति इत्यादि नामथी ओळखाता शब्दसमूहनु प्रामाण्य प्रतिपादन कर्यु छे[१] बीजा अध्यायमा कर्मभेदनो उपोद्घात, प्रमाणापवाद, प्रयोगभेद इत्यादिरूप अर्थनु प्रतिपादन कर्यु छे[२] त्रीजा अध्यायमा श्रुति, लिंग, वाक्य तथा तद्गत विरोध, प्रतिपत्ति कर्म, अनारभ्याधीत, अनेक प्रधानविषयना उपकारक प्रयाजादि अने याजमान एओनु चिंतन करवामा आव्यु छे[३] चोथा अध्यायमा प्रधानप्रयोजकत्व, अप्रधानप्रयोजकत्व, जुहूपर्णतादिफल अने राजसूय यज्ञना उतरता अग जे अक्षद्यूतादि ए सर्वनो विचार कर्यो छे[४] पाचमा अध्यायमा श्रुत्यादिक्रम, तेओनो विशेष, कर्मनु वर्धन अने अवर्धन, अने (श्रुतिओना) प्राबल्य दौर्बल्यनो विचार ए आवे

छे.[5] छठा अध्यायमां अधिकारी, तेना धर्म, यज्ञमां वापरवानां द्रव्य, तेओना अभावे ठराववामां आवता प्रतिनिधि, अर्थलोपन, प्रायश्चित्त, सत्र, दान करवायोग्य पदार्थ अने अग्नि ए सर्वनो विचार करवामां आवे छे.[6] सातमा अध्यायमां प्रत्यक्ष वचनथी अने नामलिंगथी एक कर्मनो बीजा कर्ममां अतिदेश थाय तेनो विचार आवे छे.[7] आठमा अध्यायमां स्पष्ट, अस्पष्ट अने प्रबललिंगथी थतो अतिदेश तथा तेना अपवादनो विचार आवे छे.[8] नवमा अध्यायमां ऊह विचारनो आरंभ, सामोह, अने मंत्रोह, अने तत्संबंधी प्रासंगिक विचारोनो समावेश थाय छे.[9] दशमा अध्यायमां बाध हेतु जे द्वारलोप तथा तेनो विस्तार, तेओना कारणकार्यना एकत्वनो विचार, ग्रहादिना बलिनो विचार, केटलांक साम, प्रकीर्ण अने नञ् अर्थनो विचार एआवे छे.[10] अगीआरमा अध्यायमां तंत्रोपोद्‌घात, तंत्रावाप, तंत्रप्रपंचन, अने आवापप्रपंचन ए सर्वनो विचार आवे छे.[11] बारमा अध्यायमां प्रसंग, तंत्र, समुच्चय, अने विकल्पनो विचार आवे छे.[12]

आ शास्त्रमां

अथातो धर्मजिज्ञासा.

(हवे ते माटे धर्मना ज्ञाननी इच्छा करवी जोईए)

ए पूर्वमीमांसानो आरंभ करावनार प्रथम अधिकरण छे. परीक्षक पुरुषो कहेछे के अधिकरण पंचअवयवयुक्त होवुं जोईए. आ पंच अवयव ते विषय, संशय, पूर्वपक्ष, सिद्धान्त अने संगति छे. त्यां आचार्यमतने अनुसार अधिकरणनुं निरूपण करवामां आवे छे. **स्वाध्यायोऽध्येतव्यः** (पोताना पाठ (वेद) नुं अध्ययन करवुं जोईए) ए वाक्य विषय छे. 'चोदनालक्षण अर्थ ते धर्म ' ए वाक्यथी आरभी ' अन्वाहार्यसा ते जणाय छे तेथी ' ए सूत्र सुधीना जैमिनिना धर्मशास्त्रनो

आरंभ करवो जोईए के नहि ए संशय छे. अध्ययन विधिनु फल अदृष्ट लईए के दृष्ट लईए तोपण जैमिनिशास्त्र अनारभ्य ठरे छे ए पूर्वपक्ष छे. जो वादी एम कहे के अध्ययनविधिनु अर्थना अवबोधथी विलक्षण दृष्टफल अनुपपन्न होवाथी अर्थना अवबोधने माटेज अध्ययनविधि छे तो तेने पूछवानु के ए वाक्यथी अत्यन्त अप्राप्त अध्ययननु विधान थाय छे के आघातवत् पाक्षिक अध्ययननो नियम करवामा आवे छे ? प्रथमपक्ष स्वीकाराय नहि, कारणके विवादनो विषय जे वेदाध्ययन ते अर्थना ज्ञाननो हेतु छे, कारणके भारतादिना अध्ययननी पेठे ते अध्ययन छे, ए प्रकारना अनुमानथी विधिवाक्यनी अपेक्षा वगर पण ते प्राप्त छे. ठीक त्यारे बीजो पक्ष लईए. नख वडे फोलवाथी चोखा नीकळवानो संभव छे तोपण खांडीने काढेला चोखा वडेज पिष्टपुरोडाशादि करवाथी अवान्तर अपूर्वद्वारा दर्श अने पूर्णमास परम अपूर्वने उत्पन्न करे छे, बीजे कोइ प्रकारे नहि. अने तेथी अपूर्व अवघातनो नियम हेतु छे, परंतु प्रकृतविषयमा लखेला पाठथी उत्पन्न थएला अथवा अध्ययनथी उत्पन्न थएला अर्थबोध वडे यज्ञना अनुष्ठाननी सिद्धि थाय छे माटे अध्ययनना नियमनो हेतु छेज नहि. माटे अर्थज्ञाननो हेतु जे आ शास्त्र तेनो विधि नथीज. हवे जो एम पूछो के ' वेदनु अध्ययन करवु जोईए ' ए श्रुतिना विधिवाक्यनु शु करवु तो हमे कहीए छीए के ए वाक्यथी मात्र वेदना अक्षरनु ग्रहण करवु एवु विधान थाय छे अने स्वर्ग तेनु फळ छे, कारणके विश्वजित् न्याये करीने ' स्वर्ग ' एम श्रुतिमा जणाव्यु नथी तोपण तेनी कल्पना करवी शक्य छे जेमके ' ते स्वर्ग छे, कारण के ते सर्वने लागु पडे छे ' ए सूत्रथी एम सिद्ध थाय छे के जे ओने श्रुतिमा अधिकार नथी तेओ पण विश्वजित् यज्ञना अधि-

कारी छे अने युक्तिथी एम सिद्ध करेछे के तेनु फल स्वर्गविशेष छे तेज प्रमाणे अध्ययनमा पण आपणे लई शकीए.

कह्यु छे के ——

दृष्टफलनो लाभ तो विधिनी अपेक्षा वगर पण थाय छे, माटे ते (दृष्टफल) मां ते (विधि) नी अर्थता नथी; विधिना सामर्थ्यथी विश्वजित् न्याये करीने स्वर्गनी कल्पना करवी जोईए.

आ प्रमाणे अर्थ लेता, 'वेदनु अध्ययन करीने स्नान करवु' ए स्मृतिवाक्य पण अनुगृहीत थाय छे, कारण के आ वाक्यमा वेदना अध्ययन अने समावर्तन वच्चे व्यवधान नथी एम सूचना छे. तमारा मत प्रमाणे तो वेदनु अध्ययन कर्यु होय तो पण धर्मना विचारने माटे गुरुने घेर रहेवु जोईए, अने तेम थता 'व्यवधान न जोईए' ए वचनने बाध आवे छे, माटे जैमिनिना विचारशास्त्र माटे विधिवाक्य न होवाथी, वेदनो पाठमात्र करता स्वर्गनी सिद्धि थाय छे, अने समावर्तनशास्त्रनो अनुग्रह थाय छे, तेथी धर्मविचारशास्त्रनो आरभ न करवो जोईए ए रीते पूर्वपक्षनो सक्षेप छे'[२]

सिद्धान्त आ प्रमाणे छे ——

अन्यथी प्राप्त होवाथी आ स्थळे विधि प्राप्त थतो नथी तो भले न थाओ, परतु बीजो जे नियमपक्ष ते तो इहाथमा यत्न एइने आवे तो पण खसी शके तेम नथी. ते आ प्रमाणे —— स्वाध्यायोऽध्येतव्य ए वाक्यमा तव्य प्रत्यय प्रेरणा छे अपरपर्याय जेनो एवी पुरुषप्रवृत्तिरूप अर्थभावनाथी समजाती अभिधाभावनानी प्रतीति करावे छे, अने ते (अभिधाभावना) अर्थभावनासहगत अनुबद्ध भाव्यनी आकाक्षा करे छे. तेमा वइ समानपद (अध्येतव्य) थी उत्पन्न थता अध्ययनभाव्यनो

समावेश थतो नथी, कारण के अध्ययन शब्दथी बोधित थतो *वाणी अने मननो व्यापार के जे पोताना शीखेलापाठनु उच्चा*रण मात्र छे अने जे क्लेशाग्रह छे तेने भाव्य थवानो संभव नथी. तेमज आखा पदथी सूचित थतो स्वाध्याय पण भाव्य थई शकतो नथी, कारण के स्वाध्यायशब्दवाच्य अक्षरसमूह (वेद) नित्य अने विभु होवाथी तेमां उत्पत्त्यादि चार क्रियाफलनो असंभव छे, माटे विधिवाक्यना सामर्थ्यथी प्राप्त थतो अवबोध एज भाव्य छे एम अवशिष्ट रह्यु. ' जे अर्थी छे, समर्थ छे अने विद्वान् छे ते अधिकारी छे ' ए न्यायथी दर्श अने पूर्णमासादि यज्ञना विषयना ज्ञाननी इच्छा करनार पुरुषो तेना तत्त्वार्थना ज्ञानने माटे पोतानु अध्ययन योजे छे. वळी अध्ययनना विधिथी लखेला पाठो विगेरेनुं व्यावर्तन थाय छे, माटे ते उपरथी एवो अर्थ नीकळे छे स्वाध्यायथी अध्ययन सस्कारने पामे छे. (गुरुमुखथी भणता भणेलो पाठ पवित्र थाय छे.) वळी जेम दर्शपूर्णमासादिजन्य परम अपूर्व अवघातादिजन्य अवान्तर अपूर्वने कल्पे छे तेज प्रमाणे समस्त यज्ञजन्य सर्व अपूर्व, ज्ञाननु साधन जे अध्ययन तेना नियमथी उत्पन्न थता अपूर्वने कल्पे छे. नियमनु फल अदृष्ट छे एम अंगीकार करो तो श्रुतिमानो विधिपण निष्फळ थशे. विश्वजित् न्याये करीने स्वर्गना फलनी कल्पना पण करी शकाय नहि, कारणके अर्थबोध ए दृष्टफल छे तो फलान्तरनी कल्पना करवी अयोग्य छे.[४]

कह्यु छे के —

ज्यां दृष्टफल लभ्यमान होय त्यां अदृष्टफलनी *कल्पना करवी, परंतु विधि नियमना अर्थमां होवाथी ते* **निरर्थक गणाय नहि.**

हवे कोई कहेशे के मात्र एकला वेदनु अध्ययन करना-

रने अर्थनो अवबोध थतो नथी, परंतु सांग वेदनुं अध्ययन करनारने अर्थनुं ज्ञान थवानो संभव छे, अने तेथी विचारशास्त्र निष्फळ ठरे छे, तो तेने कहेवानुं के आ प्रमाणे मानवुं अयथार्थ छे, कारण के एकला बोधनो संभव होय तो पण निर्णय तो विचारने अधीन छे. जेम के 'चोपडेली शर्करा आपे छे' ए वाक्यमां घृत वडे चोपडेली तैलादिथी चोपडेली नहि ए प्रकारनो अर्थनिर्णय, व्याकरण निगम के निरुक्तथी थतो नथी परंतु 'ते घी छे' ए वाक्यशेषथीज विचारशास्त्रवडे अर्थनिर्णय थाय छे. माटे विशारदशास्त्रनो विधि सिद्ध थाय छे. वळी 'वेदनुं अध्ययन करीने स्नान करवुं' ए वाक्य के जे गुरुने घेरथी पाछावळवानुं जणावे छे अने जे व्यवधाननुं प्रतिबंधक छे तेने आथी बाधआवे छे एम पण मानवुं जोईए नहि, कारण के स्नान करीने भोजन करे छे ए वाक्यनी पेठे पूर्व कार्य अने अपर कार्यनो एकज कर्ता छे एम ए वाक्य जणावे छे अने तेथी करीने अध्ययन अने समावर्तन वच्चे कंइ अंतर न होवुं जोईए सम सिद्ध थतुं नथी; माटे विधिना सामर्थ्यथीज सहस्र अधिकरण वाळा पूर्वमीमांसाशास्त्रनुं अध्ययन आरंभवुं जोईए[६]

आ अधिकरण शास्त्र साथे उपोद्घात रूपे संबंध धरावे छे. कह्युं छे केः—

प्राकृत विषयने सिद्ध करवानुं चिंतन ते उपोद्घात कहेवाय छे."

हवे गुरु (प्रभाकर) मतानुसार आ अधिरणनो उपन्यास करीए छीए.

'अष्टवर्षं ब्राह्मणमुपनयीत तमध्यापयीत' (आठ *वर्षना ब्राह्मणने उपनयन आपीने तेने भणाववो जोईए)* आ प्रकारनुं अध्यापन नियोगनो विषय छे एम जणाय छे. नियो-

ग नियोज्यनी अपेक्षा करे छे. हवे आ स्थळे नियोज्य कयो तो तेनो उत्तर ए छे के आचार्यत्वनी इच्छा करनार नियोज्य छे कारण के '**समाननोत्संजनाचार्यकरणज्ञानभृतिविगणनव्ययेषुनियः**' (१।३।३६) ए प्रकारना पाणिनिना अनुशासने करीने नयति (नी) धातुना आत्मनेपदनु विधान आचार्यकरणमा थाय छे तेथी उपनयनमा जे नियोज्य छे तेज अध्यापनमा छे कारण के उपनयन अने अध्यापन ए बने नो एकज नियोग छे अने तेथीज मनुमुनि कहे छे के —

जे द्विज शिष्यने उपनयन आपीने अंग तथा रहस्य सहित वेद भणावे छे तेने आचार्य कहे छे.

हवे आचार्य कर्तृक अध्यापन शिष्यकर्तृक अध्ययन विना सिद्ध थतुं नथी तेथी अध्यापननो विधि होवाथी ज अध्ययनानुष्ठान सिद्ध थाय छे, कारण के प्रयोज्यना व्यापार वगर प्रयोजकना व्यापारनो निर्वाह थतो नथी. हवे जो तमे पूछो के आ प्रमाणे लेता 'वेदोऽध्येतव्य' ए वाक्यनु विधित्व सिद्ध थशे नहि, तो हमे कहीए छीए के भले नासिद्ध थाय, तेमा हमने शी हानि छे? कारण के पृथक् अध्ययन विधिने स्वीकारवा माटे प्रयोजन नथी, अने नित्यअनुवादथी छे एम लेता पण तेनु विधित्व उपपन्न छे तेथी अध्ययनने माटे विधि छे एम लईने जे पूर्वपक्ष अने सिद्धान्त प्रथम जणाव्या छे ते (आविचारने अनुकूळ आने एवी) बीजी रीते बतलाववा जोईए[८]

विचारशास्त्रने माटे विधि नथी माटे तेनो आरभ न करवो जोईए ए सिद्धान्त छे. त्या विधि छे एम कहेनार सिध्दान्तिने पूर्वपक्षी कहे छे के कहो के अध्यापन विधिमा शिष्यने अर्थनो बोध थवो एम पण सूचवाय छे के तेणे पाठमात्र करवो एम सूचवाय छे? प्रथम पक्ष लेवाशे नहि, कारण के अर्थना अवबोध वगर पण अध्यापननी सिध्दि छे. (जो तेम न होय

तो शिष्यना मूर्खत्वने लीधे तेने बोध न थाय माटे ते अध्यापन पण न गणाय.) बीजो पक्ष पण न लेवाय, कारण के पाठ मात्र लेतां विचारना विषयनो अने प्रयोजननो असंभव छे, कारण के मात्र उपर उपरथी अने अपूर्ण रूपे जोतां संदेहवाळो जणातो अर्थ विचारशास्त्रनो विषय छे, अने एम छे तो ज्यां अर्थनुं ज्ञानज नथी त्यां संदेहनी तो वात ज शी करवी अने विचारनुं फल जे निर्णय तेनी आशा तो दूरज रहेवानी. वळी 'जे असंदिग्ध अने उपयोगी छे ते डाह्या माणसोने प्राप्त करवानी इच्छानो विषय छे, जेम के मन अने इन्द्रिय साथे संनिकर्षमां आवेलो अजवाळामां रहेलो घट' ए न्यायथी विषय अने प्रयोजनना असंभवथी विचार शास्त्रनो आरंभ न करवो जोईए एम पूर्वपक्ष छे.[१९]

सिद्धान्ती:—भले हमे स्वीकारीए छीए के अर्थावबोध ए अध्यापननुं प्रयोजन छे एम न लेशो तो पण अंगसहित वेदने भणनार पद अने पदार्थनी संगति जाणनार पुरुष पौरुषेय प्रबंधमां जेम अर्थज्ञानने पामे छे तेम वेदमां पण पामे छेज.[२०]

पूर्वपक्षी:—जेम 'विष खा' ए वाक्यनो प्रतीत थतो अर्थ ते विवक्षित अर्थ नथी, कारण के 'तेने घेर खाईश नहि' ए प्रकारे भोजननो प्रतिषेध ए माताना वाक्यनो विषय छे, ते प्रमाणे वेदनो अर्थ मात्र विवक्षित अर्थने जणावतो नथी तेथी मीमांसाना अध्ययनमां जे विषयादि अभावरूप पूर्वनो दोष छे ते पाछो आवे छे.[२१]

सिध्दान्ती:—एम कहेवुं खोटुं छे, कारण के तेमां *दृष्टान्त अने दार्ष्टान्तना वैषम्यनो संभव छे. विषभोजननुं* वाक्य आप्त वाक्य छे अने तेथी मुख्यार्थ लेता बाध आवे छे;

माटे ते विवक्षित नथी एम जणाय छे परंतु अपौरुषेय जे वेद तेमां विवक्षित अर्थनी प्रतीति शाथी न थाय? अने वेदना विवक्षित अर्थमा जे जे पुरुषने संदेह थाय ते ते विचारशास्त्रनो विषय थशे अने तेनो निर्णय ते प्रयोजन थशे माटे अध्ययनना विधिमां प्रयुक्त थएला अध्ययने करी प्राप्त थएला अर्थने माटे विचार करवो ए योग्य होवाथी विचारशास्त्र विधिअनुसार छे माटे तेनो आरंभ करवो जोईए ए रीते सिध्दान्तसग्रह छे.[२२]

न्यायवादी.—ठीक, एम लईए, परंतु वेद अपौरुपेय छे एम शी रीते कहो छो? तेने प्रतिपादन करवाने प्रमाण नथी तो एम शा माटे मानो छो के वेद अपौरुषेय छे?'संप्रदाय (लोकवार्ता) अविच्छिन्न होवा साथे तेना कर्तानुं स्मरण नथी माटे आत्मानी पेठे' ए अनुमान जो तमे स्वीकारो तो हमे कहीशुं के आ अनुमानमद छे, कारण के ते विशेषणो सिद्ध नथी. वेद पौरुषेय छे एम माननारा प्रलय वखते संप्रदायनो विच्छेद छे एम स्वीकारे छे. वळी कर्तानुं स्मरण नथी एटले शुं? कर्ता प्रतीयमान नथी के स्मरणगोचर नथी? प्रथम पक्ष लेवाशे नहि, कारण के ईश्वर कर्ता छे एम प्रमाणथी सिद्ध थाय छे एम हमारुं मानवुं छे, बीजो पक्ष लेता तेमा आ प्रमाणे विकल्प आवशे. एकने कर्तानुं स्मरण नथी के सर्वने नथी? जो कहो के एकने नथी तो ' योधर्मशिळो जितमानरोपः ' ए मुक्तना वर्णनरूप वाक्यमा व्यभिचार थशे. (अर्थात् अमुक एक माणसना स्मरणमा आ श्लोकने कर्ता नथी माटे ते पण अकर्तृक थशे.) वळी बीजो पक्ष पण लेवाशे नहि, कारण के सर्वने अस्मरण छे ए वात जे पुरुष सर्वज्ञ नथी तेने दुर्ज्ञात छे. (असर्वज्ञ मनुष्यथी एम पण कहेवाय नहि के सर्वने तेना कर्तानुं स्मरण नथी.) वळी वेद पौरुषेय छे तेने माटे प्रमाण पण छे. 'वेद-

वाक्य पौरुषेय छे, वाक्य होवाथी, कालिदासादिनां वाक्यनी पेठे.' 'वेद वाक्य आप्तप्रणीत छे, कारण के ते प्रमाण होवासाथे वाक्य छे, मन्वादिनां वाक्यनी पेठे.[२३]'

मीमांसक:—

सर्व वेदाध्ययननी पूर्वे गुरुनुं वेदाध्ययन होवुं जोईए, कारण के आधुनिक वेदाध्ययन अने पूर्वनुं वेदाध्ययन ए उभयनी वच्चे सामान्य रहेलुं छे.

हवे हमे कहीशुं के आ अनुमानने आधारे तमे जे वेदने पौरुषेय कहोछो तेनु खंडन करी हमे तेने नित्य ठरावीए छीए.[२४]

नैयायिक:—आ अनुमान पण प्रमाणकोटिमा प्रवेश करी शकतुं नथी, कारण के,

सर्व भारतना अध्ययननी पूर्वे गुरुनुं भारताध्ययन होवुं जोईए, कारण के आधुनिक भारताध्ययनना जेवुं सार्वकालिक भारताध्ययन होवुं जोईए.

हवे आ अनुमानथी जेम भारतने नित्य के अपौरुषेय ठराववुं अयोग्य छे तेम तमारा अनुमानथी पण छे.[२५]

मीमांसक:—पण भारतना संबंधमा तो व्यास कर्ता छे एम स्मरण थाय छे, कह्यु छे के:—

महाभारतनो कर्ता पुंडरीकाक्षथी अन्य कयो पुरुष होई शके ?

नैयायिक:—आ तमारु मानवुं असार छे, कारण के 'तेमाथी ऋक् अने साम थया, तेमाथी छंद थया तेमांथी यजुस् थयो.' इत्यादि पुरुषसूक्तना मंत्रोमां वेद सकर्तृक छे एम प्रतिपादन कर्यु छे. वळी बीजुं अनुमान पण हमारा लाभमा छे; ते आ प्रमाणे:—

जे आपणा जेवानी बाह्येंद्रियथी ग्राह्य छे ते अनित्य छे, घटनी पेठे; शब्द बाह्येंद्रिय ग्राह्य छे, माटे ते अनित्य छे.[२६]

मीमासकः—परंतु आ तमारुं अनुमान ' आ तेज 'ग' कार छे ' ए प्रकारना प्रत्यभिज्ञाप्रमाणथी खंडित थाय छे.[२७]

नैयायिकः—आ तमारुं कहेवुं घणुंज तुच्छ छे, कारण के तोडी नाख्या पछी फरीथी उत्पन्न थएला केश के चूंटी लीधा पछी पाछा आवेलां पुष्पना संबंधमां जेम जोवामां आवे छे तेम प्रत्यभिज्ञानो विषय सामान्य छे अने तेथी ते (प्रत्यभिज्ञा प्रमाण) हमारा अनुमाननुं बाधक नथी.[२८]

मीमांसकः—परमेश्वरने तालु आदिस्थान न होवाथी ते स्पष्ट वर्णोच्चार करे ए वार्ता असंभवित छे तो पछी ते वेदनो कर्ता शी रीते होई शके ?

नैयायिक—आ तमारुं कहेवुं ठीक नथी, कारण के स्वभावथी तो ते अशरीर छे तो पण भक्त उपर अनुग्रह करवा माटे ते लीला विग्रह धारण करे छे ए वात संभावित छे. माटे वेद अपौरुषेय छे ए वाचोयुक्ति युक्त नथी.

हवे आ सर्वनुं मीमासको आ प्रमाणे समाधान करे छे.

मीमासक.—जे सिद्ध करवानुं पौरुषेयत्व तमे कहो छो तेनो अर्थ शु ? आपणाथी प्रतिदिन उच्चाराता वेदनी पेठे मात्र पुरुषथी उत्पन्नत्व, अथवा तो जेम आपणे कोई प्रबंधनी रचना करीए छीए तेम अन्य प्रमाणने आधारे अर्थ ग्रहण करीने तेने प्रकाशवाने माटे करेलुं रचितत्व ? जो प्रथम पक्ष (पौरुषेयत्व-उत्पन्नत्व) लो तो तमारे अने हमारे कंइ विरोध नथी, (कारण के उच्चारणने तो हमे पण अनित्य मानीए छीए;) हवे जो तमे बीजो पक्ष लो तो हमे पूछीशुं के ते तमे अनुमानना बळथी ठरावो छो के आगमना बळथी ? जो अनुमानना बळथी ठरा-

थता हो तो मालतीमाधवादि कल्पित कथाओनां वाक्योमां व्यभिचार आवशे. (कारण के ते जो के प्रमाण नथी तोपण वेदनी पेठे प्रमाण ठरी जशे.) हवे जो तमे ' प्रमाणत्व होईने ' एटलु (रचितत्वसाथे) वधारो तोपण तेथी विपश्चित् पुरुषना मनने संतोष थशे नहि, कारण के ' अन्य प्रमाणथी अगोचर अर्थनुं प्रतिपादन करनार वाक्य ते वेदवाक्य ' एम मानवामां आवे छे. हवे तेने अन्य प्रमाणथी गोचर अर्थनु प्रतिपादक मानता ' म्हारी माता वन्ध्या छे ' एम कहेवामा जेवो व्याघात आवेछे तेवो *व्याघात आवशे*. वळी परमेश्वर *लीलाविग्रह* धारण करे छे एम मानीए तोपण तेथी एम सिद्ध नहि थई शके के ते अतीन्द्रिय अर्थनुं ग्रहण करी शकशे, कारण के देशकाल अने स्वभावे करीने विप्रकृष्ट थएला ते अर्थनुं ग्रहण करवाने तेनीपासे कंइ साधन हशे नहि. तेना नेत्र आदि तेवा प्रकारनी प्रतीति उत्पन्न करवाने शक्तिमान् छे एम पण मानवु नहि, कारण के आपणे दृष्टने अनुसारे कल्पना करीए छीए.[१] वेदनो कर्ता सर्वज्ञ छे ए मतनु निराकरण करती वखते गुरु (प्रभाकर) कहे छे के.—

ज्यां ज्यां आपणे कोइ प्रकारनो अतिशय जोईए छीए त्यां त्यां ते पोताना अर्थनुं अतिलंघन कर्या वगरज प्रवर्ते छे. बहुज आघेनो अथवा अतिसूक्ष्मपदार्थ जोवारूप अतिशय नेत्रमां होई शके पण श्रोत्रनो विषय रूप थई शके नहि.[१]

वळी रचितत्व आगमने आधारे पण सिद्ध करी शकाय नहि, कारण के तेन प्रोक्तम् ए पाणिनिनु अनुशासन जाग्रत् छे तो पण *काठक, कालाप तैत्तिरीय* इत्यादि शब्दो कठ, कलापी इत्यादि अध्ययनप्रवर्तक पुरुषोने लागु पाडवामा आवे छे,

अने तेज प्रमाणे 'तेमांथी ऋग् उत्पन्न थयो' ए वाक्य पण संप्रदायप्रवर्तकनेज लागु पाडवुं जोईए[31]

वळी अनुमान (जो कोइ होय तो)ना बळथी शब्द अनित्य छे एम सिद्ध थई शकेज नहि, कारण के (पूर्वे कह्युं ते प्रमाणे) प्रत्यभिज्ञाने विरोध आवे छे. तमे कहेशो के 'पूर्वेनो गकार अने आ गकार एक नथी तो पण उभयमां सामान्य होवाथी ते एक जेवा लागे छे' तो ते कहेवुं पण युक्तिपुरःसर नथी, कारण के हमे आ प्रमाणे पूछीशुं:—तमे जे उभयमां सामान्य होवानुं कहो छो ते कोइ बलवान् बाधकने आधारे कहो छो के कोइ कोइ वार व्यभिचार जोवामां आवे छे तेने आधारे कहो छो ? जो व्यभिचार जोवामां आवे छे तेने आधारे कहेता हो तो तेना संबंधमां हमे वेदने स्वतःप्रमाण माननारा मीमांसको आप्रमाणे कहीशुं.

(निश्चयनुं) बाधन अज्ञात होय तोपण जे कोइ मोहथी तेने धारी ले ते संशयात्मा पुरुष सर्व व्यवहारने विषे विनाशने पामे छे.[32]

नैयायिकः—पण आ प्रत्यभिज्ञाननो विषय गत्वादि जाति छे गादि व्यक्ति नथी, कारण के प्रतिपुरुषमां तेनो भेद जोवामां आवे छे; जो तेम न लईए तो 'सोमशर्मा अध्ययन करे छे' इत्यादि वाक्योमां आपणे जे विभाग जणावीए छीए ते जणावी शकाय नहि[33]

मीमांसकः—आ तमारुं कहेवुं शोभारहित छे, कारण के गादि व्यक्तिना भेदमां जेम प्रमाणनो अभाव छे तेम गत्वादि जातिनी कल्पना करवामां पण प्रमाणनो अभाव छे. जेम गत्वने नहि जाणनार पुरुषने भिन्नदेश, परिमाण, स्थान अने व्यक्तिना उपाधिथी एकज गत्व जाणे भिन्न देशमां आवेलुं, नहानुं, महो-

र्दुं, लांबु के टुंकु जणाय छे तेज प्रमाणे गव्यक्तिने नहि जाणनार पुरुषने पण एकज गकार व्यंजकना भेदथी भिन्नभिन्न धर्मवाळो जणाय छे. आप्रमाणे एकज गकारमां विरुद्ध धर्मनो अध्यास करवामां आवे छे एम सिद्ध थतां ते गकारने विषे जे भेद प्रतिभासे छे ते मिथ्या ठरे छे.[33]

हवे आपणे जोईए के भेदने साधनार विरुद्ध धर्मनो अध्यास ते स्वाभाविक छे के प्रातीतिक छे? प्रथम पक्ष लेतां तेमां असिद्धि दोष आवे छे, कारण के तेम लेतां अर्थात् स्वाभाविक भेद लेतां आपणे एम कहेवुं पडत के चैत्र दश गकार बोल्यो; परंतु आपणाथी एम न कहेवात के ते एक ग दशवार बोल्यो. हवे जो विरुद्ध धर्माध्यास प्रातीतिक छे ए पक्ष लईए तो स्वाभाविको भेदसिद्धि संभवशे नहि, कारण के बाह्य उपाधिना भेदथी स्वाभाविक ऐक्यनो नाश थशे नहि. घटादिरूप उपाधिभेदथी आकाशनो स्वाभाविक भेद छे एम आपणाथी धरायज नहि. गकारोना संबंधमां 'भिन्न' एवो जे व्यवहार थाय छे ते (भिन्न भिन्न) नादने लीधे थाय छे.[34]

आचार्य कहे छे केः—

(नैयायिको) गत्व जातिनो स्वीकार करी जे वस्तु सिद्ध करवा मागे छे तेज वस्तु ग वर्ण लेतां पण सिद्ध थाय छे; अने ग व्यक्तिथी जे वस्तु तेओ सिद्ध करवा मागे छे ते नादथी सिद्ध थाय छेः माटे गत्व जातिनो स्वीकार करवो ए वृथा छे.[35]

वळी

ज्यां सुधी शब्दमां प्रत्यभिज्ञा पूर्ण रीते जाग्रत् छे त्यां सुधी शब्दने अनित्य ठरावनारां सघळां अनुमानोनो बाध थाय छे.[36]

आथी करीने वागीश्वर ' मानमनोहर ' नामना ग्रन्थमां ' शब्द अनित्य छे, कारण के ते इंद्रियविशेषनो गुण छे, जेम रूप नेत्रनो गुण छे तेम. ' ए वाक्यथी शब्दने अनित्य ठरावे छे तेनुं खंडन थई जाय छे.[३७]

नीचे प्रमाणे पण उपरना नैयायिक मतनुं खंडन करी शकाय. ' शब्द द्रव्य छे ' ए मत स्वीकारनाराओ (सांख्य अने वेदान्तवादीओ) ना मत प्रमाणे तो नैयायिक मतनुं तरतज खंडन थई जशे. (कारण के ते गुण ठरशे नहि). जो शब्दने ध्वन्यंशमां लईए तो तेथी हमे जे सिद्ध करीए छीए तेज सिद्ध थशे; वळी अश्रावणत्वउपाधिथी बाधित होवाथी पण शब्द अनित्य छे ए मतनुं खंडन थई जशे. उदयनाचार्य महान् प्रयत्न करीने सिद्ध करे छे के जो के शब्दनो आश्रय (आकाश) अप्रत्यक्ष छे तो पण आकाशनो आश्रयी जे शब्द तेनो अभाव प्रत्यक्ष छे. अने शब्दनुं अनित्यत्व सिद्ध करवामाटे ' कोलाहळ बंध पडी गयो ' ' शब्द उत्पन्न थयो ' इत्यादि व्यवहारनुं कारण ते प्रत्यक्षने माने छे. तेने पण हमे आटलुंज कहीए छीए के विरुद्ध धर्मना अध्यासथी मिथ्या भेद जणाय छे अने आ प्रमाणे तालने रक्तनुं बलि आपीने वेतालने पण विदाय करीए छीए. वळी न्यायभूषणकार कहे छे के जो शब्द नित्य होय तो ते सर्वदा उपलब्ध के अनुपलब्ध होवो जोईए, परंतु आ मतनुं पण हमे ' ध्वनिथी संस्कृत होय ते शब्द उपलभ्य होय ' एम कहीने निराकरण करीए छीए. वळी नैयायिको कहे छे के ' संस्कारक अने संस्कारीनी वच्चे जे नियत संबंध धारवामां आवे छे ते छेज नहि, कारण के वने एकी वखते इंद्रिय सबंध करे छे परंतु तेमनुं आ अनुमान आत्माने विषे अनैकान्तिक छे.[३८]

आ प्रमाणे सर्व विरुद्ध वादीओनो कलकल शांत थतां वेद अपौरुषेय ठरे छे अने तेथी सर्व शंकाओनो निरास थतां ते धर्ममां स्वत.प्रमाण छे एम निर्विवाद सिद्ध थाय छे.[३१]

पूर्वपक्षी:—तमे कहो छो ते ठीक छे परंतु:

सांख्यवादीओ कहे छे के प्रमाणत्व अने अप्रमाणत्व ए उभय स्वतः सिद्ध छे. नैयायिको कहे छे के बंने अन्यथी (अनुमानथी) सिद्ध छे. बौद्धो कहे छे के अप्रमाणत्व स्वतः सिद्ध छे परंतु प्रमाणत्व अन्यथी सिद्ध छे, अने वेदवादीओ एम माने छे के प्रमाणत्व स्वतः सिद्ध छे, परंतु अप्रमाणत्व अन्यथी सिद्ध छे.

आ प्रमाणे जूदा जूदा वादीओनो विवाद जोवामां आवे छे तेथी धर्मप्रामाण्य स्वतः सिद्ध छे एम शी रीते स्वीकाराय? वळी स्वत.प्रामाण्य एटले शुं? एनो अर्थ एम लेशो के प्रामाण्य पोतानी मेळे जन्मेलुं? अथवा तो स्वाश्रयना ज्ञाननी जन्मेलुं? अथवा तो स्वाश्रयज्ञाननी सामग्रीमांथी जन्मेलुं? अथवा तो ज्ञाननी सामग्रीथी उत्पन्न थएला ज्ञानविशेषनुं आश्रित? अथवा तो ज्ञान सामग्रीमात्रथी उत्पन्न थएला ज्ञानविशेषनुं आश्रित?

प्रथम पक्ष लेवाशे नहि, कारण के ज्यां ज्यां कार्यकारणभाव होय त्यां त्यां भेद होय अने तेथी पोते कार्यरूपे अने कारणरूपे एकज वस्तुमां रही शके नहि, अर्थात् कार्य अने कारण एकज होई शके नहि. बीजो पक्ष पण लेवाशे नहि, कारण के ज्ञान जे एक गुण छे तेने प्रामाण्यनुं कारण मानीए तो ते समवायि कारण थवाथी द्रव्य थशे. त्रीजो पक्ष पण लेवाशे नहि कारण के प्रामाण्यने उपाधि मानीए के जाति मानीए तो पण ते उत्पन्न थयुं एम कहेवाशे नहि, शाथी के स्मृतित्वानधिकरण ज्ञानमा बाधनो अत्यन्ताभाव ते प्रामाण्योपाधि, हवे अ-

स्यन्ताभावने नित्य मानवामां आवे छे माटे तेने उत्पन्न कहेवाय-ज नहि. वळी जाति मानीए तो तो आपणाथी जरा पण कही शकाशे नहि के ते उत्पन्न थयुं. चोथो पक्ष पण लेवाशे नहि, कारण के अप्रमा पण एक प्रकारनुं ज्ञान छे, अने विशेषनी साम्ग्रीमां सामान्यनी सामग्रीनो अनुप्रवेश थाय छे, जेमके शिंशपानी सामग्रीमां वृक्षसामान्यनी सामग्री आवी जाय छे, कारण के जो एम न मानीए तो विशेषनी उत्पत्ति आकस्मिक थवानो प्रसंग आवे; माटे परतः सिद्ध मानवामां आवेलुं जे अप्रामाण्य ते पण विज्ञानसामग्रीजन्यआश्रित थाय अने तेथी तमारुं लक्षण सव्यभिचार ठरे. हवे पांचमा पक्षनो विचार करीए. ज्ञानसामग्रीमात्रजन्य एटले दोषाभावसहकृतज्ञान सामग्रीजन्य के दोषाभावअसहकृतज्ञानसामग्रीजन्य? प्रथम पक्ष लेवाय नहि, कारण के परतःप्रामाण्यवादीओ पण एम माने छे के परतः प्रामाण्य एटले दोषाभावसहकृतज्ञानसामग्रीजन्यत्व; बीजो पण न लेवाय. कारण के दोषाभावसहकृत होवाथी सामग्रीमां सहकृतत्व सिद्ध थतां ज्ञान अने दोषाभाव उभयमां अनन्यथा सिद्ध अन्वयव्यतिरेक सिद्ध थाय छे अने तेथी दोषभावनी कारणता वज्रलेप जेवी सज्जड थई जाय छे. जो कहेशो के अभाव कारण थई शके नहि तो हमे पूछीशुं के अभाव कार्य होई शके के नहि? जो ना कहेशो तो पटनो प्रध्वंस अनुपपन्न होवाथी ते नित्य ठरशे; जो कहेशो के अभाव कार्य होई शके तो ते कारण पण शा माटे न होई शके? आ प्रमाणे तमारे गळे बंने तरफथी पाश आवी पडशे.[४२] उदयनाचार्य कहे छे के.—

जेम भाव तेमज अभाव पण कार्यनी पेठे कारण थई शके छे.

आ सिद्धान्त प्रयोगना रूपमां आ प्रमाणे मूकी शकाय.

प्रमा ज्ञानना हेतुथी अतिरिक्त अन्य हेतुने अधीन छे, कारण के ते कार्य होईने ज्ञानविशेष छे; अप्रमानी पेठे प्रामाण्यनुं ज्ञान परथी थाय छे,कारण के अनभ्यास दशामां ते सांशयिक छे; अप्रामाण्यनी पेठे. माटे प्रामाण्यनी उत्पत्ति अने ज्ञप्ति बंने परथी होवाथी तेने स्वतः सिद्ध कहेवुं ए कोहीं गएला कोळा जेवुं (अर्थात् फेंकी देवा जेवु) छे.[3]

मीमांसकः—आ सर्व तमारुं कहेवुं आकाशने मुक्कीओ मारवा जेवु (मिथ्या) छे. प्रमा विज्ञानसामग्रीजन्य होईने तदतिरिक्तहेतुजन्य होवाथी स्वतः सिद्ध छे एम निरुक्ति छे. अनुमान पण आ प्रमाणे थई शके छेः—प्रमा विज्ञानसामग्रीजन्य होईने तदतिरिक्तजन्य होई शके नहीं, कारण के ते अप्रमात्वनुं अधिकरण नथी; घटनी पेठे. वळी उदयनना अनुमानथी परतस्त्वनी सिद्धि थती नथी, कारण के प्रतिसाधनरूप ग्रहथी ते ग्रस्त थाय छे; ते आ प्रमाणेः दोपव्यतिरिक्त एवा ज्ञानना हेतुथी व्यतिरिक्त कारणथी प्रमा उत्पन्न थती नथी, कारण के ते ज्ञान छे, अप्रमानी पेठे; ज्यारे मात्र ज्ञानसामग्रीथी प्रमानो संभव छे तो पछी तदतिरिक्त गण के दोपाभावने कारण गानवामां कल्पना गौरव आवे छे.[4]

पूर्वपक्षीः—पण दोप अप्रमानो हेतु होवाथी दोपनो अभाव ए प्रमानो हेतु छे एम मान्या वगर चालशे नहि.[5]

मीमांसकः—तमारुं आ मानवुं खोटुं छे, कारण के दोपाभाव अप्रमानो प्रतिबंधक होवाथी ते अन्यथा सिद्ध छे (अने तेथी ते प्रमानुं कारण थई शके नहि.[6]) कह्युं छे केः—

माटे गुणथी दोपाभाव नक्की कराय छे, गुणाभावथी बंने प्रकारनुं (संदिग्ध अने निश्चित) अप्रामाण्य नक्की कराय छे अने तेथी उत्सर्ग नक्की कराय छे.

तेज प्रमाणे प्रज्ञानी ज्ञप्ति पण ज्ञानज्ञापक सामग्री (नेत्रादि) थीज उत्पन्न थाय छे. तमाराथी एम पण न कहेवाय के एम मानता संशयनो उदय नहि थवा रूप बाधक आवे छे, कारण के ज्ञान उत्पन्न करनारां पुष्कळ कारणो होवा छतां पण जो प्रतिबंधक दोषादि होय तो संशयनो उदय थवो संभवित छे. वळी तमे जे (प्रामाण्य स्वतः सिद्ध नथी एम ठराववा माटे) अनुमान करो छो ते स्वत प्रमाण छे के नहि? जो तमे कहेशो के स्वत. प्रमाण छे तो अनैकान्तिक दोष आवशे. जो कहेशो के नथी, तो तेनुं प्रामाण्य बीजाथी लेवुं पडशे, अने ते प्रमाणे थतां अनवस्था दोष आवशे. वळी उदयन कुसुमांजलिमां उतावळथी एकदम करवामां आवती प्रवृत्ति प्रामाण्यने अधीन नथी एम सिद्ध करवा माटे कहे छे के 'प्रवृत्ति इच्छानी अपेक्षा करे छे, हवे प्रवृत्ति एकदम थाय तो इच्छा पण एकदम थवी जोईए. इच्छा छे ते इष्टसाधनतानुं ज्ञान छे. आ ज्ञान ते इष्ट जातीयत्व लिंगनो अनुभव छे अने आ अनुभव इंद्रिय अने अर्थना सनिकर्ष उपर आधार राखे छे; आ प्रमाणे जोतां उक्त प्रकारनी प्रवृत्ति करनार पुरुष कोइ पण स्थळे प्रामाण्यनुं ग्रहण करतो जणातो नथी.' परंतु तेनुं आ कहेवुं कोइ चोर जेम बगलमां चोरेलुं सोनु घाली दई पोताना सर्व अंग देखाडे तेना जेवु मिथ्या डोळ छे, कारण के इष्ट वस्तुना साधननु ज्ञानज इच्छाने उत्पन्न करे छे अने आ ज्ञान प्रमाणरूपे (प्रवृत्ति करनारथी) मनाएलुं छे माटे आ स्थळे प्रामाण्यग्रहणनो उपयोग स्पष्ट रीते समजाय छे. वळी कोइवार पण विचारपूर्वक प्रवृत्ति संशयथी थाय एम मानीए तो सर्वदा तेम थवानो संभव होवाथी प्रामाण्यनो निश्चय निरर्थक ठरे, अने ज्यारे अनिश्चतनुं अस्तित्वज दुर्लभ ठरे त्यारे पछी प्रामाण्यने तो जलाजलि आपनारी रहे.[८] पण आ विस्तार करवानी काइ जरूर नथी, कारण के कह्यु छे के.—

माटे सत्नीबोधक होवाथी प्राप्त थयेली बुध्धिनी जे प्रमाणता तेनुं अर्थना अन्यथात्वना हेतुथी उत्पन्न थएला दोषज्ञानथी खंडन थाय छे.[११]

माटे धर्मना संबंधमां वेदनुं स्वतः सिद्ध प्रामाण्य छे.

वेदना त्रण भाग छे, विधि, अर्थवाद अने मंत्र. तेमां 'ज्योतिष्टोमेन स्वर्गकामो यजेत' ए विधि छे. अहीं ('यजेत' मां) त प्रत्यय प्रकृतिना अर्थथी उपरक्त थएली भावनानुं अभिधान करे छे एम व्युत्पत्तिनो स्वीकार करनार अभिहितान्वयवादी भट्टाचार्यनुं मत छे; व्युत्पत्तिने अनुसरनार अन्विताभिधानवादी प्रभाकरगुरुनुं ए मत छे के ए वाक्य यागविषयक नियोग छे.[१२] आ प्रमाणे सर्व सुस्पष्ट छे.

पाणिनिदर्शन.

कोइ पूछे के आ प्रकृति भाग अने आ प्रत्यय भाग एम प्रकृतिप्रत्ययविभाग हमे शी रीते जाणीए तो तेने कहेवानुं के आ प्रश्न जेओ ए पातंजल जळनुं पान कर्युं छे तेओना मनमां कंई चमत्कार उत्पन्न करशे नहि, कारण के व्याकरण शास्त्रनो हेतु प्रकृतिप्रत्ययना विभागने जणाववानो छे ए वार्ता सुप्रसिद्ध छे. महाभाष्यना कर्ता भगवान् पतंजलिनुं प्रथम वाक्य आ प्रमाणे छे:—

अथ शब्दानुशासनम्.

आ वाक्यनो अर्थ आ प्रमाणे छे:—'अथ' शब्द अधिकारार्थे छे; अधिकार एटले प्रस्ताव अथवा आरंभ. शब्दानुशासन ' ए शब्द वडे पाणिनिप्रणीत व्याकरण शास्त्रनी विवक्षा थाय छे. ' शब्दानुशासन ' एटलुंज कहेनामां एक संदेह थवानो संभव छे. एमां आपणे शुं समजवुं ? शब्दानुशासननो आरंभ करवामां आवे छे के नथी आवतो ? परंतु आवा प्रकारना संदेहनो प्रसंग न रहे माटेज अथ शब्द मुक्यो छे अथ शब्दना प्रयोगथी अन्य अर्थना व्युदासपूर्वक शब्दानुशासननो

आरंभ करवामां आवे छे एम सूचवाय छे. आ शास्त्रथी **शन्नो-देवीरभीष्टय** इत्यादि वैदिक शद्वो तेमज तेना उपकारी गौ, अश्व, पुरुष, हस्ती, पक्षी इत्यादि लौकिक शद्वोनी व्युत्पत्ति आपी तेमनो संस्कार करवामां आवे छे, अर्थात् प्रकृति प्रत्ययना विभागनो बोध करवामां आवे छे.

पूर्वपक्षी:—**उभयप्राप्तौ कर्मणि** ए सूत्रथी अनुशासननुं कर्म षष्ठीमां मुकी शकाय अने तेम करतां शब्दानाम् अनुशासनम् एम अर्थ लेवो पडे; परंतु **कर्मणिच** ए सूत्रथी कर्मणिषष्ठीनो समास थई शके नहीं; माटे शब्दानुशासन शब्द अप्रमाण छे.

सिद्धान्ती:—तमारी आ शंकानुं समाधान आ प्रमाणे थाय छे. जे कृत् प्रत्ययमां कर्तृ अने कर्म उभयनी प्राप्ति थती होय त्यां कर्मणि षष्ठीज थई शके कर्तरि नहि, ए प्रकारे सूत्रमांनो उभयप्राप्ति शब्द बहुव्रीहि लईने आपणे नियम ठरावी शकीए छीए जेम के **आश्चर्यो गवां दोहोऽशिक्षितेन गोपेन.** केटलाक कहे छे के कर्तरि षष्ठी पण थई शके. काशिकावृत्तिमां कहे छे के केटलाक कहे छे के आ स्थळे कोई पण प्रकारना विशेष वगर बेमांना एकनुं ग्रहण करवुं; जेम के आ 'आचार्यनुं शब्दोनुं अनुशासन' के 'आचार्यथी शब्दोनुं अनुशासन' परंतु 'शब्दानामनुशासनम्' ए वाक्यनी, शब्दोनुं अनुशासन एवुं अर्थनुं नहि' एम विवक्षा छे; अने कर्ता जे आचार्य तेना उपादान वगर पण आ प्रमाणे समजी शकाय छे, माटे आचार्य शब्दनुं उपादान करवुं निरर्थक छे. आ प्रमाणे जोतां उभयनी प्राप्ति न होवाथी **उभयप्राप्तौ कर्मणि** ए सूत्र अहीं लागु पडतुं नथी, परंतु **कर्तृकर्मणोः कृति** ए सूत्र लागु पडे छे. आ सूत्रथी कृत् प्रत्ययना योगे कर्तरिषष्ठी

अने कर्मणिषष्ठी उभयनुं ग्रहण करी शकाय. आ प्रमाणे कृयोगलक्षणाषष्ठी लेतां ' इध्मप्रव्रश्चन, ' ' पलाशशातन, ' इत्यादि समासनी पेठे ' शब्दानुशासन ' ए पण सप्रमाण समास लई शकाय. अथवा तो आ स्थळे **षष्ठी थेशे** ए सूत्रथी शेष-लक्षणा षष्ठी लेतां कंई पण शंका रहे नहि[3].

पूर्वपक्षीः—आ प्रमाणे करीए त्यारे तो शेषलक्षणा षष्ठी सर्वत्र लई शकाय अने तेम थाय तो पछी षष्ठीसमासनां प्रतिषेधसूत्रो निरर्थक थाय[4].

सिद्धान्तीः—आ तमारुं कहेवुं खरुं छे; अने तेथीज वाक्य-पदीयमां कह्युं छे के ए सर्व सूत्रो वेदना स्वरनो विचार करवाना संबंधमां उपयोगी छे. महामहोपाध्याय वर्धमान कहे छे केः—

लौकिक व्यवहार (उच्चारण) मां मनुष्य पोतानी इच्छा प्रमाणे वर्ती शके; परंतु वैदिक मार्गमां तो विशेष वचन उपर लक्ष्य आपवुंज जोईए. आ प्रमाणे पाणिनि सूत्रनो अर्थ करवामां आव्यो छे; कारण के ते जातेज 'जनि कर्तृ ' अने ' तत्प्रयोजक ' जेवा शब्द वापरे छे.

माटे पतंजलिना वाक्यनो अर्थ आ प्रमाणे थाय छेः ' शब्दानुशासन छे अपर नाम जेनुं एवा व्याकरणशास्त्रनो आरंभ करवामां आव्यो छे. '

पूर्वपक्षीः—' अथ व्याकरणम् ' एटलुंज कह्युं होत तो उपरला अर्थनी प्राप्ति तरतज थात, तो पछी ' अथ शब्दानुशा-शनम् ' एवुं लांबु वाक्य शा माटे कहेवुं जोईए ?

सिद्धान्तीः—तमारुं आ प्रमाणे धारवुं खोटु छे, कारण के ' शब्दानुशासन ' ए पदनो शब्दशः अर्थ लेता व्याकरण-शास्त्र वेदाग छे एम प्रतिपादन थाय छे अने तेथी तेनु अध्य-यन सप्रयोजन थई शके छे, अन्यथा प्रयोजन वगर तेनुं अध्य-यन करवाने अध्ययन करनाराओनी प्रवृत्ति थई शके नहि[5].

पूर्वपक्षी:—परंतु षडंगोवेदोऽध्येतव्यः (छ अंग सहित वेदनु अध्ययन करवु जोईए) ए विधि वाक्यथीज व्याकरणना अध्ययननु प्रयोजन प्रतिपादित थाय छे तो पछी फरीने प्रयोजन कहेवानी शी जरूर छे ?

सिद्धान्ती:—तमे कहो छो ते प्रमाणे विधान छे, परंतु व्याकरणज छ अंगमानुं एक अंग छे एम ज्यासुधी जणाववामा न आवे त्यासुधी तेमा प्रवृत्ति थई शके नहि.

पूर्वकालमा वेदनुं अध्ययन कर्या पछी भणनाराओ त्वराथी आ प्रमाणे कहेता हता·—

शु वैदिक शब्दो वेदथी अने लौकिक शब्दो लोकव्यवहारथी सिद्ध थता नथी ? तो पछी व्याकरण भणवानु शु प्रयोजन छे ?

माटे जे लोको व्याकरणने वेदनु अग मानता हता तेज मात्र तेनु अध्ययन करता हता. आ प्रमाणे जोता वर्तमान कालमा पण तेम थवानो (सर्वने व्याकरण न भणवानो) संभव छे अने तेवो प्रसग न आवे माटे ते वेदाग छे एम प्रतिपादन करनार प्रयोजन जणावनु जोईए. प्रयोजन जणाव्या छता पण जो लोको प्रवृत्ति न करे तो तेओने लौकिक शब्दना सस्कारनु ज्ञान थाय नहि अने तेथी यज्ञकर्ममा तेमने प्रत्यवाय नडे तथा धर्मनी हानि थाय, माटेज याज्ञिको कहे छे के ' अग्निहोत्रीने अपशब्द वापरवाथी प्रायश्चित्त नडे तो तेणे सारस्वती इष्टि करी वाळि आपवो जोईए. ' माटे आ सर्वनो विचार करी व्याकरणशास्त्र वेदाग छे एम प्रतिपादन करनार प्रयोजन सूचववाने ' अथ व्याकरणम् ' एम नहि कहेता ' अथ शब्दानुशासनम्' एम कह्यु छे 'जेनो उद्देश करीने मनुष्य प्रवृत्ति करे ते ते प्रवृत्तिनु प्रयोजन कहेवाय' ए न्यायथी जेम स्वर्ग

ने उद्देशीने यज्ञने माटे प्रवृत्त थनारनु स्वर्ग प्रयोजन छे तेज प्रमाणे शद्वानुशासननु प्रयोजन पण शद्वनी अनुशिष्टि अर्थात् शद्वसंस्कार छे'.

पूर्व पक्षी —आ प्रमाणे छे तोपण अभीष्ट प्रयोजननो लाभ तो थवानो नथीज, कारण के तेने माटे उपाय नथी. जो तमे कहेशो के वेदना प्रत्येक पदनो पाठ करवो तो ते धारवु मिथ्या छे, कारण के शद्व अने अपशद्वना भेदे करीने शद्व अनत छे. ब्राह्मणमा कह्यु छे के बृहस्पतिए इद्रने देवलोकोना सहस्र वर्ष सुधी पदपाठना प्रत्येक शद्वनु अध्ययन कराव्यु तो पण तेनो पार आव्यो नहि बृहस्पति शीखवनार हता, इद्र शीखनार हतो, अने देव लोकोना सहस्रवर्ष जेटलो अध्ययनने माटे वखत हतो तो पण शद्व सागरनो पार आव्यो नहि, तो पछी वर्तमा नमा तो कोइ गमे तेटलु लाबु आयुष् भोगवे अने तेमा अध्ययन करे तो पण तेनो पार न पामे ए स्पष्टज छे. अध्ययन, बोध, आचरण, अने प्रचारणथी विद्या उपयुक्त थाय छे. परतु प्रतिपदनो पाठ करता तो अध्ययनमाज सर्व आयुष् उपयुक्त थई जाय तेम छे, माटे शद्वना ज्ञानने माटे प्रतिपदनो पाठ करवो ए कइ साधन कहेवाय नहि अने तेथी प्रयोजननी सिध्दि थई शके नहि'.

सिद्धान्ती —आ तमारु मानवु खोटु छे, कारण के हमे कइ एम नथी कहेताके प्रतिपदनो पाठ करवो. वळी सामान्यविशेष रूप लक्षणानी प्रकृत्यादि विभागनी कल्पनावाळा लक्ष्यो प्रति एकवारज प्रवृत्ति थता, वर्षादनी पेठे वहु शद्वनो बोध थई शके तेम छे. उदाहरणरूपे कर्मण्यण् ए एक सामान्यरुप लक्षणे करीने कर्मोपपदधातुमात्रथी अण् प्रत्यय करता ' कुम्भकार, ' ' काण्डलाव ' इत्यादि अनेक शद्व शी रीते सिद्ध थाय छे ते

आपणे जाणीए छीए. एज प्रमाणे आतोऽनुपसर्गे कः ए अर्थवादनियम पण पदपाठनुं अशक्यत्व प्रतिपादन करे छे[11]

पूर्वपक्षीः— वेदनां बीजां अंग तो घणां छे, तो व्याकरण प्रतिज शा माटे आदर बताववो जोईए?

सिद्धान्तीः—तेनुं कारण ए छे के अंगोमां व्याकरण प्रधान अंग छे, अने प्रधानने माटे करेलो प्रयत्न सफल थाय छे. कह्युं छे केः—

व्याकरण ब्रह्मनी लगोलग पासे छे; तप मात्रमां ते उत्तम तप छे; अने डाह्या पुरुषो तेने वेदनुं प्रथम अंग कहे छे.

माटे शब्दानुशासन ए व्याकरण शास्त्रनुं साक्षात् प्रयोजन छे अने वेदनुं रक्षण इत्यादि परंपरा प्रयोजन छे; अने तेथीज भगवान् भाष्यकार कहे छे केः—

रक्षण, ऊह, आगम, लघु अने असंदेह ए प्रयोजन छे.[12]

वळी साधु शब्दना प्रयोगथी कल्याण पण थाय छे. कात्यायन कहे छे केः—

शास्त्रपूर्वक प्रयोग करवाथी कल्याण थाय छे; ते वेदशब्दनी तुल्य छे.

अन्य ग्रंथकारो पण कहे छे केः—

एक शब्द सम्यक् रीते जाण्यो होय तथा सम्यक् रीते तेनो प्रयोग कर्यो होय तो ते स्वर्ग लोकमां कामधेनु थाय छे.

वळी तेओ कहे छे केः—

तेओ शब्दने सम्यक् रीते जाणनार तथा वापरनार वाणीजोडेला सुयुक्त रथमां बेसीने अभीष्ट सुखनी प्राप्तिपूर्वक स्वर्ग लोकने विषे जाय छे. परंतु अचिक्रमत जेवां

अशुद्ध रूप वापरनाराओ ने तो त्यां पग घसतां जवुं पडे छे[13] ?

जो कोइ पूछे के अचेतन एवो जे शब्द तेनुं आटलुं बधुं सामर्थ्य शी रीते संभवे ? तो तेने कहेवानुं के ए प्रमाणे मानवुं खोटुं छे, कारण के श्रुतिमां कह्युं छे के तेनुं महत् देव साथे साम्य छे. ते आ प्रमाणेः——

चत्वारिशृङ्गात्रयो अस्यपादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवो मर्त्याः आविवेश ॥

(तेने चार शींगडां छे, त्रण पग छे, बे माथां छे, सात हाथ छे, ते त्रण ठेकाणे बांधेलो वृषभ म्होटो रव करे छे, महादेवे मर्त्योमां प्रवेश कर्यो छे.)

भाष्यकार आ मंत्रनो आ प्रमाणे अर्थ करे छे; चार शींगडां ते चार जातनां—नाम, क्रियापद, उपसर्ग अने निपात पद छे; तेना त्रण पग एटले 'लट्' आदिथी कहेवामां आवता भूत, भविष्यत् अने वर्तमान ए त्रण काळ छे; बे माथां एटले व्यंग्य अने व्यंजक भेदथी प्रसिद्ध एवा नित्य शब्दो अने अनित्य अथवा कार्यरूप शब्दो छे. सात हाथ एटले तिङ् (क्रियापदना) प्रत्ययो सहित सात सुप् (विभक्तिना) प्रत्ययो छे. त्रण स्थाने बांधेलो एटले उरस्, कंठ, अने शिरस् ए त्रण स्थानमां बद्ध. वृषभ एटले वृषभनुं रूपक कारण के ते वर्षण करे छे अर्थात् ज्ञानपूर्वक अनुष्ठान करवाथी ते फळने आपे छे. म्होटो रवकरे छे एटले ते शब्द करे छे; कारण के रु धातुनो अर्थ शब्द करवो एवो थाय छे; ' शब्द ' शब्दथी प्रपंचनी विवक्षा थाय छे. ' महादेवे मर्त्य लोकोमां प्रवेश कर्यो छे' महादेव एटले शब्द, मर्त्योमां प्रवेश कर्यो छे एटले मरणशील मनुष्यलोकोमां प्रवेश

कर्यो छे. आप्रमाणे महादेव जे परब्रह्म तेनी साथे शब्दनु साम्य कह्यु छे.''

स्फोटसंज्ञक नित्य निरवयव शब्द तेज ब्रह्म'' भर्तृहरि ब्रह्मकाडमा कहे छे के —

जे अनादि अनंत अक्षर शब्दतत्त्व ब्रह्म छे ते पदार्थभावे करीने विवर्तने पामे छे, अने तेमांथी जगत्‌नी प्रक्रिया छे.

पूर्वपक्षी —परंतु नाम अने आख्यात (क्रियापद) ना भेदे करीने पद वे प्रकारना छे तो तमे चार जातिना शी रीते कहो छो ?

सिद्धान्ती —आ प्रमाणे धारवु खोटु छे, कारण के अन्य स्थले चार प्रकार पण गणाव्या छे. प्रकीर्णकमा कह्यु छे के —

केटलाक पदना बे भेद करे छे, केटलाक चार अने केटलाक पांच भेद पण करे छे. आप्रमाणे प्रकृति प्रत्यय इत्यादिनीपेठे तेओ वाक्योमांथी तेमनु उद्धरण करीने करे छे.''

कर्मप्रवचनाय नामनो पाचमो भेद लईने हेलाराज पदना पाच प्रकार करे छे. परतु कर्मप्रवचनीय क्रियाविशेषथी उपजनित सबधना अवच्छेदनो हेतु होवाथी सबधना द्योतनद्वारा क्रियाविशेषनु द्योतन करे छे माटे तेमनो उपसर्गमा अतर्भाव थाय छे एम विचार करीने भाष्यकारे जे पदना चारप्रकार कर्या छे ते यथार्थ छे एम समजवु''

पूर्वपक्षी —तमे स्फोटाख्य नित्य शब्दनी वात तो करो छो परतु ते अमने समजाती नथी, कारण के तेने सिद्ध करवा माटे कइ प्रमाण नथी.

सिद्धान्ती —तमारी आ शंकाना समाधानमा हमे नीचे प्रमाणे कहीए छीये प्रत्यक्ष एज आने माटे प्रमाण छे, कारण के 'गौ' ए एक पद छे एम तेना जुदा जुदा अक्षरोथी व्यतिरिक्त एक पदनो सर्व मनुष्यने बोध थायछे. ज्यासुधी कोइ

बाधक न होय त्यां सुधी पदनो अनुभव मिथ्या थाय छे एम पण तमाराथी कही शकाय नहि. वळी पदार्थनी प्रतीति अन्यथा अनुपपन्न होवाथी पण स्फोटनो स्वीकार करवो पडशे. वर्णबीज पदनी प्रतीति थायछे एम कहेवुं मिथ्या छे, कारण के नीचेना विकल्पनुं समाधान करवुं अशक्य छे: वर्ण समस्त रूपमां अर्थ-प्रतीति उत्पन्न करे छे के व्यस्त रूपमां ? प्रथम पक्ष लेवाशे नहि, कारण के वर्णो क्षणिक होवाथी तेमनो समूह संभवतो नथी. बीजो पक्ष पण लेवाशे नहि, कारण के व्यस्त वर्णथी अर्थनी प्रतीति संभवती नथी. अने व्यस्त के समस्त सीवाय अन्य प्रकार संभवतो नथी माटे वर्णोनु वाचकत्व अनुपपन्न होवाने लीधे **जेना बलथी अर्थनी प्रतिपत्ति थाय छे ते स्फोट** आ प्रमाणे वर्णथी अतिरिक्त पण वर्णथी व्यंग्य एवो अर्थनी प्रतीति करावनार नित्य शद्ब 'स्फोट' छे एम तेने जाणनाराओ कहे छे. माटे 'वर्णथी जे स्फुट थाय छे अर्थात् स्पष्ट थाय छे ते स्फोट' ए प्रकारे व्युत्पत्ति करता स्फोटनो अर्थ 'वर्णोवडे अभिव्यंग्य एवो थाय छे, तेमज 'जेमाथी अर्थ स्फुट थाय छे ते स्फोट' एम व्युत्पत्ति करता स्फोटनो अर्थ 'अर्थनी प्रतीति करावनार' एवो थाय छे. आ प्रमाणे स्फोट शद्बनो बे रीते अर्थ करवामां आवेछे. भगवान् पतंजलि पण महाभाष्यमा कहेछे के 'हवे 'गौ' एटले कयो शद्ब ? जेनु उच्चारण करवाथी सास्ना (गायने गळे गोदडी जेवुं होय छे ते) पुछडुं, कांध, खरीओ, अने शींगडानी एकी वखते प्रतीति थाय छे ते शद्ब'. कैयट, 'वैयाकरणो कहेछे के वर्णव्यतिरिक्त पद ए वाचक छे, कारण के वर्णने वाचक मानता बीजा अने ते पछीना वर्णोनु उच्चारण निरर्थक थई जायछे' ए वाक्यथी आरंभी 'तद्व्यतिरिक्त नादथी अभिव्यंग्य जे स्फोट ते वाचक एम व्याक्यपदीयमां सविस्तर व्यवस्थापित कर्यु छे' ए वाक्यना अंत सुधीमां उपरना भाष्यकारना वचननुं विवरण करेछे[८]

पूर्वपक्षीः—स्फोट पण अर्थनी प्रतीति करावनार छे एम कहवुं घटतुं नथी, कारण के नीचेनो विकल्प सहन थई शकतो नथी. शुं अभिव्यक्त स्फोट अर्थनी प्रतीति करावे छे के अनभिव्यक्त? अनभिव्यक्त स्फोट अर्थनी प्रतीति करावेछे एम कहेवाय नहि, कारण के तेम धारतां अर्थनी प्रतीतिरूप कार्य सर्वदा थवानो प्रसंग आवे, शाथी के स्फोटने नित्य मानतां निरपेक्ष हेतु सर्वदा होवाथी कार्यनो विलंब अयोग्य थाय. आ दोष दूर करवाने एम स्वीकारवामां आवे के अभिव्यक्त स्फोट अर्थनी प्रतीति करावेछे तो हमे पूछीशुं के (अर्थनुं) अभिव्यंजन करनार वर्ण छूटा छूटा अभिव्यंजन करे छे के भेगा थईने? बन्ने पक्षमां वर्णने वाचक माननां जे जे दोष तमे जणाव्या ते सर्व नडवाना[१] भट्टाचार्य मीमांसाश्लोकवार्तिकमां कहेछे केः—

जे कोइ एम माने छे के अवयवरहित एवो स्फोट वर्णना ज्ञानथी व्यक्त थायछे ते एक पण अडचणमांथी मुक्त थता नथी.

वळी जेने सुबन्त के तिङन्त प्रत्यय होय ते पद कहेवाय एम पाणिनि कहे छे अने गौतम पण कहे छे के विभक्त्यन्त ते पद. आ प्रमाणे पदनां लक्षण जोतां संकेतना ग्रहणथी अनुग्रहवशात् वर्णमांज पदबुद्धि थई शके छे; जो तमे कहेशो के "एम थाय तो तो 'सर' ए पदमा जेटला अने जे जे वर्णो छे तेटला अने ते ते 'रस' मां पण छे अने तेज प्रमाणे 'नव' अने 'वन' 'दीन' अने 'नदी' 'राम' अने 'मार' 'राजा' अने 'जार' इत्यादिमा पण जोवामा आवे छे, माटे आ सर्व स्थळे भिन्न अर्थनी प्रतीति थवी समने नहि;" तो तेना प्रत्युत्तरमां हमे कहीशुं के क्रमना भेदथी अर्थना भेदनो संभव छे. तौतातित (कुमारिल) कहे छे केः—

जेटला, जेवा, जे, अने जे अर्थनुं प्रतिपादन करवाने समर्थ वर्णो होय ते, तेवीज रीते, तेज अर्थनो, बोध करेछे.

माटे उभयपक्षने समान एवो जे दोष होय ते एक पक्ष वाळा उपर न मुकी शकाय ए न्यायथी वर्णनुं वाचकत्व उत्पन्न होवाथी वर्णथी अतिरिक्त स्फोटनी कल्पना करवी निरर्थक छे.[२०]

सिद्धान्तीः—आ तमारुं कहेवुं काशकुशना अवलंबन जेवुं छे (आधार वगरनुं छे), कारण के नीचेनो विकल्प असह्य छे. हमे तमने पूछीशुं के पदनी प्रतीति छूटा छूटा वर्ण उपर आधार राखे छे के वर्ण समूह उपर ? प्रथम पक्ष लेवाशे नहि, कारण के जेम सूत्र विना पुष्पने विषे माळानी प्रतीति थती नथी तेम परस्पर विलक्षण एवा वर्णोमा निमित्त वगर अर्थनी प्रतीति थती नथी. बीजो पक्ष पण लई शकाशे नहि, कारण के प्रथम उच्चार थया पछी वर्णोनो नाश थई जाय छे तेथी तेमनो समूह थवो असंभवित छे. जे अनेक पदार्थो एक स्थानमा रहेला अनुभवाय तेने आपणे समूह कहीए छीए, जेमके एकस्थानमा साथे रहेला धावडो, खेर पीपळो इत्यादि; अथवा एकस्थानमा रहेला हाथी, घोडो, मनुष्य इत्यादि, परतु वर्णो तो उत्पन्न थया पछी नाशने पामे छे तेथी तेमनो समूहरूपे अनुभव थतो नथी. अभिव्यक्ति पक्ष लईए तो पण अभिव्यक्ति क्रमे करिने थवाने लीधे समूह असभवित रहेवानो. वळी वर्णमा काल्पनिक समूह पण धारी शकाय नहि, कारण के परस्पराश्रय दोष आवे; जेम के वर्णने विषे एक अर्थनी प्रतीति करावनानो धर्म सिद्ध थता तेओमा पदत्वनी प्रतीति थशे, अने तेमने विषे पदत्व सिद्ध थता तेओ अर्थनी प्रतीति करावनाना धर्मवाळा थशे. माटे वर्णोने वाचकत्व असभवित होवाथी स्फोटनो स्वीकार करवो जोईए.[२१]

पूर्वपक्षी —पण स्फोटने वाचक मानीए तोपण पूर्वे कहेलो विकल्प तो नडशेज अने तेम थता घट्टकुटीप्रभातायित थशे.[२२]

सिद्धान्ती —आ प्रमाणे मानवुं ते मनोराज्यना उदय जेवुं छे, कारण के उभय पक्षमा विषमता रहेली छे. प्रथम ध्वनि

जो के अभिव्यंजक छे तो पण ते स्फोटने अस्फुट रूपमां व्यक्त करे छे, अने पछी उत्तरोत्तर अभिव्यंजकना क्रमथी ते वधारे ने वधारे स्फुट थाय छे जेम के वेदनो एकवार पाठ करतां ते स्मरणमां रहेतो नथी, पण वारंवार पाठ करतां ते दृढ थाय छे, अथवा तो जेम रत्नने प्रथम जोतां तेना तत्त्वनुं स्फुट ज्ञान थतुं नथी, परंतु छेल्लीवारे तेनुं परीक्षण करतां ते यथावत् जणाय छे. प्रमाणनीय पुरुषो कहे छे के 'नादथी बीज रोपाय छे, अने ज्यारे आवृत्तिथी तेनो परिपाक थाय छे त्यारे अंत्यध्वनिनी साथे शब्द बुद्धिमां ठरे छे.' माटे "'आ शब्दथी आपणे अर्थने पामीए छीए' एवो व्यवहार जोवामां आवे छे तेथी वर्णो अर्थवाचक छे एम कहेवुं अनुपपन्न ठरे छे" एम भर्तृहरि प्रथम कांडमां कहे छे तेथी निरवयव अर्थनी प्रतीति करावनार, अने शब्दतत्त्व एवा स्फोट नामना भावने आपणे स्वीकारवो जोईए. 'परम अर्थ जे ब्रह्म तेनुं सम्यग्ज्ञान ए छे लक्षण जेनुं एवो सत्ताजाति एज सर्व शब्दनो अर्थ छे' एम प्रतिपादन करनार जातिसमुद्देशमां आ सर्वनुं भाष्यकारे प्रतिपादन कर्युं छे.[23]

पूर्वपक्षीः—पण जो सर्व शब्दनी सत्ताजाति लईए तो बधा शब्द एक बीजाना पर्याय थवाना अने तेथी वेचार शब्दने (वाक्यना रूपमां) साथे वापरवानुं काम निरर्थक थवानुं; आ प्रमाणे जोतां तो सर्व शब्दनो अर्थ सत्ता छे एम कहेवामां तमे जे चातुर्य वापर्युं तेने पण धन्य छे! कह्युं छे केः—

पर्यायोनो प्रयोग साथे करवानी जरूर नथी, कारण के ते अर्थनुं भान अनुक्रमे करावे छे, संहतिथी नथी करावता, माटे आ तमारो पक्ष मानवा जेवो नथी.[24]

सिद्धान्तीः—आ तमारुं मानवुं धूमाडाना बाचका जेवुं छे, कारणके जेम स्फटिक रंगरहितछे तोपण नील, रक्त, पीत, इत्यादि उपरंजक द्रव्यना भेदे करीने तेमां भेदनी प्रतीति थाय छे तेज प्रमाणे संबंधीना भेदथी सत्ता पण ते ते भेदरूपे प्रतीत

थाय छे अने तेथी गोसत्तादिरूप गोत्वादिभेद उपर आधार राखनार व्यवहारनु वैलक्षण्य उपपन्न ठरे छे." आप्त वाक्य पण आ प्रमाणे छे —

स्फटिक रंगरहित द्रव्य छे तोपण नील, रक्त, पीत आदि द्रव्यना योगथी तेमां ते ते रंग जणाय छे.

भर्तृहरि पण कहेछे के —

सबधी ना भेदथी सत्ता एज ज्यारे गवादिने विषे विद्यमान होयछे त्यारे ते तेते जाति कहेवाय छे, अने सर्व शब्द तेमा व्यवस्थित छे तेनेज प्रातिपदिकार्थ अने धात्वर्थ कहेछे तेज सत्ता छे, अने तेज महान् आत्मा छे अने तेज त्वतलादि छे[११]

आश्रयभूत सबंधीओए करीने विद्यमान् कल्पित भेदवाळी, गोअश्व आदिमा रहेला सत्ता एज अर्थात् सामान्य एज जाति छे, अने गोत्वादि अपरसामान्य परमार्थत तेथी भिन्न नथी गोसत्ता एज गोत्व अने अश्वसत्ता एज अश्वत्व छे, ते कइ जूदा आवयी नथी. आ प्रमाणे गवादिना भेदवाळी सत्ताजातिमाज सर्व गोशब्दादि वाचकरूपे व्यवस्थित छे अने प्रातिपदिकनो अर्थ ते सत्ता छे एम प्रसिद्ध छे भाववचनो धातु ए पक्षमा भाव एज सत्ता छे अने तेथा धातुनो अर्थ तेज सत्ता थायछे क्रियावचनो धातु ए पक्षमा पण "अनेक व्यक्तिमा रहेनार क्रियाने बीजा पुरुषो जाति कहेछे" ए जाति पदार्थना लक्षणने अनुसार क्रिया अनेक व्यक्तिमा रहेली छे एम कहेवामा आव्यु छे तेथी धातुनो अर्थ तेज सत्ता छे. **तस्य भावस्त्वतलो** ए पाणिनिसूत्रमा भाव जणाववो होयतो त्व अने तल् (ता) प्रत्यय वापरवानु विधान करवामा आवेछे माटे त्वतलादि पण सत्तावाचि छे एम कहेवु योग्य छे आ सत्ता उत्पत्ति तथा विनाशथी रहित होवाथी नित्य छे, सर्व प्रपचनो तेमाथी विवर्त थवाने लीधे देश काल अने वस्तुथी अपरिछिन्न होवाथी ते महान् आत्मा छे आ प्रमाणे उपरनी भर्तृहरिनी बे कारिकाओ

नो अर्थ छे. वळी पदद्रव्यना अर्थनुं संपूर्ण ज्ञान ए छे लक्षण जेनुं एवुं जे तत्त्व ते सर्व शब्दनो अर्थ छे एम संबंधसमुद्देशमां प्रतिपादित कर्युं छेः—

सत्य वस्तुनी अवधारणा तेना जेवा आकारवाळी असत्य वस्तुओथी थाय छे. असत्यउपाधियुक्त शब्दोए करीने सत्यनुं अभिधान थायछे. अध्रुव निमित्त करीने देवदत्तना घरनुं ग्रहण थायछे परंतु मात्र गृहशब्दथी शुद्ध-वस्तुनुं (घरधणी वगरना घरनुं) अभिधान थायछे.

भाष्यकारे पण " सिद्धे शब्दार्थे संबंधे-" (शब्दअर्थ अने संबंध सिद्ध थतां—) ए वार्तिकनुं व्याख्यान करतां, " द्रव्य नित्य छे " इत्यादि वाक्यो वडे, अध्रुव उपाधिथी अवच्छिन्न ब्रह्मतत्त्व एज द्रव्य शब्दथी वाच्यछे अने ते सर्व शब्दनो अर्थ छे एम निरूपित कर्युं छे.[२]

शब्दनो अर्थ जातिछे एम कहेनार वाजप्यायनना मत प्रमाणे गवादि शब्दो भिन्नभिन्न द्रव्यसाथे समवायसंबंध धरावनार जातिनुं अभिधान करेछे. ते जातिनुं ग्रहण थतां तेनी साथे संबंध धरावनार द्रव्यनुं ग्रहण थाय छे. शुक्लादि शब्दो गुण साथे समवायसंबंध धरावनार जातिनुं अभिधान करे छे. जाति साथे संबंध होवाथी गुणनी प्रतीति थाय छे, अने गुण साथेना संबंधथी द्रव्यनी प्रतीति थाय छे. शैशव्य, कौमार, यौवन, इत्यादि अवस्थाभेद होवा छतां पण जन्मथी ते मरण सुधीमां 'ते आज' एम आपणे ओळखी शकीए छीए तेथी संज्ञाशब्दोनी पण देवदत्तादि जाति मानवी जोईए. क्रियाने विषे पण जातिनी लक्षणा थाय छे, अने ते धातुथी वाच्य छे, जेमके 'पठति' इत्यादिमां; कारण के सर्व पठनकरनाराओमां अनुवृत्त एवी प्रतीति उत्पन्न थाय छे.[३]

पदनो अर्थ द्रव्य छे (जाति नथी) एम माननार व्याडिनुं मत एम छे के शब्दनी व्यक्तिनो प्रतिभास अभिप्रायथी था-

य छे, पण जातिनो प्रतिभास तो लक्षणाथी थाय छे; आ प्रमाणे मानतां आनन्त्यादि दोषनो अवकाश रहेतो नथी.[31]

पाणिनि आचार्य आ बंने मनने मान्य करे छे. जात्याख्यायामेकस्मिन् बहुवचनमन्यतरस्याम् ए सूत्रमां पदनो अर्थ जाति छे एम ते स्वीकारे छे; तेमज सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ ए सूत्रमां पदनो अर्थ द्रव्य छे एम स्वीकारे छे. व्याकरण सर्व पक्षने अनुकूल होवाथी बे पक्ष स्वीकारवामां कंइ विरोध आवतो नथी माटे अद्वय सत्य अने पर एवुं ब्रह्मतत्त्व सर्व शब्दनो अर्थ छे एम सिद्ध थयुं.[32]

कह्युं छे के:—

माटे शक्तिना विभागे करीने, सत्य सर्व अने सदात्मक एवो एक अर्थ शब्दथी वाच्य एवां बहु रूपमां प्रकाशे छे.[33]

शब्दना सत्य स्वरूपना संबंधमां पण भर्तृहरिए संबंधसमुद्देशमां आ प्रमाणे कह्युं छे:—

जेमां द्रष्टा दृश्य अने दर्शन आवकाल्पत छे ते अर्थने वेदान्तना जाणनाराओ सत्य कहे छे.[34]

द्रव्यसमुद्देशमां पण कह्युं छे के:—

कुंडलगतसुवर्णनी पेठे विकार आवया छतां पण जे सत्य रहेछे, अने जेमांथी विकार जतो रह्यो छे, तेने पराप्रकृति कहेछे.

स्वीकारवामां आवेला अद्वितीयत्वना निर्वाहने अर्थे वाच्य अने वाचक (शब्द अने अर्थ) मां भेद नथी एम जणाववाने कहे छे के —

(उपर कहेली) पराप्रकृति सर्व शब्दनी वाच्या छे, अने ते शब्दथी पृथक् नथी, आ प्रमाणे बंने *अपृथक्* छे तोपण तेओनी वच्चे आत्मा परमात्माना जेवो संबंध छे.

आ कारिकानो अर्थ आ प्रमाणे छे: ब्रह्मतत्त्व सर्व शब्दनो विषय छे, आ ब्रह्मतत्त्वमां प्रतिनियत आकारोना उपा-

थिथी रूपभेद जोवांमां आवे छे, अने आ सर्व भेद उपाधिथी कल्पित होवाथी सर्व व्यवहार मात्र अविद्याथी कल्पित ठरेछे. परमार्थतः तो आ ब्रह्मतत्त्व भेदरहित छे. परंतु मायाकृत संवृति (आवरण) ने लीधे व्यवहारदशामा स्वप्नावस्थानी पेठे उच्चावच प्रपंच विवर्तने पामेछे.[39] वेदान्तमां निपुण एवा पुरुषो कहेछे के:—

जेम महारे विषे मायाथी विस्तारातो आ स्वप्न प्रपंच छे तेज प्रमाणे महारे विषे मायाथी विस्तारातो आ जाग्रत्प्रपंच छे.

आप्रमाणे कूटस्थ परब्रह्मने सच्चिदानंदरूप अने प्रत्यगात्माथी अभिन्न मानतां अनादि अविद्यानी निवृत्ति थाय छे अने तेथी ते (कूटस्थादि विशेषणयुक्त) ब्रह्म साथे ऐक्य ए छे लक्षण जेनुं एवो मोक्ष सिद्ध थाय छे. कह्युं छे के:—

शब्दब्रह्मने विषे निष्णात पुरुषो परब्रह्मने पामे छे.

आ प्रमाणे शब्दानुशासनशास्त्र मोक्षनुं साधन छे एम सिद्ध थयुं. कह्यु छे के:—

ज्ञानीओ कहे छे के ते (व्याकरणशास्त्र) मोक्षनुं द्वार छे, वाणीना व्याधिनुं औषध छे, सर्व विद्याओने पवित्र करनार छे, अने सर्व विद्याओनी विद्या छे.

वळी

सिद्धिरूप सोपान (दादर)नुं ते पगथीयुं छे, अने मोक्षना मार्गनो ते सीधो राजमार्ग छे.

माटे व्याकरणशास्त्र परमपुरुषार्थनु साधन होवाथी तेनुं अध्ययन करवुं जोईए एम सिद्ध थयु.

सांख्यदर्शन.

सांख्यमतवादीओथी प्रतिपादित करवामां आवतो आडो आवनार परिणामवाद ज्यां सुधी जाग्रत् छे त्यांसुधी विवर्तवाद उपर शी रीते आदर करी शकाय? सांख्यशास्त्रमां संक्षेपथी चार प्रकारना पदार्थ मानवामां आवे छे; कोइ पदार्थ मात्र प्रकृति छे, कोइ मात्र विकृति छे, कोइ प्रकृति अने विकृति बंने छे, अने कोइ प्रकृति पण नथी अने विकृति पण नथी. तेमां जे केवळ प्रकृति छे ते 'प्रधान' पदथी ओळखाय छे. ते मूलप्रकृति छे अने ते कोइनी विकृति नथी. 'प्रकर्षे करीने करे छे ते प्रकृति' ए व्युत्पत्तिथी सत्त्व रजस् अने तमस् ए त्रण गुणनी साम्यावस्थानुं अभिधान थाय छे अने तेथी 'मूल प्रकृति अविकृति छे' एम कहेवामां आवे छे. मूल एवी जे प्रकृति ते मूलप्रकृति, ते महत् आदि कार्यसमूहनुं मूल छे; आ प्रधाननुं अन्य कोइ मूल नथी, कारण के तेम लेतां अनवस्था दोष आवे. कोइ कहेशे के बीज अने अंकुरनी पेठे लेतां अनवस्था दोष न आवे तो तेनुं आ कहेवुं खोटुं छे, कारण के तेम सिद्ध करवाने कंइ प्रमाण नथी. महत् अहंकार अने तन्मात्रा ए प्रकृति अने विकृति बंने छे. कह्युं छे केः—

महत्ने आदि लईने सात प्रकृतिविकृति छे,

आ कारिकानो अर्थ आ प्रमाणे छेः प्रकृति एवी जे विकृति ते प्रकृतिविकृति, सात एटले महत्ने आदि लईने सात तत्त्व, तेमां अंतःकरणादि पदथी वेदनीय महत्तत्त्व अहंकारनी प्रकृति छे, अने मूळ प्रकृति (प्रधान) नी ते विकृति छे. ए प्रमाणे अभिमान ए जेनुं बीजुं नाम छे एवुं अहंकारतत्त्व महत्नी विकृति छे; अने तेज अहंकारतत्त्व तामस होईने सूक्ष्माभिधान पंच तन्मात्रानी प्रकृति छे, अने सात्त्विक होईने अगिआर इंद्रियो—चक्षुः श्रोत्र घ्राण रसना अने त्वक् ए पांच ज्ञानेन्द्रिय अने वाक्, पाणि, पाद, पायु अने उपस्थ ए पांच कर्मेन्द्रिय अने उभयात्मक मनस्—नी प्रकृति छे. रजस् पण व्यर्थ नथी, कारण के बंने स्थळे क्रिया उत्पन्न करनार होवाथी ते पण कारण ठरे छे.

ईश्वरकृष्ण कहेछे केः—

अभिमान जे अहंकार तेमांथी बे प्रकारनो सर्ग प्रवर्ते छे; एक अगिआरनो गण अने बीजो तन्मात्रापंचक. वैकृत अहंकारमांथी सात्त्विक एवो अगिआरनो गण प्रवर्ते छे. भूतनो आदि जे (अहंकार) तेमांथी तन्मात्रा प्रवर्ते छे: तन्मात्रापंचक छे ते तामस छे. आ बंने प्रकारनो सर्ग राजस अहंकारमांथी प्रवर्ते छे. चक्षुः श्रोत्र घ्राण रसना अने त्वक् ए ज्ञानेन्द्रिय छे अने वाक् पाणि पाद पायु अने उपस्थ ए कर्मेन्द्रिय छे. मन उभयात्मक छे, ते संकल्पविकल्पात्मक छे अने इंद्रिय साथे तेनुं साधर्म्य होवाथी ते पण इंद्रिय छे.

आ सर्वनुं तत्त्वकौमुदीमां आचार्य वाचस्पतिए विवरण कर्युं छे.

केवळ विकृति ते आकाशादि पंच महाभूत अने अगिआर इंद्रिय छे. कह्युं छे केः—

षोडशकस्तु विकारः.

' सोळ संख्यानो गण ते षोडशक; ते विकार-विकृति छे प्रकृति नथी. कोइ कहेशे के पृथिव्यादि पण गौ, घट, इत्या

दिनी प्रकृति छे तो तेने कहेवानु के ते पृथिव्यादिथी जूदा तत्त्व नथी अने तेथी ते प्रकृति नथी, आ मतमा 'जूदा तत्त्वनु उपादान ते प्रकृति' एम प्रकृतिनु लक्षण मानवामा आवे छे. गौ घट इत्यादिमा स्थूलत्व अने इंद्रियग्राह्यत्व समान होवाथी ते जूदां तत्त्व कहेवाय नहि. शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गध ए सूक्ष्म तन्मात्रामाना अनुक्रमे एक, बे, त्रण, चार, अने पाचमाथी एक, बे, त्रण, चार, अने पाच गुणवाळा आकाशादि पचभूत उत्पन्न थाय छे. इंद्रियसृष्टिना सबधमा पूर्वे कही गया छीए. सांख्य-कारिकामा कहे छे के —

(मूल) प्रकृतिथी महत्, महत्थी अहंकार, अहंकारथी सोळनो गण (पाच तन्मात्रा अने अगियार इंद्रिय) अने सोळमांना पांच (तन्मात्रा)थी पंच महाभूत उत्पन्न थाय छे

पुरुष छे ते प्रकृति पण नथी अने विकृति पण नथी. कारिकामा कह्यु छे के —

न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः ॥

पुरुष कूटस्थ नित्य अने अपरिणामी छे ते कोइनी प्रकृति पण नथी अने कोईनी विकृति पण नथी, आ प्रमाणे उपरनी कारिकानो अर्थ छे आ पचीस तत्त्वना साधकरूपे त्रण प्रमाणनो अगीकार करवामा आवे छे. कह्यु छे के —

प्रत्यक्ष अनुमान अने आप्तवाक्य (शब्द) ए त्रण प्रमाण मानवामां आवे छे, कारण के ते सर्व प्रमाण सिद्ध छे प्रमेयनी सिद्धि प्रमाणथी छे.

कार्य कारण भावना सबधमा चार प्रकारनो वाद उठे छे बौद्धो एम माने छे के असत्माथी सत् उत्पन्न थाय छे, नैयायिकादि एम माने छे के सत्माथी असत् उत्पन्न थाय छे, वेदान्तीओ एम माने छे के कार्य समूह छे ते सत्नो विवर्त छे, ते वस्तुसत् नथी, अने सांख्यमतवादीओ एम माने छे के सत्माथी सत् उत्पन्न थाय छे

असत्मांथी सत् उत्पन्न थाय छे ए पक्ष मानवा जेवो नथी, कारण के शशविषाण जेवुं निरूपाख्य असत् कारण थई शके ए मानी शकाय तेम नथी, तेमज असत् अने सत् वच्चे तादात्म्य होय एम पण मानी शकाय नहि.

सत्मांथी असत् पण उत्पन्न थई शके नहि, कारण के कारकना व्यापारनी पूर्वे शशविषाणजेवा असत्मांथी उत्पत्ति अर्थात् सत्तासंबंध संभवेज नहि; गमे तेवो निपुण पुरुष पण नीलने पीत करी शके नहि. कोइ कहेशे के सत्त्व अने असत्त्व ए घटना धर्म छे तो तेने केहेवानुं के ए वात मानवा जेवी नथी, कारणके जो धर्मी असत् होय तो 'तेनो धर्म' एम कही शकायज नहि अने कदी कोइ कहे तो ते सत् थई जाय. माटे कारकना व्यापारनी पूर्वे पण कार्य सत् होवुं जोईए. जेम तल पिलवाथी तेलनी, अथवा जेम गाय दोवाथी दूधनी अभिव्यक्ति थाय छे तेम जे सत् होय छे तेनी अभिव्यक्ति थाय छे. वळी उत्पत्ति पहेलां असत् एवा पदार्थने सिद्ध करवाने कोइ उदाहरण पण नथी. वळी हमे पूछीशुं के कार्यने उत्पन्न करनार कारणनो ते कार्यनी साथे संबंध छे के नथी? जो कहेशो के छे तो कार्य सत् थशे, कारण के सत् वस्तुओनोज संबंध होई शके एवो नियम छे. जो कहेशो के नथी तो गमे ते कार्य गमे ते कारणमांथी उत्पन्न थशे, कारण के असंबंधत्व ए काइ विशेष नथी.

सांख्याचार्य कहे छे केः—

कार्यने असत् मानतां तेनो सत्त्वसंगी कारणो साथे संबंध होतो नथी अने असंबंधनी उत्पत्ति इच्छनारथी कशी व्यवस्था थई शकती नथी.

जो तमे कहेशो के कारण कार्य साथे असंबद्ध होय तो पण ज्यां तेनी शक्ति होय त्यां ते कार्य उत्पन्न करी शके अने शक्तिनुं अनुमान कार्यना दर्शनथी थई शके, तो तेना संबंधमां हमे कहीशुं के ए प्रमाणे धारवुं असंगत छे, कारण के तलमां 'तेलने उ-

त्पन्न करवानी शक्ति छे' ए स्थळे तेज असत् होवाथी, तमे जे संबंध असमबन्धनो विकल्प कर्यो तेनुं समाधान थई शकशे नहि अने तेथी शक्तिनुं निरूपण करवुं अशक्य थई पडशे."

कार्य कारणनो अभेद मानतां कार्यनुं अस्तित्व कारणथी पृथक् थतुं नथी; जेम के पट तंतुथी भिन्न नथी, कारण के तेमां तेना धर्म जोवामां आवे छे. जेमां जेना धर्म जोवामां नथी आवता ते तेनाथी अभिन्न नथी, जेम के गाय अने घोडो; परंतु पटमां तंतुना धर्म जोवामां आवे छे माटे ते तेनाथी अभिन्न छे. जो तमे कहेशो के एम होय तो प्रत्येक तंतु पटनुं कार्य करे तो तेना प्रत्युत्तरमां अमे कहीशुं के जो तंतुओने अमुक स्थितिमां मुको तो पटनुं कार्य थाय, जेम के कूर्मनां अंग कूर्मना शरीरमां पाछां जतां ते अदृश्य थाय छे, अने बहार नीकळतां ते दृश्य थाय छे तेम तंतुआदिमांथी पटआदि विशेषो बहार नीकळतां ते पटादि रूपे प्रकट थाय छे अने त्यारे पटादिनी उत्पत्ति थई एम आपणे कहीए छीए; अने मूळ रूपमां निवेश करतां अदृश्य थाय त्यारे तेनो विनाश थयो एम आपणे कहीए छीए. खरुं जोतां असत्‌नी उत्पत्ति थती नथी अने सत्‌नो विनाश थतो नथी. भगवद्गीतामां कह्युं छे के.—

असत्‌नुं अस्तित्व अने सत्‌नो अभाव जणातो नथी.

माटे कार्यना अनुमानथी प्रधाननी सिद्धि छे." कह्युं छे के.—

असत्‌ना अकरणथी, उपादानना ग्रहणथी, सर्व संभवना अभावथी, शक्तना शक्यकरणथी, अने कारणभावथी, कार्य सत् ठरे छे"

यळी सत् एवा ब्रह्मतत्त्वनो विवर्त ते प्रपंच छे एम पण मनातुं नथी, कारण के प्रपंच सत्य छे ए मतने बाध आणे एवुं कंइ प्रमाण नथी तेमज अधिष्ठान (ब्रह्म) चेतन अने आरोप्य (जगत्) जड होवाथी बनेनी वच्चे सोना अने रूपानी पेठे

सारूप्य न होवाने लीधे आरोप असंभवित छे. माटे सुख दुःख मोहात्मक जगत्नुं कारण पण तेवुंज मानवुं जोईए.[3] प्रयोगना रूपमां आ आ प्रमाणे मुकी शकायः—

जगत्नुं कारण सुखदुःख मोहात्मक वस्तु होवी जोईए, कारण के ते (जगत्) मां तेनो अन्वय जोवामां आवे छे;

जेमां जेनो अन्वय जोवामां आवे ते तेनुं कारण होवुं जोईए;

जेम के अलंकारमां सोनानो अन्वय जोवामां आवे छे माटे सोनुं तेनुं कारण छे.

जगत्मां सुखदुःख मोहादिनो अन्वय जोवामां आवे छे, माटे तेनुं कारण पण सुख दुःख मोहात्मक छे.[4]

जेने आपणे जगत्मां सुखात्मकता कहीए छीए ते तेना कारणमां सत्त्व गुण छे, जेने दुःखात्मकता कहीए छीए ते रजोगुण छे अने जेने मोहात्मकता कहीए छीए ते तमोगुण छे. आ प्रमाणे जगत्नुं कारण त्रिगुणात्मक (प्रधान) छे एम सिद्ध थयुं.[5] आपणे जगत्मां जूदाजूदा पदार्थ त्रण गुण युक्त जोईए छीए.

पोतानी स्त्री सत्यवतीमां मैत्रने सुखनो अनुभव थाय छे ते ते (मैत्र)ना प्रति तेमांना (सत्यवतीमांना) सत्त्व गुणना प्रादुर्भावने लीधे थाय छे, सत्यवतीमां सत्यवतीनी शोक्योने दुःखनो अनुभव थाय छे ते तेओना प्रति तेमांना रजोगुणना प्रादुर्भावने लीधे थाय छे; तेने नहि प्राप्त करनार चैत्रने मोह थाय छे ते तेना प्रति तेमांना तमोगुणना प्रादुर्भावने लीधे थाय छे. ए प्रमाणे अन्य कोइ घटादि पदार्थ प्राप्त थतां सुख करे छे, बीजाथी तेनुं हरण थतां दुःख उत्पन्न करे छे. अने उदासीन प्रति ते उपेक्षानो विषय छे. उपेक्षानो विषय थवा पणुं ते मोह; कारण के मोह शब्द 'मुह वैचित्ये' ए धातु उपरथी थयो छे, अने उपेक्षणीय पदार्थ प्रति चित्तनी वृत्तिनो उदय थतो नथी.माटे सुख दुःख

मोहात्मक सर्व पदार्थ (भावसमूह) नुं कारण त्रिगुण प्रधान छे एम हमे मानीए छीए.[१८] श्वेताश्वतर उपनिषदूमां कह्युं छे के:—
अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां बह्वीः प्रजा जनयन्तीं सरूपाः
अजोह्येको जुषमाणोनुशेते जहत्येनां भुक्तभोगामजोन्यः

अहीं लोहित शुक्ल अने कृष्णशब्दनुं रंजकत्व प्रकाशत्व अने आवरकत्व साथे साधर्म्य होवाथी ते रजस् सत्व अने तमस् गुणनुं प्रतिपादन करे छे.[१७]

पूर्वपक्षीः— पण अचेतन एवुं जे प्रधान ते चेतनथी अनधिष्टित होय तो महदादिकार्य उत्पन्न करवाने तेनो व्यापार संभवे नहि; माटे कोइ चेतन अधिष्ठातृ होवुं जोईए. आ प्रमाणे जोतां सर्वदर्शी परमेश्वरनो स्वीकार करवो जोईए.[१८]

सिद्धान्तीः—आ प्रमाणे धारवुं असंगत छे, कारण के अचेतन एवा प्रधाननी पण प्रयोजनवशात् प्रवृत्ति संभवे छे. चेतनथी अनधिष्टित एवुं अचेतन पुरुषना अर्थने माटे प्रवर्ततुं आपणे जोईए छीए; जेमके वत्सनी वृद्धिने अर्थे अचेतन दूध प्रवर्ते छे, अथवा जेम अचेतन जळ लोकना उपकारने अर्थे प्रवर्ते छे. आ प्रमाणे अचेतन प्रकृति पण पुरुषना मोक्षने अर्थे प्रवर्ती शके. कह्युं छे के:—

अचेतन दूधनी जेम वत्सनी वृद्धिने माटे प्रवृत्ति छे तेज प्रमाणे पुरुषना मोक्षने अर्थे प्रधाननी पण प्रवृत्ति छे.[१९]

वळी 'परमेश्वर के जे करुणाए करीने प्रवर्तक छे', एवो परमेश्वरास्तित्ववादीओनो पोकार ते गथा खाते छे, कारण के नीचेनो विकल्प असह्य छे; ईश्वर सृष्टिनी पहेलां प्रवृत्ति करे छे के सृष्टिना उत्तर काळमां प्रवृत्ति करे छे? जो प्रथम पक्ष लो तो ते संभवतुं नथी, कारण के शरीरादिना अभावथी दुःखनी उत्पत्ति नहि होवाने लीधे जीवोना दुःखनो नाश करवानी इच्छा अनुपपन्न ठरे छे. बीजो पक्ष लो तो तेमां परस्पराश्रय दोष आवे छे, कारण के करुणाथी सृष्टि अने सृष्टिथी करुणा एम मानवुं पडे छे.[२०]

माटे चेतनथी अनधिष्ठित अचेतन प्रधाननु महदादिरूपे परिणाम पुरुषोना अर्थने माटे प्रयुक्त छे अने पुरुष अने प्रधाननो सयोग ते तेनु निमित्त छे. जेम निर्व्यापार अयस्कान्त (लोहचुबक)ना सानिध्यथी लोहनो व्यापार थाय छे ते प्रमाणे निर्व्यापार पुरुषना सानिध्यथी प्रधाननो व्यापार योग्य छे, अने प्रकृति अने पुरुषनो संबंध पागळा अने आंधळानी पेठे एक बीजानी अपेक्षाने आधारे छे. प्रकृति भोग्य होवाथी भोक्ता एवा पुरुषनी अपेक्षा करे छे, अने पुरुष पण पोते प्रकृतिथी भिन्न छे ए वातना अज्ञानथी बुद्धिनी छायामा आवी पडवाथी प्रतीत थता जे बुद्धिगत दु खत्रय तेने दूर करवाने कैवल्यनी अपेक्षा करे छे, अने कैवल्य प्रकृति अने पुरुषना विवेक उपर आधार राखे छे अने तेना वगर तेनो सभव न होवाथी ते कैवल्यने अर्थे प्रधाननी अपेक्षा करे छे.[21] जेम कोइ पागळो अने आंधळो मार्गमा साथे जता होय ते दैवयोगथी छूटा पडे अने धीमे धीमे आम तेम भटके तथा भयथी आकुल व्याकुल थाय, पण पछी दैवयोगथी ते भेगा थाय त्यारे आंधळो पागळाने पोतानो खाध उपर उचकी ले अने देखाडेला मार्गथी आंधळो इच्छेला स्थानने पामे अने पागळो पण आंधळानी खांधे बेठेलो होवाथी धारेला जगाए जई शके, तेज प्रमाणे एक बीजानी अपेक्षा करनार जे प्रधान अने पुरुष तेना उपर सर्ग (सृष्टि) नो आधार छे. कह्यु छे के —

पुरुषना दर्शनने (विचारने) माटे अने कैवल्यने माटे तेनो प्रधान साथे पांगळा अने आंधळानी पेठे संबंध छे. आ संबंधथी सृष्टिओनो प्रादुर्भाव छे[22]

पूर्वपक्षी —पुरुषना अर्थने माटे प्रकृतिनी प्रवृत्ति तो हमे स्वीकारीए छीए पण तेनी निवृत्ति शी रीते समजाय?[23]

सिद्धान्ती —जेम कोइ स्वच्छदी स्त्रीमा तेना पतिए दोष जोया होय अने ते पछी जेम ते स्त्री तेनी पासे जई शके नहि,

अथवा जेम पोतानी भूमिका भजव्या पछी नर्तकी निवृत्तिने पामे ते प्रमाणे प्रकृतिना संबंधमां पण थाय. कह्युं छे के:—

जेम पोतानो खेल बताव्या पछी नर्तकी नृत्यथी निवृत्त थाय छे तेज प्रमाणे पुरुषने पोतानुं स्वरूप देखाडी प्रकृति पण निवृत्त थाय छे.

आमाटे निरीश्वर सांख्यशास्त्रना प्रवर्तक कपिलना अनुयायीओना मतनो उपन्यास कर्यो छे.

पातंजल दर्शन.

हवे सेश्वर साख्य प्रर्वतक पतजलि वगेरे मुनिओना मतने अनुसरनाराओनु मन जणावीए छीए. त्या साख्यप्रवचन एवा बीजा नामवाळु पतजलिप्रणीत योगशास्त्र चार पादनु छे तेमाना. प्रथम पादमा भगवान् पतजलि

अथ योगानुशासनम्

(हवे योगनु अनुशासन)

ए सूत्रथी योगशास्त्रना आरमनी प्रतिज्ञानु विधान करीने

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः

(चित्तनी वृत्तिओनो निरोध ते योग)

इत्यादि सूत्रथी योगना लक्षणनु अभिधान करी सप्रपच समाधिनो निर्देश करे छे. बीजा पादमा

तपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः

(तप, स्वाध्याय अने ईश्वरप्रणिधान ए क्रियायोग छे.)

इत्यादि सूत्रोवडे व्युत्थान पामेला चित्त वाळाने माटे क्रियायोग

अर्थात् यमादि पंच बहिरंग साधनो जणाववामां आवे छे. त्रीजा पादमां,

देशबंध श्चित्तस्य धारणा.

(अमुक देशमां चित्तनो बंध ते धारणा)

इत्यादि सूत्रो वडे धारणा ध्यान अने समाधि ए त्रण संयम पदथी ओळखातां अंतरंग साधनो, तथा तेमां अवान्तर फल, जेवाके अनेक प्रकारनी विभूतिओ; ए सर्व जणाववामां आवे छे. चोथा पादमां;

जन्मौषधिमन्त्रतपःसमाधिजाः सिद्धयः

(जन्म, ओषधि, मंत्र, तप, अने समाधिथी सिद्धिओ प्राप्त थाय छे.)

इत्यादि सूत्रोथी पाच सिद्धिओना प्रपंचन साथे, परम प्रयोजन जे कैवल्य, तेनुं निरूपण करवामा आवे छे. प्रधानादि पचीस प्राचीन (सांख्य वाळाना) तत्त्व आ दर्शनमा संमत छे. अने छव्वीसमुं तत्त्व परमेश्वर छे. ते धर्म विपाक अने आशय जेने स्पर्श करता नथी एवो पुरुष पोतानी इच्छाथी निर्माण करेला शरीरमां रही, लौकिक अने वैदिक संप्रदायने प्रवर्तावे-छे, तथा संसारागारमां तप्त थता प्राणीओ उपर अनुग्रह करे छे.

पूर्वपक्षीः——पण आत्मा तो कमलना पत्र जेवो निर्लेप छे, तो तेने तापनो सभव क्याथी होय के परमेश्वरने अनुग्राहक रूपे स्वीकाराय ?

सिद्धान्तीः——तमारी शंकाना समाधानमां हमे आ प्रमाणे कहीये छीये: रजोगुण छे ते तापक छे अने सत्त्वगुण छे ते तप्य छे, अने तेज सत्त्वगुण बुद्धिरूपे परिणमे छे. हवे बुद्धिनी साथे पोताने तमोगुणने लीधे अभिन्न माननार पुरुष सत्त्वगुण तपतां 'तपे छे' एम कहेवाय छे. आचार्य कहे छे केः——

बुद्धिभावने पामेलु सत्त्व तप्य छे, अने राजसभाव तापक छे. तप्य साथे पुरुषने अभिन्न मनावनारी तामसी वृत्तिने लीधे आत्मा तप्य छे एम कहेलु छे.

पतंजलि पण कहे छे के —

भोक्तृशक्ति, जे अपरिणामिनी अने अप्रतिसक्रमा छे, ते परिणामी अने प्रतिसक्रान्त पदार्थने विषे तद्वृत्तिने अनुभवे छे.

भोक्तृशक्ति ते चित् शक्ति कहेवाय छे, अने तेज आत्मा छे, ते परिणामी, अने बुद्धितत्त्वमा प्रतिसक्रान्त अर्थात् प्रतिबिंबित, पदार्थमा तद्वृत्तिने अनुभवे छे, एटले के बुद्धिमा प्रतिबिंबित थएली ते चित् शक्ति उपर बुद्धिनी छाया पडवाने लीधे ते बुद्धिनी वृत्तिनु अनुकरण करे छे आ प्रमाणे पुरुष जो के शुद्ध छे, तो पण त बुद्धिकृत प्रतीतिने अनुसार जुवे छे, अने आ प्रमाणे बुद्धिकृत प्रतीतिने अनुसार जोनार आत्मा (जो के तद्व्यतिरिक्त छे तो पण) जाणे तदात्मक होय तेवो जणाय छे आ प्रमाणे तप्यमान पुरुष, आदरथी अटक्या वगर अने लाबा वखत सुधी यम नियमादि अष्टाग योगनु अनुष्ठान करे छे तथा परमेश्वरनु प्रणिधान करे छे, त्यारे तेने सत्त्व अने पुरुषनी अन्यता शुद्ध रूपमा जणाय छे, अने ते वखते अविद्यादि पचक्लेश समूल नाशने पामे छे तथा सारा के नठारा कर्माशय पण मूल मार्या नष्ट थई जाय छे. आ पछी निर्लेप पुरुषनु पूर्ण मुक्त रूपे करीने (कैवल्य रूपे करीने) अवस्थान ते तेनु कैवल्य छे[3]

योग शास्त्रना

अथ योगानुशासनम्

ए प्रथम सूत्रे करीने बुद्धिमान पुरुषनी प्रवृत्तिने माटे विषय, प्रयोजन, सबध अने अधिकारीरूप अनुबधचतुष्टयनु प्रति

पादन करवामां आवे छे.* अहीं अथ शब्द अधिकारार्थे (आरंभार्थे) स्वीकारवामां आवे छे.

पूर्वपक्षी:—'अथ' ना तो अनेक अर्थ थाय छे तो आरंभार्थे शा माटे तेनो स्वीकार करवामां आवे छे? नामलिंगानुशासन (अमरकोश) मां 'अथ शब्द मंगल, आनंतर, आरंभ, प्रश्न अने सकल (कात्स्र्न्य) ना अर्थनो वाचक छे' ए प्रमाणे तेना मंगलादि अनेक अर्थ आपेला छे. तेमां आ स्थळे प्रश्न अने सकल (कात्स्र्न्य) नो संभव नथी, तो पण आनन्तर्य, मंगळ, पूर्वप्रकृतापेक्षा अने आरंभ ए चार अर्थनो संभव छे तो मात्र आरंभार्थ लेवो अयोग्य छे.

सिद्धान्ती:—आ प्रमाणे कहेनारने हमे कहीए छीए के एम नथी, कारण के बीजा अर्थ लेतां नीचेनो विकल्प नडे छे. आनंतर्य (पछी) अर्थ लेतां कोना पछी? शमे तेना पछी के 'पूर्ववृत्तिभाव' लक्षणथी लक्ष्य जे कारण तेना पछी? 'शमे तेना पछी' ए पक्ष लेवाशे नहि, कारण के कंइ पण कर्या वगर कोइ पण प्राणी क्षणभर पण रहे तो नथी ए न्यायथी सर्व कोइ कंइ कर्या पछीज कंइ करे छे; अने आ प्रमाणे होवाथी पछी शब्द न कह्यो होय तो पण ते प्राप्त छे, अने तेथी अथ शब्द पछीना अर्थमां लेतां ते निरर्थक ठरे छे. 'पूर्ववृत्तिभाव जे कारण तेना पछी' ए पक्ष पण लेवाशे नहि, कारण के शमादि पछी योगनी प्रवृत्ति छे ए वात तो खरी छे, तो पण ते अनुशासननी प्रवृत्तिना अनुबंध होवाथी शब्दतः मुख्य नथी.* तमे कहेशो के शब्दतः प्रधानभूत जे अनुशासन ते शमादिनी पछी छे एम 'अथ' नो अर्थ शा माटे न लेवाय तो तेना प्रत्युत्तरमां हमे कहीशुं के तमाराथी एम कही शकाय नहि, कारण के 'जेणे करीने लक्षण, भेद, उपाय अने फल सहित योगनुं अनुशासन अर्थात् व्याख्यान कराय छे ते अनुशासन' ए व्युत्पत्तिथी अ-

नुशासननो अर्थ शास्त्र थाय छे. हवे अनुशासन शमादि पछी छे एवो कइ नियम नथी, कारण के खरु जोता ते तत्त्वनाज्ञान अने तेने जणावानी ईच्छा पछी छे अने शमादि पछी तो जिज्ञासा अने ज्ञान छे. श्रुतिमा कह्यु छे के —

माटे शान्त, दान्त, उपरत, तितिक्षु, श्रद्धावान् अने समाहित थईने आत्मामां आत्माने जोवा जोईए.

तमे कहेशो के अथनो अर्थ ' तत्त्वज्ञान अने तेने जणावानी इच्छा पछी ' एम ल्यो तो हमे कहीशु के ते खरु, परन्तु श्रोतानी प्रतिपत्तिने माटे ए बने अनुपयोगी छे माटे आ स्थळे ते अभिधेय नथी' वळी आ स्थळे एक प्रश्न उठे छे. योगानुशासनने निःश्रेयसना हेतु रूपे ल्ईने ते प्रमित कर्यु छे के नहि ? जो कहेशोके निःश्रेयसने हेतुरूपे ल्ईने ते प्रमित कर्यु छे तो शिष्य प्रश्नादिनो अभाव होयतो पण ते उपादेय ठरे छे. जो कहेशो के निःश्रेयसने लीधा वगर तेने प्रमित कर्यु छे तो शिष्य प्रश्नादि होवा छता पण ते हेय छे. पण वस्तुत तो योग निःश्रेयसनो हेतु छे एम प्रमित कराएलु छे.

श्रुतिमा कह्यु छे के —

अध्यात्मयोगनी प्राप्तिवडे धीर पुरुष मनन करीने शोक अने हर्षने त्यजे छे

स्मृतिमा पण कह्यु छे के —

समाधिने विषे अचल थयो बुद्धि योगने पामशे

माटे अथनो अर्थ ' शिष्यप्रश्न, तपश्चरण, अने रसायनादिना उपयोग पछी ' एम ल्यो ए निरर्थक छे'

अथातो ब्रह्मजिज्ञासा.

ए सूत्रमा ब्रह्मजिज्ञासाना अनधिकार्यपनेलाधे अथ शब्द अधिकारार्थ छे ए पक्षनो त्याग करीने साधन चतुष्टयविशिष्ट

अधिकारीने ब्रह्मज्ञान आपवा माटे शमदमादि पछी एम 'अथ' शब्दनो अर्थ शंकराचार्य करे छे.[११]

पूर्वपक्षीः—भले त्यारे पछीना अर्थमां अथ शब्द न लेशो. पण मंगलार्थे ते शा माटे न लेवाय ?

सिद्धान्तीः—ए प्रमाणे न लेवाय, कारण के मंगलार्थनो वाक्यार्थमां समन्वय जोवामां आवतो नथी. अनिंदित एवा अभीष्टनी प्राप्ति ते मंगल अने अभीष्ट एटले सुखनी प्राप्ति अने दुःखना परिहार पूर्वक इच्छेलुं. हवे योग सुख पण नथी अने दुःख पण नथी माटे योगानुशासननी मंगलता घटती नथी. वळी योगानुशासन मंगल छे एम पण प्रतिपादित थई शकतुं नथी, कारण के मृदंगध्वनिनी पेठे 'अथ' शब्दनुं श्रवण मात्र कार्य करी शके छे तेथी 'अथ' शब्दनो वाच्यार्थ तेमज लक्ष्यार्थ मंगल थतो नथी.[१२]

पूर्वपक्षीः—पण जेम आर्थिक अर्थनो वाक्यार्थमां निवेश थाय छे ते प्रमाणे कार्यनो पण निवेश शा माटे न थई शके ?[१३]

सिद्धान्तीः—तमारी शंकाना संबंधमां हमे कहीए छीए के वाक्यना अर्थने माटे एक पदना अर्थमां बीजा पदना अर्थनो समन्वय करवामां आवे छे; जो तेम न होयतो 'शाब्दी आकांक्षा शब्दे करीनेज पूरवी जोईए' ए वैयाकरणीओना नियमनो भंग थाय.

पूर्वपक्षीः—पण प्रारिप्सित प्रबंधनी परिसमाप्तिमां आडे आवनार अडचणोने दूर करवा माटे, अने शिष्टाचारनुं परिपालन करवा माटे, शास्त्रना आरंभमां मंगळाचरण करवुं जोईए. कारण के डाह्या पुरुषो कही गया छे के जे शास्त्रोना आरंभमां मध्यमां अने अंतमां मंगळाचरण करवामां आवे ते सर्वत्र सुप्रसिद्ध थाय अने तेनुं अध्ययन करनाराओ दीर्घ आयुष्यवाळा

तथा निजयी थाय अने 'अथ' शब्द मगलार्थमा छेज, कारण के स्मृतिमा कह्यु छे के —

ॐकार अने अथ शब्द पूर्वे ब्रह्मदेवनो कठ भेदीने व हार आव्या माटे ते मागलिक छे

वळी पाणिनि पण वृद्धिरादैच् ए प्रथम सूत्रना आरम्भमा 'वृद्धि' शब्द वापरे छे अने जेम ते मगलवाचक छे ते प्रमाणे आ सूत्रमा 'अथ' शब्द पण मगलवाचक लेवो जोईए[१५]

सिद्धान्ती —आ प्रमाणे धारवु मिथ्या छे, कारण के अन्य अर्थने माटे वापर्यो होय तो पण 'अथ' शब्द वाणा वेणु आदिना ध्वनिना पेठे मगलफल ने आपनारो छे जो कहेशोके अन्य अर्थने माटे अर्थात् आरभार्थने माटे वापरेला 'अथ' श ब्दने अन्यफल शी रीते सभवे तो हमे कहाशु के जेम अन्य कार्यने माटे लई जनामा आवतो जलकुभ प्रवासे नाकळनारने मगलप्रद छे तेम अन्य अर्थ (अधिकारार्थ) मा वापरेलो अथ शब्द पण मगलप्रद छे आ प्रमाणे लेता स्मृतिनो पण व्याकोप थतो नथी, कारण ओंकार अने अथ मागलिक कह्या छे त्या मागलिक एटले मगलप्रयोजक एम विवक्षा छे[१६]

पूर्व प्रकृतापेक्षाना अर्थमा पण 'अथ' शब्द लई श कातो नथी, कारण के 'अथ' शब्द पूर्वप्रकृतनी अपेक्षाना अर्थमा लेता तेमा पठीनो अर्थ आवे छे अने तेथा पछाना अर्थ ने माटे ने दूषण कह्या छे ते सर्व आ स्थळे पण नडे छे वळी जो के 'अथ शब्द अधिकारार्थे छे अथवा आनतर्यार्थे छे' ए प्र कारना विमर्श वाक्यमा पक्षान्तर जणावता अथ शब्द पूर्व प्रकृ तनी अपेक्षाना अर्थमा वपराय छे, तो पण चालता विषयमा तेवु कइ न होवाथी ए प्रमाण अर्थ थई शकतो नथी[१७] माटे परिशेषानुमानथा 'अथ' शब्द अधिकारार्थे (आरभार्थे) छे

एम भाष्यकार जणावे छे. 'अथैषज्योति' 'अथैषविश्वज्योति' इत्यादि वाक्यमा अथ शब्द यज्ञविशेषना प्रारंभना अर्थमा लेवामां आव्यो छे, तेमज 'अथशब्दानुशासनम्' ए सूत्रमा पण 'अथ' शब्द व्याकरण शास्त्रना अधिकार (आरंभ) ना अर्थमा लेवामा आव्यो छे. व्यासना योगसूत्रना भाष्यमा कह्यु छे के 'अथ' शब्द अधिकार (आरंभ) ना अर्थमा वप राय छे अने वाचस्पति तेनु व्याख्यान पण एज रीते करे छे. माटे 'अथ' शब्द अधिकारद्योतक तथा मंगलार्थ छे एम सिद्ध थयु" आ प्रमाणे आ 'अथ' शब्द अधिकारार्थे छे ए पक्ष लेता शास्त्र रूपे आरंभाता योगनी प्राप्तियी समस्त शास्त्रना तात्पर्यना व्याख्याने करीने शास्त्रना सुखावबोधपूर्वक श्रोतानी प्रवृत्ति थाओ.

पूर्वपक्षी –'हिरण्यगर्भ योगना वक्ता छे, अन्य कोइ पुरातन पुरुष नथी,' एप्रमाणे याज्ञवल्क्य स्मृति छे तो पतंजलि योगनु शासन करनार छे एम शी रीते कहेवाय?

सिद्धान्ती –तमारा आ प्रश्नना उत्तरमा हमे कहीए छीए के भिन्न भिन्न रूपमा योग जुदा जुदा पुराणादिमा प्रकीर्ण हो वाथी तेनो अर्थ दुर्ग्राह्य छे एम मानीने, भगवान् कृपासिंधु फणापति (पतंजलि) ए सारसंग्रह करवानी इच्छा करीने, अनुशासननो आरंभ कर्यो छे, साक्षात् शासननो आरंभ कर्यो नथी. २०

'अथ' शब्द अधिकारार्थे लेता प्रथम सूत्रनो अर्थ आ प्रमाणे थाय छे, 'योगानुशासन शास्त्र आरंभाय छे एम जाणवु जोईए' आ शास्त्रमा योगनु व्युत्पादन करवानु छे माटे फळ तथा साधन सहित योग तेनो विषय छे तेनु व्युत्पादन ए तेनातर फळ छे अने व्युत्पादित थया पछी कैवल्य तेनु परम प्रयोजन छे शास्त्र अने योगनो प्रतिपाद्यप्रतिपादकभाव संबंध

छे, अने योग अने कैवल्यनो साध्यसाधनभाव संबंध छे. आ सवर श्रुति आदिमां प्रसिद्ध छे एम हमे पूर्वेज कही गया छीए. मोक्षनी इच्छा करनाराओ आ शास्त्रना श्रवणना अधिकारी छे एम लक्षणाथी सिद्ध थाय छे.[२१] 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' ए सूत्रमां अधिकारीनी सिद्धि लक्षणाथी थती नथी, कारण के त्यां 'अथ' शब्द 'पछी' ना अर्थमां छे तेमज अधिकारीने वेदान्तनु ज्ञान प्रणालिकाद्वारा आपवु एम सिद्ध थयु छे तेथी लक्षणानो उदय थतो नथी.[२२] अने तेथीज कह्यु छे के —

श्रुतिप्राप्ते प्रकरणादीनामनवकाशः

आ वाक्यनो अर्थ आ प्रमाणे छे ज्यां श्रुतिथी अर्थनो लाभ न थाय त्यांज प्रकरणादिथी अर्थनी प्राप्ति थाय छे, अन्यस्थळे नहि; परंतु ज्यां शब्दथीज अर्थनो लाभ थाय छे त्यां बीजानो समय नथी, कारण के अर्थनो शीघ्रबोध करनारी श्रुतिथी अर्थ जणावतामां आव्यो होयतो पछी प्रकरणादि तेथी विरुद्ध अर्थ जणावे छे के अविरुद्ध ? जो ते विरुद्ध अर्थ जणावे छे एम कहो तो ते विरुद्ध अर्थने जणावनार होवाथी बाधित छे. जो कहेशो के अविरुद्ध अर्थ जणावे छे तो ते व्यर्थ छे.

वळी छे के —

श्रुति, लिंग, वाक्य, प्रकरण, स्थान अने समाख्या ए सर्वमां प्रत्येक पछी पछीनुं वधारेने वधारे दुर्बल छे, कारणके तेनो अर्थ वधारेने वधारे दूर छे[२३]

श्रुति सर्वनो बाध करे छे, अने समाख्यानो सर्वथी बाध थाय छे, अने मध्यम (लिंग, वाक्य, प्रकरण अने स्थान) सर्व बाध्यबाधक अपेक्षाए थाय छे[२४]

माटे योगानुशासनशास्त्रपण विषयादिवाळु होवाथी प्रक्षविचारक शास्त्रनी पेठे तेनो आरंभ थवो जोईए एम सिद्ध थयुं.

पूर्वपक्षीः—पण अहीं योगनुं प्रतिपादन करवामां आवे छे माटे ते प्रस्तुत विषय छे शास्त्र नथी.

सिद्धान्तीः—तमे कहोछो ते सत्य छे, योग प्रतिपाद्य होवाथी प्राधान्यतः ते प्रस्तुत विषय छे अने ते छे विषय जेनो एवा शास्त्रवडे तेनुं प्रतिपादन करवामां आवे छे. आ प्रमाणे जोतां योगना प्रतिपादनमां करण शास्त्र छे अने कर्त्ताना व्यापार करणगोचर छे, कर्मगोचर नथी, जेम के वृक्षादिने छेदनार देवदत्तनो व्यापार जे (कोवाडीने) उंचे नीचे करवा रूप कर्म, ते करणभूत परशु (कोवाडी) गोचर छे, कर्मभूत वृक्षादि गोचर नथी, तेज प्रमाणे वक्ता जे पतंजलि तेना वचन रूप व्यापारनी अपेक्षाए करीने, करणभूत योगशास्त्र अधिकृत छे, अने अभिधान व्यापारनी अपेक्षाए करीने योग अधिकृत छे. आप्रमाणेना विभागथी योगशास्त्रनो आरंभ संभावनीय छे अने चित्तवृत्तिनिरोध जे योग ते अनुशासनीय छे.[२६]

पूर्वपक्षीः—पण योग शब्द 'युज् संयोग करवो' ए धातुउपरथी सिद्ध थाय छे, अने तेथी तेनो अर्थ संयोग ज थवो जोईए, तो पछी तमे निरोध कहोछो ते शी रीते संभवे? [२७]

याज्ञवल्क्य पण कहे छे के.—

जीवात्मा अने परमात्माना संयोगने योग कह्यो छे.

सिद्धान्तीः—आ तमारुं कहेवुं निरर्थक छे, कारण के जीव अने परमात्माना संयोगमां कारण जे बेमांना एकनुं कर्म (क्रिया) ते असंभवित छे, वळी बे नित्य पदार्थनो संयोग थतो नथी एम कणाद अने गौतमनुं मत छे. जो के मीमांसको बे नित्य पदार्थोना संयोगनो स्वीकार करे छे त[illegible] ते नित्य सिद्ध होवाथी साध्य थवो संभवतो नथी, अ[illegible] शास्त्र व्यर्थ थवानो प्रसंग आवे छे. वळीधातुना अनेक अर्थ होवाथी युज् धातुनो अर्थ समाधि पण थई शके तेम छे. कह्युं छे के—

निपात, उपसर्ग अने धातुना अनेक अर्थ थाय छे; पाठ एज तेमनुं निदर्शन छे.

अने तेथीज केटलाक ' युजि समाधौ ' एम पाठ आपे छे.[२१] वळी याज्ञवल्क्यना वचननो पण आ प्रमाणे अर्थ लेतां व्याकोप थतो नथी, कारण के त्यां पण योगनो अर्थ समाधि एवो थई शके छे. ते पोते कहे छे केः—

समाधि एटले जीवात्मा अने परमात्मानी समतावस्था, प्रत्यगात्मानी ब्रह्मने विषे स्थिति ते तेनी समाधि छे.

भगवान् व्यास पण कहे छे केः—

योगः समाधिः

पूर्वपक्षीः—भगवान् पतंजलि

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान अने समाधि ए आठ योगनां अंग छे.

ए सूत्रथी अष्टाग योगमा छेल्ला अंगने समाधि कहे छे. हवे अंगी अंग थई शके नहि, कारण के उपकारी अने उपकारकना आयतन भिन्न होवाथी तेओ दर्श पूर्णमास अने प्रयाजादिनी पेठे एक बीजाथी अत्यंत भिन्न छे. आ प्रमाणे जोता समाधि योग शब्दनो अर्थ थई शके नहि.

सिद्धान्तीः—तमारु कहेवु मिथ्या छे, कारण के व्युत्पत्ति मात्रथी जोता समाधि शब्द योगना छेल्ला अगनो वाचक छे तो पण ' जे ध्यान पदार्थना रूपने धारण करे छे अने पोते जाणे स्वरूपशून्य होय तेवुं थाय छे तेनुं नाम समाधि छे ' ए प्रमाणे तेनुं लक्षण आपेलु छे तेथी, समाधि योगथी [illegible] एम सूत्रकारनुं कहेवानुं तात्पर्य स्पष्ट समजाय छे. [illegible] व्युत्पत्तिना बळथीज सर्वत्र शब्दनी प्रवृत्ति थाय छे एम [illegible] कही शकाय नहि, कारण के एम कहेतां ' गच्छतीति गौः ' ए व्युत्पत्तिथी

बेठेली गाय ते गाय नहि कहेवाय, अने गमन करतो देवदत्त ते गाय कहेवाशे. वळी चित्तनी वृत्तिओनो निरोध ते योग एम पूर्वे कह्युं छे ते उपरथी पण समाधि शब्द स्पष्ट समजाशे.[३२]

पूर्वपक्षीः— तमे कहो छो के योग एटले वृत्तिनो निरोध. हवे वृत्तिओ ज्ञान छे माटे ते आत्माश्रय छे अने तेओनो निरोध अर्थात् प्रध्वंस पण आत्माश्रय थवो जोईए, कारण के प्रागभाव अने प्रध्वंसाभावनो आश्रय अने तेओना प्रतियोगीओनो आश्रय एकज होवो जोईए एवो नियम छे. आम थतां 'आ नवो उत्पन्न थएलो धर्म धर्मीने विकृत करे छे ' ए न्यायथी आत्माना कूटस्थपणाने हानि थशे.[३३]

छे, तथा तेना परिणामीपणाने माटे कोई पण प्रकारनी शंका उत्पन्न थती नथी. परंतु जे विषये करीने चित् उपरक्त थाय छे ते विषय ज्ञात थाय छे अने जेणे करीने ते उपरक्त थतुं नथी ते अज्ञात रहे छे. आ प्रमाणे अयस्कान्त मणि जेवा पदार्थना ज्ञान अने अज्ञानना कारणभूत उपराग अने अनुपराग धर्म थाय छे, माटे आयस (लोह) ना जेवा धर्म वाळु चित्त परिणामी कहेवाय छे.[३४]

पूर्वपक्षी.—पण चित्त अने अहंकारजन्य इंद्रियो सर्वगत होवाथी तेओनो सर्व विषय साथे सर्वदा संबंध थयो घटे छे अने तेथी सर्वने सर्वदा सर्वत्र ज्ञान थवानो प्रसंग आवे छे.[३५]

सिद्धान्तीः—तमे कहो छो ते ठीक छे; पण जो के चित्त सर्वगत छे तो पण जे शरीरमा ते वृत्तिमत् होय ते शरीर साथे जे विषयोनो संबंध होय तेज विषयोमा तेने ज्ञान थाय छे, अन्यत्र थतु नथी. अने तेथीज अयस्कान्त मणि जेवा धर्मवाळा विषयो आयसना जेवा धर्मवाळा चित्तनो इंद्रियद्वारा संबंध करी तेने उपरक्त करे छे. माटे वृत्तिओ चित्तना धर्म छे, आत्माना धर्म नथी.[३६] श्रुतिमां पण कह्युं छे केः—

काम, संकल्प, विचिकित्सा, श्रद्धा, अश्रद्धा, धृति, अधृति ए सर्व मनज छे.

पंचशिखाचार्य पण चित् शक्तिनुं अपरिणामित्व जणावे छेः—

भोक्तृशक्ति अपरिणामिनी छे.

पतंजलि पण कहे छे केः—

• चित्तवृत्तिओ सदाज्ञात छे, कारण के प्रभु जे पुरुष ते अपरिणामी छे.

चित्त परिणामी छे एना सबधमा अनुमान पण आ प्रमाणे थाय छे —

चित्त परिणामी छे, कारण के तेना विषय ज्ञाताज्ञात छे, श्रोत्रादिनी पेठे.

परिणाम धर्म लक्षण अने अवस्थाना भेदथी त्रण प्रकारनु प्रसिद्ध छे. धर्मी जे चित्त तेनु नीलादिने जोवु ते धर्म परिणाम छे, जेमके सोनानु कटक मुकुट इत्यादि थवु, धर्मनु वर्तमान भूत के भविष्यत् थवु ते लक्षण परिणाम छे. नीलादि आलोचननु स्फुट थवु इत्यादि ते अवस्था परिणाम छे, तेमज कनकादिनु नवापणु अने जुनापणु ते अवस्था परिणाम छे[37] आ प्रमाणे अन्यत्र पण त्रणे प्रकारनु परिणाम लई शकाय. माटे प्रमाणादि वृत्तिओ चित्तना धर्म होवाथी तेओना निरोधनो आश्रय चित्त छे अने कइ पण अनुपपन्न नथी.

पूर्वपक्षी —पण वृत्तिनो निरोध ते योग एम अगीकार करता सपुप्त्यादिमा ज्यारे चित्त क्षिप्त के मूढ होय त्यारे पण तेनी वृत्तिओनो निरोध थवो सभवे छे अने तेथी एम थता योग थयो एम कहेवु पडे पण ते कई योग्य नथी, कारण के क्षिप्तादि अवस्थामा क्लेशना नाश वगेरेनो असभव छे, तेमज ते मोक्षना मार्गमा आडे आवे छे. क्षिप्त एटले जुदा जुदा विषयोमा फेंकातु अस्थिर चित्त. तम समुद्रमा निमग्न थयेलु निद्रावृत्तिवाळु चित्त ते मूढ अने क्षिप्तनो विशेष प्रकार ते विक्षिप्त गीतामा कह्यु छे के —

हे कृष्ण! मन छे ते चचल, प्रमाथी, बळवान् अने दृढ छे.

आ प्रमाणे मन जो के अस्थिर छे तो पण कोइ कोइ वार ते विषयना स्थैर्यथी स्थिर थाय छे. चित्तनी अस्थिरता

कांतो स्वाभाविक होय छे के कांतो व्याधि आदिथी थयेली होय छे. कह्यु छे के.—

व्याधि, स्त्यान, संशय, प्रमाद, आलस्य, अविरति, भ्रांतिदर्शन, अलब्धभूमिकत्व, अनवस्थितत्व, ए चित्तना विक्षेप छे अने ते अंतराय कहेवाय छे.

तेमा दोषत्रयनी विषमताथी थतो ज्वरादि ते व्याधि छे, चित्तनुं कंइ न करवापणुं ते स्त्यान, बे निरुद्ध कोटिओनुं अवगाहन करनार ज्ञान ते संशय, समाधिनां साधनोनुं असंभावन ते प्रमाद, शरीर वाणी अने चित्तना गुरुत्वथी थनार प्रवृत्तिनो अभाव ते आलस्य, विषयनो अभिलाष ते अविरति, जे ते न होय तेमा तद्बुद्धि थवी ते भ्रांतिदर्शन, कोइ पण निमित्तने लीधे समाधिभूमिकानो अलाभ ते अलब्धभूमिकत्व, समाधि भूमिकानो लाभ थयो होय तो पण तेमा चित्तनी अवस्थिति थाय नहि तेनुं नाम अनवस्थिति. माटे वृत्तिनिरोध ते योग ए पक्ष लेवाय तेवो नैथी.

सिद्धान्ती:—आ प्रमाणेनुं तमारुं कहेवुं निरर्थक छे, कारण के क्षिप्तादि त्रण अवस्थाओने हेय गणवामा आवी छे अने तेथी तेमा जे वृत्तिओनो निरोध थाय छे तेने पण हेय मानेलो छे, पण एकाग्र अने निरुद्ध ए बे अवस्थाओने उपादेय मानी छे, अने तेथी तेमा जे वृत्तीओनो निरोध थाय छे ते योग छे.एकज विषयमा चित्तनुं एकतान थवु ते एकाग्र कहेवाय छे अने जेमा सकल वृत्तिओनो निरोध थयो छे अने मात्र संस्कार शेष रह्या छे एवुं जे चित्त ते निरुद्ध कहेवाय छे."

उक्त समाधिना बे प्रकार छे, संप्रज्ञात अने असंप्रज्ञात. तेमां एकाग्र चित्तमा जे बाह्य विषयवाळी प्रमाणादि वृत्तिओनो निरोध ते सम्प्रज्ञात समाधि छे. जेमा प्रकृतिथी विविक्त रूपे चित्त सारीरीते जणाय छे ते सम्प्रज्ञात एम सम्प्रज्ञात श-

ब्दनी व्युत्पत्ति छे. तेना सवितर्क, सविचार, सानंद अने सास्मित ए रीते चार प्रकार छे. समाधि एटले भावना छे; अने अन्य विषयना परिहार पूर्वक भाव्यनु चित्तमा फरी फरीने निवेशन करवुं ते भावना छे. भाव्यना बे प्रकार छे, ईश्वर अने तत्त्वो. तत्त्वो पण बे प्रकारनां छे, जड अने अजड. प्रकृति, मद, अहंकार इत्यादि चोवीस तत्त्वो जड छे अने पुरुष अजड छे. तेमां ज्यारे पृथ्वी आदि स्थूल तत्त्वोने विषयरूपे लईने पूर्वापरना अनुसंधाने करीने अने शब्दना अर्थ अने उल्लेख्यना सम्यग् भेदे करीने जे भावनानी प्रवृत्ति थाय छे ते सवितर्क समाधि कहेवाय. ज्यारे तन्मात्रा अने अंत.करण जेवा सूक्ष्म विषयनुं आलंबन करिने देश काळादिना अवच्छेदे करीने भावना प्रवर्ते ते सविचार समाधि कहेवाय. ज्यारे तमस् अने रजस्ना लेशथी अनुविद्ध चित्तनी भावना करवामां आवे त्यारे सुख प्रकाशमय सत्त्वना उद्रेकथी सानंद समाधि थाय. ज्यारे रजस् अने तमस्ना लेशथी पण रहित एवा शुद्धसत्त्वनु अवलंबन करीने जे भावना प्रवर्ते त्यारे सास्मित समाधि थाय, कारण के आ भावनामां सत्त्वनो न्यग्भाव थाय छे अने चितिशक्तिनो उद्रेक थाय छे अने तेथी सत्तामात्र अवशिष्ट रहे छे. सर्व वृत्तिओनो निरोध ते असंप्रज्ञात समाधि कहेवाय छे. ”

पूर्वपक्षी.—तमे कह्युं छे के सर्व वृत्तिनो निरोध ते योग पण सम्प्रज्ञात समाधिमां तमारुं आ लक्षण अव्याप्त थाय छे, कारण के सत्त्व अने पुरुषना अन्यपणानो विचार करवो ए जेनुं लक्षण छे एवी सत्त्वप्रधाना वृत्तिनो तेमां निरोध थतो नथी.”

सिद्धान्ती:—आ प्रमाणे कहेवुं घटतु नथी, कारण के ‘ क्लेश कर्म विपाक अने आशयनो जेमां अटकाव थाय छे एवो चित्तवृत्तिनिरोध ते योग’ एवुं योगनुं लक्षण हमे स्वीकारीए

छीएँ[3] क्लेश पाच प्रकारना छे, अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष अने अभिनिवेश.

पूर्वपक्षी.—पण अविद्या शब्दथी शु समजवु ? 'अमक्षिकवर्तते' ए वाक्यमाना अमक्षिकना जेवो पूर्वपदप्रधान अव्ययीभाव समास लेवो के 'राजपुरुपना' जेवो उत्तरपदप्रधान कर्मधारय लेवो अथवा 'अमक्षिकोदेश' ए वाक्यमाना अमक्षिकना जेवो अन्यपदप्रधान बहुव्रीहि लेवो? अव्ययीभाव लेवाय नहि, कारण के पूर्वपद प्रधान थता अविद्यामानो 'अ' प्रसज्य प्रतिषेधनो विषय थशे अने तेथी अविद्या क्लेशादिने -करे छे एम मानी शकाशे नहि, तेम आखो शब्द स्त्रीलिंग रहेशे नहि. अविद्या शब्द कर्मधारय पण लेवाशे नहि, कारण के कोइना पण अभाव करीने विशिष्ट होय तो पण विद्या क्लेशादिनी परिपथिनी होवाथी ते क्लेशादिनु मूळ छे एम कहेवाशे नहि बहुव्रीहि पक्ष पण लेवाशे नहि, कारण के 'नञ् अने अस्त्यर्थ शब्दोनो बहुव्रीहि थाय छे अने तेमा उत्तर पदनो विकल्पे लोप थाय छे' ए वार्तिककारना वचनने अनुसार 'अविद्यमाना विद्या यस्या सा अविद्या (बुद्धि)' एम विग्रह करता अविद्या क्लेशादिनु बीज छे एम कहेवु अनुपपन्न ठरशे, जो के गमे तो ते विवेकपूर्वक सर्व वृत्तिना निरोधयुक्त होय तो पण ते (अविद्या होवाथी) क्लेशादिनु बीज थवीज जोईए छीए.

अस्मितादि क्लेशनु अविद्या कारण छे एम तो कहेलुज छे —

बीजा सर्व क्लेश प्रसुप्त, तनु, विच्छिन्न के उदार होय तो पण अविद्या तेओनु मूळ होय छे.

तेमा प्रबोधना सहकारीओना अभावने लीधे जेओनी अभिव्यक्ति थई नथी ते सुप्त; प्रतिपक्षनी भावनाए करीने शिथिल थएला ते तनु; कोइ बलवान् क्लेशथी अभिभूत थ-

एवा ते विछिन्न, अने सहकारीना सानिध्यथी कार्य करनार ते उदार व्यासभाष्यनी व्याख्यामा, वाचस्पतिमिश्र कहे छे के —

तत्त्वलीन पुरुषोना क्लेश ते प्रसुप्त छे, योगीना क्लेश ते तनु छे, अने विषयसंगी पुरुषोना क्लेश ते विछिन्न अने उदार छे

वळी, समासनो चतुर्थ प्रकार—उभयपदप्रधान द्वंद्वनो पण आस्थळे अवकाश नथी, कारण के अविद्या शब्दमा बे स्वतंत्र पदार्थ जोवामा आवता नथी माटे उपरना त्रण पक्षमा नो गमे ते लईए तो पण अविद्याने प्रसिद्ध रीते क्लेशनु मूळ मानवामा आवे छे ते खोटु ठरे छे[४४]

सिद्धान्ती —आ तमारु कहेवु ठीक नथी, कारण के वृद्ध पुरुषोए पर्युदास शक्तिनो आश्रय लईने अविद्या शब्द विद्या विरुद्ध जे विपर्ययज्ञान तेनु अभिधान करे छे एम स्वीकार्यु छे

कह्यु छे के —

नाम अने धात्वर्थसाथे नञ् प्रतिषेधक नथी; जेम के अब्राह्मण एटले ब्राह्मणविरुद्ध, अधर्म एटले धर्मविरुद्ध इत्यादि.

वळी

आपणे वृद्धोना प्रयोगथी शब्दना अर्थ जाणीए छीए माटे जे शब्द वृद्धोए जे अर्थमां वापर्यो होय तेमाथी तेने ससेडवो नहि.

वाचस्पतिमिश्र पण कहे छे के —

शब्द अने अर्थना सबंधनु अवधारण लोकाधीन छे, हवे तत्पुरुष समास उत्तरपदप्रधान छे तो पण आपणे स्थळे स्थळे जोईए छीए के तेमांनो नञ्, उत्तर पदथी जे अर्थ कहेवानो छे तेनो विरुद्ध होवाथी तेना अर्थने ओछो करी नाखे छे, अने तेज

प्रमाणे अहीं पण अविद्यानो अर्थ विद्याविरुद्ध एम लई शकाय आ सर्वनो विचार करीने भगवान् पतंजलि कहे छे केः—

अनित्य अशुचि दुःख अने अनात्मनेविषे नित्यत्व शुचित्व सुखत्व अने आत्मत्वनी प्रतीति ए अविद्या.[५]

विपर्ययनुं लक्षण पण

जे ते नथी तेमां तद्बुद्धि ते विपर्यय.

ए प्रमाणे आप्युं छे ते योग्य छे. जेमके घटादि जे अनित्य छे तेमा नित्यत्वबुद्धि करवी; अथवा शरीर के जे

स्थान (गर्भ,) बीज, घटना (वात कफ अने पित्त) स्वेद अने मृत्युथी, तेम ज ते पवित्र करवानुं छे एम मानवामां आवे छे तेथी, शरीरने पंडितो अपवित्र माने छे

ए वचनने अनुसार अशुचि छे, तेमा शुचित्व (पवित्रपणु) मानवुं; अथवा

परिणाम, ताप अने संस्कारने लीधे तेमज त्रण गुणना परस्पर विरोधने लीधे विवेकीने सर्व दुःख छे

ए वाक्यानुसार माला, चंदन, स्त्री आदि दुःखरूप पदार्थमा सुखबुद्धि करवी; अथवा देहादि जे अनात्म छे तेमा आत्मबुद्धि करवी. कह्युं छे के.—

अनात्म एवा जे देहादि तेमां देहीओनी आत्मबुद्धि थवी ते अविद्या छे; अविद्याथी बंध थाय छे अने तेना नाशथी मोक्ष थाय छे. आ प्रमाणे अविद्याना चार भेद छे[६]

पूर्वपक्षीः—पण आ चार अविद्याना भेद तो कह्या पण ते सर्वमा अनुगत एवु एक सामान्य लक्षण कहेवुं जोईए, नहि तो विशेष लक्षण असिद्ध थशे. भट्टाचार्य (कुमारिल) कहे छे केः—

सामान्य लक्षणनो त्याग करीने केवल विशेषनुं लक्षण आपी शकाय नहि, माटे ते कहेवुं पण जोईए नहि.

सिद्धान्ती —पण आ तमारु कहेवु निरर्थक छे, कारण के 'जे ते नथी तेमा तद्बुद्धि' एवुं सामान्य लक्षण आपेलुं छे.

सत्त्व अने पुरुषनी 'हु छो' ए प्रकारनी एकतानुं अभिमान ते अस्मिता. कह्यु छे के —

दृक् अने दर्शनशक्तिना एकात्मत्वनु अभिमान ते अस्मिता

सुखने जाणनारनी सुखना स्मरणपूर्वक सुखना साधनोमा जे तृष्णारूप इच्छा ते राग. दु खने जाणनारनी दु खस्मरणपूर्वक दु खना साधनोमा जे निंदाबुद्धि ते द्वेष. कह्यु छे के —

सुखानुशयीते राग; दुःखानुशयीते द्वेष

पूर्वपक्षी —अनुशयी शब्द केवी रीते लेवो ? ताच्छील्यार्थे 'णिनि' प्रत्यय लेवो के मत्वर्थीय 'इनि' प्रत्यय लेवो ? णिनि प्रत्यय लेवाशे नहि, कारण के

सुपि स्थः

ए सूत्रमा 'सुपि' पद आवे छे अने पछीना सूत्रोमा तेने लई शकाय तेम छे तोपण

सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये.

ए सूत्रमा 'सुपि' पद फरीने आवे छे अने ते निरर्थक न थाय माटे एम समजवु जोईए के ते उपसर्गनी निवृत्तिने माटे छे. आ उपरथी जोता उपसर्ग सहितना धातुने 'णिनि' प्रत्यय लगाडी शकाय नहि. कदापि कोइ अन्य प्रकारे 'सुपि' पदनी व्यवस्था करवामा आवे तोपण

अचोञ्णिति.

ए सूत्रथी धातुनी वृद्धि थवी जोईए अने तेथी अतिशायीनी पेठे अनुशायी शब्द थवो जोईए. तद्धित प्रत्यय 'इनि' पण लई शकाय नहि, कारण के

'इनि' अने 'ठन' प्रत्यय-एकाक्षर शब्द पछी, कृदंत पछी, जाति वाचक शब्द पछी, अने सप्तमीमां वापरी शकाय नहि.

ए वचनथी अनुशाय शब्द के जे अजन्त होवाथी कृदंत छे तेने 'इनि' प्रत्यय लगाडी शकाय नहि. माटे अनुशायी शब्द साधु ठरतो नथी"

सिद्धान्तीः—आ तमारुं कहेवुं खोटुं छे, कारणके उपरनुं वचन मात्र प्रायिक (सामान्य) छे. वृत्तिकार

इनिथी करातां विवक्षार्थनो सर्वत्र संबंध थाय छे.

ए वाक्यथी उपरनो नियम प्रायिक छे एम जणावे छे अने तेथी 'कार्यी' 'कार्यिक' 'तंडुली' 'तंडुलीक' एवा शब्दो कोइ कोइवार जोवामां आवे छे. कृदन्त अने जातिवाचक शब्द पछी 'इनि' प्रत्ययनो निषेध प्रायिक थतां अनुशाय शब्द कृदन्त होवा छतां पण तेने 'इनि' प्रत्यय लगाडी शकाय छे, अने तेथी अनुशायी शब्द साधु छे एम सिद्ध थाय छे."

पूर्व जन्मोमां अनुभूत मरण दुःखना अनुभवनी वासनाना बळथी कृमिथी ते विद्वान् सुधीनां सर्व प्राणीओमां उत्पन्न थतो 'शरीर अने विषयोनो मने वियोग न थायतो सारुं' ए प्रकारनो वगर निमित्ते प्रवर्तनारो जे भयक्लेश, ते पांचमो क्लेश 'अभिनिवेश' छे, ने ते 'हुं मरुं नहि' 'हुं जीवुं' इत्यादि इच्छा करता प्रत्येक प्राणीथी अनुभवाय छे ए वातथी सिद्ध थाय छे." कह्युं छे केः—

पोतानी मेळेज वहन करतो अने विद्वानमां पण तेटलाज बळथी जोवामां आवतो अभिनिवेश छे.

आ अविद्यादि पांच विविध सांसारिक दुःखना हेतुरूपे पुरुषने पीडेछे (क्लिश्नन्ति) माटे ते क्लेश कहेवाय छे.

ज्योतिष्टोम, ब्रह्महत्या इत्यादि विहित प्रतिषिद्ध रूप ते

सिद्धान्ती:—पण आ तमारुं कहेवुं निरर्थक छे, कारण के 'जे ते नथी तेमां तद्बुद्धि' एवुं सामान्य लक्षण आपेलुं छे.

सत्त्व अने पुरुषनी 'हुं छो' ए प्रकारनी एकतानुं अभिमान ते अस्मिता. कह्युं छे के:—

दृक् अने दर्शनशक्तिना एकात्मत्वनुं अभिमान ते अस्मिता.

सुखने जाणनारनी सुखना स्मरणपूर्वक सुखना साधनोमा जे तृष्णारूप इच्छा ते राग. दुःखने जाणनारनी दुःखस्मरणपूर्वक दुःखना साधनोमां जे निंदाबुद्धि ते द्वेष. कह्युं छे के:—

सुखानुशयीते राग; दुःखानुशयीते द्वेषः.

पूर्वपक्षी.—अनुशयी शब्द केवी रीते लेवो? ताच्छील्यार्थे 'णिनि' प्रत्यय लेवो के मत्वर्थीय 'इनि' प्रत्यय लेवो? णिनि प्रत्यय लेवाशे नहि, कारण के

सुपि स्थः

ए सूत्रमां 'सुपि' पद आवे छे अने पछीनां सूत्रोमां तेने लई शकाय तेम छे तोपण

सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये.

ए सूत्रमां 'सुपि' पद फरीने आवे छे अने ते निरर्थक न थाय माटे एम समजवुं जोईए के ते उपसर्गनी निवृत्तिने माटे छे. आ उपरथी जोता उपसर्ग सहितना धातुने 'णिनि' प्रत्यय लगाडी शकाय नहि. कदापि कोइ अन्य प्रकारे 'सुपि' पदनी व्यवस्था करवामां आवे तोपण

अचोञ्णिनि.

ए सूत्रथी धातुनी वृद्धि थवी जोईए अने तेथी अतिशायीनी पेठे अनुशायी शब्द थवो जोईए. तद्धित प्रत्यय 'इनि' पण लई शकाय नहि, कारण के

'इनि' अने 'ठन' प्रत्यय, एकाक्षर शब्द पछी, कृदंत पछी, जाति वाचक शब्द पछी, अने सप्तमीमां वापरी शकाय नहि.

ए वचनथी अनुशय शब्द के जे अजन्त होवाथी कृदत छे तेने 'इनि' प्रत्यय लगाडी शकाय नहि. माटे अनुशयी शब्द साधु ठरतो नथी"

सिद्धान्ती.—आ तमारु कहेवु खोटु छे, कारणके उपरनु वचन मात्र प्रायिक (सामान्य) छे. वृत्तिकार

इनिथी कराता विवक्षार्थनो सर्वत्र संबध थाय छे.

ए वाक्यथी उपरनो नियम प्रायिक छे एम जणावे छे अने तेथी 'कार्यी' 'कार्यिक' 'तंडुली' 'तंडुलीक' एवा शब्दो कोइ कोइवार जोवामा आवे छे. कृदन्त अने जातिवाचक शब्द पछी 'इनि' प्रत्ययनो निषेध प्रायिक थता अनुशय शब्द कृदन्त होवा छता पण तेने 'इनि' प्रत्यय लगाडी शकाय छे, अने तेथी अनुशयी शब्द साधु छे एम सिद्ध थाय छे."

पूर्व जन्मोमा अनुभुत मरण दु खना अनुभवनी वासना ना बळथी कृमिथी ते विद्वान् सुधीना सर्वे प्राणीओमा उत्पन्न थतो 'शरीर अने विषयोनो मने वियोग न थायतो सारु' ए प्रकारनो वगर निमित्ते प्रवर्तनारो जे भयक्लेश, ते पाचमो क्लेश 'अभिनिवेश' छे, ने ते 'हु मरु नहि' 'हु जीवु' इत्यादि इच्छा करता प्रत्येक प्राणीथी अनुभवाय छे ए वातथी सिद्ध थाय छे'' कह्यु छे के —

पोतानी मेळेज वहन करतो अने विद्वानमां पण ते प्रमाणे वळगी रहेलो जोवामां आवतो अभिनिवेश छे.

आ अविद्यादि पाच विविध सासारिक दु खना हेतुरूपे पुरुषने पीडे छे (क्लिश्नन्ति) माटे ते क्लेश कहेवाय छे.

ज्योतिष्टोम, ब्रह्महत्या इत्यादि विहित प्रतिषिद्ध रूप ते

कर्म. विपाक एटले कर्मना फळ जेवा के जाति, आयुष्, भोग इत्यादि. फळना विपाक सुधी जे चित्तभूमिमा रहे छे ते आशय जेवाके धर्माधर्म संस्कार, आ सर्वनो परिपन्थी जे चित्तवृत्तिनिरोध ते योग. आ निरोध अभावरूप मानवामा नथी आवतो, कारण के तेम मानता ते भावरूप संस्कारने उत्पन्न करवाने असमर्थ थाय, परंतु ते मधुमती, मधुप्रतीका, विशोका, अने संस्कारशेषता ए नामथी ओळखाती, अभावाश्रय, चित्तनी अमुक प्रकारनी अवस्था छे एम मानवामा आवे छे"[१] 'निरोधाय छे चित्तनी वृत्तिओ जेमा ते निरोध ए प्रकारे एशब्दनी व्युत्पत्ति छे.

वृत्तिनो निरोध अभ्यास अने वैराग्यथी थाय छे.

स्थितिने माटे यत्न ते अभ्यास, प्रकाश प्रवृत्ति अने नियमरूप वृत्तिओथी रहित चित्तनु स्वरूपनिष्ठ परिणामविशेष ते स्थिति स्थितिने माटे यत्न अर्थात् वारंवार चित्तने विषे वृत्तिओनो तदभिन्नरूपे अभिनिवेश ते अभ्यास. (स्थितौ-यत्न अहीं सप्तमी निमित्तार्थे छे जेम के चर्मणि द्वीपिनो हन्ति इत्यादि वाक्योमा) 'दृष्ट अने आनुश्रविक विषयनी तृष्णारहित पुरुषनी जे वशीकारसंज्ञा (मे आ तृष्णा ने वश करी छे एवु भान) ते वैराग्य.' ऐहिक अने पारलौकिक विषयादिमा दोषदर्शन करीने निराभिलाष थएला पुरुषनो 'आ विषयो म्हारे वश्य छे हु तेमने वश्य नथी' ए प्रकारनो जे विमर्श ते वैराग्य ए उपरना सूत्रनो अर्थ छे"[३]

समाधिपरिपंथी क्लेशने ओछा करवामाटे अने समाधिना लाभने माटे योगीए प्रथम क्रियायोगनु सेवन करवु, कारण के अभ्यास अने वैराग्यनो क्रियायोगमा संभव छे.

श्रीकृष्ण गीतामां कहे छे के —

योगनु आरोहण करवानी इच्छा करनार मुनिने

माटे कर्म छे ते साधन छे पण ते ज्यारे योगारूढ थाय त्यारे शम साधन कहेवाय छे.

पतंजलि क्रियायोगनुं लक्षण आ प्रमाणे आपे छे:—

तप स्वाध्याय अने ईश्वरप्रणिधान ते क्रियायोग छे.

याज्ञवल्क्य तपना स्वरूपनुं आ प्रमाणे निरूपण करे छे:—

विधिथी कहेला मार्गे करीने कृच्छ्चान्द्रायणादि थई शरीरनुं शोषण करवुं ते सर्व तपमां उत्तम तप छे.

प्रणव, गायत्री, इत्यादिनु अध्ययन ते स्वाध्याय; मंत्र बे प्रकारना छे, वैदिक अने तांत्रिक; वैदिक बे प्रकारना छे. प्रगीत अने अप्रगीत; साममंत्र ते प्रगीत; अप्रगीत बे प्रकारना छे, छंदोबद्ध अने तेथी विलक्षण; ऋचाओ प्रथम प्रकारना मंत्र छे अने यजुष् बीजा प्रकारना छे.

जैमिनि कहे छे के —

तेओमांना जेमां अर्थवशात् पद व्यवस्था थई शके छे ते ऋचाओ छे. जे गवाय छे ते साम कहेवाय छे अने बाकीनाने यजुर् कहे छे.

काम्यकर्मनुं प्रपंचन करनार तंत्रोमा जे मंत्रोनुं वर्णन कर्युं छे ते तांत्रिक मंत्र छे. तेना त्रण प्रकार छे, स्त्रीमंत्र, पुरूष मंत्र अने नपुंसक मंत्र.

कह्युं छे के:—

स्त्री, पुरुष, अने नपुंसकना भेदे करीने मंत्र त्रण जातिना होय छे. जे मंत्रने छेडे स्वाहा आवे ते स्त्रीमंत्र छे, जे मंत्र ने छेडे " नमस् " आवे ते नपुंसक छे, बाकीना पुरुष मंत्र छे ते सिद्ध छे अने वशीकरणादि ने माटे प्रशस्त छे.

ज्ञापनादि संस्कारना अभावे पण ते समस्त दोषथी रहित होवाथी सिद्धिना हेतु रूप छे माटे ते सिद्ध कहेवाय छे.

शारदातीलकमां संस्कारना दश प्रकार कहेला छेः—

सिद्धिने आपनार एवा मंत्रोना दश संस्कार कहेवामां आवे छे.

सारी रीते संस्कृत करेला मंत्रो निर्दोष थाय छे.

जनन, जीवन, ताडन, बोधन, अभिषेक, विमलीकरण, आप्यायन, तर्पण, दीपन अने गुप्ति ए दश मंत्रना संस्कार छे.

मातृकावर्णमांथी मंत्रनुं उद्धरण ते जनन, मंत्रनावर्णने प्रणवान्तरित करीने मंत्रमां जेटला वर्ण होय तेटली वार तेनो जाप करवो ते जीवन.

मंत्रनावर्णने लखीने चंदनना पाणी वडे प्रत्येक वर्णनुं वायुबीज (जम्) वडे ताडन करवुं ते ताडन.

मंत्रनावर्णने लखीने मंत्रनावर्ण जेटलां करेणनां पुष्प वडे तेमनुं हनन करवुं ते बोधन.

पोताना तंत्रमां कहेला विधि प्रमाणे मंत्र सिद्ध करनार पुरुषे मंत्रना वर्ण जेटलां पिपळानां पानां वडे मंत्र उपर अभिषेक करवो ते मंत्रनी शुद्धिनो अभिषेक कहेवाय.

मनमां मंत्रनुं चिंतन करीने ज्योतिर्मंत्र वडे मंत्रना त्रण मलनुं साधके निर्दहन करवुं तेनुं नाम विमलीकरण कहेवाय.

प्रणव तथा व्योम अने अग्निना मंत्रो ते ज्योतिर्मंत्र छे

कुशोदक वडे जलना बीज (वं)ना जाप पूर्वक मंत्रना प्रत्येक वर्णनु विधिथी प्रोक्षण करवुं ते आप्यायन कहेवाय छे.

मंत्रथी पवित्र करेला पाणीवडे मंत्रनुं तर्पण करवुं ते तर्पण कहेवाय.

प्रणव तथा माया अने लक्ष्मीनां बीज (ह्रीँ अने श्रीँ) मंत्रसाथे जोडवां तेनुं नाम दीपन कहेवाय.

जे मंत्र नो जाप करवानो छे ते कोइने कहेवो नहि तेनुं नाम गोपन कहेवाय.

आ मंत्रना दश संस्कार सर्व तंत्रोमां गुप्त राखेला छे. पोताना संप्रदायने अनुसरीने आ संस्कार करवाथी साधकने मंत्र वांछित फल आपे छे.

आ उत्तम संस्कारोए करीने रुद्ध, कीलित, विच्छिन्न सुप्त अने शप्त इत्यादि मंत्र दोषो नाशने पामे छे.

पण आटलेथीज हमे आ अप्रासंगिक तांडव जेवुं मंत्र रहस्यनुं उद्घोषण बंध करीए छीए.

ईश्वरप्रणिधान एटले अभिहित के अनभिहित सर्व क्रियाओनुं फलनी अपेक्षा न राखता परम गुरु परमेश्वर ने समर्पण करवु ते.

कह्युं छे के'—

इच्छाथी के इच्छा वगर जे जे शुभाशुभ हुंकरुं ते सर्व तारामां विन्यस्त छे, ताराथी प्रयुक्त थयलो हुं सर्व ते ते करुं छुं.

क्रियाना फलनो सन्यास, ते पण भक्तिविशेष छे अपर पर्याय जेनो, एवुं ईश्वरप्रणिधान ज छे, कारण के सर्व कोइ फलनी इच्छाथीज कर्म करे छे.

भगवान् गीतामा कहे छे के —

कर्ममां तारो अधिकार छे; फलमां नथी. कर्म करवामां तुं फलने हेतुरूप मानतो नहि, तेमज कर्ममां असंग पण रहीश नहि.

फलनी इच्छा हानिकारक छे एम भगवान् नीलकंठभारती पण कहे छे.—

प्रयत्न वडे सिद्ध कर्युं होय तो पण कामनाथी दूषित थयुं होय ते तप कूतराए चोटेला दूध जेवुं छे; तेथी महेश्वर संतुष्ट थता नथी.

आ तप स्वाध्याय अने ईश्वरप्रणिधानरूप क्रिया योगनुं साधन होवाथी शुद्धसारोपलक्षणावृत्तिथी योग कहेवाय छे; जेम के आयुष् छे तेघी छे.** शुद्धसारोपलक्षणा ए एक लक्षणानो भेद छे. ज्यां मुख्यार्थनो बाध थतो होय अने अन्य अर्थमां शब्दनो योग होय तो तेनो अन्य अर्थ लेवो ते लक्षणा. तेना बे प्रकार छे, रूढीमूला अने प्रयोजनमूला.

काव्यप्रकाशमा कर्युं छे केः—

मुख्यार्थनो बाध थतो होय अने अन्य अर्थमां शब्दनो योग थतो होय तो रूढी अथवा प्रयोजनथी अन्य अर्थ लेवो ते लक्षणा अर्थात् शब्दनी आरोपिता क्रिया कहेवाय.

'अन्योर्थो लक्ष्यते यत्सा लक्षणारोपिता क्रिया' आहिं यत् पछी तत् आववो जोईए परंतु तत् शब्द लक्ष्यते पदमां गुणीभूत एवुं कोइ नपुंसकपद सूचवे माटे ते न लखतां 'सालक्षणा' एम प्रतिनिर्दिष्यमान (लक्षणापद)नी अपेक्षाए करीने तत् पदनु स्त्रीलिंग रूप सा लख्युं छे. कैयट पण कहे छे के निर्दिश्यमान अने प्रतिनिर्दिश्यमाननु जे सर्वनाम ऐक्य ठरावनार होय ते अनुक्रमे ते ते जातिमा मुकाय. त्यां 'कर्ममा कुशल' ए रूढीलक्षणानु उदाहरण छे. कुशल शब्दनी व्युत्पत्ति 'कुशान् लातीतिकुशल' छे अने तेनो यौगिक अर्थ कुश दर्भने लुटनार एवो थाय छे, अने तेज शब्द प्रविणना अर्थमा वपराय छे, कारण के उभयमां विवेक बुद्धिनु सारूप्य होय छे. आ प्रमाणे कुशलशब्द प्रविणना अर्थमा वपराता कोइपण प्रयोजननी अपेक्षा रहेती नथी, कारण के ते वाच्य अर्थनी पेठे अनादि वृद्धव्यवहारनी परंपराथी चालतो आवे छे.

कह्यु छे के —

केटलीक रूढीलक्षणाओ वाच्यअर्थनी पेठे सामर्थ्यथी छे

माटे रूढीलक्षणाने प्रयोजननी अपेक्षा नथी. प्रयुक्त शब्द प्रथम मुख्यार्थनु प्रतिपादन करे छे, अने पछी ते अर्थे करीने अन्य अर्थनी लक्षणा करावे छे तेथी जो के लक्षणा अर्थ नो (शब्दनो नहि) धर्म छे, तो पण ते मुख्यार्थप्रतिपादक शब्दमा समारोपित होवाथी शब्दव्यापार कहेवाय छे आ अभिप्राय ध्यानमा लईने कह्यु छे के —'लक्षणारोपिता क्रिया' प्रयोजनलक्षणा छ प्रकारनी छे, उपादानलक्षणा, लक्षण लक्षणा, गौणसारोपा, गौणसाध्यवसाना, शुद्धसारोपा अने शुद्ध-साध्यवसाना. भाला प्रवेश करे छे (भालावाला पुरुषो प्रवेश करे छे) ए उपादानलक्षणा छे, खाटलो रडे छे (अर्थात् खाटला उपर बेठेलो पुरुष रडे छे) ए लक्षणलक्षणा, आ गाडी-वान बळद जेवो छे ए गौणसारोपा (अहीं बनेमा मूर्खतानो गुण समान छे), आ (मनुष्य) बळद छे ए गौणसाध्यवसाना, घी छे ते आयुष् छे ए शुद्धसारोपा अने आ आयुष्ज छे ए शुद्ध-साध्यवसाना. काव्यप्रकाशमा आ संबंधमा कहेवामा आव्यु छे माटे हवे काव्यमीमांसाना मर्मनु मथन आटलेथीज अटकावीए छीए.

यम आदिना भेदे करीने योग आठ अंगवाळो कह्यो छे. तेमा अहिंसादि ते यम छे.

पतंजलि कहे छे के —

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्या अने अपरिग्रह ए यम छे

शौचादि ते नियम छे

कह्यु छे के —

शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय अने ईश्वरप्रणिधान ए नियम छे

आ यम अने नियम विष्णुपुराणमां आ प्रमाणे दर्शाव्या छे —

योगी पुरुषे कामनाथी रहित रहीने अने योग्यता प्रति पोताना मनने दोरीने ब्रह्मचर्य, अहिंसा, सत्य, अस्तेय अने अपरिग्रहनुं सेवन करवुं जोईए

पोते नियमवान् रहीने स्वाध्याय, शौच, संतोष अने तप करवां जोईए तथा पोताना मनने परब्रह्ममां रोकवु जोईए.

आ प्रकारे पांच यम अने पांच नियम गणाववामां आव्या छे, ते सकाम कर्ममां विशिष्ट फलने आपे छे अने निष्काम पुरुषोने मुक्ति आपनारा छे

जे स्थिर अने सुखरूप छे ते आसन छे, तेना दश प्रकार छे; पद्मासन, भद्रासन, वीरासन, स्वस्तिकासन, दण्डासन, सोपाश्रय, पर्यंकासन, क्रौंचनिषदन, ऊष्ट्रनिषदन अने समसंस्थान.

हाथना व्युत्क्रम वडे पगना अंगुठानुं दृढ ग्रहण करवु तथा हे विप्रेन्द्र! उभय पाद तलने उभय ऊरू उपर राखवां,

आ प्रमाणे सर्वथी अभिपूजित एवुं पद्मासन थाय छे.

इत्यादि श्लोकवडे याज्ञवल्क्ये पद्मासनादि सर्व आसनोनु निरूपण कर्युं छे ते ते ग्रंथमाथी जोई लेवु.

आसन स्थिर थता प्राणायाम स्थित थाय छे. श्वास अने प्रश्वासनी गतिनो विच्छेद ए प्राणायामनु स्वरूप छे. श्वास एटले बाह्य वायुनु अंतरमां लाववु; अने प्रश्वास एटले कोठाना वायुने बहार कहाडवो ते उभयना संचरणनो अभाव ते *प्राणायाम.*

पूर्वपक्षी --पण आ कइ प्राणायामनु सामान्य लक्षण कहेवाय नहि, कारण के ते रेचक, कुंभक अने पूरक एजे प्राणायामना विशेष भेद तेने लागु पडतु नथी.

सिद्धान्ती:—आ प्रमाणे कहेवुं मिथ्या छे, कारण के ए सर्वमां श्वास अने प्रश्वासनी गतिना विच्छेदनो संभव छे. ते आ प्रमाणे: कोठाना वायुनुं बहार निःसरण ते रेचक अने प्रश्वास शब्दथी ते पूर्वमां कहेवामां आव्यो छे. बाह्य वायुनुं अंतरमां धारण ते पूरक छे अने श्वास शब्दथी तेनो पहेलां निर्देश कर्यो छे. अंतःस्तंभवृत्ति ते कुंभक; जेम कुंभमां जल रहे छे ते प्रमाणे आ प्राणायाममां प्राणवायु निश्चलरूपे स्थापनामां आवे छे. आ प्रमाणे आ सर्वमां श्वास अने प्रश्वास बनेनी गतिनो विच्छेद छेज, माटे शंकानो अवकाश रहेतो नथी.

आ वायु सूर्योदयथी आरंभी अढी अढी घटिका पर्यंत घटीयंत्रना घटभ्रमणनी पेठे प्रत्येक नाडीमां रहे छे. रात्रि अने दिवस मळीने श्वास प्रश्वासनी संख्या एकवीश सहस्र अने छशो थाय छे, अने तेथीज मंत्रसमर्पणनुं रहस्य जाणनार पुरुषो अजपा मंत्रना समर्पणना संबंधमां आ प्रमाणे कहे छे:—

म्हारा करेला जापमांथी हुं छशो गणेशने, छ सहस्र स्वयंभूने, छ सहस्र विष्णुने, छ सहस्र शिवने, एक सहस्र गुरुने, सहस्र परमात्माने अने सहस्र म्हारा आत्माने अर्पुं छुं.

छे तेटलो वखत एक नाडीथी बीजी नाडीमा वायुने संक्रमण करता लागे छे. वने नाडीओमानी प्रत्येकमा पाच तत्त्व अहर्निश वहा करे छे. अने यति पुरुषोए ते जाणवा जोईए. अग्नि तत्त्व ऊर्ध्वमां वहे छे, जलतत्त्व नीचे वहे छे, वायुनु वहन तिर्यक् होय छे, पृथ्वी तत्त्वनुं अर्ध पुटमां अने आकाश तत्त्वनुं वहन सर्वत्र होय छे. वने नाडीओमा तत्त्वोनो क्रम वायु, अग्नि, जळ, पृथ्वी अने आकाश ए रीते होय छे. पृथ्वी तत्त्व पचास पळ वहे छे, जल तत्त्व चाळीश पळ वहे छे, अग्नि तत्त्व त्रीश पळ वहे छे, वायु तत्त्व वीश पळ वहे छे अने आकाश तत्त्व दश पळ वहे छे. आ प्रमाणे प्रत्येक तत्त्वना वहननो काळ छे. पच तत्त्व आ प्रमाणे नाडीओने विन्हळ करे छे तेनु कारण ए छे के पृथ्वीना पाच गुण छे, जळना चार गुण छे, अग्निना त्रण गुण छे, वायुना वे गुण छे अने आकाशनो एक गुण छे, अने प्रत्येक गुणने माटे दश पळ जाय छे. ए रीते पृथ्वीने माटे पचास पळ छे अने ते पूर्वना प्रत्येकमा दश दश पळ ओछी थती जाय छे. पृथ्वीना पाच गुण गध, रस, रूप, स्पर्श अने शब्द छे. शांतिकार्यमा पृथ्वी अने जल तत्त्वथी उन्नति थाय छे. अग्नि तत्त्व वायुतत्त्व अने आकाश तत्त्वमा कोई कार्य करवामा आवे तो ते अनुक्रमे दीप्त अस्थिर अने अधिक थाय छे. हवे पृथ्वी, जळ, वायु अने आकाशना चिन्ह कहीए छीए. पृथ्वी तत्त्वमा चित्त स्थिर रहे छे, जलतत्त्वमा कामोद्भव थाय छे, अग्नि तत्त्वमा कोप अने सताप थाय छे, वायु तत्त्वमा चित्त चचळ थाय छे अने आकाश तत्त्वमा कातो चित्त शून्य थई जाय छे के कातो धर्म वासना उत्पन्न थाय छे. वे कानना छिद्र उपर वे हाथना अगुठा राखवा, वे हाथनी मध्यमा आगळीओ बे नाक उपर राखवी, छेल्ली अने ते साथेनी आगळीओने मोंना खूणा उपर राखवी, अने वाकीनी (तर्जनी) वे आगळीओने वे नेत्र उपर राखवी,

आ प्रमाणे करतां पृथ्वी आदितत्त्वनुं तेना अंतरमां ज्ञान थशे. पृथ्वी तत्त्वनुं ज्ञान पीतवर्णात्मक बिंदुथी थशे तेमज जलनुं श्वेतबिंदुथी, तेजनुं रक्त बिंदुथी अने वायुनुं श्यामबिंदुथी थशे. आकाश तत्त्वने कंइ रूप नथी. प्राणवायुना तत्त्वने यथावत् जाणीने तेनुं नियमन करतां विवेक ज्ञाननुं आवरण करनार कर्मनो क्षय थाय छे. प्राणायाम करतां बीजुं अधिक तप नथी.

कह्युं छे केः—

जेम धातुओने धमतां तेना मळनुं दहन थाय छे ते प्रमाणे इंद्रियसर्पनुं प्राणायामथी दहन थाय छे.

आ प्रमाणे यमादि वडे पोताना मनने संस्कृत करीने योगीए संयमप्रत्याहार करवो. इंद्रियोने विषयथी प्रतीप (उलटी) लईजवी (ह) ते प्रत्याहार ए व्युत्पत्तिथी चक्षु आदि इंद्रियोनी साथे संबंध राखनार जे राग कोप अने मोहने उत्पन्न करनार जुदा जुदा विषयो, ते साथेना तेओना संबंधनो त्याग करावी तेमने, अविकृतस्वरूपमा प्रवण जे चित्त तदनुकार करवी ते प्रत्याहार.[५८]

पूर्वपक्षीः—पण खरुं जोतां तो चित्तनो अभिनिवेश थाय छे इंद्रियोनो थतो नथी, कारण के तेमनो बाह्य विषय साथे संबंध होवाथी तेओ अभिनिवेशने माटे असमर्थ छे. आ प्रमाणे छे तो पछी इंद्रियोनो चित्तानुकार शी रीते संभवे ?

सिद्धान्तीः—तमारुं कहेवुं बराबर छे, अने तेथीज ते प्रमाणे थवुं असंभवित धारीने सूत्रकार (सूत्रमां) सादृश्य वाचक इव शब्द वापरे छे; ' स्वविषयासंप्रयोगे चित्तस्वरूपानुकार इव इन्द्रियाणां प्रत्याहारः ' (विषयसाथेना असप्रयोगपूर्वक इंद्रियोनुं चित्तस्वरूपानुकार जेवुं कइ ते प्रत्याहार.) चित्तानुकार माटे विषयनो असंप्रयोग ते अहीं सादृश्य छे. ज्यारे चित्तनो निरोध थाय छे त्यारे नेत्रादिना निरोधने माटे नवो प्रयत्न करवो

पडतो नथी, जेम मधमाखीओ मधुकरराज (राणी अथवा मुख्य माखी) नुं अनुवर्तन करे छे, ते प्रमाणे इंद्रियो चित्तनुं अनुवर्तन करे छे.

विष्णुपुराणमां कह्युं छे केः—

योग जाणनारे शब्दादिने विषे अनुरक्त थयी इंद्रियोनो निग्रह करीने चित्तानुकारी करवी अने आ प्रमाणे ते यो प्रत्याहारपरायण थवुं.

आ (प्रत्याहार) थी अति चलात्मक इन्द्रियोनो जय थाय छे. ज्यारे इंद्रियगण वश्य होतो नथी त्यारे योगीना योगने बाध आवे छे.

नाभिचक्र हृदयकमल नाड्यग्र इत्यादि जेवा आध्यात्मिक भागमां अथवा प्रजापति, वासव, हिरण्यगर्भ इत्यादि जेवा बाह्य भागमां चित्तने अन्य विषयना परिहारपूर्वक स्थिर करवुं ते धारणा.

कह्युं छे के—

चित्तनो अमुक देशमां बंध ते धारणा.

पुराणोमां पण कह्युं छे केः—

प्राणायाम वडे पवन अने प्रत्याहार वडे इंद्रियने वश्य करीने चित्तस्थानने पोतानो सुभाश्रय करवुं.

ते स्थानमां ध्येयनुं अवलंबन करनार प्रत्ययनो विसदृशप्रत्ययना परित्यागपूर्वक प्रवाह ते ध्यान.

कह्युं छे के —

त्यां प्रत्ययनी एकतानता ते ध्यान.

अन्य ग्रंथोमां पण कह्युं छे केः—

तद्रूपमां एकाग्र अने अन्यनिस्पृह थयी प्रत्ययसंतति ते ध्यान. ते प्रथमनां छ अंगथी सिद्ध थाय छे.

छेल्लुं अंग जे समाधि तेना संबंधमां प्रसंग आववाथी पूर्वे कही गया छीए.

आ प्रमाणे आदरथी निरंतर अने दीर्घ काळसुधी योगनां अंगनुं अनुष्ठान करवाथी समाधिविरोधी क्लेशनो क्षय थता अभ्यास अने वैराग्ये करीने मधुमती आदि समाधिनी प्राप्ति थाय छे.

पूर्वपक्षीः—आ प्रमाणेना कर्णाट गौड लाट भाषाना अति विकट शब्दोथी हमने शा माटे भयभीत करो छो?

सिद्धान्तीः—हमे तमने भयभीत करता नथी, पण मधुमती आदिना निरूपणे करीने तमने संतुष्ट करीए छीए. माटे जरापण भय राख्या वगर सावधान थईने सांभळो. त्यां मधुमती एटले ऋतंभराप्रज्ञा नामनी सिद्धि छे; ते अभ्यास वैराग्यादि वडे रजस् अने तमस् अशतः दूर करीने अने सुख प्रकाशमय सत्त्वनी भावनाए करीने सिद्धकरेता अनन्य शुद्धताना विद्योतन रूप छे."

सूत्रमा कह्युं छे केः—

त्यां ऋतंभरा प्रज्ञा थाय छे.

आ सूत्रनो अर्थ आ प्रमाणे छे.—ऋत जे सत्य तेने धारण करे छे अने विपर्ययथी जेनुं आच्छादन थतुं नथी ते ऋतंभरा. त्यां एटले स्थितिमा अर्थात् दृढता आवता स्थितिमा दृढ थया पछी द्वितीय प्रकारना योगीने आ प्रज्ञानी प्राप्ति थाय छे. चार प्रकारना योगी छे.' प्रथमकल्पिक, मधुभूमिक, प्रज्ञाज्योति अने अतिक्रांतभावनीय. त्यां जे योगना अभ्यासीमा ज्योतिनी प्रवृत्ति मात्र थई छे ते प्रथमकल्पिक योगी छे.

कह्युं छे केः—

आ योगीथी परचित्तादिगोचर ज्ञानरूप जे ज्योति ते वश्य कराई नथी.

बीजा प्रकारना योगीने ऋतंभरा प्रज्ञा थई होय तेः भ्री-

जा प्रकारना योगीए भूत अने इंद्रियनो जय कर्यो होय छे; अने चोथा प्रकारनो योगी परवैराग्यसंपन्न होय छे.

मनोजवित्वादि मधुप्रतीकसिद्धिओ छे.[२५]

'ते मनोजवित्व, विकरणभाव अने प्रधान जय छे' एम सूत्रमां कह्युं छे. मनोजवित्व एटले शरीरने मनना जेवी उत्तम गतिनी प्राप्ति थवी. विकरणभाव एटले शरीरनी अपेक्षावगर इंद्रियोने गमे ते देशमां अने गमे ते काळमां रहेला विषयने जाणवानी शक्तिनी प्राप्ति. प्रधानजय एटले प्रकृतिना सर्व विकारने वश्य वर्ताववानी शक्ति. आ सिद्धिओ करणपंचक अने तेनां ग्रहणादिरूपना जयथी त्रीजा प्रकारना योगीने प्राप्त थाय छे. जेम मधुनु प्रत्येक बिंदु स्वादु होय छे ते प्रमाणे आ सिद्धिओमांनी प्रत्येक स्वादु छे माटे ते मधुप्रतीक कहेवाय छे.

सर्व भावादि उपर अधिष्ठातृत्वादि रूप सिद्धि ते विशोका सिद्धि छे.[२६]

कह्युं छे केः—

सत्त्व अने पुरुषनी अन्यताना विवेक मात्रमां प्रतिष्ठित पुरुषने सर्वभाव उपर अधिष्ठातृत्व अने सर्वज्ञत्व प्राप्त थाय छे.

व्यवसायव्यवसेयात्मक अने गुणपरिणामरूप जे भाव तेओनुं स्वामीनी पेठे आक्रमण करवुं ते सर्व भावाधिष्ठातृत्व. ते सर्व भाव शान्त उदित के अव्यपदिश्य छे एम गणवा रूप जे विवेकज्ञान ते सर्वज्ञातृत्व.

सर्व वृत्तिनो अस्त थतां पर वैराग्यनो आश्रय करनार योगीना जे जात्यादिना बीजरूप क्लेश तेनो निरोध करवाने समर्थ एवी निर्बीज असंप्रज्ञातसमाधि ते संस्कारशेषता छे.[२८]

कह्यु छे केः—

प्रत्ययाभ्यास पछी विराम छे अने तेमां केवळ संस्कारशेष रहे छे.

आप्रमाणे सर्वथी विरक्त थता महापुरुषनां क्लेशना बीज निर्दग्धशालिबीजवत् प्रसवना सामर्थ्यथी रहित थाय छे अने मनना लय साथे तेमनो पण लय थई जाय छे. आ प्रमाणे तेओनो लय थतां निरुपप्लव विवेकज्ञानना परिपाकने लीधे कार्यकारणात्मक सर्व वस्तुनो प्रधानमां लय थाय छे, अने चितिशक्ति (आत्मा), स्वरूपमां प्रतिष्ठित थाय छे, तथा बुद्धि अने सत्ताना संबंधथी रहित थई कैवल्यने पामे छे. पतंजलि कहे छे के मुक्ति ए बे सिद्धिओ छे; भोग अने मोक्ष रूप पुरुषार्थना विनाशक गुणोनो लय अथवा चितिशक्तिनी स्वरूपमां प्रतिष्ठा. कोइ कहेशे के आ प्रमाणे थाय तो पण पुनर्जन्मनो अंत शी रीते आवे तो तेने कहेवानुं के आ शंका निरर्थक छे, कारण के कारणाभाव होय तो कार्याभावपण होय ए प्रमाणथी ए सिद्ध थयुं छे. अने तेथी आ शका नियोगरूप पण नथी अने अनुयोग रूप पण नथी. जो कारण न होय तोपण कार्य उत्पन्न थायतो अंध पण मणिवेध करी शके, अने लौकिक कहेवतोमा जे पदार्थो अशक्य जणाव्या छे ते शक्य थाय[९५]

श्रुतिमा कह्यु छे के —

अंधने मणिनी प्राप्ति थई तेणे तेने विंध्यो, आंगळां वगरना मनुष्ये तेनुं ग्रहण कर्युं, डोक वगरना मनुष्ये तेने पहेर्यो अने जीभ वगरना मनुष्ये तेनी प्रशंसा अने स्तुति करी[९६]

वैदकशास्त्रनी पेठे योगशास्त्र पण चार प्रकारनी रचना वाळुं छे. वैद्यक शास्त्रमां रोग, रोगना हेतु, अरोगता अने ओषधोनो विचार करवामा आवे छे तेज प्रमाणे योगशास्त्रमां पण

संसार संसारहेतु मोक्ष अने मोक्षना उपाय ए च्यारनो विचार करवामां आवे छे. त्यां संसार दुःखमय छे अने ते त्याग करवा योग्य छे. प्रधान अने पुरुषनो संयोग ते हेय एवा भोगनो हेतु छे. तेनी आत्यंतिकी निवृत्ति ए तेनो नाश छे अने सम्यग् दर्शन नाशनो उपाय छे. बीजां शास्त्रपण आप्रमाणे चार प्रकारनी रचना वाळां समजी लेवां. आ प्रमाणे था सर्व स्पष्ट छे.

आ पछी सर्वदर्शन शिरोमणि शंकरदर्शन छे, पण ते अन्यत्र लखेलुं होवाथी आ स्थळे लखता नथी."

विवरण.

चार्वाकदर्शन.

१. माधवाचार्य पोताना सर्वदर्शनसंग्रहमां प्रथम चार्वाकदर्शन आपे छे. प्रथम शिष्टाचारने अनुसरी, शिष्यशिक्षार्थे मंगलाचरण करी, चार्वाकदर्शननुं अवतरण करे छे. अवतरण करवानी रीत एवी छे के पूर्वपक्षना रूपमां कोइ पण वाक्य लई तेना संबंधमां पोतानो विषय जणाववो. आ प्रमाणे करवा माटे मंगलाचरणना प्रथम श्लोकमां ईश्वरने कल्याणना निधि कहे छे ए वातनो आक्षेप करवा माटे 'हवे परमेश्वर कल्याणप्रद छे एम शी रीते कहेवाय?' ए वाक्य लखे छे. माधवाचार्य जे दर्शन आपे छे ते जाणे पोतेज तेना पक्षकार होय तेम संपूर्ण रीते आपे छे.

२. चार्वाकमतानुयायीओ जो के श्रुतिने प्रमाण मानता नथी, तो पण श्रुतिने प्रमाण माननारा आ मतने श्रुतिविरुद्ध न कही शके एवी इच्छाथी, 'चैतन्य नित्य नथी पण उत्पत्तिविनाशने पामनार छे' ए जे पोतानो सिद्धान्त ते श्रुतिने आधारे छे एम जणाववाने आ बृहदारण्यनुं प्रमाण आपे छे. खरुं जोतां आ श्रुतिवाक्यनो अर्थ चार्वाकमतानुयायीओ जेवो समजावे छे तेवो नथी. अहीं जे विज्ञानघन पृथ्वी आदि भूतमांथी उत्पन्न थई भूतना पछी नाश पामनार कह्युं छे ते विशेष विज्ञान छे. आ विशेष विज्ञान मात्रासंसर्गथी उत्पन्न थाय छे; तेथी संसर्गनो अभाव थतां तेनो नाश थाय छे. माटे आ वाक्य, चार्वाक माने छे तेम, आत्मानो उच्छेद जणावतु नथी.

३. ज्यां पूर्वापर विरोध आवे त्यां व्याघात दोष थाय छे. वंध्यानो पुत्र एम कहेतां दोष थाय छे ते व्याघात छे.

४. वेदने त्रयी एवी संज्ञा आपे छे.

५. 'हु कृष्ण (कालो) छु' अहीं हुं शब्दवाच्य पदार्थ अने

कृष्णशब्दवाच्य पदार्थ एकज होवाथी ए बे समानाधिकरण कहेवाय छे. समान छे अधिकरण (रहेवानुं स्थान) जेओनुं ते समानाधिकरण कहेवाय.

६. वस्तुतः राहु केवल मस्तकरूप छे, तो पण व्यवहारमां राहुनुं माथुं एम बोलाय छे. आ प्रमाणे बोलवुं ते जेम लाक्षणिक छे ते प्रमाणे 'मारु शरीर' एम जे बोलाय छे ते पण लाक्षणिक छे. वस्तुतः हुं तो केवल शरीररूपज छु.

७. (पृष्ठ ४. पंक्ति १४.). अहीं पूर्वपक्षी अनुमान अने शब्दप्रमाण आवश्यक छे एम जणावे छे, पण चार्वाक तेनु खंडन करे छे.

८. *थी ११. आ विषय न्यायनो होवाथी आ स्थले जरा* लंबाण करवुं उचित जणाय छे. न्यायवाळा बुद्धि अथवा ज्ञानने आत्मा (जे तेओना मानवा प्रमाणे एक द्रव्य छे ते)नो गुण माने छे. बुद्धिना स्मृति अने अनुभव बे प्रकार मानेला छे. अनुभव पण यथार्थ अने अयथार्थ ए रीते बे प्रकारनो गणायो छे. यथार्थ अनुभवने 'प्रमा' संज्ञा आपवामां आवे छे. प्रमानुं करण अर्थात् प्रमा जेथी थाय छे ते प्रमाण कहेवाय छे, अने प्रमा प्रत्यक्ष अनुमिति उपमिति अने शाब्दी ए रीते चार प्रकारनी होवाथी, प्रमाणना पण प्रत्यक्ष अनुमान उपमान अने शाब्द ए रीते चार प्रकार करे छे; इंद्रिय अने अर्थना संनिकर्षथी थती प्रमा प्रत्यक्ष छे अने ते प्रमानु करण इंद्रिय अने अर्थनो संनिकर्ष छे. दूरना पर्वतमांथी धूम नीकळतो जोतां आपणने ज्ञान थाय छे के, त्यां अग्नि छे. जो के आपणे पर्वतमां अग्नि प्रत्यक्ष जोयो नथी तो पण आपणने त्यां आगळना अग्निनु जे ज्ञान थाय छे ते ज्ञान अनुमिति छे. आ अनुमितिनुं करण ते अनुमान छे. हवे अनुमिति थवामां कोइ ज्ञापक अथवा गमक (अर्थात् अनुमितिनो बोध करनार) होवो जोईए. पर्वत वन्हिमान् छे एम आपणे प्रत्यक्ष जोतुं नथी तेमज कोइए आपणने कह्यु नथी तो पण आपणे ते जाणीए छीए तो तेमां कोइ हेतु होवो जोईए.आपणे पर्वतमांथी धूम नीकळतो जोईए छीए ने तेथी मानीए छीए के पर्वत वन्हिमान् छे. आ उपरथी आपणे कही शकीए के धूम ए अनुमितनो हेतु छे. पण धूम गमे त्यां नीकळतो होय तेथी कंई अमुक पर्वत वन्हिमान् छे एम कही शकाय नहि; जे पर्वतनी वात करीए छीए तेमांथीज

धूम नीकळतो होय तो आपणथी कही शकाय के पर्वत वन्हिमान् छे. पण आ स्थळे एक बीजो विचार पण करवानो छे. ज्यां सुधी धूम अने अग्नि वच्चेना संबंधनुं आपणने ज्ञान न होय त्यां सुधी कोइ पर्वत उपर धूम जोईए तो पण आपणने त्यां अग्नि हशे एम मानवाने कारण मळे नहि. ज्यां ज्यां धूम होय त्यां त्यां अग्नि होय एम आपणे रसोडा विगेरेमां करेला अनुभव उपरथी जाणवुं जोईए. आ प्रमाणे जो आपणने अनुभव होय के ज्यां ज्यां धूम होय त्यां त्यां अग्नि होयज, अने ते साथे जो आपणे कोइ पर्वतमांथी धूम निकळतो जोईए तो आपणे नजरे जोया वगर अथवा कोइने मोंढेथी सांभळ्या वगर पण जाणी शकीए के ते पर्वतमां अग्नि छे. आटलुं जाण्या पछी न्यायना व्याप्ति आदि पारिभाषिक शब्द वाचकने स्पष्ट समजाशे.

ज्यां ज्यां धूम होय त्यां त्यां अग्नि होय ए जे धूम अने अग्निनो हमेशां साथे रहेवानो नियम ते **व्याप्ति** कहेवाय छे. जे वस्तु सिद्ध करवानी छे ते **साध्य** कहेवाय छे; जेमके पर्वतमां अग्नि सिद्ध करवानो छे माटे अग्नि साध्य कहेवाय छे. जे वडे अग्नि सिद्ध करवानो छे ते **साधन** कहेवाय छे; **लिंग** अने **हेतु** ए साधनना पर्याय छे. धूम ए चालता उदाहरणमां लिंग छे.

ज्यां साधन वडे साध्य सिद्ध करवानु छे ते **पक्ष** कहेवाय छे; धूमवडे वन्हि पर्वतमां सिद्ध करवानो छे माटे पर्वत पक्ष कहेवाय छे.

साधननुं पक्षमां रहेवु ते **पक्षधर्मता** कहेवाय छे; जेमके धूमनु पर्वत उपर रहेवुं ते. आ प्रमाणे पर्वत वन्हिमान् छे एम अनुमिति थवामां जे धूमने हेतुरूपे लईए तेनी अग्निसाथे व्याप्ति होवी जोईए अने ते पक्षधर्मतायुक्त अर्थात् पक्ष (पर्वत) उपर रहेवा रूप धर्मवाळो होवो जोईए.

१२. धूम अने अग्निनु नियत साहचर्य ते व्याप्ति एम आपणे व्याप्तिनु लक्षण कर्युं; पण अनुमान खरु थवामां व्याप्ति शुद्ध अर्थात् उपाधिथी रहित होवी जोईए. उपाधि एटले शुं अने व्याप्ति उपाधिथी रहित शा माटे होवी जोईए ए समजवाने आपणे एक दृष्टान्त लईए. उपर आपणे धूमने साधन लई अग्निने साध्य लई अने पर्वतने पक्ष लई

अनुमान कर्यु के पर्वत वन्हिमान् छे; धूमथी. पण हवे आपणे अग्निने साधन लई अने धूमने साध्य लई अनुमान करीए के पर्वत धूमवान् छे; अग्निथी. हवे उपर जेम आपणे कह्यु के ज्यां ज्यां धूम होय त्यां त्यां अग्नि होय तेम अहीं आपणाथी कही शकाशे नहि के ज्या ज्या अग्नि होय त्यां त्यां धूम होय, कारण के लोखंडना तपावेला गोळामां अग्नि छे तो पण त्या धूम नथी. आ प्रमाणे आ बीजा उदाहरणमां व्याप्ति शुद्ध नथी माटे अनुमान खरु कहेवाय नहि. लोखंडनो तपावेलो गोळो धूमवान् छे, अग्निथी; एम कहेवुं आपणने असंभवित लागशे. हवे आपणे जो कहीए के ज्या ज्या लीला लाकडायुक्त वन्हि होय त्यां त्या धूम होय तो ते कहेवु कोइथी पण खोटु पाडी शकाशे नहि. आ उपरथी वाचकने समजायु हशे के ज्या ज्या वन्हि होय त्या त्या धूम होय, ए व्याप्ति हमेशा खरी नथी पण लीलां लाकडांयुक्त एटला शब्द उमेरवाथी ते हमेशां खरी थई शके छे. माटे ज्यां ज्या वन्हि होय त्या त्यां धूम होय एम कहेवामां लीलालाकडायुक्त एटलु कहेवानी अपेक्षा रहे छे तेथी ते सोपाधिक व्याप्ति कहेवाय छे; अने अनुमान यथार्थ थवा माटे जे व्याप्ति जोईए ते उपाधि रहित होवी जोईए. उपाधिकोने कहेवो ते तथा तेना बे भेदना संबधमा आपणे हमणाज बोलवु पडशे माटे आ स्थले विशेष कहेवानु प्रयोजन नथी.

हवे बे पदार्थ वच्चे व्याप्ति छे एटलाज उपरथी आपणाथी अनुमान करी शकातु नथी पण व्याप्ति छे एम ज्ञान थाय तोज आपणाथी अनुमान करी शकाय छे. हवे जेम कोइ पण पदार्थनुं ज्ञान प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, के शब्दथी थाय छे तेम व्याप्तिनु ज्ञान पण आ चार साधनोमाना कोइथीपण थई शके छे के नहि ते चार्वाक तपासे छे अने निश्चय करे छे के कोइपण प्रकारे व्याप्तिनु ज्ञान थवु संभवित नथी तो पछी अनुमान के जे व्याप्तिज्ञान उपर आधार राखे छे तेनीतो आशाज मात्र करवी.

वच्चे व्याप्ति छे एम क्यारे कहेवाय के त्रणे कालमा अने सर्वत्र उभयनु साहचर्य होय तो, पण आ प्रकारनुं साहचर्य सर्वत्र अने सर्वदा इंद्रिय साथेना संसर्गमा आवतु नथी माटे वाद्य प्रत्यक्षथी व्याप्तिज्ञान थतु नथी.

१४. १५ उपर जणाव्यु के धूम अने वन्हि वच्चे व्याप्ति छे ए प्रत्यक्षथी जणातु नथी, पण कोई कहेशे के धूम अने वन्हि वच्चे व्याप्ति छे एम नहि लेतां धूमत्वसामान्य अने वन्हित्वसामान्य वच्चे व्याप्ति छे एम मानीए तो शी हरकत ? तो तेने कहेवामा आवे छे के, आ प्रमाणे वे सामान्य वच्चे व्याप्ति होय ते उपरथी वे व्यक्तिओ वच्चे व्याप्ति होय एम मानवाने कइ साधन नथी. मनुष्य व्यक्ति छे अने मनुष्यत्व जाति अथवा सामान्य छे. हवे मनुष्यत्व अने बुद्धिमत्त्व ये वच्चे व्याप्ति छे ते उपरथी एम न कही शकाय के मनुष्य अने बुद्धिमत् वच्चे पण व्याप्ति छे. गाडो माणस बुद्धिमान् नथी होतो ए आपणे जाणीए छीए, अने तो पण ते मनुष्य छे. अविनाभाव एटले नित्यसबंध अथवा नियत साहचर्य.

१६. व्याप्तिज्ञान अनुमानथी थाय एम मानीए तो प्रत्येक अनुमानमा जोईती व्याप्तिनु ज्ञान अनुमानथी मानता कोइवार पण छेडो आवशे नहि. धारो के व्याप्ति अनुमानथी ठरावी, हवे आ अनुमानमा जे व्याप्ति जोईए ते बीजा अनुमानथी ठराववी पडशे, तेमा वळी जे व्याप्ति जोईसु ते त्रिजा अनुमानथी ठराववी पडशे अने ए प्रमाणे कर्या करवु पडशे अनवस्था दोष एवो दोष छे के जेमा विचारनी अवस्थिति अथवा आखरनो निश्चय कदीपण थई शके नहि

शब्द उभयत्र एकज होईने जेना संबंधमां क्रिया थाय छे ते एकज पदार्थ " गाय " शब्दथी ओळखाय छे एम बाळक जाणे छे. पछी ज्यारे ज्यारे " गाय " एम उच्चारण थाय छे त्यारे त्यारे सास्ना (*गायने गळे गोदडी जेवुं होय छे ते*) वगेरे *वाळा* कोइ प्राणिविशेषनो विचार तेना मनमां आवे छे. आ प्रमाणे 'गाय' शब्द अने सास्ना वगेरेवाळुं प्राणिविशेष ए बेना संबंधनुं ज्ञान वृद्धव्यवहारथी थाय छे माटे वृद्ध व्यवहार ते शाब्दी प्रमा थवामां हेतु अथवा लिंग छे.

हवे 'गाय' अने 'सास्नादियुक्त प्राणिविशेष' ए बेनो संबंध वृद्धव्यवहाररूप लिंगथी समजाय छे एम जो स्वीकारीए तो लिंग उपर अनुमानना संबंधमां कह्यु ते प्रमाणे व्याप्ति अने पक्षधर्मतायुक्त होवुं जोईशे; *अने ज्यां सुधी व्याप्तिज्ञान थशे नहि त्यां* सुधी शब्दलिंगथी शब्दवाच्य पदार्थनो बोध थशे नहि; परंतु व्याप्तिज्ञान असंभवित छे ए तो आपणो प्रस्तुत विषयज छे अने ज्यां सुधी तेनुं निराकरण थयुं नथी त्यां सुधी वृद्धव्यवहाररूप लिंगथी शब्द अने शब्दबोध्य पदार्थनो संबंध समजवो अशक्य छे. कहेवानु तात्पर्य ए छे के शब्दथी व्याप्तिज्ञान थायज नहि, कारण के शब्द ज व्याप्ति उपर आधार राखे छे. वळी शब्दथी ज्ञान थवामां श्रद्धानी आवश्यकता छे, पण चार्वाकमतानुयायीओ कहे छे के जेम मन्वादिना *शास्त्रोमां हमने श्रद्धा नथी तेम कोइ कहेशे के धूम अने अग्नि वच्चे व्याप्ति* छे तो तेनां वचन पण हमे मानता नथी. माटे शब्द व्याप्तिज्ञाननु साधन नथी एम सिद्ध थयु.

१८. वळी कहे छे के जो शब्दने व्याप्तिज्ञानमां आवश्यक मानीए तो **स्वार्थानुमान** निरर्थक थाय छे. पण स्वार्थानुमान तो स्वीकारवामां आवे छे ज; माटे व्याप्तिज्ञानमां शब्द आवश्यक नथी.

अनुमानना बे प्रकार छेः–**स्वार्थानुमान** अने **परार्थानुमान** रसोडा वगेरेमां वारंवार धूम अने अग्निनुं साहचर्य जोवाथी मनुष्य निश्चय करे छे के, ज्यां ज्यां धूम होय त्यां त्यां अग्नि होय. आ स्वार्थानुमान–पोताने माटेनुं अनुमान छे. पछी बीजाने समजाववामाटे कहे छे के ज्यां ज्यां धूम होय त्यां त्यां अग्नि होय जेम के रसोडा वगेरेमां;

पर्वतमां धूम छे, माटे पर्वतमां वन्हि छे. आ बीजाने समजाववामाटेनुं अनुमान ते परार्थानुमान. स्वार्थानुमानमां कोइना कह्या वगर पोतेज धूम अने अग्निनुं साहचर्य वारंवार जोई तेना नियत संबंधनो निश्चय पोतानी मेळेज पोताने माटे करवामां आवे छे. हवे जो अनुमानमां शब्दने आवश्यक मानीए तो उपर कहेलुं स्वार्थानुमान निरर्थक थईजाय, माटे शब्द आवश्यक नहि होवाथी पण ते व्याप्ति-ज्ञाननो उपाय नथी.

१९. हवे कोइ कहेशे के उपमान प्रमाणथी व्याप्तिनुं ज्ञान थई शके तो तेने माटे कहे छेः—संज्ञा अने संज्ञिना संबंधनुं ज्ञान ते उपमिति कहेवाय छे.

उपमितिनुं करण ते उपमान छे. कोइ नगरवासी जाणतो नथी के गवय संज्ञा कया प्राणीने लगाडवामां आवे छे. (गवय ए संज्ञा अथवा नाम छे, अने जे प्राणीने ए शब्द लगाडवामां आवे छे ते संज्ञी छे). पछी ते कोइ वनवासीने मोंडेथी सांभळे छे के गायना जेवुं प्राणी ते गवय छे. आ प्रमाणे सांभळ्या पछी प्रसंगवशात् पेलो नगरवासी वनमां जाय छे अने गाय जेवुं कोइ प्राणी जुवे छे. आ वखते तेना स्मरणमां आवे छे के गाय जेवुं प्राणी ते गवय. आ उपरथी पेला प्राणीने ते गवय जाणे छे. आ प्रमाणे गवय संज्ञा अने गवयशब्दवाच्य प्राणिविशेष जे संज्ञी ते बनेना संबधनुं ज्ञान ते उपमिति छे. अने गाय अने गवयनी वच्चे सादृश्य छे एम ते जाणे छे तेने लीधे आ ज्ञान तेने थाय छे माटे सादृश्य-ज्ञान ते उपमान छे. आ प्रमाणे उपमान प्रमाण संज्ञा अने संज्ञि वच्चेना संबंधनो बोध करनार होवाथी अने उपाधिरहित व्याप्ति-नियतसाहचर्यनो बोध करनार नहि होवाथी ते व्याप्तिज्ञाननो उपाय नथी एम सिद्ध थयुं.

२०. थी २३. अत्यार सुधीमां जणाववामां आव्युं के प्रत्यक्ष अनुमान शब्द के उपमान कोइथी पण व्याप्तिनुं ज्ञान थतुं नथी. हवे वळी पोतानो पक्ष वधारे दृढ करवाने कहे छे के उपाधिरहितसंबंध तो कोइपण प्रकारे जणातो नथी. प्रथम तो उपाधिरहित संबंध एम कहेवामां आपणे समजवुं जोईए के उपाधिना अभाव युक्तसंबंध; माटे उपा-

धिनो अभाव समजाय तोज तद्रहित संबध समजाय; हवे उपाधि कातो प्रत्यक्ष होय के अप्रत्यक्ष होय. प्रत्यक्ष उपाधिनो अभाव प्रत्यक्ष होई शके पण अप्रत्यक्ष उपाधिनो अभावतो अप्रत्यक्षज रहे अने अनुमान उपमान के शब्दथी अप्रत्यक्ष पदार्थनु ज्ञान थतु नथी एम जे उपर जणाव्यु तेज रीते जणावी शकाय के अप्रत्यक्ष उपाधिना अभावनु ज्ञान पण अनुमानादिथी थई शके नहि. हवे कोई कहेशे के अमुक प्रसगमा सर्व उपाधि प्रत्यक्ष छे अने तेथी सर्वना अभाव पण प्रत्यक्ष छे तो त्या बीजो विरोध आवे छे ते आ प्रमाणे:—कोइपण वस्तुना अभावनु ज्ञान थाय ते पहेलां आपणने ते वस्तुनु ज्ञान थवु जोईए एवो नियम छे. हवे आ नियम प्रमाणे आपणे उपाधिनो अभाव जाणीए ते पूर्वे उपाधि जाणवी जोईए, माटे प्रथम उपाधिनु लक्षण आपवामा आवे छे पछी ते लक्षण यथार्थ छे एम जणाववाने तेनी परीक्षा करवामा आवे छे, अने ते पछी कहेवामा आवे छे के उपाधिनु ज्ञान अशक्य छे.

आपणे पाछळ कही गया छीए के *"ज्या ज्या अग्नि होय त्यां त्या धूम होय"* एम कहेवु अयथार्थ छे, *कारण के तपावेला लोखडना गोळामा अग्नि छे. (कारण के तपावेला गोळानो स्पर्श उष्ण छे अने उष्ण स्पर्शवान् ए अग्निनु लक्षण छे.) पण त्या धूम नथी.* परतु जो आपणे कहीए के *"ज्या ज्या 'लीला लाकडायुक्त' अग्नि होय त्या त्यां धूम होय"* तो ते कहेवु सदोष छे एम कोइथी कही शकाशे नहि. आ प्रमाणे *'लीला लकडानो योग'* एम जे शुद्ध व्याप्तिनी सिद्धिने माटे कहेवु पडे छे तेने उपाधि नाम आपवामा आवे छे. उपाधिनु लक्षण *मूळमा (आ भाषान्तरनुं पृष्ठ ६) आपेलु छे ते आ प्रमाणे छे.* साधननो *अव्यापक होई साध्य साथे जेनी समव्याप्ति होय ते उपाधि कहेवाय.* साधन अने साध्य कोने कहेवा ते पाछळ कयु छे. हवे व्याप्य व्यापक अने समव्याप्ति ए त्रण शब्दो समजावीए. जे अधिक देशमां रहे ते व्यापक कहेवाय अने जे अल्प देशमा रहे ते व्याप्य कहेवाय. जेम के *ज्या ज्या धूम होय त्या त्यां वन्हि होय ए वाक्यमा धूम जेटला देशमा* रहे छे तेना करता अग्नि वधारे देशमा छे, कारण के केटलेक ठेकाणे अग्नि जोवामां आवे छे, पण धूम जोवामां आवतो नथी. आ प्रमाणे अग्नि धूमनी अपेक्षाए अधिक देशमां रहेनार होवाथी ते धूमनो व्यापक

कहेवाय अने धूम व्याप्य कहेवाय. साधारण रीते व्याप्य वाक्यना प्रथम भागमां मूकाय छे अने व्यापक द्वितीय भागमां मूकाय छे. बे पदार्थो वच्चे समव्याप्ति क्यारे कहेवाय के ज्यारे तेओ समान देशमां रहेता होय. ज्यां ज्यां धूम होय त्यां त्यां वन्हि होय ए वाक्यमां धूम व्याप्य अने वन्हि व्यापक होवाथी धूम अने अग्नि वच्चे व्याप्ति छे एम कही शकाय, परंतु ज्यां ज्यां अग्नि होय त्यां त्यां धूम होय ए वाक्यमां अग्नि व्याप्य (थोडा देशमां रहेनार) अने धूम व्यापक नहि होवाथी अग्नि अने धूम वच्चे व्याप्ति कही शकाय नहि. (धूम अने अग्नि अने अग्नि अने धूम ए बेमां भेद छे ते वाचके समजवो). त्रिकोण एटले त्रण सिधी रेखाओनी बनेली आकृति. आ वाक्यमां 'त्रिकोण' अने त्रण सीधी लीटीओनी बनेली आकृति ए बे वच्चे समव्याप्ति छे कारण के जे जे त्रिकोण होय ते ते त्रण सीधी लीटीओनी बनेली आकृति होय अने जे जे त्रण सीधी लीटीओनी बनेली आकृति होय ते ते त्रिकोण होय. टुकामां कहीए तो आ बने समानदेशवर्ती छे. आ सर्व उपरथी वाचकने व्याप्य, व्यापक, समव्याप्ति, साधन, साध्य इत्यादि पारिभाषिक शब्द समजाया हशे. हवे तेनाथी उपाधिनुं लक्षण समजी शकाशे.

'ज्या ज्या लीलां लाकडां युक्त अग्नि होय त्या त्यां धूम होय,
पर्वतमा लीला लाकडा युक्त अग्नि छे;
माटे पर्वत उपर धूम छे.'

आ उदाहरणमा धूम पर्वत उपर सिद्ध करवानो छे माटे ते साध्य छे अने अग्निथी ते सिद्ध करवानो छे माटे अग्नि साधन छे. हवे लीलां लाकडानो योग ए साधननो अव्यापक छे, कारण के 'ज्यां ज्यां अग्नि होय त्यां त्या लीलां लाकडानो योग होय' एम आपणाथी कही शकाय नहि. माटे लीलां लाकडांनो योग ए साधन जे अग्नि तेनो अव्यापक थयो. हवे 'ज्यां ज्या धूम होय त्या त्या लीलां लाकडानो योग होय अने ज्या ज्या लीला लाकडानो योग होय त्यां त्यां धूम होय' एम आपणाथी कही शकाय छे, माटे धूम जे साध्य तेनी साथे लीला लाकडाना योगनी समव्याप्ति छे आ उपरथी लीलां लाकडांनो योग ते उपाधि कहेवाय छे, कारण के ते साधन (अग्नि) नो अव्यापक होई साध्य (धूम) साथे तेनी समव्याप्ति छे.

२४. अव्याप्तसाधन एटले साधननो अव्यापक.

२५. उपर उपाधिनुं लक्षण थयुं तेमां मुख्य त्रण वातो उपर ध्यान आपवानु छे, (१) उपाधि साधननो अव्यापक होवो जोईए, (२) ते साध्यनो व्यापक होवो जोईए, (३) अने साध्य तेनुं व्यापक होवु जोईए हवे आ लक्षणनी परीक्षा करवी जोईए—अर्थात् जोवु जोईए के आ त्रण कहेवानु शुं प्रयोजन छे. शब्दने मीमांसावाळा नित्य माने छे पण न्यायवाळा तेने अनित्य माने छे शब्द अनित्य छे एम सिद्ध करवाने नैयायिको आ प्रमाणे अनुमान लावे छे

शब्द अनित्य छे, शब्दत्वने लीधे.

अहीं शब्दत्व अने अनित्य वच्चे निरुपाधिक व्याप्ति होय तोज आ अनुमान यथार्थ कहेवाय हवे जो आपणे उपाधिनु लक्षण ' ते साध्यनो व्यापक होय, अने साध्य तेनो व्यापक होय ' एटलुज लईए, अने ' ते साधननो अव्यापक होय ' ए न लईए तो आ अपूर्ण लक्षण प्रमाणे ' ज्यां ज्यां शब्दत्व होय ते ते अनित्य होय ' ए व्याप्ति सोपाधिक थशे ' कारण के अहीं ' सकर्तृकत्व ' ए उपाधि थशे आपणे जोईए के ए प्रमाणे शी रीते थाय ' उपरना उदाहरणमा ' अनित्य ' साध्य छे, अने 'ज्यां ज्यां सकर्तृकत्व होय ते ते अनित्य होय जेम के घट ' अने ' जे जे अनित्य होय ते ते सकर्तृक (कर्तावाळु) होय, जेमके पट ' ए प्रमाणे सकर्तृकत्व साध्यनो व्यापक अने साध्य तेनो व्यापक थया तेथी ते (आ अपूर्ण लक्षण प्रमाणे) उपाधि कहेवाय. परतु उपाधि साधननो अव्यापक होवो जोईए एम जो स्वीकारीए तो (अने नैयायिकना उपाधिथी दोष बतलाववाने मीमांसकने नैयायिक उपाधिनु जे लक्षण कहे ते स्वीकारवुज जोईए) सकर्तृकत्व उपाधि थशे नहि, कारण के ' ज्यां ज्यां शब्दत्व होय त्यां त्यां सकर्तृकत्व होय ' एम कहेवु ए अयथार्थ छे एम सिद्ध करी आपवामां आवे तोज कही शकाय के सकर्तृकत्व शब्दत्वनु अव्यापक छे, पण आपणा अनुभव उपरथी (भेरी मृदगादिथी थता शब्द उपरथी) आपणे जाणीए छीए के ज्यां ज्यां शब्दत्व होय छे त्यां त्यां सकर्तृकत्व पण होय छेज आ प्रमाणे सकर्तृकत्व शब्दत्वनो व्यापक थयो तेथी ते उपाधि छे एम कही शकाय नहि, कारण के जो ते साधन (शब्दत्व) नो अव्यापक पण होय तोज

ते उपाधि कही शकाय. आ प्रमाणे कोई प्रतिपक्षी सकर्तृकत्वने उपाधि ठरावबा मागे तो ते ठरी शके माटे नैयायिको 'साधननो अव्यापक' ए पद लावे छे.

हवे उपाधिना लक्षणनो बीजो भाग (साध्य तेनो व्यापक होवो जोईए) केटलो आवश्यक छे ते जोईए.

धारोके आ भाग नथी राखता तो उपाधिनु लक्षण 'ते साधननो अव्यापक होय अने साध्य तेनो व्यापक होय' एटलु मात्र थशे.

आ प्रमाणे लक्षण लेता 'शब्दत्व अने अनित्य वचेनी व्याप्ति सोपाधिक थशे, कारण के 'घटत्व' ए उपाधि थई शकशे शी रीते ते आपणे जोईए.

घटत्व ए (साधन) शब्दत्वनो अव्यापक छे. (कारण के ज्यां ज्या घटत्व होय त्या त्या शब्दत्व होय एवो कई नियम नथी).

(साध्य) अनित्य घटत्वनो व्यापक छे, (कारण के ज्या ज्यां घटत्व होय त्या त्या अनित्यत्व होय ए अनुभव सिद्ध छे. घटमात्र अनित्य छे एम आपणे जाणीए छीए)

आ प्रमाणे अपूर्ण लक्षण लेता घटत्वने ते लागु पडशे अने तेथी घटत्व उपाधि थई शकशे. परतु ए प्रमाणे मीमासक न करी शके माटे 'ते साध्यनो व्यापक होवो जोईए' ए पद मूकवामा आवे छे आटलु वधारता घटत्व उपाधि थई शकशे नहि, कारण के ज्या ज्या अनित्यत्व होय त्या त्यां घटत्व होय एम आपणथी कही शकाशे नहि. (शरीरादिने विषे अनित्यत्व छे पण घटत्व नथी). आ प्रमाणे लक्षणनो बीजो विभाग 'ते साध्यनो व्यापक होवो जोईए' ए केटलो आवश्यक छे ते सिद्ध थाय छे.

हवे धारो के त्रीजो विभाग 'साध्य तेनु व्यापक होवु जोईए' ए निरर्थक छे. आ प्रमाणे जोता 'जे साधननो अव्यापक होय' अने 'जे साध्यनो व्यापक होय' ते उपाधि एम लक्षण थशे पण आ प्रमाणे लक्षण लेतां मीमासको अश्रावणता (नहि समळावा पणु) ने उपाधि कही शकशे. ते आप्रमाणे —

अश्रावणता शब्दत्व (साधन) नो अव्यापक छे. (कारण के ज्यां ज्यां शब्दत्व होय त्यां त्यां अश्रावणता होय एम कोईथी कही शकाशे नहि. शब्दमात्रमां समज्यावापणु छे.)

अश्रावणता साध्य (अनित्य) नो व्यापक छे. (कारण के घटमठादि अनेक अनित्य पदार्थमां अश्रावणता (नहि समजवापणानो धर्म आपणे जोईए छीए.)

आ प्रमाणे अपूर्ण लक्षण लेतां अश्रावणता उपाधि थई पडे पण पूर्ण लक्षण लईए तो तेम थई शके नहि, कारण के साध्य (अनित्य) अश्रावणतानो व्यापक नथी. आकाशादिमां अश्रावणता छे पण तेमा अनित्यत्व नथी. आकाशने नित्य मानवामा आवे छे. माटे लक्षणनो बीजो भाग लेता अश्रावणता उपाधि थई शकतो नथी.

आ उपरथी नैयायिकनु उपाधिनु लक्षण ते साधननो अव्यापक होई साध्य साथे तेनी समव्याप्ति होवी जोईए एपूर्ण छे. तर्कसंग्रह वगेरे आधुनिक नैयायिको उपाधिनुं लक्षण मात्र 'ते साधननो अव्यापक होई साध्यनो व्यापक होवो जोईए ' एटलुज आपे छे. उपाधिना संदिग्ध अने निश्चित एवा बे भेद छे ते उपरथी मूळमा (पृष्ट ४) 'बने प्रकारना उपाधियी रहित' एम कह्यु छे. संदिग्ध उपाधि कोने कहेवो अने निश्चित कोने कहेवो तेनु अत्र प्रयोजन नहि होवाथी तेना लक्षण अहीं न आपता अक्षपाददर्शनना विवरणमा आप्या छे.

२६. आचार्य = उदयनाचार्य.

२७. आ श्लोक आखो आ प्रमाणे छे.

समासमाविनाभावावेकत्रस्तो यदा तदा।
समेन यदिनो व्यास्तस्तयोर्हीनोऽप्रयोजकः ॥

अर्थ —ज्यारे समअविनाभाव, अने असमअविनाभाव, ए बने एक स्थळे होय, त्यारे जो असमअविनाभावनो हेतु ते बे अविनाभावमांना (तयो.) समअविनाभावथी व्याप्त न होय तो ते अप्रयोजक जाणवो.

सम अविनाभाव=समव्याप्ति, जेम के ' ज्या ज्या लीलां लाकडांयुक्त अग्नि होय त्या त्यां धूम होय, '

असम अविनाभाव=असमव्याप्ति, जेम के 'जे जे वन्हिमान् ते ते धूमवान्' अहीं आपणाथी कही शकाय के तपावेलो लोखंडनो गोळो वन्हिमान् छे पण धूमवान् नथी माटे आ व्याप्ति असम कहेवाय.

(१) पर्वत धूमवान् छे, लीलां लाकडांयुक्त अग्निने लीधे.

(२) पर्वत धूमवान् छे, अग्निने लीधे.

आ प्रमाणे 'पर्वत धूमवान् छे' ए अनुमानमा बे हेतु छे; तेमांना एकनो साध्य (धूमवान्) साथे समअविनाभाव छे, अने बीजानो साध्य साथे असमअविनाभाव छे. आ बेमांनो एक असमअविनाभावसंबंध धरावनार हेतु (अग्नि), ते सम अविनाभाव संबंध धरावनार हेतु (लीलां लाकडांयुक्त वन्हि) थी व्याप्त नथी, (कारण के यथा ज्यां वन्हि होय त्यां त्यां लीलां लाकडांयुक्त वन्हि होय एम आपणाथी कही शकाय नहि), माटे ते (अग्नि) अप्रयोजक छे अर्थात् तेथी खरुं अनुमान थतुं नथी.

२८. परस्पराश्रयदोष. उपर आपणे कह्यु के उपाधिरहित संबंधनुं ज्ञान थाय तो अनुमान यथार्थ थाय. पण संबंध उपाधिरहित छे एम जाणवाने उपाधि प्रथम जाणवो जोईए. हवे आपणे उपाधिना लक्षण उपरथी जोयुं के व्याप्तिज्ञान वगर उपाधिनुं ज्ञान थाय नहि. पण व्याप्तिज्ञान ज उपाधिना ज्ञान वगर संभवतुं नथी. माटे उपाधिज्ञानने आश्रये व्याप्तिज्ञान रह्यु छे अने व्याप्तिज्ञानने आश्रये उपाधिज्ञान रह्यु छे तेथी परस्पराश्रय दोष आवे छे.

२९. जर्फरी तुर्फरी ए शब्द ऋक्संहिताना दशम मंडलमां आवे छे. संहितामां जर्भरी शब्द छे, पण तुर्फरीना फ साथे मळतो आवे एवो फ मूकी दई जर्फरी शब्द केवल वेदनुं हास्य करवाने कर्यो छे. 'जर्भरी' नो अर्थ भरण करनार अने 'तुर्फरीत्' नो अर्थ शत्रुने मारनार एवो थाय छे, अने ए द्विवचनांत शब्दो छे तथा अश्विनीना विशेषण छे. तेओनो उच्चार यावनिक भाषाना जेवो थाय छे तेथी चार्वाकमतवाळा कहे छे के आवा यावनिक शब्दो पण खरा पंडितो वगर बीजा कोण बोले !

३०. मूल श्लोकमां प्राय पद छे, पण त्यां अयाग्र वांचतां अर्थ वधारे स्पष्ट थाय छे.

बौद्धदर्शन.

१. अविनाभाव=नियत संबंध. (जुओ चार्वाकदर्शननुं विवरण).

२. ३. चार्वाक अनुमाननुं खंडन करे छे पण बौद्धो तेनुं प्रतिपादन करे छे. तेओ कहे छे के ' साध्य अने साधनना साहचर्य दर्शनथी जो अविनाभाव (व्याप्ति) सिद्ध करीए तो तेमां चार्वाकना जणावेला दोष आवे, परंतु तादात्म्य (वस्तुनो स्वभाव, वस्तु पोते वस्तु छे एवो संबंध) अने तदुत्पत्ति (कार्यकारणभाव संबंध) थी अविनाभाव सिद्ध करी शकाय छे. '

४. धूमने कार्य मानीए अने अग्निने कारण मानीए तो धूम अने अग्निनुं साहचर्य न जोवामां आवे तोपण कार्य (धूम) थी कारण (अग्नि) नुं अनुमान थई शके. जो कोई बे पदार्थ वच्चे कार्यकारण-संबंध न होय तो तेओनी वच्चे तादात्म्यसंबंध होय. जो कोई वस्तु कोई कार्यनुं कारण न होय तो ते वस्तुना स्वभावथी–तादात्म्यथी–तद्व-स्तुत्वथी–तेनु अनुमान थई शके. शिंशपा (सीसमनुं झाड) वृक्ष छे एम तेना स्वभाव उपरथी अथवा बीजा शब्दोमां कहीए तो वृक्ष साथेना तेना तादात्म्यथी अनुमान थई शके छे.

५. ज्यां ज्यां धूम होय त्यां त्यां अग्नि होय ए प्रकारना व-चनथी जे व्याप्ति करवामा आवे ते अन्वयव्याप्ति कहेवाय.

६. ज्यां ज्यां अग्नि न होय त्यां त्यां धूम न होय ए प्रकारना नकारदर्शक वाक्यथी जे व्याप्ति कहेवामां आवे ते व्यतिरेकव्याप्ति कहेवाय.

७. ८. साध्य अने साधन. (जुओ चार्वाकदर्शननुं विवरण).

९. १०. अन्वयव्याप्ति अने व्यतिरेकव्याप्तिमां साध्यसाधननु साहचर्यदर्शन के साहचर्यादर्शन आवश्यक छे, परंतु ते मात्र वर्तमानमां उपलभ्य अविनाभाव जणाववाने समर्थ छे. भूतकालमांना पदार्थ व्याप्ति करती वखते प्रत्यक्ष न होवाथी दर्शनादर्शननो अभाव रहे छे, तेमज भविष्यत्कालमां व्याप्ति थवानी होय ते पण व्याप्तिनो उपयोग

करती वखते अनुपयोगी छे वर्तमानमा पण सर्व व्याप्तिओ उपलभ्य नथी, कारण के अनेक पदार्थना व्यवधानथी वर्तमानमा थता होय तेवी व्याप्ति पण आपणाथी जोई शकाती नथी माटे वर्तमानमा उपलभ्यमान व्याप्ति वगरनी सर्व व्याप्तिओमा व्यभिचार होवानी कोई शका करे तो ते पायावगरनी छे एम कही शकाशे नहि (अहीं चार्वाक जे कहे छे तेज बौद्धो कहे छे)

११ कार्यकारणसबधथी अने तादात्म्यसबधथी व्याप्ति सिद्ध करता पण व्यभिचार दोष रहे एम कोई शका करे तो तेने कहे छे के कार्यवगर कारण बने एम कहेवु ते वध्यानो पुत्र परणवा जाय छे एम कहेवाना जेवु परस्पर विरोध भरेलु छे

१२ आ वाक्य उदयननी कुसुमाजलिमानु छे कोई स्थळे शका करवी पडे पण ते शका जो प्रवृत्ति मात्रनो व्याघात–अटकाव करे एवी होय तो ते शका न करवी प्रतिदिन सूर्यना उदय थाय छे एम अनुभव होवा छतां पण कोई शका करे के अमुक दिवसे सूर्यादि आकाशीय पदार्थाना उदय अस्त बध रहेशे तो, आ शका तेनी प्रवृत्ति मात्रने अन्कावनारी होवाथी ते निरर्थक छे एम कहेवानुं तात्पर्य छे

१३ कोई बे पदार्थो (अ अने ब) वच्चे कार्यकारण सबध छ के नहि ते आ प्रमाणे जाणी शकाय छे

(१) अ (धूम) उत्पन्न न थयो होय त्यासुधी ते प्रत्यक्ष जणावो जोईए नहि

(२) प्रथम ब (अग्नि) प्रत्यक्ष जणावो जोईए

(३) ब प्रत्यक्ष जणाया पछी अ प्रत्यक्ष थवो जोईए.

(४) अ प्रत्यक्ष जणाया पछी ब प्रत्यक्ष न रही शके

(५) ब प्रत्यक्ष न रह्यो के अ पण अप्रत्यक्ष थाय.

जो आप्रमाणे अ अने ब ना सबधमां थाय तो जाणवु के अ कार्य छे अने ब कारण छे

१४ बे पदार्थो वच्चे कार्यकारणसबध छे ते आ प्रमाणे जाणी कार्यथी कारणनुं अनुमान करवुं दुर्लभ कथा पछी बीजो नियम जे तादात्म्य तेना सबधमां कहे छे.

शिंशपा (सीसमनु झाड) अने वृक्ष ए बेनी वच्चे तादात्म्य-सबध छे, अने तेथी जे जे शिंशपा होय ते ते वृक्ष होय एम व्याप्ति करी शकाय छे कोई शका करे के शिंशपा वृक्ष नथी तो तेने कहेवानु के शिंशपा शब्द कहेता जे जे विचार आपणा मनमा आवता होय ते सर्वमाथी वृक्ष शब्द कहेता जे जे विचार आवे ते सर्व दूर करी शकाय तोज शिंशपा वृक्ष नथी एम कही शकाय परतु आप्रमाणे करता शिंश पा जातेज रहेशे नहि. शिंशपानो एक पण धर्म एवो नथी के ते वृक्षनो धम न होय, माटे जो शिंशपा अने वृक्षनी वच्चे तादात्म्य होय तो ते ओनी वच्चे व्याप्ति छे एम पण कहा शकाय कहेवानु तात्पर्य ए छे के शिंशपा अने वृक्षनु नियत साहचर्य जोवामा आवतु होय तेने आधारे ते बे वच्चे व्याप्ति छे एम जो कोई कहे तो तेना सबधमा (नियत साहचर्यदर्शनना सबधमा) चार्वाक जे जे शका बतावे छे ते आणा शकाय अने व्याप्ति नथी एम कही शकाय. परतु उभयना तादात्म्यथी उभय वच्चे व्याप्ति ठराववामा आवे तो कोईथी पण शका करी शकाय नहि के व्याप्ति नथी, कारण के तेम करवा जता शिंशपानु अस्तित्वज रहेशे नहि

१५ हवे कोई अमुक बे पदार्था वच्चे तादात्म्य सबध छे ते आपणे शी रीते जाणवु ? बौद्धो कहे छे के उभयना सामानाधिकर ण्यथी. जे बे पदार्थनु अधिकरण समान होय ते समानाधिकरण कहे वाय. समानाधिकरणनो भाव ते सामानाधिकरण्य शिंशपा वृक्ष छे अहीं शिंशपा अने वृक्ष बने शब्दोनु अधिकरण (विभक्ति) एक छे माटे ते समानाधिकरण कहेवाय एटले के ते बेनु सामानाधिक रण्य छे एम कही शकाय जो एक पदार्थ बीजानो विधेय थई शके तो ते बे समानाधिकरण छे एम कहेवाय गाय अने अश्व ए समाना धिकरण थई शके नहि, कारण के गाय अश्व छे एम आपणाथी कहा शकाय नहि, माटे गाय अने अश्व वच्चे तादात्म्य छे नहि आज प्रमाणे गाय गाय छे एम कहेवु पण निरर्थक छे, तेथी उभय पदार्थ वच्चे अ त्यत अभेद होय (ते बे एकज होय) तो पण तेओनु सामानाधिक रण्य सभवे नहि अने तेथी तेओ वच्चे बौद्धो जेने तादात्म्य कहे छे ते पण सभवे नहि

१६. माटे कार्यथी कारणनुं अने आत्मा (वस्तु) थी तदात्मा (तद्वस्तु) नु अनुमान थई शके.

१७, १८. आ प्रमाणे कार्यकारणसंबंध अने तादात्म्यसबंधथी अनुमानप्रमाण स्वीकारवा योग्य छे एम समजावी अनुमानने न स्वीकारवामां जे दोष छे तेनुं दर्शन करावे छे. अनुमान प्रमाण नथी एम कोईए कह्यु ते उपरथीज ते प्रमाण नथी एम बीजानो निश्चय थाय नहि. जो अनुमान प्रमाण नथी एम सिद्ध करवाने ते कोई साधननो उपयोग करे तो ते अनुमान वगर अन्य होई शके नहि. (बौद्धो मात्र प्रत्यक्ष अने अनुमान ए बेनेज प्रमाण माने छे.) पण अनुमानथी अनुमान खोटु कहेवु ए परस्पर विरोध भरेलुं होवाथी व्याघात दोषथी दूषित थाय छे. अतिरिक्त एटले माथावगरनुं अर्थात् हाथ धडा वगरनु.

१९. प्रमाणाभास=हेत्वाभास=खोटुं प्रमाण.

२०. कोई कहेशेके हमे अनुमान प्रमाण नथी एम कहेता नथी पण ते खोटुं प्रमाण छे एम कहीए छीए तो तेने कहेवानुं के तमे आ प्रमाणे शाथी कहो छो ? ते कहे शे के ते यथार्थ प्रमाणना जेवुं—समान—जातीय—एक जातिनु—नथी तो तेने कहेवानुं के आ प्रमाणे कहेवु ते पण अनुमाननेज आधारे छे; अहीं जे अनुमान करवामां आवे छे ते तादात्म्यसबंधने आधारे करवामां आवे छे. अनुमान अने प्रमाण वचे तादात्म्य न होय तो ते प्रमाणनुं असजातीय छे एम तमाराथी कहेवाय नहि. पण अनुमानना खंडनमां अनुमाननोज उपयोग ए व्याहत छे (व्याघात दोष युक्त छे). तादात्म्यसंबंधथी करवामां आवतु अनुमान ते स्वभावानुमान.

२१. कोई चार्वाकमतानुयायी कहेशेके हमारा आचार्य कहे छे के अनुमान प्रमाण नथी अने तेथी हमे ते प्रमाणे मानीए छीए तो तेने कहेवानुं के तेम करवामां वचनरूप हेतुनो स्वीकार करतां हमे जेने कार्यलिंगक (कार्यकारणसंबंधथी करेलुं) अनुमान कहीए छीए तेनो स्वीकार तमाराथी बलात्कारे थई जाय छे.

२२. " न्यायवाळा अनुपलब्धिने प्रमाणान्तर मानता नथी तेज प्रमाणे बौद्धो पण मानता नथी, तो पण बौद्धो तेने अनुमाननो प्रकार माने छे. कार्यकारणसंबंधथी अनुमान करतां कांतो आपणे कार्यनी उ-

पलब्धिथी कारणनु अनुमान करी शकीए के कार्यनी अनुपल ब्धिथी कारणनो प्रतिषेध करी शकीए आ बीजा प्रसगमा अनुपल ब्धिने हेतु मानी अनुमान तो करवुज पडे छे माटे तेम करता पण अनुमाननो स्वीकार बलात्कारे थई जाय छे

आ प्रमाणे बौद्धो केवी रीते अनुमाननो स्वीकार करे छे ते कथा पछी माधवाचार्य तेओनी भिन्नभिन्न शाखाओ तथा तेओना सिद्धान्तनु दर्शन करावे छे

२३ सर्व शून्य शून्य छे एवी एक बाद्धोनी भावना छे आ भावना मूल भाषान्तरना पृष्ठ १८ मागा सिद्ध करी छे आ भावनाने सपूर्ण अंगे स्वीकारवी ते सर्वशून्यत्ववाद छे अने माध्यमिको ते प्रमाणे स्वीकार करे छे (जुओ पृष्ठ १९ अने ते उपरनु विवरण)

२४ २५ २६ आ शब्दोनु स्पष्टीकरण आगळ उपर थाय छे तेमज उपोद्घातमा तेना सबधमा कहेवामा आव्यु छे

२७ थी ३० आ सर्व भावनाओ अनुक्रमे मूल भाषान्तरमा सिद्ध करी छे

३१ बाद्धो पदार्थने क्षण एवी सज्ञा आपे छे

३२ सत्त्व ए शब्दनो अर्थ बौद्धो अर्थक्रियाकारित्व एम समजे छ जे अर्थवती क्रिया करावे ते तेओनी परिभाषा प्रमाणे सत् कहेवाय छे भावरूप पदार्थमात्र आ प्रमाणे सत् ठरे छे

३३ असिद्ध हेतु कोने कहेवो ते समजवाने आपणे एक उदाहरण लईए पर्वत वन्हिमान् छे, धूमथी, ज्या ज्या धूम होय त्या त्या वन्हि होय, जेम के रसोडा वगेरेमा, ज्या ज्या अग्नि न होय त्या त्या धूम न होय, जेम के सरोवरमा अहींआ धूम छे ते हेतु छे, अग्नि साध्य छे, अने पर्वत पक्ष छे, कारण के तेना उपर अग्नि छे एम ज्या सुधी सिद्ध थयु नथी त्या सुधी आपणने सदेह छे अने जेना उपर साध्यनो सदेह होय अर्थात् जे सदिग्धसाध्यवान् होय ते पक्ष कहेवाय छे रसोडु सपक्ष छे, कारण के तेमा साध्य (अग्नि) ना अस्तित्वनो आपणने निश्चय छे अने निश्चितसाध्यवान् ने सपक्ष कहे छे सरोवर विपक्ष छे, कारण के तेमा साध्य (अग्नि) ना अभावनो आपणने निश्चय छे अने निश्चितसाध्याभाववान् ते विपक्ष कहेवाय छे, आ प्रमाणे सपक्ष, विपक्ष,

अने हेतु, ए त्रण शब्द समजाया एटले असिद्ध हेतु कोने कहेवो अने सिद्ध हेतु कोने कहेवो ते समजाशे. जे हेतु सपक्षमां होय अने विपक्षमां न होय तेने सिद्ध हेतु कहेवो पण जे आथी कोई पण प्रकारे विरुद्ध होय तेने असिद्ध कहेवो. हवे बौद्धो 'आ सर्व भाव क्षणिक छे' एम सिद्ध करवाने सत्त्व (अर्थक्रियाकारित्व) ने हेतु रूपे ले छे. आ हेतु सपक्षमात्रमां प्रत्यक्ष जोवामां आवे छे. अहीं सपक्ष जलधर, नील, आदि जेओना क्षणिकत्वनो आपणने प्रत्यक्षसिद्ध निश्चय छे ते छे. अने आ सर्व पदार्थ अर्थवती क्रिया करे छे माटे सत्त्व ते सर्वमां छे. पण ज्यां सुधी सत्त्व विपक्षमात्रमां नथी एम सिद्ध करवामां न आवे त्यां सुधी ते हेतु असिद्ध गणाय; माटे 'व्यापकनी व्यावृत्ति' इत्यादिथी ते विपक्षमां नथी एम बतावे छे.

३५. व्याप्य अने व्यापकनो अर्थ चार्वाकदर्शनना विवरणमां आप्यो छे. अहीं सत् व्याप्य छे अने क्षणिक व्यापक छे. व्यावृत्ति= दूर करवा रूप क्रिया.

३६-३७. सत्त्व ए हेतु सिद्ध थवा माटे प्रथम तो ते सपक्षमां होवो जोईए अने ते प्रमाणे छे एम उपर बताव्युं; हवे तेनी विपक्षमाथी व्यावृत्ति सिद्ध करवामां आवे छे. क्षणिक जे न होय ते अक्षणिक कहेवाय. अने अक्षणिक असत् छे एम जो सिद्ध करी शकाय तो हेतु (सत्त्व) सिद्ध छे एम कहेवामा कईज बाधो रहे नहि. नीलादि क्षणिक भाव सत् (अर्थ क्रियाकारी) छे एम तो आपणे प्रत्यक्ष अनुभवथी जाणीए छीए पण अक्षणिक असत् छे एम कई आपणो अनुभव नथी माटे बीजी कोई रीते ते सिद्ध करवु जोईए. आटला सारु बौद्धो एक न्याय लावे छे के 'व्यापकनी व्यावृत्तिथी व्याप्यनी व्यावृत्ति थाय छे.' आ न्याय जरा पण वांधा भरेलो नथी, परतु तेने लगाववो जोईए. हवे जेने आपणे क्षणिक कहीए छीए ते कातो क्रमवार क्षणिक होय के कातो एकदम क्षणिक होय. वृक्ष क्षणिक छे ते क्रमवार क्षणिक छे. अने भूत वगेरेनो देखाव एकदम जतो रहे छे ते अक्रमवार क्षणिक छे. आ प्रमाणे समज्या पछी आपणे पदार्थ मात्रमाथी क्रमवार क्षणिक पदार्थो अने अक्रमवार क्षणिक पदार्थोनी व्यावृत्ति करीए तो शेष मात्र अक्षणिक पदार्थो रहेशे. पण सत् अथवा अर्थक्रियाकारी पदार्थनो समावेश क्षणिक पदार्थोमा थाय छे *(व्याप्य व्यापक सबधथी)* तेथी *क्षणिकनी व्यावृत्ति थता सत्त्वनी*

व्यावृत्ति पण थई जवानी. आ प्रमाणे अक्षणिक असत् छे अथवा बीजी रीते कहीए तो अक्षणिक सत् नथी एम सिद्ध थयुं. क्षणिकना क्रम अने अक्रम बे भेद कर्या तेवा सत्‌ना पण क्रम अने अक्रम बे भेद समजवा. हवे क्रम नहि ते अक्रम ए रीते क्रम अने अक्रम ए बे परस्पर विरुद्ध होवाथी एवो कोई पण पदार्थ न होई शके के जे बेमानो एक (क्रमवार अर्थक्रियाकारी के अक्रमवार अर्थक्रियाकारी) न होय. आ प्रमाणे उभय प्रकारना सत्त्वनी व्यावृत्ति थता केवल असत्त्व शेष रहे ए स्पष्ट छे.

३८. थी ३९. उपर सिद्ध कर्युं के अक्षणिक असत् छे. हवे अर्थना वधारे स्पष्टीकरणने माटे जणावे छे के अक्षणिक ने सत् (अर्थक्रियाकारी) मानतां दोष पण नडे छे ज्यारे कोई सिद्धान्तनी बे पक्षमां व्यवस्था थती होय अने तेमानो एक पण पक्ष प्राप्त न होय तो ते सिद्धान्त खोटो ठरे छे. *अक्षणिक अर्थक्रियाकारी छे ए पूर्वपक्षीनो सिद्धान्त छे*

हवे तेने पूछे छे के ते अक्षणिक पदार्थमां अर्थक्रिया करवानुं सामर्थ्य छे के सामर्थ्य नथी जो ते कहेशे के छे तो सामर्थ्य नो नाश थतो नथी माटे वर्तमानमां पण तेमां भूतकाल अने भविष्यत्काल सबंधी अर्थक्रिया करवानुं सामर्थ्य होवुं जोईए, अने ते सामर्थ्यना बलथी तेणे ते ते क्रियाओ करवी जोईए, पण ए प्रमाणे कंई जोवामां आवतुं नथी माटे ए पक्ष तो अग्राह्य छे हवे जो ते कहेशे के तेमां सामर्थ्य नथी तो वर्तमानमां पण तेनाथी अर्थक्रिया थई शकशे नहि पत्थरना कटकामां अंकुर उत्पन्न करवानुं सामर्थ्य नथी तो ते कोई काले पण अंकुर उत्पन्न करी शकशेज नहि. माटे अक्षणिक पदार्थमां अर्थक्रिया करवानुं सामर्थ्य छे एम पण कहेवाशे नहि अने नथी एम पण कहेवाशे नहि, अने तेथी ते अर्थक्रियाकारी छे ए सिद्धान्त दूषित ठरशे

हवे पूर्वपक्षी कहेशे के बहारना सहकारीओ मळे छे तेथी अक्षणिक पदार्थ भूत वर्तमान अने भविष्यत् काळमां अर्थक्रिया करवाने समर्थ थाय छे बाकी तेनामां पोतामां तो सामर्थ्य नथीज. परंतु बौद्धो कहे छे के आ प्रमाणे मानतां पण अडचण नडे छे आ सहकारीओ कांतो ते क्षणिक पदार्थना उपकारक होय के कांतो उपकारक न होय जो उपकारक न होय तो ते नकामा छे, माटे उपकारक छे एम कहवा

वगर चालशे नहि. हवे उपकारक एवा जे सहकारीओ ते आपणे *लीधेला अक्षणिक पदार्थथी भिन्न होय के अभिन्न होय.* जो अभिन्न मानो तो सहकारी अने सहकृतनी व्यवस्थाज असंभवित थशे. जो भिन्न मानो तो अर्थक्रियारूप कार्यनुं कारण ते सहकारीओ थशे अक्षणिक पदार्थ थई शकशे नहि. आ प्रमाणे अक्षणिक पदार्थने बाह्य सहकारीओ म-*ळवाथी ते अर्थक्रिया करी शके छे एम मानवुं पण खोटुं पडशे.*

हवे पूर्वपक्षी कहेशे के हमे एम मानीए छीए के अक्षणिक प-दार्थनो एवो स्वभाव छे के ते पोताथी भिन्न एवा उपकारक सहकारी साथे कार्य करे छे अने तेथी ते कारण थई शके छे तो आ मानवुं पण खोटुं छे, कारण के स्वभाव मानतां ते *नित्य मानवो जोईए* (आग-तुक धर्म स्वभाव कहेवाय नहि) अने स्वभावना नित्यत्वने लीधे सह-कारीओनुं साहाय्य पण तेने नित्य मळवुं जोईए, अने ए प्रमाणे थतां *अर्थक्रिया निरंतर एकरूपमां थवी जोईए; पण ते प्रमाणे थतुं जो-*वामां आवतु नथी, माटे स्वभावनी प्रक्रिया पण स्वीकार्य जणाती नथी.

हवे धारोके कोई पूर्वपक्षी एम कहेशे के अक्षणिक पदार्थ पो-*ताना स्वभावथी कोई बाह्य उपकारकने बोलावशे अने ते उपकारथी ते* अक्षणिक पदार्थमां कोई अतिशय (नवो वधारो) उत्पन्न थशे. उदा-हरण—जेम बीज पोताना स्वभावथी पृथ्वीने पोताना प्रति आकर्षशे *अने तेथी ते बीज फूलशे. आ फूलेलुं बीज ते मूल बीजमां एक नवो* अतिशय थयो. आ प्रमाणे मानतां नित्य पदार्थ अर्थक्रिया कर-वामां स्वतंत्र भाग लेनार ठरशे अने तेथी ते अर्थक्रियाकारी कहेवाशे. *आ प्रमाणे कहेनारने बौद्धो कहेशे के आ जे अतिशयप्रक्रिया तेपण नि-*र्दोष नथी, कारण के हमे पूछीशुं के एक अतिशय बीजा अतिशयने आरंभे के नहि ? न आरंभे एम तो कई कहेवाय नहि, कारण के एक *अतिशय ते कई अर्थक्रिया नथी, अर्थक्रिया थवाने तो अनेक अति-*शय जोईए. बीज वृक्षरूपमां आवता तेमां अनेक भिन्नभिन्न वृद्धिओ थाय छे. माटे एक अतिशय बीजा अतिशयने आरंभे छे एम मानवु *पडशे; पण आ प्रमाणे मानता त्रण अनवस्थाओ आवशे.*

(१) बीजने अतिशय मळतां सहकारीनी अपेक्षा रहे छे. (जो अपेक्षा न रहे तो सहकारीओ नकामा पडे). सहकारीओ अतिशय

उत्पन्न करवाना हेतुपूर्वक मळवा जोईए. (जो आ हेतु न होय तो सहकारीओ (पवन, पाणी, वगेरे) निरंतर मळे छे तेथी पत्थर उपर पडेला बीजने पण ते मळतां अतिशय उत्पन्न थाय). आ प्रमाणे अतिशय सहकारीनी अपेक्षा करे अने सहकारी अतिशयनी अपेक्षा करे एम पार न आवे त्यांसुधी चाल्या करे.

(२) सहकारीओने बीजादिनी अपेक्षा रहे, (जो न रहे तो बीजादि नकामां पडे). जो बीजादिने अपेक्षित मानीए तो अतिशय सहकारीथी थता उपकारमां थाय. पण बीजादिनो हेतु अतिशय उत्पन्न करवानो होवो जोईए (नहि तो सहकारीओने बीजनो ज्यारे ज्यारे योग थाय त्यारे त्यारे अंकुर उत्पन्न थाय). आ प्रमाणे एक अतिशय उत्पन्न करवामां बीजादिने बीजा अतिशयनी अपेक्षा रहे अने एम अनंत परंपरा चाले.

(३) बीजने अतिशय उत्पन्न करवाना धर्मवाळु मानीए तो पण सहकारीओना उपकारनी अपेक्षा रहेशे (नहि तो तेना धर्मने लीधे अतिशय वगरउपकारे पण मळे), पण सहकारीना उपकार वगर अतिशयनु अस्तित्व मनाय नहि. आ प्रमाणे जोता बीजना धर्मरूप अतिशयने उपकारनी अपेक्षा अने उपर बताव्या प्रमाणे उपकारने अतिशयनी अपेक्षा एम निरंतर चाल्या करशे. (अहीं वाचके जोवु के आ त्रण अनवस्थाओ अनुक्रमे सहकारीने, बीजने, अने उपकारने अपेक्षित मानीने दर्शावी छ) आ प्रमाणे अतिशयनी प्रक्रिया पण खोटी ठरे छे.

हवे पूर्वपक्षी कहेशे के जो अतिशय अने अक्षणिक पदार्थ भिन होय तो आ प्रमाणे परस्परनी अपेक्षाथी अनवस्थाओ आणी शकाय पण हमे एम मानीए छीए के सहकारीओ वडे बीजथी अभिन्न अतिशय उत्पन्न थाय छे आ प्रमाणे कहेनारने बौद्धो कहे छे के अहीं हमारे इष्टापत्ति छे. (हमे जे मत कहेवा इच्छीए छीए तेनोज तमाराथी स्वाकार थई जाय छे), कारण के जेने तमे अक्षणिक भाव कहोछो अने जेनाथी अभिन्न अतिशय सहाकारीओथी उत्पन्न थयो एम मानो छो तेमाथी आ अभिन अतिशय काढी नाखो तो पछी ते पदार्थज रहेशे नहि. बीजथी अभिन्न फूलेलु बीज मानता मूल बीज रहेशेज नहि. मात्र फूलेलुं बीज के जे अतिशय छे तेज रहेशे अने तेने हमे कुर्वद्रूप (रूप उत्पन्न करनार) एवी सज्ञा आपीए छीए. आ प्रमाणे हमारो

सिद्धान्त सिद्ध थाय छे. याचके जोवु के 'अक्षणिक अर्थक्रियाकारी छे' एम माननार पूर्वपक्षीने मोहोडे स्वीकाराव्यु के जे अर्थक्रियाकारी छे ते क्षणिक छे.

आ प्रमाणे कोई नित्य पदार्थ क्रमवार अर्थक्रियाकारी थतो नथी एम सिद्ध कर्या पछी कोई पण नित्य पदार्थ अक्रमे (एकदम) पण अर्थक्रियाकारी थतो नथी एम सिद्ध कर्यु छे आ विकल्प सरळ छे. (जुओ बौद्धदर्शन भाषान्तर पृष्ठ १५).

'जं सत् छे ते क्षणिक छे, जेम के जलधर' एमा जलधर सपक्ष छे अने सर्व भाव क्षणिक छे एम सिद्ध करवानु छे माटे क्षणिकत्व ए साध्य छे. हवे साध्य सपक्षमा सिद्ध होवु जोईए माटे जलधर क्षणिक छे अथवा बीजा शब्दोमा कहीए तो जलधर अक्षणिक नथी एम सिध्द करवाने आ प्रमाणे कहे छे —

जे जे पदार्थोमा विरुध्द धर्मोनो आरोप करातो होय ते नाना होय, जेमके शीत अने उष्ण ए बेमा विरुध्द धर्मोनो आरोप थाय छे तेथी ते एक बीजाथी भिन्न छे. हवे जलधरमा पण विरुध्द धर्मोनो आरोप थाय छे तेथी ते नाना छे अर्थात् एकरूप–अक्षणिक नथी. जलधरमा विरुध्द धर्मोनो आरोप आ प्रमाणे करी शकाय —

जे कोई पदार्थने पूर्वपक्षी स्थायी (नित्य) माने छे ते पदार्थ उपर जणाव्या प्रमाणे कालभेदे करीने अर्थक्रिया करवाने असमर्थ छे एम सिध्द करी शकाय छे तेमज असमर्थ नथी एम पण सिध्द करी शकाय छे. वळी ते पदार्थ समर्थ छे अने समर्थ नथी एम पण आ प्रमाणे सिध्द करी शकाय—जे ज्यारे जे करे छे ते त्यारे ते करवाने समर्थ छे, आ भाव अतीत अनागत कालमा अर्थक्रिया करे छे माटे ते ते करवाने ते काळमां समर्थ छे जे ज्यारे जे नथी करतो ते त्यारे ते करवाने समर्थ नथी. आ भाव वर्तमानमा अतीत अनागत कालसबधी क्रिया नथी करतो माटे आ वखते ते समर्थ नथी आ प्रमाणे जलधरमा कालभेदे करीने समर्थ, समर्थ नहि, असमर्थ अने असमर्थ नहि ए रीते विरुध्द धर्मोनो आरोप करी शकाय अने तेथी ते भिन्नभिन्न कालमा एकरूप लई शकाय नहि पण नाना लई शकाय अने आ प्रमाणे ते क्षणिक छे एम सिध्द करी शकाय.

४०. अत्यार सुधीमां जे कहेवामां आव्युं ते अहीं टुंकामां आव्यु छे —भावमात्र क्षणिक छे, तेओ सत् होवाथी, जे जे सत् छे ते ते क्षणिक छे, जेमके जलधरपटल, भाव सत् छे, माटे तेओ क्षणिक छे अहीं 'जे जे सत् छे ते ते क्षणिक छे' ए अन्वयव्याप्ति अने व्यतिरेकव्याप्तिथी सिध्द करी शकाय छे अन्वयव्याप्ति आ प्रमाणे छे जे जे अर्थक्रियाकारी छे ते ते कालभेदे करीने ते ते अर्थक्रिया करवाने समर्थ अने असमर्थरूप विरुध्द धर्मथी युक्त होय छे अने तेथी भिन्नभिन्न कालमा नाना ठरता एकरूप अर्थात् अक्षणिक ठरता नथी, माटे जे जे अर्थक्रियाकारी (सत्) छे ते क्षणिक ठरे छे व्यतिरेकव्याप्ति आप्रमाणे ठरावाय छे जे जे अक्षणिक छे ते ते असत् छे, कारण के जे सत् छे ते क्षणिक छे एम कहेवामा सत् व्याप्य छे अने क्षणिक व्यापक छे, अने व्याप्य व्यापकमा रहेलो होवाथी भावमात्र माथी क्षणिकने व्यावृत्त करतां तेनी साथे सत् पण व्यावृत्त थाय छे अने तेथी अक्षणिक असत् रहे छे

४१ सर्व क्षणिक छे ए सिद्धान्त आ श्लोकमा टुंकामा समाव्यो छे जे पदार्थ सत् छे ते क्षणिक छे 'सत्' नो अर्थ अर्थक्रियाकारी एम समजवानो छे आकाशादि सिध्द पदार्थमां सत्ताशक्ति–अर्थक्रिया करवानी शक्ति नित्य नथी एम सिध्द करवामां आव्यु छे. अर्थक्रिया करवानी शक्ति एकरूपवाळी पण नथी (आ प्रमाणे अर्थक्रिया करवानी शक्ति–सत्ताशक्ति नित्य पण नथी अने एक रूपवाळी पण नथी) पदार्थ क्रमवार अर्थक्रिया करे छे एम लेता सर्व सत् पदार्थ क्षणिक ठरे छे.

४२ सत्त्व अथवा सत्तानो अर्थ बौध्दो अर्थक्रियाकारित्व ले छे, वांचनारने समजायुं हशे के आ अर्थ लेवामा तेमनो हेतु ए छे के कोई पदार्थनुं अस्तित्व आपणे ते कोई उपयोगी (समजी शकाय एवी) क्रिया करे छे तेने आधारे समजीए छीए परतु कणाद अने गौतमना मतनो अंगीकार करनारा एम माने छे के सत्ता एक जाति छे अने जे पदार्थ आ सत्ताजातिनो योगी होय ते सत् कहेवाय छे कहेवानु तात्पर्य एम छे के अर्थक्रिया वगर पण पदार्थनु अस्तित्व होई शके पण आ वैशेषिक अने न्यायवाळानो सिध्दान्त पाया वगरनो छे एम बौध्दो जणावे छे सामान्य विशेष अने समवायने पण न्यायवाळा भावरूप पदार्थ माने छे अने सत्ता मात्र द्रव्य गुण अने कर्मनी जाति होवाथी

उपरना त्रण तेना योगी थई शकता नथी माटे ते असत् ठरे छे. आ प्रमाणे भावरूप मानवामां आवता पदार्थो असत् ठरे ए विरुध्द छे माटे सत्नो अर्थ सत्ताजातिनो योगी एम लेवाय नहि.

४३. थी ४४. आ त्रण श्लोकमां सामान्य पोताना सर्व आश्रयगत छे एम मानतां जे जे विरोध आवे ते ते देखाड्या छे.

४५. बौध्दो सामान्यनो अंगीकार करता नथी एम तो आपणे जोयुं पण पदार्थोमां अनुवृत्तिनी प्रतीति थाय छे तेनुं कारण सामान्यनो निषेध करतां आपणने समजवुं कठिन पडे छे. आपणे एकनो एक घट अनेकवार जोईए छीए अने अनुवृत्तिनी प्रतीतिने लीधे आपणे तेने ओळखी शकीए छीए. हवे जो कोई पण सामान्यनो अंगीकार न करीए तो आ प्रकारनी प्रतीति आपणने थाय नहि. पण बौद्धो आ शंकानुं समाधान एवी रीते करे छे के अन्यतानो अपोह ते अनुवृत्तिनी प्रतीतिनो आधार छे. ' आ घट जे हुं आज जोऊं छु ते में काले जोयो हतो तेनाथी जुदो नथी ' ए विचारने आधारे ते एकज छे एम आपणे जाणीए छीए, तेमां रहेला कोई सामान्यने लीधे आपणे तेने ओळखी शकता नथी. " आ पदार्थ एकनो एक छे " अने " आ पदार्थ अन्य नथी " आ बेमां केटलो फेर छे ते वांचनारने विचार करतां समजाशे.

४६. सर्व दुःख छे ए बीजी भावना छे. आ भावनाने सिद्ध करवाने मात्र एटलुंज कहेवामां आवे छे के सर्व तीर्थंकरो (गुरुओ) दुःखना उपाय शोधवाने प्रयत्न करे छे माटे ते सर्वसमत छे.

४७. पदार्थ मात्र क्षणिक होवाथी बे पदार्थ एक बीजाना जेवा छे एम आपणाथी कही शकाय नहि माटे प्रत्येक पदार्थ पोते पोताना जेवोज छे एम निश्चय करवो पडे छे. आ भावना 'सर्व स्वलक्षण छे' ए त्रीजी भावना छे.

शृग जेवा पदार्थनो निषेध करी शकातो नथी.) आ प्रमाणे आ विशिष्ट दर्शन सत् ठरे छे, कारण के ते दृष्ट अथवा अनुभूत छे एम बलात्कारे मानवु पडे छे. तेमज ' आ ' एम कहेवामा जे इदता आवे छे तेनो आश्रय (आ शब्द जेने लगाडाय छे ते) पण सत् होवो जोईए वळी तेमा जेनो अध्यास थाय छे ते रजतादि पण सत् होवु जोईए आ अने रजत उभय वस्तुनो सबध पण सत् होवो जोईए पण आ पदार्थने कोइ पण सत् कही शकशे नहि. माटे जे दृष्ट छे ते सत् छे एम कहेवाय नहि. कोइ कहेशे के सर्व दृष्ट छे तेमाना केटलाक सत् छे अने केटलाक असत् छे तो ते अर्धजरतीय अस्तित्व मान्य कर्यु कहेवाय, तेथी अध्यस्तादिमानु एक अथवा बधारे असत् ठरता सर्व असत् थशे. माटे सर्व शून्य छे एम सिद्ध थयु.

४९. ५० माध्यमिको एम माने छे के पदार्थ स्थायी अथवा अनुकूलवेदनीय (सुखरूप) अथवा कोइ सर्वानुगत एक सत्तावाळा जणाय छे ए केवल भ्रान्ति छे एम भगवान् बुध्दनु केहेवु छे. ते साथे ते सर्वने क्षणिक पण माने छे माटे एक पगलु आगळ भरता (जेम भीखारी आगळी आपता पोंहोचाने चाहे छे तेम क्षणिक पदार्थो आ भ्रमथी रहित स्पष्ट समजता) ते सर्व शून्यज जणाय छे. पदार्थ मात्र सत् पण कहेवाय नहि तेम असत् पण कहेवाय नहि सत् असत् पण कहेवाय नहि तेम सत् असत् नथी एम पण कहेवाय नहि जो पदार्थने सत् मानीए तो घट नित्य होवो जोईए ने तेथी कुलालादि कारकनु प्रयोजन न रहे. जो असत् मानीए तो कारक कइ करी शके नहि. सत् असत् परस्पर विरुद्ध होवाथी एक पदार्थ उभयात्मक के अनुभयात्मक होई शके नहि. (*बौद्धो पदार्थनी मध्य स्थिति मानता नथी, तेओ* सत् अने असत् ए बे विरुद्धपद माने छे अने तेथी मध्य स्थितिनो असभव गणे छे. जैनो अने वेदान्तीओ मध्यस्थिति माने छे अने तेथी वेदान्तीओ मायाने सत् पण नथी अने असत् पण नथी एम कहे छे.

५४.५५ जेम प्रत्यक्ष ज्ञाननो स्वीकार करवो आवश्यक छे ते प्रमाणे स्वयवेदननो स्वीकार करवो पण आवश्यक छे. बाह्य अर्थ ग्राह्य नथी एम तो मानी शकाय ज पण बुद्धि सर्वनु ग्रहण करनार छे माटे तेने सत् मानवी पडे छ अने सर्व बाह्य पदार्थ ते बुद्धिनां रूपो छे.

५६ तादात्म्यने अने कार्यकारणसबधने आधारे अविनाभावनु प्रतिपादन करीने ग्राह्य ग्राहकने आ स्थळे अभिन्न ठरावे छे

५७ (पृष्ठ २१ पक्ति १९) उपर कह्यु के कोइ आकाशादि नील पदार्थ अने तेने जोवाथी तेज वखते थती तद्बुद्धि ए बने एक छे, पण हव कोइ शका करेके कोइकोइवार एम पण थाय छे के बाह्य पदार्थनी उपलब्धि वगर पण विचारमात्रथी तद्बुद्धि उत्पन थाय छे तो शु एम समजवु के जे पदार्थनी तद्बुद्धि थई ते पदार्थ (बाह्य ग्राह्य पदार्थ) *उत्पन थयो ? शु मोदकनी आशा थतां तद्बुद्धिनो जन्म* थयो तो मोदकनी प्राप्ति थई एम मानी लेवु ? आवा प्रकारनी शकाना समाधानमा आ प्रमाणे कहेवामा आवे छे —वस्तुत बुद्धितो वेद्याकार पण नथी अने वेदकाकार पण नथी, परतु वासनाना बळथी बुद्धि पोताने व्यवहार करनार समजे छ आ प्रमाण त शांत न रहेता चचळ रहे छे अने आ वासनाजन्य चांचल्यनुं परिणाम ग्राह्यग्राहकभेद छे आ प्र॰ माणे वासना ज्या सुधी छे त्या सुधी ग्राह्यग्राहकभेद छे अने तेथी आशा मोदक अने तद्बुद्धि अने वास्तविक मोदक अने तद्बुद्धि ए बने समान नथी ज्या सुधी वासनानु बळ छे त्या सुधी बाह्य पदार्थनु अस्तित्व बुद्धि पोताथी अभिन्नरूपमां स्वीकारी ले छे. माटे आशामोदक जेनु अस्तित्व बुद्धि एकरूपमा माने छे तेकरता वास्तविक मोदकनु अस्तित्व ते *अन्यरूपमा माने छे माटे आशामोदक अने उपार्जित मोदक एक नथी*

५८ आ सिध्दान्त उपर स्पष्ट थई गयो छे

५९ माध्यमिकोनी *परिभाषा* प्रमाणे मोक्ष महोदय कहेवाय छे अने तेनु लक्षण पणु उत्तम छे

६० (पृष्ठ २२ पक्ति ११) वेद्य वेदकथी *अभिन्न* छे, सहोप लंभ नियमथी परतु आपणे जाणता नथी के जे वेदकथी अभिन्न न होय ते वद्य न होय, माटे आ अनुमान यथार्थ नथी

६१ माध्यमिको सहोपलम्भना नियमथी बाह्य ग्राह्यनुं अस्तित्व मानता नथी सौत्रान्तिको आ विचारने अयथार्थ कहे छे. तेओ एम माने छे के जो केवल *आन्तर अर्थनुज अस्तित्व मानीए तो* ' आ ' एम जे आपणे कोइ बाह्यपदार्थना सबधमां व्यवहार करीए छीये ते सोपपत्तिक ठरावी शकाय नहि प्रत्येक बाह्य पदार्थने माटे पण ' हु ' प्रयोज व्यवहार थाय. माध्यमिक आनो प्रत्युत्तर आपतां कहे छे के आ प्रमाणे *व्यवहार थवामां* हेतु *वासनाजन्य भ्रांति छे* (*जुओ विवरण* ५७) वस्तुत बाह्य पदार्थ सद्बुद्धिथी भिन्न नथी, पण भ्रांतिथी भिन्न जेवो लागे छे परतु सौत्रान्तिको आ सिद्धान्तना सबधमां एम कहे छे के भिन्न जेवो कहेतांज भिन्नतु अनुमान थाय छे जे वस्तु मूलमां होयज नहि तेना जेवी बीजी वस्तु छे एम कही शकाय नहि माटे बाह्य पदार्थ नथी एम कहेवु सदोष छे

६२ कोइ माध्यमिक कहेशे के बाह्य पदार्थनुं अस्तित्व आपणने तेना ज्ञानथी जणाय छे अने पदार्थनु ज्ञान अने पदार्थ ए उभय समकालमां थाय छे माटे ज्ञानथी पदार्थ भिन्न छे एम मानवाने आपणी पासे कंइ साधन नथी अने तेथी जेनु ज्ञान थयु ते पदार्थ बाह्य छे एम कहेवु संभवतुं नथी आना प्रत्युत्तरमां सौत्रान्तिको कहे छे के आ माध्यमिक लोकोनी पदार्थनुं ज्ञान थवानी प्रक्रिया खरी नथी, खरी प्रक्रिया तो आ प्रमाणे छे —कोइ पण बाह्य पदार्थ इद्रियनी साथे संबधमां आवतां जे ज्ञान उत्पन्न थवानु छे ते ज्ञानमां अर्थात् निर्विकल्प ज्ञान के जे सविकल्प रूपे थवानु छे तेमां ते पदार्थ पोतानो आकार समर्पे छे अने तेथी ते पदार्थनु ज्ञान थाय छे आ प्रक्रिया प्रमाणे जे आकार समर्पित थयो होय ते परथी बाह्य पदार्थनुं अनुमान थई शके छे

ईर अने तेम करतां बाह्य पदार्थ ग्राह्य ठरे छे. हवे कोई कहेशे के बाह्य पदार्थ कदाचित् ज्ञात थाय छे (सर्वदा ज्ञात नथी) तेथी ते कदाचित् उत्पन्न थनारो होवो जोईए तो तेना उत्तरमां कहे छे के बाह्य पदार्थ कदाचित् उत्पन्न थनार नथी पण वासनापरिपाकप्रत्यय जेना उपर तेना ज्ञाननो आधार छे ते कदाचित् थनार होवाथी बाह्य पदार्थनु ज्ञान कदाचित् थाय छे.

६४. विज्ञानने माननारा बौद्धोनी प्रक्रिया ते विज्ञानवादिनयः अहीं वासनापरिपाकप्रत्ययनु स्पष्टीकरण कर्यु छे.

६५. आ चार चित्तना प्रत्यय छे एटले चित्तमां बाह्य पदार्थनु ज्ञान थवानां कारणो छे.

६६. चित्त अने चित्तना रूपान्तरो (चैत्त) ए उभयघटित विश्व ते चित्तचैत्तात्मक स्कंध.

६७. दुःखनां कारणोनो समुदाय थवामां हेतु प्रत्यय (अर्थात् कारणोनी कार्य करवा प्रति जवानो धर्म) मानवामा आवे छे; कोइ पण चेतनना सामर्थ्यथी आ कारणो मळे छे एम बौद्धो मानता नथी. दुःखनां कारणोनुं परिणाम जे दुःखभोग ते कोइ ईश्वर जेवा चेतनना सामर्थ्यथी उत्पन्न थतु नथी पण कारणोना स्वभावथीज उत्पन्न थाय छे.

६८. कारणथी कार्य उत्पन्न थवामां कार्यनु कारणने अनुसरीने थवुं एवो जे कारणगत धर्म छे तेने लीधे कार्यकारणभाव सिद्ध थाय छे. कारणमां कार्यने उत्पन्न करवानो धर्म छे के नाहे ते कार्य उत्पन्न थाय अथवा न थाय तेने आधारे नक्की कराय छे आ प्रमाणे कारणमां कार्य उत्पन्न करवानी धर्मता मानता चेतन मानवानु प्रयोजन रहेतु नथी. रसायनशास्त्रमां पाणी उत्पन्न थवामा बे वायुरूप तत्त्वो कारण मान्या छे. आ बे तत्त्वमा पाणीरूप कार्य उत्पन्न करवानी धर्मता होवाथी कोइ पण चेतन वगर तेओ पोतानी मेळेज प्रसंग मळतां संयोगने पामे छे. आ प्रमाणे बौद्धो दुःखना कारणोथी दुःख उत्पन्न थवामां ईश्वरनो स्वीकार केवी रीते नथी करता ते समजाशे.

६९. वैभाषिक बौद्धो बाह्य अर्थने प्रत्यक्ष माने छे. तेओ कहे छे के विशेष (जेनुं ज्ञान थाय छे ते बाह्य पदार्थ, केवळ अनुमेय छे एम मानी-



ए तो प्रत्यक्ष अर्थनो अभाव थशे अने तेथी अनुमान करवामां व्याप्ति के जे प्रत्यक्षने आधारेज ठरावबामां आवे छे ते ठरशे नहि; आ प्रमाणे थतां अनुमान निरवकाश थशे अने तेथी अनेक अडचणो उत्पन्न थशे.

७०. आ श्लोकमां सविकल्प ज्ञानने अप्रमाण ठरावे छे अने निर्विकल्प ज्ञानने प्रमाण ठरावे छे.

७१. सविकल्पने प्रमाण मानतां मनुष्यप्रवृत्ति बाधित थाय एम कहेनारने कहे छे के मणिप्रभा ए निर्विकल्प ज्ञान छे अने मणि ए सविकल्प ज्ञान छे. हवे मणिप्रभामां मणिनो समावेश थाय छे अने तेथी मणिप्रभाने माटे अथवा मणिप्रभाथी प्रवृत्ति करनारनी प्रवृत्ति परंपराए करीने मणिने माटे अथवा मणिथी थाय छे. आ प्रमाणे सविकल्पनो निर्विकल्पमां समावेश थाय छे माटे निर्विकल्पने प्रमाण मानता प्रवृत्तिने बाध आवतो नथी.

आर्हत दर्शननुं विवरण.

१. २. बौद्धो काछडी वाळता नथी माटे तेओने मुक्तकच्छ कह्या छे. जैनोनो दिगंबर एक वर्ग छे; दिगंबरनो अर्थ वस्त्ररहित; आ उपरथी तेमने विवसन कह्या छे. मुक्तकच्छनु मत विवसनो न सहन करे ए देखीतो विरोध छे. सायणाचार्य हास्यरस भरेली भाषा लखवामां केवा कुशल छे तेनु आ एक उदाहरण छे

३. ४. ' सर्वं क्षणिक छे ' ए बौद्धोनो सिद्धान्त छे, आ सिद्धान्तानुसार सर्व पदार्थ क्षणिक मानता कर्ता अने भोक्ता पण क्षणिक थाय छे, पने क्षणिक थता कर्ता भोक्ता रहेतो नथी अने भोक्ता कर्ता होतो नथी. आथी कृतकर्मनो नाश अने अकृतनो अभ्यागम थवारूप दोषथी आ सिद्धान्त ग्रस्त होवाथी ते अमाननीय छे. अतिप्रसग=अतिव्याप्ति. सर्व क्षणिक छे ए अतिव्याप्तियुक्त छे, अर्थात् जे जे पदार्थने क्षणिक मानतो (जेवा के कर्ता अने भोक्ता) बाध आवे तेवा पदार्थोने पण आ सिद्धान्तानुसार क्षणिक मानवा पडे छे, आ प्रमाणे सर्व क्षणिक छे ए मतमां दोष दर्शावनार जैनोने बौद्धो आ प्रमाणे कही शके.—बौद्ध मतमां बाह्य पदार्थोनु अस्तित्व अगीकृत नथी, बाह्य पदार्थनुं अस्तित्व जणाय छे ते आलयविज्ञानना एक सतानमां रहेनारी भिन्नभिन्न प्रतीतिओ (प्रत्ययो) छे (पृष्ठ २४. २५ २६.). आ साथे वळी कार्यकारणभावने नियामक मानवामा आवे छे तेथी जे प्रतीतिने ' भोक्ता ' सज्ञा आपवामा आवे छे अने जेने ' कर्ता ' सज्ञा आपवामा आवे छे ते बने वच्चे कार्यकारणभाव (जोके पदार्थोनी प्रतीतिओ क्षणिक छे तो पण) मानवामा आवे छे. आ प्रमाणे कर्ता अने भोक्ताने समान सतान वर्ती पूर्वोत्तर प्रत्यय मानतां अने कार्यकारणभावने नियामक मानतां कर्ता भोक्ता असबद्ध रहेता नथी अने तेथी कृतकर्मनो नाश अने अकृतनो अभ्यागम एवो जे दोष कहेवामां आवे छे ते केवल कल्पित छे. (जैनो आ उत्तरनी अयोग्यता पृष्ठ ३२ मां देखाडे छे)

५. पदार्थोने क्षणिक मानवा छतां पण कृतकर्मनो नाश अने अकृतनो अभ्यागम थवारूप दोषथी बौद्ध सिद्धान्त (क्षणिकवाद) मुक्त

छे ते जणाववाने दृष्टान्त आपे छे: कपासना बीजने लाक्षारसनी भावना आपीने वावीए तो तेना छोड उपर जे कपास थशे ते रक्त थशे; हवे जोके क्षणभंगवाद प्रमाणे अंकुरादि उत्पन्न थतां बीजादि नष्ट थाय छे तो पण लाक्षारसनी भावना आपवारूप कर्म निष्फल जतुं नथी; आ उपरथी एम सिद्ध थाय छे के जे संतानमां कर्मवासनानुं आधान करवामां आवे छे तेज संतानमां फल बंधाय छे.

६. अहीं जैनो क्षणिकवादने असिद्ध ठरावे छे. ते आ प्रमाणे: 'जे सत् छे ते क्षणिक छे, जेमके जलधरपटल इ०' ए अनुमानमां जलधरपटल दृष्टान्त होवाथी ते क्षणिक छे एम निश्चयपूर्वक मानवामां आवे छे. हवे जलधरपटल क्षणिक छे ए 'जे सत् छे ते क्षणिक छे' ए अनुमानथी सिद्ध करवामां आवे छे के बीजी कोई रीते? जो कहेशो के एज अनुमानथी तो तेमां बाध आवशे; तमे जेने क्षणिकत्व मानो छो ते कोइवार जणाशे नहि (जो सर्वदा जणाय तो ते क्षणिकत्वज कहेवाय नहि); अने तेथी मेघ अने क्षणिकत्वनो योग निरंतर न होवाथी निश्चयपूर्वक कही शकाशे नहि के मेघ क्षणिक छे. आ प्रमाणे दृष्टान्त असिद्ध थवाथी अनुमान थई शकशे नहि. हवे जो कहेशो के जलधर क्षणिक छे एम हमे बीजा कोई प्रमाणथी सिद्ध करीए छीए तो हमे कहीशुं के तेज न्यायथी सर्वत्र क्षणिकत्व सिद्ध करी शकाशे अने तेथी सत्त्वनुं अनुमान (जे सत् छे ते क्षणिक छे ए प्रकारनुं सत्त्वने आधारे करेलुं अनुमान) नकामुं पडशे.

७. बौद्धो सत्त्व एटले अर्थक्रियाकारित्व माने छे, जैनो कहे छे के मिथ्यासर्पदंशादिथी पण भयादिरूप अर्थक्रिया थाय छे माटे ते पण सत् ठरे अने तेथी मिथ्याने सत् कहेवु पडे माटे सत्नो अर्थ 'जेने उत्पत्ति लय अने ध्रौव्य (ध्रुवता) स्थिति छे ते' एम लेवो.

८. जो पदार्थमां उत्पत्त्यादिने माटे सामर्थ्य छे एम मानीए तो सामर्थ्यना अनतिपातने लीधे उत्पत्त्यादि निरंतर थशे अने जो सामर्थ्य नथी एम मानीशु तो उत्पत्त्यादि कदी पण थशे नहि; आ प्रमाणे सत्नो अर्थ उत्पत्त्यादियुक्त लेतां दोष आवशे. (सामर्थ्य असामर्थ्यना विकल्पने माटे जुओ पृष्ठ १२. १३. अने विवरण.)

९. जैनो उपरना दोषना संबंधमां आ प्रमाणे कहे छे:—आ दोष हमने नडतो नथी, कारण के हमारा स्याद्वाद प्रमाणे एकज पदार्थ समर्थ पण होई शके अने असमर्थ पण होई शके. (आ स्याद्वाद अने अनेकान्तताना संबंधमां आगळ कहेवामां आवशे.)

१०. कपासना बीजनु दृष्टान्त कह्यु ते उपरथी कर्ता भोक्ता वच्चे क्षणिकवाद स्वीकारतां कोई पण रीते संबंध थई शकतो नथी; कपासना बीजमांथी अकुरादिनो उदय छे तेमां प्रत्येक पूर्ववर्ती पदार्थनो प्रत्येक क्षणे जूदो जूदो नाश थाय छे एम हमे स्वीकारता नथी. वळी जो संतानने एक बीजा साथे संबद्ध रूपमां राखनार कोई अक्षणिक संतानीनो अंगीकार न करीए तो संतानज संभवे नहि. जे पदार्थ सजातीय होय, क्रमवार उत्पन्न थता होय के एक बीजाने अडीने रह्या होय तेज एकसंतानवर्ती छे एम कहेवाय.

११. कार्यकारणभाव मानता पण जो पदार्थने क्षणिक मानीए तो कृतकर्मनो नाश अने अकृतनो अभ्यागम थवानो प्रसंग रहे छे ते अहीं दृशान्तथी जणाव्यु छे.

१२. आ प्रकारना चार दोष आववाथी क्षणभंगवाद अयुक्त ठरे छे.

१३. प्रथम ज्ञेय अने पछी ज्ञान एम मानीए तो (क्षणिकवाद स्वीकारता) ज्ञेयकाले ज्ञाननो अने ज्ञानकाळे ज्ञेयनो नाश मानतां ज्ञाता अने ज्ञेय वच्चे संबंधज थई शकशे नहि.

१४. ज्ञेय अने ज्ञान भिन्न भिन्न क्षणमां नहि मानवाथी अर्थात् एकज क्षणमा मानवाथी जो के ज्ञाता अने ज्ञेयनो संबंध थवो संभवशे तो पण ज्ञेय अने ज्ञान वच्चे कार्यकारणसंबंध संभवशे नहि, कारण के कारण सर्वदा कार्यनी पूर्वेज होवुं जोईए एवो नियम छे. आ प्रमाणे धारतां जेम डाबा जमणी शींगडामा एक बीजानुं कारण नथी ते प्रमाणे ज्ञान ज्ञेयनु कारण थशे नहि. आथी ग्राह्यनो आलंबन प्रत्यय असंभवित थशे, कारण ग्राह्यनी प्रतीति भाव उपर आधार राखे छे.

१४. (बीजीवार मुकायलो अंक) पूर्वपक्षी बौद्ध आ प्रमाणे कही शके: ज्ञेय अने ज्ञान भिन्न क्षणवर्ती लईए, अने ज्ञेयने आकारनो अर्पक मानीए; आ प्रमाणे लेतां ज्ञेय जो के बीजी क्षणे नष्ट थई जाय तो पण

तेणे पोतानो आकार अर्पण करेलो होवाथी तेनुं ज्ञान थवु संभवे छे. आ-प्रमाणे कहेनारने आर्हतमतवादी कहे छेः आ प्रमाणे लेता ज्ञेय पोतानो आकार ज्ञानमां अर्पे छे एम मानवु पडे अने तेथी ज्ञान ज्ञेयना आकार अर्पण करवाना धर्मनो आश्रय थाय, परतु ज्ञानने क्षणिक मानवामा आवे छे, अने तेथी ज्ञेय तेमा आकार अर्पण करी शके त्यासुधी ते रहे एम मानवु अशक्य छे. हवे धारो के ज्ञानमा ज्ञेय आकार अर्पण करतु नथी पण ज्ञान पोतेज आकार छे, तो तेथी ज्ञान आकारअर्पकतानो आश्रय छे ए जे बौद्धसिद्धान्त ते विरुद्ध थाय. आटलुज नहि पण ज्ञानने आकार मानता प्रतिकर्मनी व्यवस्था पण थई शके नहि, कारणके घट, पट, इत्यादि भिन्न भिन्न पदार्थोनु ज्ञान थवामा ज्ञान आकारार्पकतानो आश्रय छे एम मानवा सीवायनो बीजो कोइ हेतु स्वीकारवो पडे. हवे जो ज्ञानने निराकार मानीए अने प्रतिकर्मनी व्यवस्था थवाने भिन्न भिन्न रूपे थवानी तेनी योग्यता मानीए तो क्षणिक ज्ञान आकारार्पकतानो आश्रय छे एम लेवानुं प्रयोजन रहेतु नथी.

१८. बौद्ध कहे छे के दूर जोता आघे होवु, पासे होवु, ए सर्व ज्ञेयना धर्म छे अने लक्षणाथी तेमना ज्ञानने (घटपटादि ज्ञानने) आपणे आ धर्म लागु पाडीए छीए तो तेने माटे कहे छे के दर्पणमा प्रतिबिंबित थयला पदार्थ (पदार्थदर्शन) मा दूरान्तिक व्यवहार छेज नहि तेम ज्ञानमा प्रतिबिंबित थयला ज्ञेय (ज्ञेयज्ञान) मा पण आ व्यवहार होई शकेज नहि.

१९. कोई जड अने नील पदार्थनु ज्ञान बौद्धमतप्रमाणे जड अने नील थाय, कारणके पदार्थना जडत्व अने नीलत्वस्वभाव ज्ञानमा अर्पित थाय छे एम मानवामा आवे छे, आ प्रमाणे ज्ञानने जड कहेवु ए तेमनाज मतथी विरुद्ध छे जो कहेशो के पदार्थनो नीलत्वस्वभाव ज्ञानमा अर्पित थाय छे पण जडत्वस्वभाव अर्पित नथी थतो तो पदार्थ जड छे एम जे आपणने अनुभव थाय छे ते समजाशे नहि. जो एक स्वभावना अर्पणथी सर्व स्वभावनो अनुभव थाय एम मानीए तो एक स्वभाव मात्रनु ज्ञान थता सकल विश्वनु ज्ञान थवु जोईए

२०. पाच प्रमाण ते प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अने अर्थापत्ति छे, अनुपलब्धि निषेधरूप प्रमाण होवाथी तेने लेता नथी, कारण के सर्वज्ञना अस्तित्व ने सिद्ध करवानु प्रयोजन छे, कोईनो निषेध करवानु प्रयोजन नथी.

२१ कोई जैन कहेशे के जैनशास्त्रो अहिंसादि धर्मनु प्रतिपादन करे छे अने ते ज्यारे तमने प्रमाण छे त्यारे ते जे कई प्रतिपादन करे ते तमने प्रमाण होवुं जोईए अने तेथी ते सर्वज्ञना वचन छे एम मानवुं जोईए, तो तेने कहेवामां आवे छे के बुद्धनो धर्माधर्मादिसंबधी उपदेश पण सर्वने प्रमाण छे अने तेथी बुद्ध पण सर्वज्ञ ठरे छे, परतु जैनो तेने सर्वज्ञ कहेता नथी तेज प्रमाणे जैनशास्त्रो जैना वचन छे तेओने हमे (वेदवादीओ) पण सर्वज्ञ कहेता नथी. आ स्थले वाचके जोवु के वेदवादीओ ईश्वरने सर्वज्ञ माने छे ते श्रुतिने आधारे छे, श्रुतिमां अनर्हतो मानवानो आवता नथी माटे तेओ अमाननीय छे.

२२. आ अनुमान स्पष्ट छे

२३. आत्मा सकल अर्थनु ग्रहण करवाना स्वभाव वाळो छे पण मीमांसकना [illegible] सिद्ध थाय छे, कारण के तेओ माने छे के वि

धि अने निषेध (उभयरूप श्रुति) वाक्योनी मीमांसा करवाथी अर्थ मात्रनु ज्ञान थाय छे. हवे जो आत्मानो अर्थमात्रने जाणवानो स्वभाव ज न होय तो आगतुक विधिनिषेधवाक्योनी विचारणाथी कई पण थई शके नहि.

२४. सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, अने सम्यक् चारित्रथी आवरणनो क्षय थई जाय छे ने तेथी आत्माने सर्व जाणवामा जे अतराय रह्यो होय छे ते जतो रहे छे.

२५. वेदवाळा सर्वज्ञ ईश्वरने अनादि मुक्त माने छे अने तेथी आ प्रकारनी शका करे छे.

२६. कोईने अनादिमुक्त कहेवाय नहि एम जैनो मुक्त शब्दने अ-मलवीने कहे छे.

२७. पृथ्वी आदि अनादि कार्यनो कर्ता अनादि होवो जोईए अने तेने आ सर्व पदार्थो उत्पन्न करवानी सामग्रीनु ज्ञान होवु जोईए माटे ते सर्वज्ञ होवो जोईए आ प्रमाणे अनादि सर्वज्ञ मानता आवरणनो असंभव होवाथी आवरणक्षय कहेवु अनुपपन्न थाय छे.

२८. (पृष्ट ३७. लीटी. ९.) पृथ्वीआदिने कार्य मानवामा आवे छे ते ते घटादिना पेठे सावयव छे तेने आधारे छे. जैनो सावयवत्वनु खंडन करे छे ते हवे चाले छे. प्रथम सावयवत्वना जूदा जूदा अर्थ लई प्रत्येक अर्थमा जे बाध आवे छे ते जणाववामा आवे छे.

२९. सावयवत्वनो अर्थ अवयवसयोगित्व लेता आकाशादि अवयवसयोगी नहि होवाथी ते निरवयव थशे अने तेथी ते अकर्तृक थशे. परतु आकाशादिने पण सकर्तृक मानवामां आवे छे माटे सावयव एटले अवयवसयोगी कही शकाय नहि.

अवयव अने अवयवी अयुतसिद्ध कहेवाय अने तेओनी वच्चे जे नित्य संबंध रहेलो छे तेने समवायसंबंध कहे छे. आ प्रमाणे गुण अने गुणी वच्चे, क्रिया अने क्रियावत् वच्चे, जाति अने व्यक्ति वच्चे अने विशेष अने नित्यद्रव्य वच्चे समवायसंबंध रह्यो छे. हवे पूर्वपक्षी जगत्‌ने सावयव कहे छे अने जो सावयवनो अर्थ " अवयवसमवायी अर्थात् जेने तेना अवयवो साथे समवाय संबंध छे एवो " ए प्रमाणे लईए तो जैनो कहे छे के आ प्रमाणे करतां सामान्य (जाति) मां अतिव्याप्ति आवशे; जाति सर्वदा पोतानी व्यक्तिओ साथे समवायसंबंध धरावे छे. आथी जातिने आपणे सावयव कही शकीए, पण जाति सावयव नथी एम न्यायवाळा तेने नित्य अने एक कहेवामां स्वीकारी ले छे. माटे सावयवनो अर्थ अवयवसमवायी लईए तो जातिमां अतिव्याप्ति आवे माटे ते अर्थ लेवाय नहि. आपणे कोई पदार्थनुं लक्षण ठरावबुं होय अने ते लक्षण जे पदार्थनुं लक्षण कहेवानी आपणी इच्छा नथी ते पदार्थने पण लागु पडे तो ते लक्षण अतिव्याप्ति वाळुं कहेवाय. गायनुं लक्षण ' जेने शृंग होय ते ' एम लईए तो ते लक्षण महिषी आदि (जे गाय नथी ते) ने पण लागु पडे माटे आ लक्षण अतिव्याप्तिवाळुं कहेवाय. सावयवनो अर्थ (लक्षण) अवयवसमवायी लेतां जे सावयव नथी एवी जाति तेने पण ते लागु पडे माटे ए अर्थ अतिव्याप्तियुक्त कहेवाय.

३०. हवे सावयवनो अर्थ ' अवयवजन्य ' लईए. आपणे कहीए के जे अवयवजन्य ते सावयव तो तेमां आ प्रमाणे बाध आवे छे. अवयवजन्य एटले अवयवथी उत्पन्न थयलुं. पण उत्पन्न थयलुं ए कार्यनो पर्याय छे. अने जगत् कार्य छे के नहि ते तो सिध्द करवानुं छे. माटे आ अर्थ लेता जे साधनथी साध्य सिध्द करवानुं छे ते साधन अने साध्य उभय एकज थई जाय छे. जगत् कार्य (उत्पन्न थयलु) छे, कारण के ते अवयवथी उत्पन्न थयलं छे. ! !

३१. हवे सावयवनो अर्थ समवेतद्रव्य लईए तो तेमां पण बाध आवे छे. समवेतद्रव्य एटले (१) मात्र समवायसंबंधवाळुं अथवा (२) बीजा साथे समवायसंबंधमां छे एवुं द्रव्य. हवे आपणे समवेत द्रव्यनो अर्थ मात्र समवायसंबंधवाळु द्रव्य एवो लईए. आ प्रमाणे करतां गगनादिमां अतिव्याप्ति आवशे, कारण के गगन (आकाश) नन-

द्रव्यमांनुं एक द्रव्य छे अने आकाशनुं लक्षण न्यायवाळा एम माने छे के शब्दगुण (शब्द छे गुण जेनो ते) आकाश छे. आ प्रमाणे शब्द गुण अने आकाश गुणी थवाथी आकाश साथे शब्दनो समवाय संबंध छे. सारांश के आकाश समवायसबंधवाळुं द्रव्य छे. आ प्रमाणे आकाश पहेला अर्थ प्रमाणे समवेत द्रव्य होवाथी सावयव थशे, पण आकाशने सावयव मानता नथी माटे सावयवनो अर्थ समवेत द्रव्य (पहेला अर्थ प्रमाणे) लई शकाय नहि. हवे बीजो अर्थ लईए. बीजा साथे समवाय संबंधमां छे एवुं द्रव्य ते समवेत द्रव्य. आ ठेकाणे बीजा साथे एटले बीजा अवयवो साथे एम आपणे मानवुं जोईए; पण बीजा अवयवो साथे जेनो समवाय संबंध छे ते समवेत द्रव्य अने पृथ्वी आदिनो तेना अवयवो साथे समवाय संबंध छे माटे ते समवेत द्रव्य छे अने तेथी ते सावयव छे एम कहेवुं सन्याय नथी, कारण के पृथ्वी आदि सावयव छे एतो आपणे सिद्ध करवानुं छे तो ते पहेलां पृथ्वी आदि नो तेना अवयवो साथे समवाय संबंध छे माटे ते सावयव छे एम कहेवुं ए केवुं विचित्र ? आ स्थळे साध्यनेज साधनरूपे वापरवानो दोष थाय छे. आ प्रमाणे सावयवनो अर्थ समवेतद्रव्य पण लेवाय नहि एम सिद्ध थयुं.

अहीं माधवाचार्य जैनोनो एक मुख्य सिद्धान्त जणावे छे. जैनो समवायनो स्वीकार करता नथी.

३२. हवे सावयवनो पाचमो अने छेल्लो अर्थ ले छे. अवयवबुद्धिनो विषय ते सावयव ए अर्थ लेतां पण अडचण नडे छे. ' हुं शरीरी छु ' ' आ म्हारा हाथ छे ' ' आ म्हारा पग छे ' इत्यादि कहेवामा हु (आत्मा) शरीरादि अवयवनी बुद्धिनो विषय थाउछु अने तेथी आत्मा अवयवबुद्धिनो विषय छे एम कहेवु निर्दोष छे. पण आत्मा जो के अवयवबुद्धिनो उपर जणाव्या प्रमाणे विषय छे तो पण ते कार्य नथी, माटे अवयवबुध्दिनो विषय ते कार्य एम कहेवु खोटु छे. (अहीं सावयवनो अर्थ अवयवबुध्दिनो विषय लईए तो जे सावयव होय ते कार्य होय एम सिध्द करी शकाय नहि एम कहेवानुं तात्पर्य छे. अवयवबुध्दिनो विषय होय ते सावयव न कहेवाय एम कहेवामां आवतु नथी).

म्यगृवाची सम्यग्ज्ञानादि जानितने क्षयोपशमनु विशेषण लईए तो पण अर्थ बेसे छे.

४०. ४१. मनःपर्याय अने केवलना लक्षण स्पष्ट छे.

४२. माधवाचार्ये सम्यक्चारित्रनु जे लक्षण आपे छे ते उपरथी एम जणाय छे के निष्क्रिय थवु ते सम्यक्चारित्र छे.

४३. स्थावरना जीवितनो क्षय पण हिंसा मानवामा आवे छे.

४४. सूनृत अथवा सत्य ते ए के जे बीजाने प्रीय लागे, जे तेने परिणामे लाभ करे, अने जे जे रूपमा होय तेज रूपमा होय.

४५. मनुष्यनी मिलकत छे ते मनुष्यना बाह्य प्राण छे अर्थात् तेने ते प्राण जेटली प्रिय छे; जे कोई आ मिलकत लई ले छे ते एक रीते मनुष्यना प्राण लई ले छे एम केवाय. (मूळ भाषांतरमा बाह्य प्राण छे ते मनुष्यनो अर्थ छे एम लख्यु छे तेने बदले मनुष्यनो अर्थ छे ते तेना बाह्य प्राण छे एम वाचवु)

४६. आ प्रमाणे सदुपदेशना शास्त्र रचवा ते पण ब्रम्हचर्य छे.

४७ अव्ययपदनी सिध्दि ए परम पुरुषार्थ छे

४८. प्रत्याख्यान-दूर करवु ते, पचखाण.

४९. उपयोग एटले आत्मानी प्रवृत्तिनो सत्य व्यापार ते सम्यग्ज्ञान अने सम्यग्दर्शन छे अने तेनु फल आत्मानु सहज चिद्रूप परिणाम छे. (अहीं परिणाम शब्द ध्यान आपवा जेवो छे.) आत्मा अने कर्म (तेमज कर्मजन्य देह) ए बन्ने प्रदेशबंधथी एकताने पामेला छे, पण आ एकता अयथार्थ ठरावी आत्मा कर्म (तेमज कर्मजन्य देहो) साथे एक नथा एम जे जणावे छे ते उपयोग छे चैतन्य ए जोके सकल जीवने साधारण छे तो पण ते कहेवातो जीव ज्यारे यथावस्तु जीव थाय छे त्यारेज तेनु स्वरूप गणाय छे यथावस्तु जीव जीवपर्याय (कहेवातो जीव) थयो छे तेमां हेतु उपशम (औपशमिक भाव) नो क्षय छे तेमज क्षय (क्षायिक भाव) नो उपशम (एक प्रकारनो अभाव) छे. उपशमना क्षयथी अने क्षयना उपशमथी कार्यनो उदय थाय छे अने तेथी यथावस्तु जीव कलुषादि (पापादि) आकारे परिणमे छे क्षय अने उपशम अथवा क्षायिक भाव अने औपशमिक भावनो लक्षण नीचे आप्यो छे प्रदेशबंध (जुओ विवरण ७४).

५०. थी ५४. आ पांच जीवनां सत्व (स्वरूप) छे.

५५. आ पांच भावमांथी जे जीवमां वधारे भाव होय ते वधारे भव्य अने ओछा होय ते ओछा भव्य जाणवा. पण आ भाव एज जीवनुं सत्व छे.

५६. अहीं आत्मानुं स्वरूप आपे छे. आत्मा ज्ञानथी भिन्न पण नथी अने अभिन्न पण नथी उभयात्मक छे. ज्ञान आत्माने पूर्वापर छे.

५७. बौद्धो प्रकारान्तर स्थिति मानता नथी पण जैनो (स्याद्वादीओ) प्रकारान्तर स्थिति माने छे. स्याद्वाद (जुओ सप्तभंगिनय. पृष्ट ५० अने विवरण).

५८. अस्तिकाय–जीवादि पांच तत्त्व. (अस्तिकायनो अर्थ मूळमां स्पष्ट रीते आप्यो छे.

५९. त्रस–जंगम. (पोतानी मेळे गति करनार).

६०. पृथ्वी अने पृथ्वीनी बनेली ईंट ए बेमां जीवाजीवव्यवस्था परत्वे भेद छे ते अहीं जणाव्यो छे.

६१. द्व्यणुकादि जे आवे छे अने जाय छे ते पुद्गल कहेवाय छे.

६२. ६३. ६४. गुणनुं लक्षण आप्युं छे. पर्याय एटले कर्म. पर्यायनो अर्थ अंत पण थाय छे. पण आ स्थळे कर्म अर्थ समजवो.

६५. कर्मजन्य देह साथे आत्मानी, क्षायिकभाव अने औपशमिक भावना अभावथी थयली एकताने लीधे आत्मानी कर्मप्रवृत्ति ते योग अथवा आस्रव छे. आस्रवनुं बीजुं लक्षण पण नीचे आप्युं छे.

६६. पौरुषज्योति एटले मूलज्ञान, ते वस्तुतः एक छे पण इंद्रियद्वारा तेनो ग्राह्य पदार्थ साथे संयोग थतां ते विविध होय एम भासे छे. रूप, रस, गंध, वगेरे ज्ञान पौरुषज्योतिनां परिणाम छे.

६७. मिथ्यादर्शनादिनां लक्षण पृष्ठ ४६ मां आप्यां छे ते जोवाथी बंधनुं स्वरूप समजाशे.

६८. आगळ जणावे छे के बंध चार प्रकारना छे; तेमां मिथ्यादर्शन, अविरति, प्रमाद अने कषाय ए स्थितिबंध अने अनुभाव बंधना हेतु छे अने योग ए प्रकृतिबंध अने प्रदेशबंधनो हेतु छे. योग (जुओ विवरण ६५).

६९. आठे प्रकारना प्रकृतिबंध नीचे आप्या छे.

७०. स्थितिबंध. जुओ भाषान्तर पृष्ट ४७.

७१. अनुभावबंध. जुओ भाषान्तर पृष्ठ ४७.

७२. जुओ. पृष्ठ ४७. अने विवरण ७४.

७४. विशेषतः प्रकृतिबंध आठ प्रकारनो छे तो पण तेना अवान्तर भेद अनेक थाय छे. (१) सम्यग्ज्ञान मोक्षनो हेतु नथी एम जे विचार थाय ते ज्ञानावरण प्रकृतिबंध. (२) आर्हत मतना अभ्यासथी मुक्ति थती नथी एम मानवामां आवे ते दर्शनावरण प्रकृतिबंध. (३) तीर्थंकरना दर्शावेला अनेक मोक्षमार्गमांथी कोई एकमां विशेष भाव न राखवो ते अंतरायप्रकृतिबंध. आ चार घातिकर्म कहेवाय छे, कारण के ते श्रेयसूनो घात करे छे. बाकीना चार प्रकृतिबंध अघातिकर्म कहेवाय छे. ते आ प्रमाणे छे. (१) वेदनीय—महारे आ जाणवुं जोईए एवुं जे अभिमान ते वेदनीय प्रकृतिबंध. अथवा बीजी रीते कहीए तो सक्रिय बीजनो पवन अने पावकने लीधे थनार ईषद् घनीभाव के जे शरीराकार परिणामनो हेतु छे ते वेदनीय प्रकृतिबंध. (२) आ छे एवुं जे अभिमान ते नामप्रकृतिबंध अथवा बीजनी कललावस्था अथवा बुद्बुदावस्थामां बीजने विषे थनार आरंभक क्रियाविशेष ते नामप्रकृतिबंध. (३) हु आना शिष्यवंशमां छु एवुं जे अभिमान ते गोत्रप्रकृतिबंध, अथवा बीजनी शरीराकार परिणाम पामवानी शक्ति ते गोत्रप्रकृतिबंध. (४) शरीरयात्रा निमित्त कर्म ते आयुष् प्रकृतिबंध, अथवा शुक्रशोणितनो योग थतां उभयनु संमिलित रूप ते आयुष् प्रकृतिबंध. आ प्रमाणे अघातिकर्मना पण चार प्रकार छे. ए रीते प्रकृतिबंधना आठ प्रकार थया.

७४. कर्मभावथी परिणत थयला अने अनंत प्रदेशवाळा पुद्गलस्कंधोनो आत्मप्रदेशोमां अनुप्रवेश ते प्रदेशबंध. आत्मा अने कर्मनुं संमिश्रण—एकरूप थवुं ते प्रदेशबंध.

७५. सम्यक्प्रवृत्ति ते संवर एम पण कहेवामां आवे छे.

७६. निर्जर अने निर्जरा एकज छे.

७७. सात एकान्त भगनो समाहार ते सप्तभंगी. सप्तभंगीनो नय ते सप्तभंगीनय. (मूलमां सप्तभंगिनय लख्युं छे ते सदोष छे). कोई वस्तु ' छे ' एम निश्चयपूर्वक कहेवु अशक्य (जुओ पृष्ठ ५१) होवाथी स्यादस्ति वगेरे शब्दोमां अनिश्चित रीते कहेवुं थाय छे.

रामानुजदर्शननुं विवरण.

१. आर्हत दर्शनमां स्याद्वादना संबंधमां कहेवामां आव्युं छे. रामानुजाचार्य आ स्थळे जैननुं खंडन करतां कहे छे के जैनो जे अनेकान्तिकवाद माने छे ते मानवा जेवो नथी, कारण के जो वस्तु अनेकान्त होय तो ते एकी वखते सत् अने असत् बने होय; पण प्रमाणदृष्टिथी जोनारने जणाय छे के जेम एकज वस्तु एकज वखते शित अने उष्ण होई शके नहि तेम एकज धर्मी एकज वखते सत् अने असत् होई शके नहि.

२. कोई जैन कहेशे के हमारुं कहेवुं एम नथी के सत्त्व अने असत्त्व बने एके काले एक धर्मीमां होय, परंतु अमुक धर्मी एके काले कांतो सत् होय के कांतो असत् होय; अने जेम ' **यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा** ' ए सूत्रथी यर्ना अनुनासिकनो अने अननुनासिकनो विकल्प थई शके छे, अथवा जेम ' जीवतासुधी अग्निहोत्र करवो ' ए विधिवाक्यथी अने ' ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वा वानप्रस्थे शिखासूत्रना त्यागपूर्वक कर्मनो संन्यास करवो ' ए वाक्यथी अग्निहोत्र करवानो अने कर्मनो त्याग करवानो विकल्प थई शके छे, (अर्थात् उभय विधानोमांनुं प्रत्येक खरुं गणाय छे), तेम अहीं पण सत्त्व अने असत्त्वनो एक धर्मीमां एक काले विकल्प समजवो. सारांश कोई कहे शे के वस्तु सत् छे तो तेपण खरु छे अने कोई कहेशे तेज वस्तु असत् छे तो ते पण खरुं छे एम मानवुं. आ प्रमाणे कहेनारना वचन अयुक्त छे एम जणाववाने रामानुजाचार्य न्याय लावे छे के ' विकल्प क्रियामां होई शके वस्तुमां होई शके नहि.' कोईपण क्रिया करवानी होय तो प्रसंगानुसार ते तेमज तेथी विरुद्ध ए बेमांनी प्रत्येक योग्य होय पण वस्तु के जे स्थित छे तेना संबंधमां आ प्रमाणे होई शके नहि.

३. जेम गणेशमां मनुष्यत्व अने हस्तित्व बने छे, अथवा जेम नृसिंहमां मनुष्यत्व अने सिंहत्व बने छे तेम वस्तुमां पण सत्त्व अने असत्त्व बंने होई शके. एम जो कोई कहे तो तेने माटे कहे छे के अहीं दृष्टांत दार्ष्टांतिक संबंध घटतो नथी, कारण के दृष्टांतमां देशभेदे करीने (शरीरनो एकभाग मनुष्य अने बीजो हस्ती अने सिंह ए रीते) उभय ध-

मंतु अस्तित्व छे पण दार्ष्टांतमां तेम छे नहि. जैनो एम नथी मानता के वस्तुनो एक भाग सत् छे अने बीजो भाग असत् छे. वळी कोई कहेशे के वस्तु द्रव्यरूपे सत् छे पण पर्याय रूपे असत् छे तो ते पण खोटु छे, कारण के द्रव्य अने गुण बने एक कालमां उत्पन्न थता नथी, अने तेथी आ प्रमाणे कहेवुं ते वस्तु एक कालमां सत् छे अने बीजा कालमां असत् छे एम कहेवानी बराबर छे, परतु आ प्रमाणे कालभेद मानतां अनेकांतताने बाध आवे छे. वस्तु एकजकाले सत् अने असत् होय तोज ते अनेकान्त कहेवाय.

४. कोई जैन कहेशे के लांबु अने टुकुं ए बे परस्पर विरुद्ध छे तो पण कोई एकज वस्त्र एके काले लंबाईमां लांबुं अने पोहोळाईमां टुकु होय छे ते प्रमाणे एकज वस्तु एके काले बे विरुद्ध धर्मयुक्त होई शके तो तेने कहे छे के अहीं दृष्टांत अने दार्ष्टांतमां सरखापणु नथी. वस्त्रमां लांबु अने टुकुं ए बे धर्म जेना छे ते बने भिन्नभिन्न छे, लंबाई भणीनो भाग ते पोहोळाई भणीनो भाग नथी. परतु दार्ष्टांतमां एवुं कई जोवामां आवतु नथी. वस्तुमां प्रतियोगीओनो भेद नथी अर्थात् जेने सत् अने असत् विरुद्ध धर्म लगाडवामां आवे ते भिन्न नथी.

५. जैनो माने छे के वस्तुमात्र अनेकान्त छे, सप्तभंगीनय पण आ प्रमाणे अनेकान्त मानवो जोईए, नहि तो वस्तुमात्र अनेकान्त छे ए प्रतिज्ञा खोटी थशे. पण न्यायशास्त्र प्रमाणे जे हेतु अनेकान्त होय ते हेत्वाभास (खोटो हेतु) होय छे. आ प्रमाणे जो सप्तभंगीनय एकान्त मानवामां आवे अथवा अनेकान्त मानवामां आवे तो पण जैनोथी दोषमुक्त थवाय नहि.

६. वस्तुमात्र अनेकान्त (अनिश्चित) कहेतां सप्त के नव पदार्थना निश्चयनुं फल पण अनिश्चित थशे. तेज प्रमाणे निश्चय करनार शिष्य अने निश्चय करावनार गुरु अने शास्त्र पण वस्तुमात्र अनिश्चित होवाथी अनिश्चित गणाशे. आ प्रमाणे रामानुजाचार्य सहास्य कहे छे के जे मतमां शिष्य, गुरु, शास्त्र, प्रमाण, प्रमेय, ए सर्व अनिश्चित ठराववामां आवे तेमनो प्रवर्तक ते खरेखरो तीर्थंकर कहेवाय!

७. जैनो जीवने शरीरपरिमाण माने छे तेनु आ स्थळे खंडन छे.

८. जो एम मानवामां आवे के हाथीना शरीरमां जीव हाथी जेवडो होय अने कीडीना शरीरमां जतां तेज कीडी जेवडो थई जाय तो

ते पण खोटुं छे, कारण के एम मानतां जीव विकारी थाय छे अने तेथी कृतकर्मनो नाश अने अकृतनो अभ्यागम थवानो प्रसंग आवे छे.

९. कोई अमुक मल्लसाथे केटलाक मल्ल लडवाने आव्या होय त्यारे पेलो मल्ल सामा आवनाराओमांना प्रत्येक साथे न लडतां तेमांना एक मुख्य साथे लडीने तेने हरावे तो बाकीना सर्वेनो पराजय थयो एम मानवामां आवे. आ प्रमाणे केटलीक वातो होय तेमांथी एक मुख्यनुं खंडन करवामां आवे तो बाकीनी सर्वेनुं खंडन थयु समजाय. आ प्रमाणे करवाने प्रधानमल्लनीबर्हणन्याय कहे छे. जैनोना जीवपदार्थनुं खंडन थयु ते उपरथी बाकीना पदार्थोनुं पण आ न्यायथी खंडन समजवुं.

१०. अहीं केवलाद्वैतवादीओना मतनो उपन्यास करवामां आव्यो छे; हवे तेनु रामानुजाचार्य केवी रीते खंडन करे छे ते आपवामां आवशे.

११. केवलाद्वैतवादीओ अविद्या (अज्ञान) ने अनादि, भावरूप, अने ज्ञानथी निरस्य माने छे.

१२. कोई कहेशे के अज्ञान अनादि भावरूप छे एम मानवु खोटुं छे, खरु जोतां तो ते ज्ञाननो अभाव छे तो तेने केवलाद्वैतवादी आ प्रमाणे उत्तर आपे छे; प्रत्यक्ष ए ज्ञानाभावनो विषय नथी, कारण के प्रभाकर अने कुमारिल भट्ट ज्ञानने एक अन्यभावरूपे स्वीकारे छे.

१३. आ बे श्लोकमां अभाव भावथी भिन्न मान्यो नथी पण भावरूपज मान्यो छे एम कह्यु छे

१४. ज्ञान प्रत्यक्ष नथी माटे तेनो अभाव पण प्रत्यक्ष नथी, आथी ज्ञानाभाव प्रत्यक्ष प्रमाणनो विषय छे एम कहेवाय नहि. ज्ञानाभाव अनुपलब्धि प्रमाणथी जणाय छे.

१५. ज्ञानाभाव प्रत्यक्ष छे एम कहेतां आ प्रमाणे विरोध आवे छे. "हु अज्ञ छु" ए वाक्यमां "हु" एवु जे ज्ञान थाय छे ते, जो ज्ञानाभाव प्रत्यक्ष होय तो "ज्ञानाभाव धर्मनो धर्मी कोण ? तो हु ए प्रमाणे थवु जोईए, "हु कोण ? तो ज्ञानाभाववान्" ए प्रमाणे थवु जोईए नहि बीजी रीते बोलीए तो "हु" एवु जे ज्ञान थाय छे ते "हु" ज्ञाननो प्रतियोगी होऊं तोज थवु जोईए. आ प्रमाणे जोतां ज्ञानाभावनो अनुभव करनार हु स्वतन्त्र न रहेतां ज्ञानाभाव उपर आधार राखनार रहु छु, अने अनुभ-

विता स्वतंत्र न होवाथी अनुभव असंभवित थाय छे. कोई कहे हो के "हुं" ए प्रकारनुं ज्ञान तमे कहोछो ते प्रमाणे नथी थतुं पण कोई अन्य प्रकारे थाय छे तो तेने कहेवानुं के ज्यारे ज्ञानाभावनो अनुभव तेना धर्मी उपर आधार राखे त्यारे तेनो स्वतंत्र अनुभव थवो अशक्य थई पडे छे. बीजा शब्दमां कहीए तो " हुं ज्ञानाभाववान् छु " अहीं आपणे जो ज्ञानाभावनो अनुभव प्रथम मानीए तो धर्मी जे हुं तेनो अनुभव पछी थशे अने तेथी अनुभविता वगर पण अनुभव थाय एम मानवुं पडशे; जो हुं ए प्रकारनी अवगति प्रथम थाय छे एम मानीए तो ज्ञानाभावत्व ए जे धर्म ते धर्मी उपर आधार राखनार थशे अने तेथी तेनो स्वतंत्र अनुभव थशे नहि.

१६. हवे धारो के अज्ञान कोई भावरूप पदार्थ छे तो ते मानतां हुं अने अज्ञ ए बेनो संबंध स्पष्ट समजाशे. ज्ञानाभावने निषेधवाचक मानीए तो निषिध्यना ज्ञाननी अपेक्षा रहे; भावरूप मानीए तो कोई अपेक्षा रहे नहि; माटे अभावने भावरूप मानवामां वधारे सुगमता रहेली छे.

१७. रामानुजाचार्य कहे छे के भावरूप अज्ञान मानो के ज्ञानाभाव मानो ए बंने सरखां छे. आ वात नीचे सिद्ध करवामां आवे छे.

१८. हुं ब्राम्हण छुं ए वाक्यमां ब्राम्हण छुं एवुं जे ज्ञान थाय छे ते ज्ञाननो विषय अने आश्रय जे " हुं " ते आ ज्ञानथी भिन्न रूपमां अनुभवाय छे के नहि ? जो अनुभवाय छे एम कहोतो आ अनुभव ते स्वरूपज्ञान छे. हवे तमे एम मानो छो के अज्ञान स्वरूपज्ञानथी निवृत्त थाय छे. पण उपर प्रमाणे ज्यारे प्रत्येक अनुभवमां स्वरूपज्ञान थाय छे तो प्रत्येक अनुभवमां अज्ञान पण निवृत्त थवु जोईए. आ प्रमाणे अज्ञान नित्यनिवृत्त थतां तेने भावरूप मानवु ए कंई ठीक लागतुं नथी. हवे जो कहेशो के ज्ञानथी भिन्न रूपमां अर्थनो अनुभव नथी थतो तो अज्ञाननो अनुभव पण थई शकशे नहीं, कारण के हुं अज्ञान छुं एवो अनुभव ए अनुभवना आश्रय अने विषय वगर थई शके नहि ए स्पष्ट छे.

१९. कोई शांकरमतवादी कहेशे के उपर जे तमे स्वरूपज्ञान कह्युं ते स्वरूपज्ञानथी अज्ञाननी निवृत्ति मानवामां आवती नथी पण शुद्ध स्वरूपज्ञानथी अज्ञाननी निवृत्ति मानवामां आवे छे. हवे आ शुद्ध स्वरूपाभास ते मात्र अज्ञानविरोधी ज्ञानथी भासित थाय छे. आ प्रमाणे आश्रय अने विषयनुं ज्ञान थतां कंई अज्ञान निवृत्त थई जाय एम कहेवाय नहि.

माटे आश्रय अने विषय (हु) नु ज्ञान होय अने ते साथे पण अज्ञाननो अनुभव थई शके.

आ प्रमाणे कहेनारने रामानुजाचार्य कहे छे के जो एम मानो तो ज्ञानाभावनो अनुभव पण आश्रय अने विषयना ज्ञानसाथे थशेज. हु अज्ञ छु ए वाक्यमां अज्ञछु एवो अनुभव आ अनुभवनो आश्रय अने विषय जे हु ते उपर आधार राखतो हशे तो पण तेमां विरोध आवशे नहि. (वाचकने आ स्थळे १५ अने १६ अकनु विवरण जोवाने कहेवामां आवे छे. शांकरमतवाळा "हु" ने ज्ञानाभावनो धर्मी अथवा प्रतियोगी लई "अज्ञ छु" ए अनुभवनी अशक्यता दर्शावे छे. रामानुजाचार्य "हु" ने " अज्ञ छु " ए अनुभवनो आश्रय अने विषय लई उक्त अनुभवनी शक्यता प्रतिपादित करे छे)

१९. जेम एक घरमा केटलाक पदार्थ पडेला छे पण ते आपणने देखाता नथी, हवे जो कोई दीवो करे तो आ पदार्थ के जे प्रथम अप्रकाशित हता ते हवे प्रकाशित थाय छे. त्यां आपणे एम अनुमान करी शकीए के दीप थयो ते पूर्वे अधकार हतो अने तेथी दीपथी जे पदार्थो प्रकाशित थया ते अधकारने लीधे अप्रकाशित हता आज प्रमाणे जीवादि पदार्थना स्वरूप, शुद्ध स्वरूपज्ञान थयु ते पूर्वे अप्रकाशित हतां, माटे ज्यारे शुद्धस्वरूपज्ञान (प्रमाणज्ञान) थी अप्रकाशित अर्थनो प्रकाश थयो तो इमणा प्रकाशित थयला पदार्थो पूर्वे अप्रकाशित शाथी हता तेनु कारण जाणवु जोईए. जेम दीपना दृष्टांतमां दीपथी प्रकाशित थयला पदार्थो पूर्वे अधकारने लीधे अप्रकाशित हता तेम स्वरूपज्ञान थया पूर्वे अज्ञानथी जीवादि पदार्थोनो स्वरूप अज्ञात हतो आ प्रमाणे अनादिभाव रूप अज्ञान सिद्ध थाय छे.

२०. २१. उपरनु अनुमान सदोष छे एम रामानुजाचार्य जणावे छे, जीवादि पदार्थनो स्वरूप अज्ञात हतो एटले तेओनु अज्ञान हतु. आ प्रमाणे अज्ञानने सिद्ध करवाने बीजा अज्ञानने स्वीकारवु पडे छे. पण केवलाद्वैत वादीओ अज्ञान एक छे एम माने छे, माटे आ प्रमाणे करता अपसिद्धांत थाय छे अर्थात् तेमनाज सिद्धांतनु खडन थाय छे. जो कदाच केवलाद्वैतवादीओ आ अज्ञानान्तरने साधनकरे न ले तो अनुमान यथार्थ थयु कहेवाशे नहि

२२ वळी दृष्टान्त पण खोटु छे, कारण के दीपप्रभा शुद्ध स्वरूप-ज्ञानसाथे सरखावी शकाय तेम नथी दीपप्रभातो मात्र चक्षुरिन्द्रियने उपकार करे छे अर्थनो बोध तो ज्ञानथी ज थाय छे

२३ जेम शुक्तिकादिना अज्ञाननो आश्रय शुक्तिकादि नथी तेम अज्ञाननो आश्रय ब्रह्म नथी (आथी पण सिद्ध थाय छे के अज्ञान कोइ भिन्नभाव रूप नथी पण ज्ञाननो अभाव छे)

२३. उपर ब्रह्मने ज्ञानमात्र मानी ते अज्ञाननो आश्रय न थई शके एम कह्यु पण कोइ एम शका करे के मने शुक्तिकादिनु अज्ञान छे एम कहेवामा हु ए शुक्तिकादिना अज्ञाननो आश्रय थयो हवे "हु" भाव जे छे तेनो स्वभाव ज्ञान छे तोपण ते जेम अज्ञाननो आश्रय थई शके छे तेम ब्रह्म ज्ञानमात्र छे तो पण ते अज्ञाननो आश्रय थई शके, पण रामानुजाचार्य आ शकानु समाधान करता कहे छे के "हु" जे अनुभव करनार ते शुक्तिकादिना अज्ञाननो आश्रय नथी पण अनुभव अथवा अनुभूति जे थाय छे तेनो स्वभावज एवो छे के अनुभाव्य (जेनो अनुभव करवानो छे ते)ने अनुगुण थवु मने शुक्तिकादिनु अज्ञान छे एम कहेवानो अर्थ एम समजवो के मने जे अनुभव थाय छे ते शुक्तिकादिना अज्ञानने अनुगुण छे

२४ अनुभविता अनुभववानी क्रिया करे छे अने ज्ञानादि जेना पर्याय छे एवी अनुभूति एज अनुभवितानु ज्ञानत्व–आत्मत्व–छे, अर्थात् अनुभविता (आत्मा) जाते ज्ञानरूप नथी पण ज्ञान (अनुभूति) ने लीधे ते ज्ञानवान् छे, तात्पर्य के आत्मा ज्ञानरूप नथी पण ज्ञान आत्मानो धर्म–गुण–छे

२५ सूर्य प्रभारूप छे तो पण सूर्यनी प्रभा एम कहेवाय छे प्रभा सूर्यथी दूर जई शके छे तेमज ते रूपवाळी छे माटे ते द्रव्य छे, पण ते साथे कोनी प्रभा एम कहेतां सूर्यनी प्रभा एम कहेवाय छे तेथी ते गुण छे आ प्रमाणे आत्मा चिद्रूप छे तो पण चैतन्य तेनो गुण छे. नीचेना श्रुति वाक्यथी पण सिद्ध थाय छे के आत्मा पोतामांज ज्ञानघन छे एटलुं नहि पण बहार पण ज्ञानघन छे आत्मानु पोतामां ज्ञानघन होवु ते पोतानु ज्ञानरूप होवु छे, अने बहार ज्ञानघन होवु ते पोताना ज्ञानगुणने लीधे छे बहार एटले पोताना आश्रयथी अन्यत्र आ प्रमाणे ज्ञान पोताना आश्रयथी अन्यत्र जइ शके छे माटे ते गुण पण छे

२६. अनृतेन हिप्रत्यूढा ए श्रुतिथी अविद्यानुं अस्तित्व सिद्ध नथी थतुं एम बतलाववामां आवे छे. अनृत एटले अज्ञान नहि पण ऋतथी अन्य कइक, ऋत एटले भक्तिथी थतो इष्टसाक्षात्कार. अनृत एटले संसारचक्रमां फेरवनार कर्म.

२७. माया एटले अज्ञान नहि, पण विचित्र पदार्थने उत्पन्न करवानुं सामर्थ्य.

२८. अर्थापत्तिथी भावरूप अज्ञान सिद्ध करवामां आवे तो ते पण खोटुं छे जो जीवनुं ईश्वर साथे ऐक्य थाय तोज अर्थापत्तिथी कहेवाय के ऐक्य पूर्वे द्वैतनो अनुभव होवाना कारणरूपे अज्ञानने मानवुं जोईए. पण एम कइ छेज नहि.

२९. **तत्त्वमसि** महावाक्यनो रामानुजाचार्य आ प्रमाणे अर्थ करे छे. **तदैक्षत बहुस्याम्** इत्यादि वाक्यथी तत् उत्पत्ति, स्थिति अने लय छे लीला जेनी एवा सगुण ब्रह्मनुं वाचक छे. त्वपद चिद्विशिष्ट ब्रह्म जेनुं जीव शरीर छे तेनुं वाचक छे, कारण के तत् अने त्वनुं सामानाधिकरण्य छे, अने सामानाधिकरण्य बे प्रकारवाळी एकज वस्तुमां संभवे *(एक प्रकारनी बे वस्तुओमां न संभवे).*

३०. शांकरमतवादीओ तत् पदनो अर्थ ब्रह्म अने त्व पदनो अर्थ जीव लई भागत्याग लक्षणाथी जीवना अल्पज्ञत्वादि भागनो अने ब्रह्मना सर्वज्ञत्वादि भागनो त्याग करी उभयनुं सामानाधिकरण्य शास्य गणी ऐक्य जणावे छे.

३१. वाचके उपर जोयुं हशे के रामानुजाचार्य बे प्रकारवाळी एकज वस्तुनुं सामानाधिकरण्य शक्य मारे छे, पण शांकरमतवादी देशान्तर अने कालान्तरमां रहेली बे वस्तुओनुं " आ ते " एम कहेवामां सामानाधिकरण्य रह्युं छे एम कहे छे. रामानुजाचार्य कहे छे के जो देशान्तरमां भिन्न वस्तुओ लईए तो बे वस्तुओ मानवी पडे पण कालान्तरमां भिन्न लईए तो एकज वस्तुथी चाले अने एतद्देशस्थने वर्तमानकालगत मानीए अने दूरदेशस्थने भूतकालगत मानीए तो पण एक वस्तुथी चालवाने कंई बाध नडे तेम नथी. माटे एकनी एकज वस्तुमां सामानाधिकरण्य संभवे पण बे वस्तुओमां संभवे नहि.

३२. ' तत् त्वम् असि ' अहीं (लक्षणा लेता) तत्‌ने तेना रूपमा नथी समजता पण सर्वज्ञत्वादि भाग रहित रूपमां समजीए छीए तेमज त्वम्‌ने पण अल्पज्ञत्वादि भाग रहित समजीए छीए. आ प्रमाणे प्रत्यभिज्ञा (पूर्वानुभूतवस्तुनु वस्तुदर्शन थयते थतु स्मरण) नो स्वीकार करवामा आवतो नथी हवे रामानुजाचार्य कहे छे के आ प्रमाणे प्रत्यभिज्ञाने न मानीए अने एकनी एक वस्तुने तत्ताविशिष्ट अने इदंता—विशिष्ट मानीए तो एकज वस्तुनां तत्ता अने इदंता एकनां एक नहि रहेतां जुदा जुदा थशे अने आम यथार्थ पदार्थमां स्थायित्व रहेशे नहि. आ प्रमाणे उभयपदमा लक्षणा (भागत्याग लक्षणा) लेता बाध नडशे माटे ते प्रमाणे करवु बाधक छे.

३३ जीव ब्रह्मात्मक कहेवाय छे तेनो अर्थ रामानुजना मत प्रमाणे ब्रह्म जीवनो आत्मा छे अर्थात् जीव ब्रह्मनु शरीर छे एवो थाय छे ब्रह्म आत्मा यस्य स ब्रह्मात्मक एम समास लेवो.

३४ सर्व शब्द परमात्माना वाचक छे, पण सर्व शब्दथी कहेवामा आवता पदार्थ परमात्मा नथी. देवशरीर, मनुष्यशरीर, इत्यादि (जेने द्वार कहे छे ते) जीवना शरीर छे आ सर्व शरीर कद एक कहेवाय नहि तेमज जीवसाथे तेओनी एकता पण मनाय नहि आज प्रमाणे सर्व पदार्थ ब्रह्मनां शरीर छे अर्थात् ब्रह्म सूत्रात्मा सर्वमा रहे छे पण तेथी सर्व ब्रह्म छे एम कहेवाय नहि.

३५. देवादि सर्व शब्द जो के तत्तद्वाच्य विविध पदार्थना वाचक छे, तो पण परपराए करीने ते जीव अने ईश्वरना वाचक छे.

३६ देवादि शब्द जीवना वाचक छे अने जीव देवादिथी पृथक् नथी देवशरीर अने जीवना योगने देव कहीए छीऐ, पण आ योग वगरनी स्थितिने शु कहेवु ते आपणे जाणता नथी जीवात्माना योग वगरनो मनुष्यदेह मनुष्य कहेवाय नहि. आ प्रमाणे देव, मनुष्य इत्यादि शब्द जीवात्मायुक्त देवशरीर के जीवात्मायुक्त मनुष्यशरीरना वाचक छे

निर्विकल्प नथी, कारण के ज्यारे ते पदार्थ स्पष्ट जणाय छे त्यारे आपणे कही शकीए छीये के ' जे थोडा वखत उपर निर्विकल्प (अस्पष्ट) जणातो हतो तेज आ पदार्थ छे. ' आ प्रमाणे निर्विकल्पत्व एज एक विकल्प छे

३९. शांकरमतवादीओ माने छे के तत्त्वमस्यादि महावाक्यथी संसारनी निवृत्ति थाय छे माटे संसार माया (अविद्या) नु कार्य छे, कोई पण वस्तु नथी, रामानुजाचार्य कहे छे के आ प्रमाणे थतु नथी, कारण के ए वाक्य पण अज्ञानमूलक छे

४०. ब्रह्मने सत्य प्रपचनु कारण मानता पण ' एकना ज्ञानथी सर्वेनु ज्ञान थाय छे ' तो पछी प्रपचने मिथ्या मानवानु कई फल नथी

४१. असत्‌नु विज्ञान असभवित होवाथी ' कया एकना विज्ञानथी सर्वेनु विज्ञान थाय छे ? ' ए प्रतिज्ञा बाधित थाय छे

४२. मृद् ए एक सत्य छे अने घटादि सर्व मृद्‌ना विकार छे. नाममात्रनु मूल वाणीमा छे इत्यादि वाक्योनु तात्पर्य जगत्‌ने असत् कहेवानु नथी पण कारणावस्थ ब्रह्मने प्रलय अने कार्यावस्थ ब्रह्मने सृष्टि मानतां आ श्रुतिनो सिद्धान्त अधिक सुस्पष्ट थाय छे.

४३. केटलाक *श्रुतिवाक्यो ब्रह्मना निर्गुणत्वनो* बोध करे छे तेनु तात्पर्य ब्रह्म निर्गुण छे एम नथी पण ते प्रकृतिना हेय गुणथी रहित छे एम समजवु ब्रह्म सर्व शोभन गुणथी युक्त छे

४४. नानात्वनो निषेध जगत्‌नु मिथ्यात्व सूचवतो नथी पण ब्रह्मथी पृथग् वस्तुना सद्भावनो निषेध करे छे.

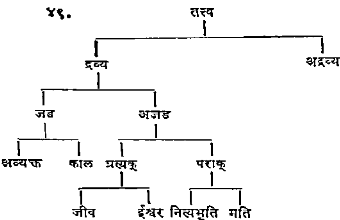
४५ आ रूपमां रामानुजाचार्य अभेदनो स्वीकार करे छे.

४६ ब्रह्म एक होवा छतां पण स्वलीलाथी अनेक थाय छे एम मानवामां आवे छे तेथी आ सप्रदायवाळा भेदाभेद वादी (भेद अने अभेद बन्नेनो स्वीकार करनार) कहेवाय छे

४७ चित् (जीव) अचित् (जड) अने ईश्वर एओनां लक्षण तथा स्वरूप एक एकथी भिन्न मानवामां आवे छे तेथी भेदनु ग्रहण थाय छे

आ प्रमाणे अभेद, भेदाभेद, अने भेद ए त्रणे आ नयनां तत्व छे

४८. अहीं जीवनु स्वरूप आपवामां आवे छे. अविद्यानो अर्थ मिथ्याज्ञान नहि पण कर्म छे. जीव वस्तुतः चिद्रूप छे तो पण आ अनादि कर्मरूप अविद्याथी वेष्टित छे. कर्मानुसार तेना स्वाभाविक ज्ञाननो संकोच विकाश थाय छे अने आ संकोच विकाशने अनुसार अचित् जे भोग्य ते साथे तेनो थोडो अथवा घणो संसर्ग थाय छे अने ते प्रमाणे ते सुख दुःख अनुभवे छे. ईश्वरनु ज्ञान (ओळखाण) अने तेनी प्राप्ति ए जीवना स्वभाव छे.



द्रव्यनुं लक्षणः—नाना दशावाळु होवापणु.
अव्यक्त (प्रकृति) नु लक्षणः—सत्त्वादि गुणथी युक्त.
कालः—संवत्सरादिरूप.
जीव —अणुरूप अने बोधवान्
ईश्वर —जीवथी अन्य आत्मा (जीवधर्मथी रहित आत्मा)
नित्यभूतिः—शुद्धसत्त्वरूपता, परम कल्याण.
मति=ज्ञाता अने ज्ञेयनो अवभास.

५०. रामानुजाचार्य जीवना आ स्वरूपथी जीव ईश्वरना ऐक्यनो निषेध करे छे.

५१. चित् अचित् अने ईश्वर ए त्रणमांना बीजा पदार्थनु स्वरूप आपे छे.

५२. जगत्नुं निमित्त तेमज उपादान कारण ईश्वर छे.

५३. ५४. आ स्थळे वाचके रामानुजमत अने शांकर मतनो भेद जोवानो छे. ' याथात्म्यना अनुभवने अनुगुण ' ए ईश्वरना स्वपदनुं विशेषण छे; आ पदनो अर्थ आ प्रमाणे लेवो, पोते तद्वत् थयो छे एवो अनुभव जेमां रहेलो छे तेवुं; आ प्रमाणे कहेवानो हेतु ए छे के जीव ईश्वर थतो नथी; मोक्ष (ईश्वरपद) मां पण तेने हुं ईश्वरना *जेवो पण ईश्वरथी व्यतिरिक्त छौं एवु* भान रहे छे

५५. ५६. ब्रह्मनो अर्थ सगुण पुरुषोत्तम लेवामां आवे छे. अथातो धर्मजिज्ञासाथी आरंभाता पूर्वमीमांसामां कहेलां कर्मना ज्ञान अने अनुष्ठानथी परंपराए ब्रह्मज्ञान थाय छे. माटे पूर्व अने उत्तर मीमांसान

कयथी जेनुं विधान करवामा आवे ते उपरथी कोई अन्यनि कर्तव्यतानुं अनुमान थाय तो ते अनुवादथी थयु एम कहेवाय.

६३. अमुक पुरुपने कारणवशात् शास्त्रना अर्थनी प्राप्ति न थाय तो पण तेथी शास्त्र अर्थरहित छे एम कहेवाय नहि, शास्त्र तो अर्थवत् छेज. आ प्रमाणे शास्त्र के जे नित्य अर्थवत् छे तेना अर्थना ग्रहणने माटे श्रवण साथे मननर्नी पण आवश्यकता जणाय छे, माटे मनननु जोके विधान नथी तो पण अनुवादथी तेनी कर्तव्यता सिद्ध थाय छे.

६४. आ प्रमाणे रामानुजाचार्य नामस्मरणने प्राधान्य आपे छे.

६५. ध्यान अथवा उपासना ते स्मरण अने आ स्मरण तेज आत्मानु दर्शन छे

६६. आ वाक्य ज्ञान थवामा ईश्वरप्रसादनी आवश्यकता दर्शावे छे.

६७. भक्तिनु आ लक्षण प्रशस्य छे. भक्ति एटले ज्ञानविशेष. भक्तिनु प्रयोजन भक्तिज होवाथी भक्ति साध्य अने साधन बने छे भक्तिथी पुरुषोत्तमपदनी प्राप्ति थाय छे.

६८. आ लक्षणथी लक्षित जगत्‌नो अर्थ विश्व छे.

६९. शास्त्रज्ञानथी आत्मज्ञान थाय छे अने आत्मज्ञानथी ब्रह्मज्ञान थाय छे, आ प्रमाणे आत्मज्ञान ब्रह्मज्ञान नथी पण ब्रह्मज्ञाननो हेतु छे.

७०. सतं पुन थयो छे ए वाक्य मात्र बनेली वात जणावे छे, ए कोई पण रीते कोई पण प्रवृत्तिनो निषेध के विधान करतु नथी, तो पण ते निष्प्रयोजन छे एम कहेवाय नहि, कारण के हर्ष उत्पन्न करवारूप कार्य ते करे छे.

पूर्णप्रज्ञदर्शन.

१. केवलाद्वैतवाळा ब्रम्ह ने सजातीय विजातीय अने स्वगत ए त्रणे भेदथी रहित माने छे, आनदतीर्थना अनुयायीओ (मध्वसप्रदायवाळा) ब्रम्ह ने भेदयुक्त माने छे, केवलाद्वैतवादीओ (शाकरमतवादीओ) कहे छे के उपनिषद्नु तात्पर्य ब्रम्ह न भदरहित ठरावनानु छे मध्वसप्रदायवाळा कहे छे के उपनिषद्नु तात्पर्य ब्रम्हने भेदरहित ठराववा जेवु देखाय छे पण तेम होवु जोईए नहि, कारण के श्रुतिनो अर्थ बीजा प्रमाणने अनुसार समजवो जोईए. हवे जो प्रत्यक्ष अने अनुमानथी ब्रम्हमा भेद सिद्ध थाय तो श्रुति पण भेदपर छे एम समजवु

२ पूर्वपक्षी (अभेदवादी) भेदने प्रत्यक्ष माननार ने पुछ छे के भेद पोतेज प्रत्यक्ष छे के भेद धर्म जेनो छे एवा धर्मीना सबधमा ते प्रत्यक्ष छे ? घट पटथा भिन्न छे एम कहेवामा घटनो पटथी भेद पोतेज प्रत्यक्ष छे के आ भेदनो धर्मी जे घट तेनो प्रतियोगी जे पट तने आधारे प्रत्यक्ष छे ?

३ घटनो पटथी भेद छे एम कहेवामा पटनी अपेक्षा थाय छेज अने तेथी घटना ज्ञान वगर भेदनु ज्ञान पण न थाय, माटे भेद पोतेज प्रत्यक्ष छे एम तो कहेवाय नहि.

४ हवे जो पट के जे भेद धमना धर्मी घटनो प्रतियोगी छे तेना ज्ञानने आधारे भेदनु ज्ञान थाय छे एम कहवामा आवे तो पटना ज्ञान पछी भेदनु ज्ञान थाय छे के पटनु ज्ञान अन भेदनु ज्ञान साथाते थाय छे?

५ बुद्धिनो व्यापार विराम लइ लईने (अर्थात् प्रथम एकनु ज्ञान पछी बीजानु ए प्रमाणे) थतो होय तो पटना ज्ञान पछी पटमा भेदनु ज्ञान सभवे पण ए प्रमाणे थतु नथी, माटे पटनु ज्ञान अने घटना भेदनु ज्ञान साथाते थाय छे ए पक्ष लेवो जोईए.

६ भेदज्ञान ए पटज्ञाननु कार्य छे माटे ते साथाते उत्पन्न थाय छे एम पण मनाय नहि, कारण के कार्य करतां कारण प्रथम होवु जोईए

७. उपर भेद प्रत्यक्ष मानता जे जे बाध नडे ते जणाव्या हवे आ स्थळे आ बाध निरर्थक छे एम जणावी भेद प्रत्यक्ष छे एम सिद्ध करवामा आवे छे. भेद बे प्रकारनो छे वस्तुस्वरूपभेद अने धर्मिभेद; उपर जे दूषण कह्या ते धर्मिभेदना सबधमां छे वस्तुस्वरूप भेदना सबधमा नथी.

९. मध्वसप्रदायवाळा वस्तुस्वरूपभेदने माने छे अने उपर जे दूषण कह्या ते धर्मिभेदना छे, माटे ते दूषण अहीं निरर्थक छे. आ प्रमाणे स्वरूपभेद माननारने धर्मिभेदना दूषणथी दूषित करवो ते एकने करवानी शिक्षा बीजा कोई गमे तेने करवा जेवु छे.

१०. भेद सर्वत्र प्रतियोगीनी अपेक्षापूर्वक जोवामा आवे छे, घट पटथी भिन्न छे एम आपणे पटनी अपेक्षाए जाणीए छीए आ प्रमाणे भेदना प्रत्यक्ष ज्ञानमा प्रतियोगीनी अपेक्षा अनुभव सिद्ध छे हवे जो वस्तुस्वरूपभेद मानीए तो उक्त अपेक्षा निरर्थक थाय छे आ प्रमाणे अनुभव सिद्ध वस्तु निरर्थक थई जाय माटे वस्तुस्वरूपभेद जेवु कई छेज नहि

सिद्ध थाय छे के गवयदर्शन पहेलां पण गाय गवयथी भिन्न छे एम ते माने छे.

१५. दूध अने पाणीनुं मिश्रण एकरूप थई जाय छे अने त्यां बे भिन्न वस्तुओ रहेली छे एम आपणे जोई शकता नथी; हवे जो भेद वस्तुस्वरूप छे एम मानीए तो आ मिश्रणमां पण प्रत्येकना भेदनो अवभास थवो जोईए; पण ते प्रमाणे थतु नथी; माटे भेद वस्तुस्वरूप नथी. आम कहेनारने कहे छे के अतिदूरत्व, अतिसामिप्य, इत्यादि कारणोने लीधे भेदनु ग्रहण थतु नथी जो के भेद तो छेज. दूध अने पाणीना अतिसामिप्यथी तेओनो पोतपोतानो वस्तुस्वरूपभेद जणातो नथी.

१६. उपर वस्तुस्वरूपभेद प्रत्यक्ष छे एम सिद्ध करी हवे धर्मभेद पण प्रत्यक्ष मानतां कई बाधो नथी एम सिद्ध करे छे. घटना धर्मनो भेद घटना अने प्रतियोगी पटना ज्ञानथी समजाय छे. हवे कोई कहेशे के धर्मभेद मानता एक प्रकारनी अनवस्था आवे छे. भेद पोते पण एक धर्म छे अने आ धर्म पण कोई अन्य धर्मथी भिन्न होवो जोईए (नहि तो धर्मभेद मनाशे नहि). आ प्रमाणे एक भेद बीजा भेदथी भिन्न, वळी ते त्रीजाथी भिन्न एम पार न आवे त्यांसुधी जवु पडशे; माटे धर्मभेद आ अनवस्था दोषने लीधे स्वीकार्य नथी. आ प्रमाणे शका करनारने कहे छे के आ अनवस्थाथी कई मूळ भेदनो उच्छेद थतो नथी. अनवस्था उच्छेदक होय तोज दोष गणाय; एटलुज नहि पण भेद अने भेद छे धर्म जेनो एवो भेदी ए बे तो भिन्न रहेवानाज. माटे धर्मभेद पण प्रत्यक्ष छे.

१८. उपर जे अनवस्था कही तेमा एम कह्यु के भेदने पण भेद होवो जोईए, कारण के उपरनुं अनुमान करवाने दृष्टांत लेवु जोईए; हवे जो आ दृष्टांत भेद लईए तो ते लई शकाशे नहि, कारण के दृष्टांतरूपे लीधेलो भेद पण भेदवाळो होवाथी साध्यवत् थशे. आ प्रमाणे दृष्टांतनो घात थवाथी निर्दोष अनुमान थई शकशे नहि. आ प्रमाणे अनवस्था लाववा जतां अडचण पडशे अने ते हमारा लाभमां एटले सुधी उतरशे के हमे थोडु (सोळ मान) मागीए तो पण तमे घणुं (तेलनो घडो) आपी देशो माटे अनवस्था पण असिद्ध छे.

१९. हवे जो कहो के दृष्टांतने माटे जे भेद लेवामां आवे छे ते भेदरहित छे तो एम सिद्ध थयु के भेद भेदरहित होई शके, आ प्रमाणे

दृष्टांत लेताज अनुमानथी सिद्ध करवानो विषय खोटो थई जशे, अने वरने मारवाने कन्या परणाव्या जेवु थशे.

२० आ प्रमाणे अनवस्था दोष लावता तमाराज मूलनो क्षय थशे तेथी अनवस्था दोष आवशेज नहि. (प्रथम अनवस्था आवे तो पण तेथी कई हानि नथी एम कह्यु, हवे अनवस्था संभवितज नथी एम सिद्ध करी आप्यु).

अत्यार सुधीमा भेद प्रत्यक्षप्रमाणगोचर छे एम कही हवे ते अनुमानप्रमाणगोचर छे एम कहे छे.

२१. नारायण (ब्रम्ह) जीवथी भिन्न छे, कारण के ते जीवने सेव्य अने ज्ञेय छे. नारायणना सेव्यत्व अने ज्ञेयत्वने माटेना प्रमाणो आपवामा आव्या छे.

२२. मने प्रथम आ सूत्र खोटु समजायु हतु हाल हु ते आ प्रमाणे समजु छु.

जगद्व्यापारवर्ज्ज प्रभुकरणासन्निहितत्वात् ।

मुक्त पुरुष जगव्द्यापारथी रहित छे, कारण के प्रभु जगतनु करण (व्यापारवरकारण) छे, अने मुक्त जगत् साथे सन्निहित नथी. आ अर्थ पण यथार्थ छे के नहि तेनी मने शंका छे

कहेवानु तात्पर्य मुक्त अने ईश्वर वच्चेनो भेद जणाववो ए छे

२३ 'ब्रम्हने जाणे छे ते ब्रम्ह थाय छे' ए वाक्यनो अक्षरश अर्थ न लेवो, पण 'ब्रम्हना जेवो थाय छे' एम लेवो. आ प्रमाणे आ वाक्यथी अभेद सिद्ध थतो नथी.

२४. केवलाद्वैतवादीओ एम माने छे के जेम रज्जुमा सर्प भ्रांतिथी जणाय छे तेम ईश्वरमा जगत् भ्रांतिथी जणाय छे, पण आ मानवु (मध्वाचार्यना कहेवा प्रमाणे) खोटु छे, कारण के रज्जुमां सर्पनी भ्रांति थवामां रज्जु अने सर्पना वेशेष (भेद) नु अदर्शन हेतु छे. हवे ईश्वरना संबधमा आ प्रमाणे बने नहि, कारण के ईश्वरने (जीवात्मा जे ईश्वरथी अभिन्न छे तेने) कोई पण प्रकारना विशेषनु अदर्शन होय एम मानवु सदोष छे, ईश्वर सर्वज्ञ छे.

२५. '*परमार्थेथी अद्वैत*' ए वाक्यनो अर्थ जोवा जेवो छे.

२५ (पृष्ठ ८३ पंक्ति २२) छांदोग्य उपनिषदुना दृष्टान्तनवकमा पण आनंदतीर्थना अभिप्राय प्रमाणे भेदन प्रतिपादन करवामां

आवे छे. अभेदनो उपदेश लेवानुं प्रयोजन संपूर्ण दृष्टान्त आपवु एज छे.

२६. भेद मानीने ' एकना विज्ञानथी सर्वनुं विज्ञान ' ए श्रुतिनी उपपन्नता आ प्रमाणे बतावी शकाय छे.

२७. एकना विज्ञानथी सर्वनुं विज्ञान ए श्रुतिवाक्यनुं तात्पर्य कारणना अने प्रधानना विज्ञानथी कार्यनुं अने अप्रधाननु विज्ञान थाय छे एम कहेवानु छे, प्रपंच मिथ्या छे एम कहेवानु नथी. दृष्टान्तमां ' माटीनुं ज्ञान थतां सर्व माटीना पदार्थोनुं ज्ञान थाय छे ' एम न कहेतां ' एक मृत्पिंडना ज्ञानथी ' एम कह्यु छे ते आटला माटेज छे. ' एक ' अने ' पिंड ' ए बे शब्दो उपरथी कारण अने प्रधाननु ग्रहण करवुं वधारे योग्य छे.

२८. वाचारंभण साथे विकार शब्द योजीने अने नामधेय मृत्तिका साथे योजीने वाचारंभण श्रुतिनो आ प्रमाणे अर्थ करे छे.

२९. वाचारंभणथीज नामधेयनो अर्थ मळे छे. अने मृत्तिका एज जो केवळ होय तो 'एव' पद निरर्थक थाय छे.

३०. प्रपंच मिथ्या छे ए वाक्यमां प्रपंचने मिथ्यात्व धर्म लगाडवामां आवे छे. आ धर्म (पूछे छे के) मिथ्या छे के सत्य छे. जो कहो के सत्य छे तो प्रपंचमांनी एक वस्तु–मिथ्यात्व सत्य थतां प्रपंच मिथ्या छे एम कहेवुं अनुपपन्न ठरे छे. जो कहो के मिथ्यात्व मिथ्या छे तो तेथी विरुद्ध सत्यत्व प्रपंचने लागु पडी शके छे, अने प्रपंच सत्य थाय छे.

३१. थी ३३. उपरनो विकल्प खोटो छे एम बताववाने पूर्वपक्षी प्रयत्न करे छे.

उपरनो विकल्प न्याय विरुद्ध छे, कारण के तेमां नित्यसम नामनो जातिभेद आवे छे. स्वव्याघातक उत्तर जाति छे नित्यसम ए एक जातिनो भेद छे.

" अनित्यत्व नित्य छे के अनित्य छे ? " ए विकल्प नित्यसम-जातिनुं उदाहरण छे; अहीं आपणाथी एक पण पक्ष लई शकातो नथी.

अनित्यत्व नित्य छे एम कहेतां धर्मी (जेने अनित्यत्व धर्म लगाडवामां आवे छे ते) नित्य थई जाय छे अने नित्य छे एम कहेतां ते अनित्य थई जाय छे. आ प्रमाणे आ विकल्प स्वव्याघातक दोषथी ने न्याय विरुद्ध गणाय छे. मिथ्यात्व मिथ्या छे के सत्य छे ए विकल्प

पण आवेज छे. नित्यसमजातिनुं लक्षण आ प्रमाणे आपवामां आवे छेः—

ज्यारे अमुक धर्म तद्रूप (एवो छे) के अतद्रूप (एवो नहि) छे एम उपपत्तिपूर्वक कही शकाय नहि अने तेथी धर्मी (ते धर्म जेने छे ते) ना ते धर्मनो निषेध करवामां आवे त्यारे नित्यसमजाति दोष थाय. मिथ्यात्व मिथ्या छे अने अमिथ्या छे एम आपणाथी सोपपत्तिक रीते कही शकाय नहि ते उपरथी जगत्ना मिथ्यात्व धर्मनो निषेध करवो ते नित्यसमजाति दोष छे.

३४. उपरञ्जक धर्म=विशिष्ट धर्म. अन्वर्थित्व=जेवो अर्थ होय तेवो अर्थ होवा पणुं. अन्वर्थित्वथी विशिष्ट धर्मी सरखा थई जाय छे अर्थात् ते विशिष्ट रहेता नथी

३५. उपर जे जगत्ना मिथ्यात्वनो निषेध करवामां वापरेला विकल्पना सम्बधमां दोष बताव्यो ते खरो नथी एम सिद्ध करीने सिद्धान्ती विकल्पनी यथार्थता जणावे छे —

तमे उक्त विकल्पमां नित्यसमजातिदोष होवानुं कहोछो पण ए दोषनुं मूळ बतावता नथी अर्थात् कहेता नथी के ए दोष शाथी थयो. आ स्थळे हमे सिद्ध करी आपीए छीए के हमारा विकल्पमां नित्यसमजाति दोष थतोज नथी. प्रथम तो नित्यसमजाति दोषना भेद जोईए, ते मुख्य बे छे, साधारण अने असाधारण, साधारण नित्यसमजाति दोष ते ए के, जे पोताना सिद्धान्तनो विघात करे, असाधारणना त्रण भेद छे, (१) जेमां युक्त (अपेक्षित) अंगनी खामी होय ते, (२) जेमां अयुक्त—अनपेक्षित—नकामुं—अंग वधारे आवी जतुं होय ते अने (३) जे पोतानो विषय न होय तेमां जेनी वृत्ति होय ते. हवे जगतनुं मिथ्यात्व मिथ्या छे के सत्य छे ए विकल्पमां पोते पोतानो व्यापक नथी अनित्यत्व नित्य छे के अनित्य एमां पोते पोतानो व्यापक छे ज्यां पोते पोतानो व्यापक होय त्यां साधारण नित्यसमजाति दोष थाय पण अहीं कई तेवुं न होवाथी उक्त दोष थतो नथी अनित्य नित्य छे के अनित्य छे ए विकल्पमां अनित्यत्व अनित्य छे ए पक्ष लेतां पोते पोतानो व्यापक थाय छे माटे विकल्प दूषित ठरे छे, मिथ्यात्व मिथ्या छे के सत्य छे ए विकल्पमां मिथ्यात्व मिथ्या छे ए पक्ष लेतां पोते पोतानो व्यापक नथी, कारण के मिथ्यानो अर्थ अनहित छे. हवे असाधारण नित्यसमजाति

दोष पण आवतो नथी ते जोईए. ' घट असत् छे ' एम कहेवामा उक्त दोष आवे छे, कारण के ' छे ' पद घट अने असत् उभयने लगाडवामा आवे छे. वळ जोतां घटने ' नथी ' पद लगाडवु जोईए, माटे युक्त नञ (नकार दर्शक पद) नां खामीथी आ दोष थाय छे. तेज प्रमाणे ' मिथ्यात्व मिथ्या छे के सत् छे ? " ए विकल्पमा तमाराथी पूछायज नहि के ' मिथ्यात्व मिथ्या के सत् छे ? ' कारण के तमे मिथ्यात्वना अस्तित्वने मानता नथी तो मिथ्यात्व छे ? एम पूछवाने कई कारण रहेतु नथी. आ प्रमाणे आ विकल्पमा उक्त दोष आवे छे मध्वाचार्य कहे छे के अहीं एवु कई छेज नहि, कारण के घट असत् छे एम कहेवामा घटनु अस्तित्व कहेवामा आवतु नथी पण घटना असत्त्वनु अस्तित्व कहेवामा आवे छे अने ते घटने तेमज घटना अस्तित्वने लागु पडे छे तेज प्रमाणे जगत् (*मिथ्या के सत्*) छे ? ए *प्रश्नमा पण ' छे ' पदथी जगत्नु अस्तित्व मानीने पूछवामां* आवतुं नथी पण जगत्ना मिथ्यात्वनु अस्तित्व मानीने पूछवामा आवे छे, माटे विकल्प सदोष छे एम मानवाने कईज कारण नथी. (वाचकने महारे आ स्थळे कहेवु जोईए के आ सर्व वादविवाद ' छे ' पदने भावदर्शननी क्रियानो वाचक मानीने चलाववामा आवे छे आधुनिक पाश्चात्य न्यायने अनुसार ' छे ' ने मात्र योजक शब्द मानीए तो आ विवाद निर्मूल

पाशुपत दर्शन.

१. पाशुपत अथवा महापाशुपत शिवने माननारा छे. पशुपति ए पद शिवने केवी रीते आपवामा आवे छे ए गर्व आ दर्शनमां आवे छे

२. साधकनी शुद्धिना ब्रह्मचर्यादि हेतु ते उपाय छे आ उपायनु शास्त्रविहित फल ते लाभ.

२ (बीजीवार मुकायलो) आत्माना मिथ्याज्ञानादि दुष्टभाव जे पशुत्वना मूल हेतु रूपे मनाया छे ते मल छे.

३ साधकनी शुद्धिना हेतु ते लाभना उपाय छे

४. देशनु लक्षण स्पष्ट छे.

५ ज्ञानादि लाभनी प्राप्ति थाय त्यां सुधीमां जीवनी लाभादिमांना कोईमां स्थिति ते अवस्था.

६. अज्ञानादिनी हानि ते विशुद्धि.

७ गुरुप्रतिथी सस्कार पामवा ते दीक्षा कहेवाय छे दीक्षाने माटेनां योग्य द्रव्य, योग्य काल, योग्य क्रिया, योग्य मूर्ति अने योग्य गुरु ए पांच दीक्षाकारिक–दीक्षाने माटेना आवश्यक–पदार्थ कहेवाय छे.

८. गुरुभक्ति आदि पाच बल मानवामां आवे छे.

१०. मिथ्याज्ञानादि मल ओछा करवाने *मान अने अवमान* ने गण्या वगर कांतो भीख मागीने के कांतो छांडेलु के कांतो गमे ते राते मळेलुं खावु तेनु नाम वृत्ति छे.

११ दृक् शक्ति अथवा धीशक्ति वस्तुत तो एक छे पण विषय परत्वे तेना पांच भेद गणवामां आवे छे

१२. दर्शनादि पांच दृक् शक्तिओनां लक्षण मूलमा स्पष्ट आप्यां छे.

१३ विक्रमणाभाव ए एवी क्रियाशक्ति छे के जेथी हस्तपादादि करणना व्यापार वगर पण अशेष ऐश्वर्य साथे संबंध करी शकाय छे.

१४ संसारचक्रमां भ्रमण ते पशुत्व–आ पशुत्व साथे जेनो संबंध छे, जे परतन्त्र होई संसार चक्रमां भ्रमण करे छे–ते पशु–जीव छे

१५ पाशुपत मतने माननारा आत्मा (जीवात्मा) अने ईश्वरना योगने–जोडाणने–योग कहे छे. पतंजलि चित्तवृत्तिना निरोधने योग कहे छे

१६. १७. १८. पृष्ठ ९२ मा सर्वज्ञत्वनुं लक्षण आप्युं छे त्यां समास विस्तार विभाग अने विशेष शब्द लख्या छे तेनां लक्षण अहीं आप्यां छे.

१९. कर्मनी अपेक्षा वगर ईश्वरने स्वतंत्र कारण मानतां जे विरोध नडे छे ते बतावबामां आवे छे

२०. अहीं उपरना विरोधनो परिहार करवामां आवे छे

२१. पृष्ठ ९५ मा आ दर्शननो अन्य दर्शन करतां विशेष जणाव्यो छे ते यथार्थ नथी एम पूर्वपक्षी वाद लावे छे

२२. अहीं उपरना वादनुं निराकरण करवामां आवे छे मोक्षनुं कारण ईश्वरज्ञान, ईश्वरसाक्षात्कार के तत्त्वनिश्चय? ईश्वर सर्वनो अधिपति छे एटलुं जाण्युं–ईश्वरज्ञान मेळव्युं–तेटलाथी मोक्ष थतो नथी, अपशुने ईश्वर साक्षात्कार असंभवित छे, अने तत्त्वनिश्चय तो हमारे इष्ट छे तत्त्वनिश्चय आ दर्शनव्यतिरिक्त अन्य दर्शनथी थतो नथी, माटे आ दर्शननो विशेषोत्कर्ष छे.

शैवदर्शन.

१ आ संसारमां कोई सुखी कोई दुःखी एवी विषमता जीवोमां आवे छे हवे जो ईश्वरने कर्मनी अपेक्षा नथी एम मानीए तो आ विषमताने माटे ईश्वर दोषपात्र गणाशे वळी आ विषमता एवी छे के कोई तो केवल दुःखनोज अनुभव करे छे, हवे जो ईश्वर पोतानी स्वतन्त्रताथी आ दुःख आपे छे एम मानीए तो ईश्वरमां निर्दयतानो आरोप थशे, माटे पाशुपत मत मानतां आ प्रकारना ईश्वरमां दोष आवे छे माटे ते स्वीकार्य नथी अने शैव मत स्वीकार्य छे.

२ विद्या, क्रिया, योग अने चर्या ए चार पादनो अनुक्रम कये आधारे राख्यो छे ते अत्र दर्शाव्युं छे

३ भुवनादि कार्यरूप पदार्थनी रचना अने व्यवस्था जोतां तेनो बुद्धिमान् कर्ता होवो जोईए एम अनुमान थाय छे, अने आ अनुमानथी ईश्वरनुं अस्तित्व सिद्ध थाय छे शैव मतवादीओनी प्रक्रिया घणी खरी सेश्वर सांख्यना जेवीज छे

४. आ अनुमान स्पष्ट छे सन्निवेश=सनियमरचना हस्त पादादि ज्यां जोईए त्यां अने जेवी रीते जोईए तेवी रीतिए रच्या छे माटे तेनो कोई पण सविचार कर्ता होवो जोईए.

५ पाशुपत अने शैव दर्शनमां जे विशेष छे ते अत्र जणाव्यो छे शैवो एम माने छे के प्राणिकृत कर्मनी अपेक्षाए करीने ईश्वर कर्ता छे.

६. आ प्रमाणे कर्मनी अपेक्षा मानतां छतां पण ईश्वरना स्वातन्त्र्यनो भंग थतो नथी एम युक्तिपुरःसर दर्शाव्युं छे

७. अहीं स्वातन्त्र्यनुं स्वरूप कहे छे अन्य जेने पोताना कार्यने माटे उपयोगमां लई शकतो नथी ते अप्रयोज्य छे ईश्वरने कोईपण पोताना कार्यने माटे उपयोगमां लई शकतुं नथी माटे ते अप्रयोज्य छे. आ अप्रयोज्यत्वथी तेमज ते करणादिनो (व्यापारवत् कारण-अहीं कर्मादि-नो) प्रयोक्ता छे तेथी ते स्वतन्त्र छे उपर कोशाध्यक्ष अने राजानुं दृष्टान्त आप्युं छे तेथी आ स्पष्ट थाय छे

८. पुरुषना कर्म आशय अने विपाकने जाणनार अने भोग्य भोगसाधन अने तेनुं उपादान (तेने शी रीते लेवांते, उपादान कारण नहि) ए सर्वने जाणनार जे ईश्वर तेना वगर आ विश्व थयुं नथी.

९. कर्ताने जे उपादानमांथी कार्य करवुं छे तेनुं ज्ञान अवश्य होवुं जोईए, अन्यथा कार्योत्पत्ति असंभवित छे.

१०. शरीरी मानतां क्लेशादि दोष तेमां आवे माटे आ सिद्धान्त सदोष गणाय एम पूर्वपक्षीनो आक्षेप छे.

११. आपणो देह क्लेशयुक्त छे, कारण के ते परेच्छा-ईश्वर अने कर्म-निर्मित छे; परंतु ईश्वरनो देह स्वेच्छानिर्मित छे माटे ते क्लेशादि रहित छे. वळी ईश्वरनो देह प्राकृत नथी पण शाक्त छे. आ उपरथी वाचकने जणाशे के शिवलिंगनुं स्वरूप मंत्रमय छे.

१२. ईशान, तत्पुरुष, अघोर, वामदेव, अने सद्योजात ए पांच साथे सृष्टि, स्थिति, संहार, तिरोभाव, अने अनुग्रहकरण ए पांच कृत्यनो संबंध छे. ईशानरूपे शिव विश्वने सृजे छे, तत्पुरुषरूपे पाळे छे, इत्यादि योजना करवी.

१३. कृच्छ्राध्वमां अनंतने कर्ता माने छे अने तेथी ते सदोष छे एम कहेवामां क्या मार्गनुं ग्रहण थाय छे ते समजातुं नथी.

१४. चार्वाक देहने आत्मा माने छे. आ प्रमाणे मानवुं सदोष छे, कारण के आखो देह आत्मा लेतां प्रत्येक इन्द्रिय आत्माना विभाग थशे; हवे कर्णेन्द्रिय श्रवण करे छे अने तेनुं स्मरण कोई अन्य अंग राखे छे; जो आखो देह आत्मा होय तो आ प्रमाणे एक भाग श्रवण करे अने अन्यभाग तेनुं स्मरण राखे एम संभवे नहि.

१५. न्यायवाळा एम माने छे के जीव मनसूने प्रत्यक्ष छे; हवे मनसूने पण दृश्य मानवुं पडे छे तो तेनो दृष्टा कोई अन्य होवो जोईए, ए प्रमाणे अनवस्था आवे छे.

१६. जैनो आत्माने अव्यापक माने छे अने बौद्धो क्षणिक माने छे. जीव अमुक देशावच्छिन्न छे अथवा अमुक कालावच्छिन्न छे एम कही शकातुं नथी माटे ते विभु अने नित्य ठरे छे अने तेथी जैन अने बौद्धना सिद्धान्त अग्राह्य छे

१७. जगतमा भोगव्यवस्था भिन्न भिन्न जीवोमां आवे छे ते आत्मा एक होयतो अनुपपन्न ठरे, माटे आत्मा अनेक छे.

१८. सांख्यवाळा आत्माने (पुरुषने) अकर्ता माने छे, पण आत्मा क्लेशादिमाथी मुक्तथवारूप क्रियाने करनार मानवामा आवतो होवाथी सांख्यमत खोटु छे.

१९. २० नकुलीशपाशुपतदर्शनमा कलानु स्वरूप आप्यु छे (जुओ पृष्ठ ९२) जे कलाथी रहित थयो छे ते अकल कहेवाय छे. विज्ञान, योग, अने सन्यास वडे जे अकल थयो छे ते विज्ञानाकल कहेवाय छे विज्ञानाकल जीवना कर्मनो निर्मूल क्षय थई गयो होय छे पण पशुत्वना मूल हेतुरूपे मनायलो मिथ्याज्ञानादि मल स्वाभाविक होवाथी आ प्रकारना (विज्ञानाकल) पशुमा ते मात्र अवशिष्ट रहे छे केटलाक पशु (जीव) एवा होय छे के तेओना कर्म अने मल प्रलय सुधी रहे छे ने पछी नष्ट थई जाय छे, आवा जीव प्रलयाकल कहेवाय छे प्रलयाकल=प्रलयथी अकल आ जीवोमा माया होती नथी. त्रीजा प्रकारना जीवोमा कर्म माया अने मल ए त्रणे कलाओ होवाथी ते सकल कहेवाय छे. मल नित्य छे, जीवसाथेनो तेनो सबध अनित्य छे. सांख्यवादीओनी प्रकृति साथे मलनी तुलना थई शके छे

२१ पुर्यष्टकनो अर्थ भाषातरमा स्पष्ट दर्शाव्यो छे.

२२ अणु शब्दनो अर्थ अत्र जीव लेवो, जोके जीवने अमणु सज्ञा आपवामा आवे छे तो पण ईश्वर अणु (जीव) ना पाशजालने काढी नाखे छे, जे पाशजाल पूर्वमा (प्रथम) जीवनो व्यत्यय करनार (जीवने अवळे मार्ग लई जनार) हतो

२३ आ मलशक्तिआदि पाश ते प्रतीशादि पाश छे, तेओनो लक्षण भाषातरमा आप्या छे

२४ मायात्मा शिवतत्त्व जे बिंदु कहेवाय छे ते लईए तो पाश पाच थाय छे प्रणवना उच्चारमा जे अनुस्वार आवे छे ते बिंदु छे आ बिंदु मायानु मूल छे, अने तेमाथी सर्व प्रपचनी उत्पत्ति मानवामा आवे छे शिवपदनी प्राप्तिनी साथे तुलना करता आ पाशरूप छे, पण तेथी विद्येश्वरादिनो योग थाय छे तेथी ते अपर मुक्ति गणाय छे. शि-

प्रत्यभिज्ञादर्शन.

१. पाशुपत मतमां कर्मनिरपेक्ष ईश्वर बंधमोक्षनु कारण मनाय छे, शैव मतमां कर्मने बंधमोक्षनु कारण मानवामां आवे छे. उपरनु मत वैषम्यनैर्घृण्यथी दूषित छे. आ मत जडने कारण मानवा रूप दोषथी दूषित छे. त्रीजु शैव मत प्रत्यभिज्ञावाद कहेवाय छे आ वाद ते माया-वाद छे. तेमां जगत् अने ईश्वरनु अने जीवनुं स्वरूप आ प्रमाणे मानवामां आवे छे —परमेश्वर प्रत्यगात्मा (आतरात्मा—बीजाओ जेने जीवात्मा कहे छे ते) साथे तदात्म (एक) छे, आ वात स्वसंवेदनथी, सप्र-माण युक्तिथी, अने आगमथी सिद्ध करी शकाय तेम छे. आ ईश्वर मान अने मेय (दर्शन अने दृश्य) थी एकी वखते भिन्न पण छे अने अभिन्न पण छे. वळी ते स्वव्यतिरिक्त पदार्थ उपर आधार राख्या वगर सर्व ने जोई शके छे माटे स्वतन्त्र छे, प्रकाश जेम बाह्य पदार्थने दर्पणमां प्रति बिंबरूपे देखाडे छे तेम आ ईश्वर पण सर्व पदार्थने आत्मारूप दर्पणने विषे प्रतिबिंबरूपे दर्शावे छे

२. सूत्रमा " दासत्वनु आसादन करीने " ए पद छे आ पदनु आ स्थळे स्पष्टीकरण करवामां आवे छे दासत्वनु आसादन करीने एटले दासत्व पामीने अर्थात् दासत्वने सपूर्ण अशे अने निर्बाधरूपे पोताना भोगना विषयरूपे—कर्मना फलरूपे—स्वीकारीने अर्थात् शिवनो दास थवु एज सर्व कर्मनु एक अनन्य फल छे एम निश्चय करीने. प्राप्तिना उपायोनु-कर्मादिनु—फल (प्राप्त करवानो विषय) ते शिवनु दासत्व छे एम अत्र सूचवाय छे

२ सूत्रमा " मनुष्य उपर " इत्यादि वाक्य छे. आ वाक्यथी एम सूचवाय छे के आ शास्त्रना अधिकारी अने विषयनो कई नियम नथी. प्रत्येक मनुष्य अधिकारी छे अने समस्त सपत्प्राप्तिहेतु फल छे

३. सूत्रमा " मनुष्य उपर ' पण ' " एम " पण " शब्द छे, अभिनवगुप्ताचार्य (जेमी शिवसूत्र उपरनी टीकानो माधवाचार्य आ स्थळे सार आपे छे ते) ' पण ' पदनो हेतु आ प्रमाणे बतावे छे.

४ कोई शका करशेके सूत्रकार पोते शिवत्वने पामी पूर्ण थया तो पण सूत्र रचवामा कई पण तेमने प्रयोजन होवु जोईए, कारण के प्रयोजन वगर प्रवृत्ति सभवे नहि परतु सूत्रमा 'पण' पद वापर्यु छे तेथी आ शकानु निराकरण थई जाय छे. पूर्णत्वने पामेलाने अन्य कई प्रयोजन रहेतु नथी, मात्र मनुष्य उपर उपकार करवो एज रहे छे परोपकार पण प्रयोजन गणाय एम बताव्यु छे

५ जे अर्थने माटे (जे अर्थने ध्यानमा लईने)मनुष्य प्रवृत्ति करे ते प्रयोजन परोपकारने माटे पण जो प्रवृत्ति करवामा आवे तो ते पण प्रयोजन कहेवाय.

६. " *उपपादन करु छु* " *ए वाक्यमा 'उप'पद छे ते समीपता*-वाचक छे समस्तसपद्हेतु जे परमेश्वरनी प्रत्यभिज्ञा तेने मनुष्यनी समीप लाववी ए आ शास्त्रनो विषय छे.

७ भक्तिरूप लक्ष्मी मळी नथी त्यासुधी सर्व दरिद्री छे. एम आ श्लोकनु तात्पर्य छे.

८ षष्ठीतत्पुरुष समास लेता महेश्वरनी प्रत्यभिज्ञा ते समस्त सपत्नी प्राप्तिनो हेतु छे एम अर्थ नीकळे

९ बहुव्रीहि समास लेता " समस्तसपत्प्राप्ति छे हेतु जेनो ते " *एम अर्थ थाय, अने आखु पद प्रत्यभिज्ञानु विशेषण थाय त्या आ प्र*-माणे अर्थ लेवो —प्रत्यभिज्ञा एटले प्रतिमाए करीने शिवने अभिमुख करी तेनु ज्ञान मेळववु ते आ प्रत्यभिज्ञानो हेतु समस्त सपत्नी प्राप्ति छे सपत् एटले बाह्याभ्यन्तर नित्यसुखादि, तेनी सिद्धि एटले तथात्व *प्रकाश आ प्रमाणे सर्व सपत्नी प्राप्तिना हेतु प्रत्यभिज्ञा लईए तो* प्रत्यभिज्ञा शास्त्र अने सपत्प्राप्ति फल गणाय सर्व सपत्नी प्राप्ति ए छे हेतु जेनो एम लईए तो प्रत्यभिज्ञा मुख्य गणाय अने सर्व सपत्प्राप्ति कारण गणाय

१० अहीं प्रत्यभिज्ञानो अर्थ आपवामा आवे छे मैं चैत्र नामना कोई पुरुषने जोयो छे. थोडा वखत पछी ते पुरुष आवीने महारा आगळ उभो रहे छे, आ वखते मने पूर्वानुभवनु स्मरण थाय छे अने अभिमुख रहेल पुरुषने हु " आ ते चैत्र छे " ए रूपमा ओळखी शकु छु आ प्रमाणे अभिमुख पदार्थने विषेनु प्रतिसधाने (स्मरणे) करीने जे ओळखवारूप ज्ञान ते प्रत्यभिज्ञा

११. अहीं ईश्वरनी प्रत्यभिज्ञानी उपपत्ति दर्शावे छे; ईश्वरनी शक्तिनो अनुभव आगमादिथी थयो छे. आ ईश्वर ज्यारे आत्मामां अभिमुख थाय छे त्यारे तेनी शक्तिना स्मरणपूर्वक आपणे तेने "आ ते (शास्त्रोक्त) ईश्वर छे " ए रुपमां ओळखी शकीए छीए. आ ईश्वरनी प्रत्यभिज्ञा छे.

१२. सूत्रमां ' उपपादन करु छु ' एम पद छे. उपपादन करवु एटले उपपत्ति पूर्वक सिद्ध करवु. उपपत्तिनो अर्थ संभव होवाथी ईश्वरनी सिद्धि असंभवित नथी एम सूचनाय छे.

१३. आत्मा स्वयंप्रकाश होवाथी सतत अवभासमान छे, अने तेथी ते ईश्वर साथे तदात्म छे तो पण मायाना आवरणने लीधे ते सर्वांशे अवभासमान नथी माटे शास्त्रनु प्रयोजन छे.

१४. ज्यां सुधी माया छे त्यां सुधी ईश्वर अने जीवनु ऐक्य नथी. माया दूर करी आ ऐक्य प्रतिपादित करवानु छे. ज्यां सुधी माया दूर नथी थई त्यां सुधी ते छे; अने ज्यां सुधी ते छे त्यां सुधी न्यायने अनुसार स्वरुप निर्णय करवानु रहे छे.

१५. जो आत्मा अजड थयो अर्थात् पोताना संपूर्ण स्वरुपने जाणनार थयो तो पछी तेने ईश्वरना अस्तित्वनी सिद्धि असिद्धिनो विचार करवानो रहेतो नथी, कारण के विचारवानु अने विचार करनार एकज छे. परंतु आत्मा मोहने लीधे पोताना संपूर्ण स्वरूपने जाणतो नथी तेथी शास्त्रोपदेशादि वडे दृक्शक्ति अने क्रियाशक्तिनी प्राप्ति करी आत्मानुं यथारूप आविष्करण करवानु रहे छे.

१६. जोनारने (ज्ञान मेळवनारने) प्रथम पदार्थोनु क्रमवार ज्ञान मळे छे, पण ज्यारे आ ज्ञान मळी रहयु त्यारे क्रम रहेतो नथी. आ वखते ते ईश्वर छे, कारण के ते क्रमरहित पदार्थोनो प्रमाता छे.

१७. जीवात्मा व्यवहारमां पदार्थोने ओळखी शके छे ते जो तेनु शिव साथे ऐक्य न मानीए तो गमते नहि. नेत्रगत प्रकाश अने बाह्य प्रकाशथी पदार्थ ओळखी शकाय छे ते उभयना तादात्म्यथी छे.

१८. पदार्थसमुदायनुं स्वरुप ईश्वरनी शक्तिरूप होवाथी ते तेनाथी भिन्न नथी.

१८. ईश्वर पटघटादि विविध आकारवाळा विश्वना रूपमां स्थित थवारूप क्रिया करे छे तेमां हेतु केवल तेनी इच्छाज छे

१९ आ मतमां जगतनु कारण ईच्छा मानवामां आवे छे ईश्वर स्वेच्छाथी जगद्रूपे अवभासे छे

२० योगीना संकल्पथी साधारण घटादि जेवा केवल ईच्छानि मित घटादि उत्पन्न थाय छे उपादानकारणनु ईश्वरने कई प्रयोजन नथी एम कहेवानु तात्पर्य छे

२१ कोई कहेशे के योगी संकल्पथी घटादि उत्पन्न करे छे ते उत्पन्न एवा परमाणुओनो संकल्पथी योग करीने करे छे परमाणुओ उत्पन्न करवाने तो योगी असमर्थ छे आ प्रमाणे कहे नारने कहे छे के आम धारवु खोटु छे, कारण के परमाणुने कारण मानीए अने घटने कार्य मानीए तो एकदम घट उत्पन्न थतो जोता आपणने कार्यकारण जे रूपमां संबंध धरावे छ ते संब धनो भंग थयलो जोवामां आवशे परमाणुना योगथी घट थवामां दडचक्रादिनी आवश्यकता रहेशेज, नहितो वारंवार अनुभवमां आव ता कार्यकारणसंबंधना स्वरूपनो भग थयो गणाशे जो उक्त प्रका रनो भग मानवामां कई हानि न होय तो परमाणु वगर पण घट थयो एम मानवामां शुं हानि छे ? जो एम मानो के योगी चालता आवता दडचक्रादिना उपयोगरूप नियमनो भग करवाने समर्थ छे अने तेथी त परमाणुनो योग दडचक्रादि वगर पण करे छे तो सर्व शक्तिमान् ईश्वर, 'उपादान वगर काय न थाय' ए चालता आवेला नियमनो भंग करवाने समर्थ छे एम मानता कईज दोष नवतो नथी

२२. जीव ईश्वर होय तो ससारवैचित्र्य संभवे नहि एम कहेनार ने आ श्लोक उत्तररूप छे

२३ जीव मुक्त नथी थयो त्यासुधी तने बाह्यप्रपंच पोताथी भिन्न देखाय छ पण मुक्त थया पछी आ भेद रहेतो नथी

२४ जीव अने ईश्वरनु एकत्वतो छेज पण मोहाधने ते सिद्ध नथी आ सिद्ध करवा माटे शक्तिना व्यापारनी आवश्यकता छे, अने आ श क्तिनो व्यापार ते अहीं अर्थक्रिया छे आ अर्थक्रियाथी एकत्वने सिद्ध

करवानी स्वाभाविक प्रीति स्फुट थाय छे अने पोते ईश्वर छु ए प्रकारना प्रमाताना ज्ञानमा ते पर्यवसान पामे छे आ प्रमाणे अर्थक्रियानी अपेक्षा ए कराने प्रत्यभिज्ञाने माटे श्रम करवानु प्रयोजन रहे छे

२५ २६ पोते इश्वर थयो खरो पण पोते ईश्वर थयो छे एम ज्यासुधी जाण्यु नहि त्या सुधी त निरर्थक छे पदार्थनी प्राप्ति थाय पण जे पदार्थने माटे प्रयत्न करवामा आवतो हतो तेनीज प्राप्ति थई एम ज्यासुधी जाणवामा आवे नहि त्यासुधी तज्जन्य आनद थवो असभवित छे.

२७ आत्माना गुण तो अपार छे पण तेनो विचार आणवो–ते जाणवा–ए आवश्यक छे प्रत्यभिज्ञाथी ते जणाय छे, माटे प्रत्यभिज्ञा करवी ए निष्प्रयोजन नथी.

रसेश्वरदर्शन.



१. निर्विचिकित्स=निःसंशय. प्रयत्न करनारने फलप्राप्तिनी आशा संपूर्ण होय तोज प्रवृत्ति सारी रीते थाय.

२. अभ्रक शिवानुं बीज छे अने रस (पारो) शिवनु बीज छे; आ उभयना संयोगादिथी थता पदार्थोनु सेवन करवाथी आने आ देह नित्य थई जाय छे. पारदादिना पानथी अजरामर थवाय छे एम सिद्धोपासकोनुं मत छे.

३. आज श्लोकने मळती एक कविता में थोडा वखत उपर सांभळी हती.

" तो रस गधक मोरस पारा, दोकी बीचमें नागपसारा ।
ए नाग नागणकुं दीजे, सारी पृथ्वी कंचन करलीजे ॥"

शिव पार्वतीने कहे छे के तहारो रस (बीज) गंधक छे (श्लोकमां अभ्रक छे), अने महारो रस पारो छे, ए बेनी वच्चे नागनो (सीसानो) प्रवेश थवो जोईए अने ते नाग जो नागण (कलई) ने आपवामां आवे तो आखी पृथ्वी सोनानी थई जाय. रसेश्वरो देहने अजरामर करवानुं इच्छता हता एटलुंज नहि पण क्षुद्रधातुओनुं सुवर्ण करवानुं पण इच्छता हता.

५. लोहनो अर्थ कोई लोही पण लेछे.

६. कुमारसंभवमां शिव तपश्चर्या करता सतीने कहे छे के " शरीर ए प्रथम धर्मसाधन छे. "

७. विषयासक्त अने अशक्त योगसाधनाना अधिकारी नथी.

८. अहीं जीवन्मुक्तिने सोपपत्तिक ठरावे छे.

११. "जीवत्व देहत्वने आधारे छे, देह अदृष्ट (कर्म) थी छे, अदृष्ट अनित्य छे; माटे जीवत्व अनित्य छे" एम कहेनारने कहे छे के नृसिंहादिना शरीरने विष्णुस्वामीआदिना मतमां नित्य मान्यु छे माटे शरीर सर्वदा अनित्य छे एम कही शकाय नहि.

१३ प्रत्यक्षप्रमाण, श्रुति, अने स्मृतिथी नृसिंहनो देह नित्य अने सत् मानवामा आवे छे तो पछी देहमात्र असत् छे एम कहेवु असभवित छे आ प्रमाणे देहनु नित्यत्व सभवित छे तो तेने माटे प्रयत्न करवो सार्थक छे

१४. रसराज=रस मात्रनो राजा=पारो.

१५ रसेश्वरवादीओ आ श्रुति वाक्यगत रस पदनो अर्थ पारो ले छे

१६ अहीं सर्व श्लिष्ट विशेषणो ससारपारने आपनार ब्रम्हने पण लगाडी शकाय

औलुक्यदर्शन.

१. कणादना वैशेषिक दर्शनने आ नाम आपवामां आवे छे. अभिधानचिंतामणिमां औलुक्य (औलूक्य) शब्द वैशेशिकना पर्यायरूपे आप्यो छे.

२. प्रतिकूलवेदनीय दुःखना त्यागनो उपाय ईश्वरसाक्षात्कार छे माटे ते आ शास्त्रनु प्रयोजन छे.

३. विभागनो उद्देशमां समावेश थाय छे. उद्देशनो अर्थज विभाग करीने कहेवु ते छे; माटे उद्देश लक्षण अने परीक्षा त्रणज लेवामां आवे छे.

४. द्रव्य गुण अने कर्म त्रणने सामान्य अथवा जाति छे; सामान्यादिने जाति नथी. आ प्रमाणे कर्मनु द्रव्य अने गुण साथे साम्य होवाथी ते द्रव्य अने गुण पछी उद्देशवामां आवे छे.

५. अधिकरणनो उद्देश पहेलो थवो जोईए अने विशेष समवायनु अधिकरण छे, अर्थात् समवाय संबंधे करीने विशेष अणुआदिमां रहे छे माटे विशेष समवायनी पहेलां आवे छे.

६. भावरूप पदार्थ छ छे. भावरूप एटले जे नकार्थे करीने अनुल्लिखित बुद्धिनो विषय छे ते. जे बुद्धि नकार्थथी उल्लिखित नथी (व्याप्त नथी) ते बुद्धिनो विषय ते भावरूप पदार्थ; नकार्थथी उल्लिखित बुद्धिनो विषय ते अभावरूप.

७. पदार्थ छज छे, छ शिवायनो कोई पदार्थ नथी, आ प्रमाणे कहेवामां छ उपरांतना पदार्थनो व्यवच्छेद (निषेध) करवामा आवे छे. हवे जे पदार्थनो आ प्रमाणे व्यवच्छेद करवामां आवे छे तेवो कोई पदार्थ प्रमित (जणायलो) छे के नहि ? जो छे तो तेनो व्यवच्छेद करवो घटतो नथी; जो नथी तो तेनो व्यवच्छेद (निषेध) करी शकाय नहि, कारण के होय तेनो निषेध करी शकाय, न होय तेनो निषेध करी शकाय नहि; माटे पदार्थ छज छे एम निश्चयपूर्वक कहेवाय नहि.

८. छ उपरांतनो कोई भावरूप पदार्थ छेज नहि, अंधकार छे एम कोई कहे तो ते भावरूप नथी (आगळ जणाववामां आवशे के अंधकार भावरूप नथी) अने शक्तिआदि भावरूप पदार्थ छे तो तेनो समावेश छमांना कोईमां थई जाय छे, माटे ते छ उपरांतना नथी. आ प्रमाणे बताववामां आवे छे माटे पदार्थ छज छे एम सिद्ध थाय छे.

९. द्रव्यनुं लक्षण द्रव्यत्वजाति छे, गुणनुं लक्षण गुणत्वजाति छे, अने कर्मनुं लक्षण कर्मत्वजाति छे. गगन जेवुं नित्य द्रव्य अने कमल जेवुं अनित्य द्रव्य द्रव्यत्वजातिनी व्यक्तिओ होवाथी तेओनी साथे तेनो समवाय संबंध छे. गंध द्रव्यत्वनो गुण न होवाथी गंध साथे द्रव्यत्वनो समवाय संबंध नथी, द्रव्यत्व एटले जे नित्यानित्य द्रव्य साथे समवेत छे अने गंध साथे नित्य समवेत नथी ते. गंध साथे नित्य समवेत नथी एम कहेवानुं प्रयोजन एम छे के लक्षण सत्तामां अतिव्याप्त न थाय (सत्ताने पण लागु न पडे); सत्ता गुण (गंध) नी जाति होवाथी ते गुण साथे नित्य समवेत छे.

१२. सामान्यनो प्रध्वस थतो नथी माटे ते प्रध्वसाभावनुं प्रतियोगी नथी. जेनो प्रध्वसाभाव थाय ते प्रध्वंसाभावनु प्रतियोगी. आकाश काल इत्यादिनो पण प्रध्वस थतो नथी माटे तेमनो व्यवच्छेद करवाने 'अनेक साथे समवेत' कह्यु छे.

१३. विशेषने जाति होती नथी, कारण के तेओ अनत छे अने एक बीजाथी जुदा छे विशेष नित्य द्रव्य साथे अने कार्यद्रव्यना परमाणु जेओ नित्य छे ते साथे समवाय सबधमा छे. पृथ्वीनो परमाणु वायुनो परमाणु नथी ए आपणे विशेषथी जाणीए छीए, माटे विशेष अन्योन्याभावनो विरोधी कहेवाय छे आ प्रकारना विशेषनो स्वीकार करवामां आवे छे माटे आ दर्शन वैशेषिक कहेवाय छे.

१४. समवाय कोईनी साथे समवेत सबधमा नथी, सयोगने समवायमा फेर ए के सयोग (गुण होवाथी) गुणत्वजाति साथे समवेत छे

१५ पृथ्वीने विषे रूपादि पाक (उष्मा) थी उत्पन्न थाय छे.

१६. जाति अने व्यक्ति अयुतसिद्ध होवाथी बनेनी वच्चे सम वाय सबध छे. आ प्रमाणे सरित्सागर अने अप्त्वनो समवाय समजवो

१७. ज्वलन=अग्नि सुवर्ण ए भौम तेजस् गणाय छे

१८. त्वगिन्द्रिय ए एक सर्वशरीरवर्ती वायुरूप आच्छादन छे.

१९ आकाश एक छे माटे तेने आकाशत्व जाति होती नथी, कारण के जाति हमेश एक करता वधारे साथे समवाय सबधमा होवी जोईए. एज प्रमाणे दिक् अने कालनु पण समजवु

२०. सयोगे करीने अजन्य एवो जे जन्य विशेष गुण ते शब्द छे आकाशनु शब्द साथे समानाधिकरण मानवामा आवे छे शब्द आ आकाशमानवृत्ति होवाथी ते आकाशनो विशेष गुण छे न्यायवाळा शब्दने जन्य (उत्पन्न) माने छे. अने तेथी तेने अनित्य कहे छे आत्मानु ज्ञान सयोगजन्य होवाथी (मनस् आत्मा अने इंद्रियना सयोगथी जन्य) होवाथी तेना व्यवच्छेदने माटे 'सयोगे करीने अजन्य' ए पद मुक्यु छे.

२१ पर (दूर) व्यवहारनु कारण ते परत्व. परत्व बे प्रकारनु छे, दिक्कृत अने कालकृत. दिक् साथे असमवेत परत्व ते कालकृत परत्व

(बे गाउ, चार गाउ एम नहि पण छमास पछी, बे वर्ष पछी, इत्यादि प्रकारनु परत्व) कालकृत परत्वनु असमवायी कारण ते कालगत कोई पदार्थ साथेनो सयोग छे छ मास पछी एम जे गणत्री थाय छे ते अमुक पदार्थ अने कालना सयोगथी आरभीने थाय छे. आ सयोगनुं अधिकरण ते काल छे. दिक्कृत नहि (पण कालकृत) एवु जे परत्व तेना असमवायी कारणनु अधिकरण विभु द्रव्य ते काल

२२. काल, दिक् अने मनसूने विशेष गुण नथी, ' जेने विशेष गुण नथी एवु द्रव्य ' ते काल दिक् अने मनसूनु लक्षण थाय परतु मनस् अणु होवाथी ते विभु नथी माटे ' जेने विशेष गुण नथी एवु विभु द्रव्य ' ते काल अने दिक्नु लक्षण थाय. ' काल व्यतिरिक्त विशेषगुण वगर नु विभु द्रव्य ' ते दिक्नुज लक्षण थाय.

२३ आकाश, काल, दिक् अने आत्मा ए चार अमूर्त द्रव्य कहेवाय छे, तेमा आकाश काल अने दिक्ने जाति नथी माटे अमूर्त (द्रव्य) समवेत द्रव्यत्वापरजाति ते आत्मत्व.

२४ मनस् अणु छे पण बीजा अणुनी पेठे ते कोई पण पदार्थनु समवायी कारण नथी माटे आ लक्षण तेनो विशेष धर्म जणावे छे

अनित्य छे तेमां जे एकत्व कहेवामां आवे छे ते अनित्य छे. एक करता वधारे पदार्थ जोतां मानसव्यापारथी प्रत्येक पदार्थ 'आ एक छे' 'आ एक छे' एम भिन्नभिन्न लेवाय छे अने विचारथी संकलित थतां 'आ पदार्थो बे छे' 'त्रण छे' एम आपणे लईए छीए तथा कहीए छीए. प्रथम इंद्रिय अने पदार्थनो योग थाय छे. पछी पदार्थमां जे एकत्व रहेलुं छे तेनु ज्ञान थाय छे. एकत्वना ज्ञानथी अपेक्षाबुद्धि उत्पन्न थाय छे, आ अपेक्षाबुद्धिथी द्वित्वजातिनुं ज्ञान थाय छे, अने पछी बे पदार्थमां रहेला द्वित्व गुणनु ज्ञान थाय छे. आ पछी द्वित्वनो संस्कार थाय छे. संस्कार एटले आ स्थळे 'बुद्धिमां आरूढ थयलो विचार.'

३१. उपर जे कह्युं तेज अहीं पण बीजा शब्दमां कहेवामां आवे छे. उभयगोचर मति ते अपेक्षाबुद्धि. द्वित्वनुं ज्ञान, द्वित्वनी प्रमिति, द्वित्वनी प्रमा, अने बे द्रव्य छे एवी बुद्धि ए शब्दो अनुक्रमे द्वित्वनी उत्पत्ति, द्वित्वजातिनु ज्ञान, द्वित्व गुणनुं ज्ञान, अने द्वित्वनो संस्कार ए शब्दोने माटे छे.

३२. द्वित्वादिने उपर अपेक्षाबुद्धिजन्य कह्यां ते सप्रमाण सिद्ध करवामां आवे छे. उदयनाचार्यनुं मत आ प्रमाणे छेः—द्वित्वादि अने अपेक्षाबुद्धि ए बे वच्चे कार्यकारणसंबध छे, कारण के संयोग पछी तरतज जेम शब्द उत्पन्न थाय छे तेम अपेक्षाबुद्धि पछी लागलुंज द्वित्वादिनु ज्ञान उत्पन्न थाय छे. आ प्रमाणे अपेक्षाबुद्धि जे द्वित्वादिना ज्ञाननु कारण ठरे छे ते कांतो तेनुं ज्ञापक होय के कांतो जनक होय. (कारण मात्र कांतो ज्ञापक होय के कांतो जनक होय). हवे आपणे 'आ एक छे' 'आ एक छे' एम अपेक्षाबुद्धिथी जाणी शकीए छीए, पण 'आ बे छे' एम साथे अपेक्षाबुध्दिथी जाणी शकता नथी, कारण के बुध्दिनो व्यापार अनेक प्रति संघातें थतो नथी. माटे अपेक्षाबुध्दि द्वित्वादिनी ज्ञापक (जणावनार) नथी पण जनक छे एम सिध्द थयु.

३३. उपरनुंज मत (द्वित्वादि अपेक्षाबुध्दिजन्य छे ए) बीजी रीते कहेवामां आवे छेः—अपेक्षाबुध्दिनो विषय बे अथवा वधारे एकत्व छे. द्वित्वादिनो आश्रय एक नथी पण अनेक छे. माटे अपेक्षाबुध्दि द्वित्वादिने जणावे ए असंभवित छे. माटे अपेक्षाबुध्दि द्वित्वादिनी ज्ञापक नथी पण जनक छे.

३४. वैशेषिको द्वित्वादिने अपेक्षाबुध्दिजन्य केवी रीते माने छे ते सिध्द कर्या पछी द्वित्वादिना निवृत्तिक्रमनु निरूपण करवामां आवे छे.

(१) अपेक्षाबुध्दिथी द्वित्वनी उत्पत्ति थती वखतेज एकत्व—सामान्य—ना ज्ञाननी निवृत्ति थाय छे.

(२) द्वित्वोत्पत्ति (=द्वित्वसामान्यनु ज्ञान) थी द्वित्वगुणनु ज्ञान थती वखतेज अपेक्षाबुध्दिनी निवृत्ति थाय छे.

(३) अपेक्षाबुध्दिनी निवृत्तिथी द्रव्यबुध्दि थती वखतेज द्वित्वगुणनी निवृत्ति थाय छे.

(४) द्रव्यबुध्दिथी संस्कारोत्पत्ति थती वखतेज द्वित्व गुणनी निवृत्ति थाय छे.

(५) संस्कारथी द्रव्यबुध्दिनी निवृत्ति थाय छे.

३५. उपर जे कह्यु तेज अहीं पण कह्यु छे.

३६. आकाशनी पेठे आत्मा पण विभु छे. आकाशनो विशेष गुण शब्द छे अने आत्मानो विशेष गुण बुध्दि छे बुध्दि अने शब्द बने अनित्य छे. आ प्रमाणे बुध्दि अनित्य होवाथी तेना उत्तर कार्यथी ते नाशने पामे छे, माटे एक बुध्दि बीजी बुध्दिथी नाश पामे छे एम सिध्द थाय छे.

३७. द्वित्वना आश्रयना नाशथी द्वित्वनी निवृत्ति थाय छे तेमज कर्म अने आश्रयनाश उभयथी पण द्वित्वनी निवृत्ति थाय छे.

३९. पाकजोत्पत्ति ए जे वैशेषिकोनुं बीजु मत ते अत्र आपवामां आवे छे—ज्यारे घटने पकववामा आवे छे त्यारे श्याम घट (द्व्यणुकादिना क्रमे करीने) नष्ट थई जाय छे. पछी पाक (उष्मा) ने लीधे विभिन्न थयलो अणुओमां रक्त वर्ण उत्पन्न थाय छे. पछी तेओनो द्व्यणुकादि योग थई नवो घट उत्पन्न थाय छे. आ क्रिया एटली बधी शीघ्र थाय छे के संयोग विभाग प्रत्यक्ष थता नथी. आ प्रक्रिया पीलुपाकप्रक्रिया कहेवाय छे.

४०. न्यायवाळाओने संमत एवी पीठरपाक प्रक्रियाने आधारे उष्मा द्व्यणुकादिनो नाश नहि करतां तेमां प्रवेश करे छे, अने घटनो नाश कर्या वगर तेनो रंग बदली नाखे छे

५१. शब्द आकाशमां रहे छे. आकाश प्रत्यक्ष नथी पण शब्दाभावनुं प्रत्यक्ष ज्ञान आपणने थाय छे (जेम के धूम पडती बंध थई गई). माटे अभावनी प्रतीति थवामां तेना अधिकरणनु ज्ञान होवु जोईए एवो कई नियम नथी.

५२. द्रव्यादिनी निष्पत्ति जे रीते थाय छे ते रीते वस्तुनी थती नथी माटे ते अभाव छे.

५३. मूलमां 'प्रत्ययवेद्य' पाठ छे पण प्रोफेसर कावेलने आधारे में प्रत्यक्षवेद्य पाठ राख्यो छे.

५४. प्रतियोगीना प्रत्यक्षादिनो निषेध करवाथी अभावज्ञान थाय छे माटे ते निषेधमुखप्रमाणे कराने गम्य छे एम कहेवाय छे.

५५. समवायने समवाय लेतां अनवस्था आवे, अभावनो कोई साथे संबंध न होवाथी नित्य संबंध एवो जे समवाय ते अभावने होय नहि. आ प्रमाणे 'जेने समवाय नथी' ए लक्षण समवाय अने अभाव बेनु छे माटे जेने समवाय नथी अने जे समवाय नथी' ए अभावनुं लक्षण थयुं.

६०. दुखनो अत्यंतोच्छेद ते मोक्ष एम मोक्षनु लक्षण वैशेषिको माने छे. उच्छेद प्रध्वंसाभाव होवाथी, मोक्ष अभावरूप छे तो पण ते परम पुरुषार्थ छे. माटे अभाव पुरुषार्थने माटे उपयोगी छे एम सिद्ध थयु.

अक्षपाददर्शन.

१. गौतमना न्यायदर्शनने अक्षपाददर्शन कहे छे. अक्षपाद, अक्षचरण, इत्यादि शब्द गौतमने माटे वपराय छे.

२ नि श्रेयस एटले दु खनो अत्यन्तोच्छेद, तत्त्वज्ञान ए तेनी प्राप्तिनु साधन छे वात्स्यायन मुनि पोताना न्यायदर्शनना भाष्यमा प्रथम सूत्रमा आवता "नि श्रेयसाधिगम" पदनो अर्थ "अपवर्गप्राप्ति" आपे छे अने ते तत्त्वज्ञानथी थाय छे एम कहे छे अपवर्गनु लक्षण पृष्ठ १४२ मा आप्यु छे. (जुओ विवरण. १७.)

३. चक्षुरादि प्रमाणनां साधन छे. प्रमाणनो आश्रय आत्मा छे. प्रमाएकरीने व्याप्त ते प्रमाण" एटलु लक्षण करतां विषय पण प्रमाथी व्याप्त होवाथी तेमा अतिव्याप्ति आवे. परतु ते (विषय) साधन अने आश्रयथी व्यतिरिक्त होवाथी "साधन अने आश्रयथी अव्यतिरिक्त होईने जे प्रमाएकरीने व्याप्त होय ते प्रमाण" ए प्रमाणनु यथार्थ लक्षण थाय.

४. ५. प्रमा (यथार्थ ज्ञान)नु करण ते प्रमाण प्रमाणनो भाव ते प्रामाण्य. ईश्वरनु प्रामाण्य छे एटले ईश्वर प्रमाण—यथार्थ ज्ञाननु करण छे. करणनो अर्थ व्यापारवत् कारण छे. वृक्ष कापवामा कुठारनु उचे नीचे थवु ए व्यापार छे अने व्यापारयुक्त कारण जे कुठार ते वृक्षच्छेदनु करण छे. न्यायदर्शनना द्वितीयाध्यायना ६७ सूत्रमा वेदनु प्रामाण्य—प्रमाकरणत्व—सिद्ध करवामा आवे छे वेद आप्तवाक्य छे, अने जे आप्तनु ते वाक्य छे ते प्रमाण (यथार्थज्ञाननु कारण) छे आ प्रमाणे आ दर्शनमा ईश्वरने यथार्थ ज्ञाननु कारण अथवा प्रमाण मानवामा आवे छे हवे आपणे उपर आपेला प्रमाणना लक्षणथी जोईए के उक्त लक्षण ईश्वरने केवीरिते लगावी शकाय. न्यायशास्त्रमा ईश्वरने सर्वनो कर्ता मानवामा आवे छे. कर्ताने जे कार्यनो ते कर्ता होय तेना द्रव्यनु यथार्थ ज्ञान होवु जोईए, अन्यथा कार्यनिष्पत्ति सभवे नहि. ईश्वर सर्वनो कर्ता छे, माटे ते सर्वज्ञ छे. आ प्रमाणे सर्वज्ञान—प्रमा—थी ईश्वर व्याप्त होवाथी

तेमज ते प्रमानो आश्रय होवाथी ते प्रमाण छे एम कही शकाय. ज्ञान ईश्वरनो गुण होवाथी ईश्वर ज्ञाननो आश्रय छे. वळी ईश्वर ज्ञानना साधनथी पण व्यतिरिक्त नथी. माटे आ दर्शन प्रमाणे ईश्वर प्रमाण छे. आ (ईश्वर प्रमाण छे ए) सिद्धान्त केवल नैयायिकोनो होवाथी ते तेओनो प्रतितन्त्र सिद्ध सिद्धान्त छे. जुओ विवरण. ८.

६. प्रमाणत्व अथवा प्रामाण्यनुं स्वरूप उदयनाचार्य आ प्रमाणे बांधे छेः—पदार्थने सम्यग्रीतिए अने संपूर्ण रीतिए समजवो ते मिति अथवा सम्यग् ज्ञान छे. जेनामां मिति छे–जे सम्यक् जाणे छे–ते प्रमाता छे. प्रमातानो भाव ते प्रमातृता—प्रमाता होवापणुं. जेनामां उक्त प्रमातृतानो अयोग न होय अर्थात् जे उक्त प्रकारनो प्रमाता होय ते प्रमाण कहेवाय. आ प्रमाणे ईश्वर सर्वज्ञ होवाथी ते प्रमाण छे. अर्थात् तेनुं प्रामाण्य मानवामां आवे छे.

७. जे सर्व वस्तुओने यथाक्रम संशयविपर्ययरहित जाणे छे ते शिव प्रमाण छे एम आ श्लोकनो भाव छे.

८. तंत्र एटले शास्त्र अथवा इतरेतर अभिसंबद्ध अर्थसमूहनो उपदेश. सर्व तंत्रने अविरुद्ध होय एवो पोताना तंत्रमां लीधेलो सिद्धान्त ते सर्वतंत्र सिद्धान्त. पोताने समान होय एवां तन्त्रोमां सिद्ध अने पोताथी विरुद्ध तंत्रोमां असिद्ध एवो जे सिद्धान्त ते प्रतितंत्र सिद्धान्त.

९. साध्यनो निर्देश ते प्रतिज्ञा; जेमके "पर्वत वन्हिमान् छे" इत्यादि. उदाहरण साथे साधर्म्य अथवा वैधर्म्य होवाथी जे साध्यनुं साधन ते हेतु; जेमके "धूमवत्त्व" अहीं धूमवत्व ए महानस साथेना साधर्म्यथी पर्वतना वन्हिमत्त्वनुं साधन छे. शब्द अनित्य छे, उत्पत्तिधर्मकत्वने लीधे. अहीं आत्मादिनुं उदाहरण लईए तो उत्पत्तिधर्मकत्वनुं ते साथे वैधर्म्य होवाथी ते शब्दना अनित्यत्वनुं साधन छे माटे उत्पत्तिधर्मकत्व (उत्पत्ति छे धर्म जेनो ते पणुं) ए हेतु छे. साध्य साथेना साधर्म्यथी साध्यनो धर्मभाव जेने विषे होय तेवु जे दृष्टान्त ते उदाहरण. पर्वत वन्हिमान् छे; धूमथी; *ज्यां ज्यां धूम होय त्यां त्यां वन्हि होय,* जेमके महानसादिमां. अहीं महानसना वन्हिमत्त्वसाथेना साधर्म्यथी वन्हिधर्म जे धूम तेनो भाव तेमां रहेलो छे अने ते दृष्टान्तरूपे वपराय छे माटे ते उदाहरण छे. उदाहरण विपरीत पण होई शके, जेमके शब्द

अनित्य छे, उत्पत्तिधर्मकत्वने लीधे, जे जे अनुत्पत्तिधर्मक होय ते ते नित्य होय. जेमके आत्मादि. अहीं आत्मादि साध्य साथेना वैधर्म्यथी साध्यधर्मनो अभाव तेने विषे छे अने ते दृशन्त रूपे वापरवामा आवे छे पर्वत वन्हिमान् छे धूमथी, जे जे धूमवान् होय ते ते वन्हिमान् होय, जेमके महानसादि, आ (पर्वत) तेवो (महानस जेवो) छे, अथवा तेवो नथी एम जे उदाहरणनी अपेक्षाए कहेवामा आवे ते उपनय. अने " माटे ते (पर्वत) तेवो (वन्हिमान्) छे " एम जे उपसहार करवामा आवे ते निगमन कहेवाय.

१०. व्याप्यना आक्षेपे करीने व्यापकनो आरोप ते तर्क. एक माणस बीजाने पर्वत उपरथी धूम नीकळतो जोईने कहेशे के "पर्वत वन्हिमान् छे धूमने लीधे " बीजो माणस कहेशे के " हा, पर्वतमाथी धूम नीकळे छे पण ते वन्हिमान् नथी " त्यारे पहेलो माणस तेने कहेशे के " जो वन्हि न होय तो धूम पण न होय ". आप्रमाणे कहेवामा ते व्याप्यना आरोपे करीने व्यापकनो आरोप करे छे वन्ह्यभाव व्याप्य छे अने धूमाभाव व्यापक छे, कारण के आपणाथी निर्बाधित कही शकाय छे के ज्या ज्या वन्ह्यभाव होय त्या त्या धूमाभाव होय. आ प्रमाणे वन्ह्यभाव जे व्याप्य छे ते लईने धूमाभाव जे व्यापक छे तेनो आरोप करवामा आवे छे. आ प्रमाणे करवाने तर्क कहे छे जो पेलो बीजो माणस धूम स्वीकारतो होय पण वन्हि स्वीकारतो न होय तो तेने तर्कथी तरतज जणावी शकाय छे के धूम स्वीकारवो पण कठिन छे भापापरिच्छेदमा तर्कनो उपयोग आप्रमाणे आपे छे.—" हेतुर्व्याप्तिग्रहे तर्कः क्वचिच्छंकानिवर्तकः ॥१३७॥ तर्क व्याप्तिनु ग्रहण करवामां हेतु छे तेमज कोई कोईवार ते शकानी निवृत्ति करावे छे.

छे, अस्पर्शत्वने लीधे, जे जे स्पर्शवान् होय ते ते अनित्य होय, जेमके घट, शब्द स्पर्शवान् नथी. माटे ते नित्य छे " आ अनुमानमां अस्पर्शत्व हेतु छे, आ हेतु सत् नथी, कारण के " जे जे स्पर्शवान् होय ते ते अनित्य होय " एम कहेवु खोटु छे अणु स्पर्शवान् छे पण ते नित्य छे. तेमज जे जे अस्पर्श होय ते ते नित्य होय एम कहेवु पण खोटु छे, कारण के बुद्धि अस्पर्श छे तो पण ते अनित्य छे. माटे उपरनो हेतु व्यभिचार (अव्यवस्था) युक्त होवाथी ते सव्यभिचार हेत्वाभास कहेवाय छे सव्यभिचारनु बीजु नाम अनैकान्तिक छे.

विरुद्ध —जे हेतु अभ्युपगत सिद्धान्तनो विरोधी होय ते विरुद्ध हेत्वाभास कहेवाय, जेमके शब्द नित्य छे, कृतकत्व (उत्पन्न थयलो होवा) थी, हवे उत्पन्न थयलु होय ते नित्य होयज नहि, माटे आ हेतु पोताना सिद्धान्तनो विरोधी होवाथी ते विरुद्ध हेत्वाभास कहेवाय छे.

प्रकरणसम —जेनाथी प्रकरणनी चिंता रहे एवो निर्णयने माटे प्रयुक्त हेतु ते प्रकरणसम हेत्वाभास प्रकरणसम हेतु जोके निर्णयने माटे प्रयोज्यो होय छे तो पण ते उभय पक्षने सम होवाथी निर्णय उत्पन्न करवाने अशक्य होय छे शब्द अनित्य छे, नित्य धर्मनी अनुपलब्धिथी, जे अनुपलभ्यमाननित्यधर्मक होय ते अनित्य होय, जेमके स्थाल्यादि,

साध्यसम —जे हेतु सिद्ध करवानो होवाथी साध्य साथे तेनो कोई अविशेष होय नहि तो ते साध्यसम हेत्वाभास कहेवाय, द्रव्य छाया छे, गतिमत् होवाथी, अहीं गतिमत्त्व हेतु छे पण छाया गतिमती छे के नहि तेतो सिद्ध करवानु छे, माटे जे हेतु पोते असिद्ध होय अने तेथी साध्य जेवो होय ते साध्यसम कहेवाय

अतीतकाल —कालना (अत्यय) अभावे करीने प्रयुक्त हेतु ते अतीतकाल, जेम के शब्द नित्य छे, सयोगव्यग्य होवाथी. हवे भेरी अने दंडना सयोगथी शब्द व्यग्य थाय छे, परतु सयोगनो काल ते शब्दना व्यग्य थवानो काल नथी दूरस्थ मनुष्यने सयोग प्रथम जणाय छे अने पछी शब्दव्यक्ति थाय छे आ प्रमाणे कालातिपात आवे त्यां अतीतकाल हेत्वाभास थाय.

१५. अभिधानव्यत्ययवृत्ति (वाक्छल:):—आ माणवक नव-कंबल छे.अहीं कहेनारनो अभिप्राय एवो छे के नवो छे कबल जेनो ते नव-कबल; पण सांभळनार नव शब्दनी वृत्तिनो व्यत्यय करीने नवनो अर्थ संख्यांक नव समजे छे अने नव छे कांबळा जेने ते नवकबल एम अर्थ लई कहेनारना वचननो प्रतिषेध करे छे के "माणवक नवकबल क्यां छे? ए तो एककबल छे" आ प्रमाणे करवाने वाक्छल (अभिधानव्यत्यय-वृत्तिच्छल) कहे छे.

तात्पर्यव्यत्ययवृत्ति (सामान्यच्छल)—' अहो आ ब्राह्मण विद्याचरणसपन्न छे' एम कोईने कहेतो सांभळी बीजो माणस ए वाक्यनु तात्पर्य ' ब्राह्मणो विद्याचरणसंपन्न छे ' एवुं समजी कहे छे के ' सर्व ब्राह्मण विद्याचरणसपन्न होता नथी, जेमके ' अज्ञ माम्य ब्राह्मण '. आ प्रमाणे कहेनारना तात्पर्यने उलटुं समजी तेनो निषेध करवो ते तात्पर्य-व्यत्ययवृत्ति (सामान्यच्छल) कहेवाय छे.

उपचारव्यत्ययवृत्ति (उपचारच्छल):—लक्षणाथी शब्दप्रयोग कर्यो होय पण तेने कोई शक्त्यनुसार समजी तेनो निषेध करे तो त्यां उपचारव्यत्ययवृत्तिच्छल थाय. ' कोई कहे छे के आंख आवी छे ' तो अन्य कहे छे के, क्यां, हु तो वेज देखु छु ' आ प्रमाणे औपचारिक रीतिए वापरेला वाक्यने अन्य रीतिए समजी तेनो निषेध करवामा आवे ते आ प्रकारनो छल छे.

१६. परार्थानुमानथी अन्यने निश्चय करावाय छे अने निश्चयथी कर्मानुष्ठानादिनो सभव छे, माटे परार्थानुमान एटले न्याय ए आ शास्त्रनो मुख्य विषय होवाथी तेने न्याय एवी सज्ञा आपवामां आवे छे.

१७. आत्यंतिकी दु:खनिवृत्ति एटले एवा रूपमा दु:खनिवृत्ति के दु:खना सजातीयनो तत्स्थानमां पुनः उत्पाद नहि. स्पष्ट रीते कहीए तो दु.खनो निर्मूलध्वस. न्यायवाळा कहे छे के 'स्वसमानाधिकरण दु ख-प्रागभावासमानकालीन दुःखध्वस ते मोक्ष '. एवो दुःखध्वस के जे पो-तानी साथे समानाधिकरण (एकस्थानस्थ) एवा दुःखप्रागभावने असम-कालीन होय. ज्वर आवीने मटी जवो ए पण दुःखध्वंस छे, परंतु आ ज्वरनाश तेनी साथे एकस्थान (मनुष्यदेह) मां रहेला दु.खप्राग-भावनी साथे समकालीन छे, एटले के तेज वखते दु.खप्रागभाव (जे

पछीथी दुःख थनार छे ते) आ ध्वंस थयो ते वखते छे; माटे उक्त प्रकारनो ध्वंस ते मोक्ष नथी. दुःखध्वंस थयो जोईए अने तेज वखते जेनो दुःखध्वंस थयो तेनामां दुःखप्रागभाव पण न होवो जोईए. आ प्रमाणे थाय ते मोक्ष.

१८. सर्वतंत्रसिद्धान्तनु स्वरूप आगळ आपी गया. सर्व शास्त्रोमां अपवर्ग दशामां नीचे जणाव्या प्रमाणे दुःखनिवृत्ति मानवामां आवे छे.

१९. ' आत्मोच्छेद ते मोक्ष ' ए मतमां दुःखनो उच्छेद स्वीकाराय छे. आत्मानो अर्थ (१) ज्ञानसंतान लो तो तेने हमे पण उच्छेद्य मानीए छीए माटे कंई वांधो नथी, (२) ज्ञानसंतानव्यतिरिक्त लो तो ते नित्य होवाथी (क्षणिक नहि, कारण के ज्ञानसंताननो संतानी होवाथी) उच्छेद्य नथी. वळी आत्मा प्रियतम होवाथी तेना उच्छेदने माटे प्रवृत्तिज संभवती नथी.

२०. चार भावनाओथी मोक्ष थाय, पण क्षणिकवाद लेतां एकना एकज मनुष्यमां ए चारे भावनाओ संभवे नहि, माटे मोक्ष (महोदय) पण संभवे नहि. सोपप्लव ज्ञानसंतान एटले क्लेशादियुक्त ज्ञानसंतान. आ स्थिति ते बंध अने तेथी अन्य ते मोक्ष. आ प्रमाणेना लक्षण ठीक छे पण जे बद्ध तेज मुक्त एम कई आ लक्षणोथी नक्की करी शकाय नहि.

२१. आत्माना धर्म अतीन्द्रिय नथी एम न्यायवाळा माने छे. मनमुने ईन्द्रिय माने छे, अने आत्माना धर्म मनोग्राह्य छे एम मानवामां आवे छे.

२२. मोक्षनो अर्थ स्वातंत्र्य लईए अने स्वातंत्र्य एटले ऐश्वर्य समजीए तो ते अघटित छे, कारण के ऐश्वर्यमां तो कोई एक ऐश्वर्यवान् जेवो अथवा तेथी अधिक अन्य थई शके अने तेथी संपूर्णतानो भंग थाय. मोक्ष तो संपूर्ण अने निरतिशय होवो जोईए.

२३. पुरुषप्रकृतिना विवेकनुं ज्ञान जो पुरुषाश्रय होय तो ते थयुं ते पहेलां ते न होतुं एम मानवु पडे छे, अन्यथा मोक्ष नित्य थई जाय छे. आ प्रमाणे मानतां पुरुष प्रथम अमुक धर्मना अभाववाळो अने पछी ते धर्मथीयुक्त एम मानवु पडे छे, परंतु आम करतां पुरुषना कूटस्थत्वनी हानि थाय छे अने तेथी अपसिद्धान्त थाय छे. विवेक-

ज्ञान प्रकृत्याश्रय छे एम मानता प्रथम तो प्रकृति जड छे तेनो ज्ञान आश्रय करे छे एम मानवु एज दुर्घट छे, वळी प्रकृतिनो स्वभाव प्रवृत्ति मानीए तो स्वभावनो नाश नथी थतो माटे प्रवृत्ति निरतर रहे छे अने तेथी उपरम शक्य नथी, जो प्रवृत्तिनो स्वभाव निवृत्ति मानीए तो ससारनो अस्त मानवो पडे, कारण के प्रकृतिनी प्रवृत्ति ते ससार छे.

२४ ज्यारे ज्ञानना सर्व साधनो (चक्षु प्रकाश इत्यादि) होय तो पण कोइ पदार्थनु ज्ञान न थाय तो त्या योग्यानुपलब्धि कहेवाय ईश्वरने जाणवाना सर्व साधनो छे तो पण जणातो नथी माटे ते योग्यानुपलब्धिथी बाधित विषय छे योग्यानुपलब्धिथी बाधित विषयमा पण श्रुतिनो अवकाश मानवामा आवे तो **ग्रावाण प्लवन्ति (पथर तरे छे)** ए श्रुतिवाक्य पण अक्षरश सत्य मानवु जोईए

२५ सुख पण दु खज छे एम अहीं दर्शाव्यु छे

२६ सुखनो दु खमा अतभाव थाय छे एम मानीए अने दु खनो उच्छेद ते मोक्ष मानीए तो मोक्षमा सुखनि निवृत्ति आवी जाय, पण सुखनी प्राप्ति प्रवृत्तिनो हेतु होवाथी जेमा सुखध्वस छे एवा मोक्ष प्रति प्रवृत्ति सभवे नहि

२७ सुख दु खमिश्रित छे एम अहीं स्पष्ट जणावी तेन उच्छेद्य मान्यु छ

२८ ईश्वरनु अस्तित्व सिद्ध करवाने अनुमान लइए तो व्याप्ति ठराववाने हेतु लेवो पडे, पण ईश्वरसमान अन्य कइ पण न होवाथी हेतुनो सभवज नथी न्यायवाळा एम माने छे के श्रुति ईश्वरकृत छे अने तेथी ते अनित्य छे हवे जो श्रुति नित्य होइने ईश्वरनु अस्तित्व जणावनारी मानीए तो ते न्यायसिद्धान्तनी विरुद्ध छे जो श्रुति अनित्य होइने ईश्वरनु अस्तित्व जणावनारी मानीए तो अनित्य होवाथी तेने ईश्वरकृत मानवी पडे, पण आ प्रमाणे मानता श्रुतिनु अस्तित्व ईश्वरथी अने ईश्वरनु अस्तित्व श्रुतथी एम परस्पराश्रय दोष आवे उपमान सादृश्यादिनो बोध करनार होवाथी ईश्वरनु अस्तित्व सिद्ध करवाने ते निरवकाश छे

२९ आ अनुमान सुस्पष्ट छे

३० आकाश घटना प्रत्येक अवयवनो संयोग करीने रहे छे माटे जे अवयवसंयोगी ते सावयव एम मानता निरवयव मानवामां आवता आकाशनो पण तेमां समावेश थई जाय छे तंतुत्वनो प्रत्येक भिन्न भिन्न तंतुसाथे समवाय संबंध छे माटे तंतुत्वनो अवयव (तंतुओ) साथे समवाय संबंध होवाथी ते अवयवसमवायित्व छे, परतु तंतुत्व सावयव नथी माटे सावयवत्वनो अर्थ अवयवसमवायित्व लेवाय नहि

३१ समवेतद्रव्यत्व —समवायसबंधमा रहेनारां द्रव्य ते सम वेत द्रव्य समवेतद्रव्यत्व ए जाति छे अने समवेत द्रव्यो ए व्यक्तिओ छे सावयव एटले जेने समवेतद्रव्यत्व जाति छे ते अर्थात् जेनो समा वेश समवेत द्रव्योना वर्गमा थाय छे ते. समवेत द्रव्य ते सावयव आ प्रमाणे लेता आकाशादिमा अतिव्याप्ति आवती नथी, कारण के आका शादि कोई साथ समवायसंबंधथी रहेता नथी (जेम घट कपालमा सम वायसंबंधथी रहे छ तेम) वळी तंतुत्व द्रव्य नथी माटे ते उपर पण अतिव्याप्ति आवती नथी माटे सावयव एटले समवेतद्रव्य लेवु ठीक छे (जुओ जैनदर्शनविवरण अंक २९ थी त्यां आ मतनु पण खडन कर्यु छे)

३२ जे पदार्थो नित्य छे ते कातो विभु छे के कातो अणु छे. आकाशादि नित्य पदार्थ विभु छ, मनसूआदि नित्य पदार्थ अणु छे आ उभय प्रकारनां महत्त्वनी मध्यगत स्थितिने अवान्तरमहत्त्व नाम आप्यु छे जटला पदार्थो आ मध्य स्थितिना छे ते सर्व कार्य छे नदी पर्वतादि आ प्रमाणे कार्य सिद्ध थाय छे

३३ जगत् कार्य छे, सावयवत्वथी, ए अनुमानमां हेतु असिद्ध नथी एम उपर सावयवत्वनो अर्थ समवेतद्रव्यत्व लईने जणाववामां आव्यु तेमज अवांतरमहत्त्वने हेतु लेवाथी पण जगत्नुं कार्यत्व सिद्ध थाय छे एम बच्चु त्यां पण हेतु असिद्ध नथी 'जेने जेने समवेत द्रव्यत्व होय ते ते कार्य होय, जमके पटादि' 'जे जे अवान्तरम हत्त्व होय ते ते कार्य होय, जेमके मठादि' इत्यादिमां हेतु असिद्ध नथी

३४ विरुद्ध हेत्वाभासनुं लक्षण विवरण १३ मां आप्युं छे बीजुं लक्षण आ प्रमाणे छ —जे हेतु साध्याभावथी व्याप्य होय ते विरुद्ध

होय. शब्द नित्य छे, कृतकत्वथी, अहीं कृतकत्व ए हेतु नित्यत्वा भावथी व्याप्य (जे जे कृतक होय तेते अनित्य होय जेमके घटादि) होवाथी विरुद्ध छे. जगत् कार्य छे, अवान्तरमहत्त्वथी, अहीं साध्य जे कार्यत्व तेनो विपर्यय जे अकार्यत्व तेनाथी हेतु अवान्तरमहत्त्व व्याप्य नथी (जेने अवान्तर महत्त्व होय ते अकार्य होय एम आपणे जोता नथी), अर्थात् हेतु साथे साध्यना विपर्यनी व्याप्ति नथी. माटे आ हेतु विरुद्ध नथी.

३५. हेतु अनैकान्तिक अथवा सव्यभिचार त्यारे होय के ज्यारे तेनी स्वपक्षथी अन्यत्र वृत्ति होय पर्वत वन्हिमान् छे, प्रमेयत्वथी, अहीं प्रमेयत्व ए जे वन्हिमान् नथी एवा सरोवरादिमा रहेलु होवाथी ते अनैकान्तिक हेतु छे. स्वपक्ष एटले जे निश्चित साध्यवान् होय ते जगत् कार्य छे, अवान्तरमहत्त्वथी, अहीं आ हेतु जे जे कार्य नथी एवा कोईमा पण रहेलो नथी माटे ते अनैकान्तिक नथी.

३६ अतीतकाल, कालात्ययापदिष्ट अथवा बाधित हेत्वाभास एटले जे हेतुथी कई पण सिद्ध करवानु छे एवु जे साध्य तेनो अभाव प्रमाणान्तरथी सिद्ध थतो होय अर्थात् ते साध्य प्रमाणान्तरथी बाधित थतु होय ते हेतु बाधित कहेवाय जेमके अग्नि अनुष्ण छे, द्रव्यत्वथी, अहीं द्रव्यत्व हेतु अनुष्णत्व सिद्ध करवाने आप्यो छे, परतु अनुष्णत्वनो अभाव (उष्णत्व) अन्य प्रमाण (स्पर्श) थी सिद्ध थाय छे, अर्थात् स्पर्शथी अनुष्णत्व बाधित थाय छे, माटे ते हेतु बाधित कहेवाय छे जगत् कार्य छे, अवान्तरमहत्त्वथी; एम कहेता जगतनु कार्यत्व कोई पण अन्य प्रमाणथी बाधित थतु नथी. माटे उक्त हेतु बाधित नथी.

३७. जे हेतुथी जे सिद्ध करवानु एवु जे साध्य तेनो अभाव अन्य हेतुथी सिद्ध करी शकाय तो ते हेतु सत्प्रतिपक्ष कहेवाय, जेमके शब्द नित्य छे, शब्दत्वथी, अहीं कोई एम पण कही शके के शब्द अनित्य छे, कार्यत्वथी. माटे आ हेतु सत्प्रतिपक्ष कहेवाय. प्रतिभट एटले आ स्थळे साध्याभावसाधक हेतु. जगत् अकार्य छे एम सिद्ध करवाने बीजो कोई हेतु न होवाथी अवान्तरमहत्त्व ए हेतु सत्प्रतिपक्ष नथी.

३८. कोई कहे के बीजा हेतुथी साध्यनो अभाव सिद्ध थाय छे, जेमके जगत् अकर्तृक छे, शरीरथी अजन्य होवाथी, गगनादिनी पेठे.

•

३९. आ अनुमानमां न्यायवाळा एवो दोष लावे छे के 'पर्वतादि अकर्तृक छे अजन्य होवाथी' तो पछी शरीरादिथी अजन्य कहेवु निरर्थक छे. शरीरथी अजन्य कहेवामां व्याप्यत्वासिद्धि दोष थाय छे.

४०. पूर्वपक्षी दोषनो स्वीकार करी 'शरीरथी' पद पडतु मुकी अजन्यत्वने हेतु ले छे.

४१. अजन्यत्व ए हेतु असिद्ध छे, कारण के पर्वतादि अजन्य छे एम कंई सिद्ध करवामां आवतुं नथी.

४२. तर्कनुं स्वरूप आ दर्शनना विवरण १० मां आप्यु छे. ज्यां अनुकूल तर्क थई शके त्यां हेतु सोपाधिक होय एवु जरा पण भय रहेतु नथी.

४३. कर्ता कारकनो प्रयोक्ता छे; आ प्रमाणे कारक कर्ता उपर आधार राखे छे. हवे जो कर्ता नथी एम कहीए तो कारको पण निरर्थक थई जशे अने तेथी अकस्मात् कार्योत्पत्ति मानवी पडशे

४४. हेतु अनुकूल तर्कथी वधारे दृढ थाय तो उपाधिनी शंका निवृत्त थई जाय छे.

४८. ४९. आ सुस्पष्ट छे.

५०. ईश्वरनी जगत् निर्माण करवामां प्रवृत्ति कारुण्यथी लईए तो कारुण्य सर्वे उपर समान होवुं जोईए अने तेथी वैषम्य अनुपपन्न थाय छे. पण सृज्य प्राणीओनां कर्मने अनुसार तेमनी सृष्टि छे एम मानतां वैषम्य उपपन्न ठरे छे. कर्म उपर अपेक्षा राखनार ईश्वर स्वतंत्र केहेवाय नहि, एम केहेनारने कहे छे के कर्म सृष्टिनिर्माणमां अंगीभूत होवाथी ते ईश्वरना स्वातंत्र्यनो बाध करतुं नथी; जेम शरीरनी गमनादि क्रियाओनो आधार पग उपर होय छे, माटे पगथी शरीरनी स्वतंत्रता बाधित थती नथी, उलटी शरीरनी इच्छा पार पडवामां ते सहायरूप रहे छे. आगमथी ईश्वर सिद्ध थाय छे एम लेतां परस्पराश्रय दोष आववानु केहेवामां आवे छे तेनुं समाधान आ प्रमाणे थाय छेः परस्पराश्रय दोष उभयनी परस्परथी उत्पत्ति मानतां आवे छे के उभयनी परस्परथी ज्ञप्ति (ज्ञान) मानतां आवे छे? जो उत्पत्ति मानतां एम, कहो तो ते निरर्थक छे, कारण के वेद ईश्वरथी उत्पन्न थया छे पण ईश्वरतो नित्यज छे. जो ज्ञप्तिमां परस्पराश्रय दोष आवे छे एम कहो तो ते पण खोटुं छे, कारण के ईश्वरनी ज्ञप्ति वेदथी छे पण वेदनी ज्ञप्ति तो कोई अन्य अध्यापक प्रतिथी पण थई शके; माटे परस्पराश्रय जेवुं कंई छेज नहि. वेद (आगम) अनित्य छे एम, योगीओने प्रत्यक्ष सिद्ध छे.

जैमिनिदर्शन.

आ दर्शन पूर्वमीमांसाने नामे ओळखाय छे.

१. अष्टवर्षं ब्राह्मणमुपनयीत । तमध्यापयीत । "आठ-वर्षना ब्राह्मण (ब्राह्मणना बालक) ने उपनयन आपवुं, तेने अध्ययन करावुं" इत्यादि प्रकारनां (आ प्रमाणे करो एम विध्यर्थमां कहेवामां आवतां) श्रुति वाक्यो विधि छे.

पूर्णाहुत्या सर्वान् कामानवाप्नोति (पूर्णाहुतिथी सर्व कामनाओ सिद्ध थाय छे) ए प्रकारनां स्तुत्यादिरूप वाक्यो अर्थवाद छे. पूर्णाहुति-ने माटे विधिवाक्य न होय तो पण आ प्रकारे तेनी प्रशंसा करी होय ते उपरथी तेनी कर्तव्यता सिद्ध थाय ते अर्थवादना प्रामाण्यथी थाय छे.

मन्वादिनां वाक्य ते स्मृति छे. जे स्मृति वेदमूला होय ते प्रमाण छे एम मीमांसकोनो सिद्धान्त छे. अमुक स्मृति वेदमूला छे ते ते वेदने अनुकूल छे ते उपरथी समजाय छे. विश्वजित् आदि नाम छे. वि-श्वजित्नी कर्तव्यता विधि अर्थवाद के स्मृतिथी जणाती नथी तो पण "नाम" ना प्रामाण्यथी तेनी सिद्धि छे.

यन्ति " आथी एम समजाय छे के एक एक चमसमा दश दश ब्राह्मणे सोमभक्षण करवु आ प्रमाणे ब्राह्मणने चमसग्रहण करवानु सिद्ध थतां क्षत्रिय (यजमान) नु चमस पण ते शत ब्राह्मणमाथी दशे लेवु आ प्रमाणे जे सिद्ध करवामा आवे ते प्रतिपत्तिकर्म अनारभ्याधीत एटले कइ पण आरभ कर्या वगर कहेवामा आवतु वाक्य, जेवु के " यस्यपर्णमयी जुहूर्भवति न स पाप श्लोक शृणोति "

४. यजननो मुख्य अथवा गौण भाग केटले अशे प्रयोजक छे तेनो विचार ते प्रधानप्रयोजकत्व अने अप्रधानप्रयोजकत्वमा आवे छे पर्ण (पलाश) वृक्षनी जुहू (पात्रविशेष) बनाववाना फलनो निश्चय ते जुहूपर्णतादिफल

५ श्रुति अथ के पाठथी क्रमनियम थाय छे एम श्रुत्यादि क्रमना प्रकरणमा आवे छे क्रमविशेष — वाजपेयमा सप्तदश प्राजापत्य पशुनु आलभन करवानु विधान छे, आ पशुओने उपाकरण नियोजनादि सस्कार करवाना छे त्या प्रथम उपाकरण सस्कार कोने करवो तेनो कई विहित नियम न होवाथी इच्छानुसार प्रथा गमे तेने ते सस्कार करवो, पछी बीजाने करवो, इत्यादि, हवे यूपे नियोजन करवामा पण कई क्रमनियम न होवाथी गमे ते पशुनु नियोजन प्रथम करवु एम जो कोई कहे तो तेने माटे क्रमविशेष ठराववामां आवे छे के जे क्रम उपाकरणमा लीधो होय तेज नियोजनमा पण लेवो. ' एकादश प्रयाजान् यजति ' एवु वाक्य छे हवे विधि पच प्रयाजनो छे त्या पच प्रयाजमांना प्रत्येकनु एकादशवार ग्रहण करवु के शी रीतिए ? अहीं एवो नियम ठरायवामा आवे छे के पच प्रयाजमाना प्रत्येकनु बे बे वार ग्रहण करवु अने छेवा एक प्रयाजनु श्रीजीवार आवर्तन करवु आ प्रमाणे करवु ते धर्मवर्धन छे. अदाभ्यग्रहण करीने सोमनु यजन करवाना विधानमां प्रत्येक सवनमां अदाभ्यनु आवर्तन करवु के नहि ? त्या एम निश्चय करवामां आवे छे के ' सोमयाग फलवान छे, सवन फलवान् नथी' अने अदाभ्यग्रहणनु वाक्य अनारभ्याधित छे माटे तेनो सबध जे फलवान् छे ते साथे घटे छे, तेथी अदाभ्यनुं आवर्तन करवु एम जे निश्चय करवामां आवे ते कर्मावर्धन छे

६. द्रव्यादि जेवा यज्ञोपयोगी अर्थनो लोप (विनाश) थतां शु करवुं तेनो विचार ते अर्थलोपनविचार छे

७ अतिदेश –अन्यत्र वै प्रणीताया' कृत्स्नाया धर्मसततेः ।
अन्यत्र कार्यत' प्राप्तिरतिदेशोऽभिधीयते ॥

एक स्थानमा ठरावेली सकल धर्मसततिनी कार्यवशात् अन्यत्र प्राप्ति ते अतिदेश.

८. पाछमा अध्यायमा प्रत्यक्ष वचनथी थता अतिदेशनो अने आठमामा लिंगथी थता अतिदेशनो विचार आवे छे.

९ ऊह —प्रकृतस्थानपतितपदार्थान्तरकार्यतः ।
ऊह प्रयोगो विकृत ऊह्यमानतयोदित ॥

दर्श अने पूर्णमास ए बेनाज सर्व विधिनो श्रुत्यादिमा उपदेश छे अने तेथी अन्य स्थले सर्व इतिकर्तव्यतानो अहींथी अतिदेश करवामा आवे छे ज्याथी अतिदेश करवामा आवे ते प्रकृति अने ज्या अतिदेश करवामा आवे ते विकृति प्रकृतिगत प्रयोगने विकृतिमा लई जवो ते ऊह छे व्रीहीनवहन्ति (डांगर खांडे छे) ए वाक्य उपरथी नैवारश्चरुर्भवति ए वाक्यथी कहेवामा आवता नवारचरुने माटे नीवारनु पण अवहनन करवु एम जे प्रकृतिगत अवहनन तेने विकृतिमा लई जवु ते ऊह छे

१० बाधहेतु द्वारलोप —स्वयकृता वेदिर्भवति ए वाक्यमा वेदिनिष्पादनरूप द्वारना लोपथी उद्धनन आदि निष्पादकनो बाध छे

११. तन्त्र एटले जने एकवार प्रवर्तित कर्याथी बहुने उपकार थाय ते, बहु ब्राम्हणनी मध्ये एक दीप करवाथी सर्वने उपकार थाय छे, अनुलेपन भोजनादिनी पेठे प्रतिपुरुषे आवृत्तिनी अपेक्षा रहेती नथी अथवा उभयना उद्देशे करीने एकवार अनुष्ठान ते तन्त्र

११ एक प्रयोगमा देशादिनो तन्त्रे करीने सबध ते तन्त्राधाप

१२. प्रसग —अन्यना उद्देशे करीने अन्यनु सहानुष्ठान ते प्रसग आग्नीषोमीय पशुमा जे विधिप्राप्त प्रयाजादि छे तेनो पशुपुरोडाशमा उपकार ते प्रसग समुच्चय एटले सर्वनु ग्रहण अने विकल्प एटले गमे ते एकनु ग्रहण.

१३ पूर्वपक्ष टुकामा आ प्रमाणे छे –जैमिनिना धर्मविचारशास्त्रनो आरभ न करवो जोईए, कारण के तेने माटे विधि नथी वेदनु अध्य-

छे एम सिद्ध थयु. हवे आ स्मृतिवाक्यमा अध्यापननो विधि छे, परतु अध्ययन वगर अध्यापननी सिद्धि न होवाथी अध्ययनने माटे विधि न होय तो पण ते प्राप्त छे आ प्रमाणे अध्ययन प्राप्त थाय छे तो वेदो ध्येतव्य ए पृथगध्ययनविधिनु प्रयोजन रहेतु नथी.

१९ हवे विचारशास्त्रने माटे विधि नथी तेथी तेनो आरभ न करवो जोईए एम पूर्वपक्षनो सिद्धान्त (आ स्थळे अभिप्राय) छे सिद्धान्ती कहे छे के जेम अध्यापनना विधिथी अध्ययननो विधि प्राप्त छे तेम अध्यापनना विधिथी विचारशास्त्रना अध्ययननो विधि पण प्राप्त छे आ प्रमाणे कहेनारने पूर्वपक्षी कहे छे के अध्यापनमा फल अर्थबोध लेवु के पाठ मात्र लेवु? शिष्यनी मूर्खताथी अर्थबोध न थाय तो तेथी अध्यापननो विधि निष्फल थाय माटे अर्थबोध ए कई अध्यापननु फल लेवाय नहि जो पाठ मात्रने अध्यापननु फल लईए तो विचारशास्त्रनु प्रयोजन नथी

२०. सिद्धान्ती कहे छे के अर्थावबोध अध्यापननु प्रयोजन नथी, तो पण ते अध्यापननु आवश्यक परिणाम छे अने तेथी ते परिणाम लाववा माटे विचारशास्त्रनी आवश्यकता छे.

२१ शब्दथी कहेवामा आवतो अर्थ ते वेदनो अर्थ नथी पण ते लाक्षणिक छे माता बालकने कहेछे के विष खा पण अमुकने घेर खाईश नहि तो त्यां कई माताना वाक्यनो अर्थ विष खावु एवो लेवानो नथी आ प्रमाणे जोता वेदाग अने विचारशास्त्र ए सर्व वेदनो अक्षरश अर्थ जणावनार होवाथी अने वेदनो अर्थ तो लाक्षणिक होवाथी उक्त शास्त्रो निष्प्रयोजन छे

लतो संप्रदाय वचमाथी विच्छिन्न थई गयो होय तो कर्तानुं स्मरण न रहे, पण अहीं कंई ए प्रमाणे छे नहि. माटे वेदनो कोई कर्ता न होवाथी ते अपौरुषेय छे

नैयायिको कहे छे के आ प्रमाणे मानवुं खोटुं छे संप्रदायनो प्रलय वखते विच्छेद छे. (वेद व्यतिरिक्त सर्वनो प्रलय थाय छे एम मानवामा आवे छे.) आथी पण कर्तानुं स्मरण न होई शके. वळी कर्तानुं स्मरण नथी एम पण कहेवुं न्याय विरुद्ध छे कर्ता अनुमानथी प्रतीत थाय छे माटे ते छे स्मरण तो कोई अमुक वाक्यना कर्तानुं अमुकने न पण होय, तेथी शुं ते वाक्य अपौरुषेय कहेवाय ? सर्वने जो स्मरण न होय तो कदाच एम कही शकाय, पण सर्वने स्मरण नथी एम सर्वज्ञ योगिव्यतिरिक्त अन्यथी जाणी शकाय नहि. माटे वेद पौरुषेय छे.

रखोज, नहि तो भूसी नाखेलो गकार पाछो लखता आपणे तेने ओळखी शकीए नहि. आ प्रमाणे गकार नित्य छे.

२८. नैयायिको कहे छे के गकार व्यक्तिरूप छे ते तो अनित्य छे, पण गत्वजाति (सामान्य) नित्य होवाथी गकार लखता आपणने तेनी प्रत्यभिज्ञा थाय छे. केश के घट व्यक्तिरूपे अनित्य छे पण केशत्व के घटत्वसामान्यरूपे नित्य छे, अने गत्वसामान्य साथेना गकारना सबंधथी आपणे 'आ ते गकार छे' एवी प्रत्यभिज्ञा करी शकीए छीए. आथी ग व्यक्ति नित्य ठरती नथी.

२९. मीमांसको वेदने नित्य ठराववाने तेना पौरुषेयत्वनु खडन करे छे, पौरुषेयत्वनो अर्थ पुरुषोच्चारितत्व एम लईए तो उचारणने तो हमे मीमांसको पण अनित्य मानीए छीए, माटे तेमा कइ विरोध नथी. पौरुषेयत्वनो अर्थ पुरुषरचितत्व लईए तो जे जे पुरुषरचित ते वेद थता मालतीमाधव जेवा ग्रथ पण वेद थशे. नैयायिको कहेशे के 'प्रमाण होईने पुरुषरचित होय ते वेद' तो एम मानता मीमांसको कहे छे के आ प्रमाणे विरोध आवे छे जे पुरुषे वेदवाक्य रच्या तेने जे ज्ञान तेमा समायु छे तेनी प्राप्ति होवी जोईए, आ ज्ञान कई वेदथी तेने मळी शक्यु होवु न जोईए, कारण के ज्ञान मेळव्यापछी तेने लोकने आपवा माटे वाक्यरूपमा गोठव्यु छे ते वेद छे एम प्रथमबीज मानी लीधु छे हवे वेद अन्य प्रमाणथी अगोचर अर्थनु ज्ञान करनार वाक्य छे अने प्रथम पुरुषने ते अन्य प्रमाणथी गोचर छे एम नैयायिकोने रचितत्व सिद्ध करवाने मानवु पडे छे आ प्रमाणे परस्पर विरोध आवे छे. हवे कोइ कहेशे के मनुष्यने अन्य प्रमाणथी अगोचर होय एवा अर्थनु ज्ञान करावनार वाक्यने वेद मानवामा आवे तो तेथी ईश्वर (प्रथम पुरुष) ने पण वेदथी जणावातो अर्थ अन्य प्रमाणने अगोचर होय एम मानी शकाय नहि. मीमांसको कहे छे के धारोके लीलाविग्रह ईश्वरने वेदथी जणावातो अर्थ अन्यप्रमाणगोचर छे, तोपण कया साधनथी ते गोचर छे एम जाणवानी अपेक्षा रहे छे. (कारण के विग्रह–शरीर–परिमित छे) तेनी नेत्रादि मनुष्यना नेत्रादि करतां अधिक प्रबल होवाथी ते व्यवहित अर्थने पण जाणी शके छे एम लईए तो ते अनुमानमा हेतु नहि मळे. दृष्टने आधारे अदृष्टनु अनुमान थाय छे, अने व्यवहित अर्थ नेत्रादिथी जणाय छे एम दृष्ट नथी त्यांसुधी ते कोईनेपण जणाय एम मानी शकाय नहि.

३०. हवे धारो के जैनो माने छे तेम योगादिथी नेत्रादिमा कोइ कोइ अतिशय उत्पन थाय अने तेथी तेमनी शक्ति मनुष्यनी नेत्रादि करता अधिक थई शके, तो पण तेथी नेत्रनो विषय ते श्रोत्रनो विषय थई शके नहि अर्थात् एक प्रमाणगोचर अर्थ अन्य प्रमाणगोचर थई शके नहि अने तेथी शब्दप्रमाणगोचर अर्थ (जे वेदनो विषय छे ते) प्रत्यक्ष प्रमाण गोचर थई शके नहि आ प्रमाणे लीलाविग्रह धारण करनारने पण अगोचर अर्थनु ज्ञान करनार जे वेद ते वगर अन्यथी अगोचर अर्थनु ज्ञान थई शके नहि.

३१ पुरुष सूक्तमा वेद पुरुषथी उत्पन्न थया एम कहेवामां आव्यु छे त्या पुरुष (प्रथम पुरुष) था ते प्रवर्त्या एम अर्थ लेवो काठक श्रुतिनो अर्थ कठनी श्रुति नहि पण कठथा प्रवर्तायली श्रुति आ प्रमाणे श्रुति तो नित्य छे पण तेना प्रवर्तकने लीधे औपचारिक रीते ते उत्पन्न थई एम कहेवाय छे

३२. लिखित गकारथी आपणने " आ ते गकार छे एवुं प्रत्यभिज्ञान थाय छे एम मीमांसकोए कह्यु त्या नैयायिकोए गत्वसामान्यनी गकार व्यक्ति होवाथी आपणने सबधने लीधे ज्ञान थाय छे एम कही प्रत्यभिज्ञानथी सिद्ध कराता गकारो वर्णना एकत्वनु अने तेथी गकारना नित्यत्वनु खडन कर्यु. हवे मीमांसक पूछेछे के गकार गत्वसामान्यनी व्यक्ति छे ए मत स्वीकारवामा अने सर्व गकार अभिन्न छे एम नहि मानवामां हेतु शु ? एक घटनो नाश थयो अने बीजो घट आपणे जोयो तोपण आ घट छे एम आपणे जाणी शकीए छीए हवे जो घटनु एकत्व मानवामां आवे तो ते पण नित्य थई जाय माटे घट घटत्वसामान्यनी व्यक्ति छे एम मानवु पडे छे तेज प्रमाणे (नैयायिक कहेशे के) गकारमा पण मानवुं जोईए वळी नैयायिक कहेशे के सर्व गकार एक मानतां कदाच कइ बाध आवे माटे पण सामान्य मानवानी आवश्यकता छे मीमांसको प्रथम आ बीजा कारणनो उत्तर आपे छे अने कहेछे के अज्ञात बाधना भयथी सामान्यकल्पना करवी ते मोहथी प्रत्येक स्थळे संशय करवा जेवु छे माटे ज्यांसुधी बाध जणायो नथी त्यासुधी तेने गणवो नहि

३३ हवे गकारनुं एकत्व मानतां घटादिमां व्यभिचार आवे माटे सामान्य लेवानी आवश्यकता छे ए पक्ष लेवामां आवे छे आ साथे वळी नैयायिको एम कहेछे के भिन्न भिन्न बोलनारा गकारनु उच्चारण करे छे माटे व्यक्ति परत्वे भिन्न होवाथी पण गकार अनेक ठरे छे

३३. (बीजीवारनो अंक) अहीं मीमांसको जणावे छे के प्रतिपुरुषे गकार भिन्न छे एम मानवु अप्रमाण छे, नैयायिको गत्वजातिने नित्य अने एक माने छे. हवे जे कोइने आ गत्वजातिना सिद्धान्तनु ज्ञान नथी ते भिन्न देशादिना उपाधिथी गत्वने भिन्न भिन्न माने छे, नैयायिको कहे छे के आ प्रमाणे गत्व भिन्न भिन्न जणाय छे पण वस्तुतः तो ते एकज छे आज प्रमाणे मीमांसको पण कही शके के प्रतिपुरुषना भेदे गकारनु भिन्नत्व जणाय छे पण ते वस्तुत एक छे अने उपाधिभेदथी अनेक छे.

३४. प्रत्येक गकार भिन्न भिन्न छे एम कहेनार तेमा जे प्रतिव्यक्तिपरत्वे विरुद्ध धर्मनु आरोपण करे छे ते स्वाभाविक छे के केवल आपणने प्रतीत थाय छे ? प्रत्येक गकारमा विरुद्ध धर्म स्वाभाविक होय तो अमुक माणस दश गकार बोल्यो एम आपणाथी कहेवाय, पण एकनो एक गकार दशवार बोल्यो एम कहेवाय नहि. आ प्रमाणे जोता गकारमा भेद स्वाभाविक नथी पण बाह्य उपाधिथी ते मात्र प्रतीत थाय छे

३५. नैयायिको गत्वजाति लई गकारनु प्रत्यभिज्ञान सोपपत्तिक ठरावे छे. गने वर्ण लेता पण गकारनु प्रत्यभिज्ञान समजाय छे भेदना आरोपथी ग व्यक्ति लेवाय छे पण नादरूप उपाधिना भेदथी आ भिन्नत्व जणाय छे एम समजता गनु एकत्व अने नित्यत्व सिद्ध थाय छे

३६. जेनु प्रत्यभिज्ञान थाय ते वस्तु पूर्वापर एकज होय शब्दनु प्रत्यभिज्ञान थाय छे माटे तेनु पूर्वापर ऐक्य छे अने तेथी ते अनित्य छे एम कहेवु खोटु छे

३७ शब्द आकाशनो गुण छे, श्रोत्रेन्द्रिय आकाश छे, माटे ते श्रोत्रेन्द्रियनो गुण थयो.

३८ न्यायवाळा कहे छे के शब्द अनित्य छे, कारण के ते इन्द्रिय विशेष–श्रोत्रेन्द्रिय-नो गुण छे मीमांसको कहे छे के जे इन्द्रियविशेषनो गुण होय ते अनित्य होय एम सर्वत्र जोवामां आवतु नथी. कारण के हमे (मीमांसको) एम मानीए छीए के शब्द श्रोत्रेन्द्रियनो गुण छे तोपण ते नित्य छे हवे रूप चक्षुरिन्द्रियनो गुण छे अने ते अनित्य छे एम मीमांसको पण माने छे माटे मीमांसक कहे छे के " जे इन्द्रियविशेषनो गुण होय अने जे अश्रावण (नहि सांभळवापणावाळु) होय ते अनित्य होय, जेमके रूप " आ प्रमाणे अश्रावणता मीमांसकोना मानवा प्रमाणे

उपाधि थाय छे अने मीमांसकोने समजाववानुं प्रयोजन छे माटे मीमांसकोथी अणातो उपाधि सत्य निगमन आपवामां बाधक थाय छे. कोलाहल शांत थयो एम कहेवामां शब्दनो नाश थयो एम समजातुं नथी पण ध्वन्यंशनो नाश थयो एम समजाय छे. शब्दने नित्य मानतां ते सर्वदा उपलब्ध अथवा अनुपलब्ध होवो जोईए एम कहेनारने एटलुंज कहेवामां आवे छे के शब्द तो नित्य छे पण तेनी उपलब्धि ध्वनिना संस्कार उपर आधार राखे छे. ध्वनिथी वायुनी वीचिरूप गति उत्पन्न थतां शब्दनी उपलब्धि थाय छे, ध्वनि संस्कारक छे अने शब्द संस्कारी छे एम मीमांसको माने छे अने तेथी ध्वन्यात्मक शब्दनी उपलब्धि समजावे छे; पण नैयायिको कहे छे के ध्वनि अने शब्द वच्चे आवो जे संस्कारसंस्काररिरूप नियत संबंध धारवामां आवे छे तेवो छेज नहि. ध्वनि थतांज शब्दज्ञान थाय छे अर्थात् ध्वनि अने शब्दनो इंद्रिययोग एकी वखते थाय छे. हवे जेनो योग एकी वखते थाय ते बेनी वच्चे संस्कारसंस्कारिसंबंध होवो जोईए नहि, पण जातिव्यक्तिसंबंध होवो जोईए. गोत्व अने गौनो एकी वखते इंद्रियसंबंध थाय छे माटे तेओनी वच्चे संस्कारसंस्कारिसंबंध नथी पण जातिव्यक्तिसंबंध छे. मीमांसको कहे छे के जेओनो योग *एक इंद्रिय साथे एकी वखते थाय तेओ वच्चे जातिव्यक्तिसंबंध* होवो जोईए एम जो मानीए तो आत्मा अने ज्ञाननो योग एकीवखते मनस् इंद्रिय साथे छे तेथी तेओनी वच्चे पण जातिव्यक्ति संबंध मानवो जोईए. पण आ प्रमाणे कंइ मनातुं नथी.

कदाच एम मानी के प्रामाण्यनो आश्रय जे ज्ञान तेनी सामग्री जे नेत्रादि तेथी जन्मेलुं होवाथी ते स्वतःसिद्ध. आ प्रमाणे लेतां प्रथम एक विचार करवानो छे. प्रामाण्य वैशेषिकोना सात पदार्थोना कोठामां आववुं जोईए. (नहितो ते सप्तव्यतिरिक्त पदार्थ ठरे). हवे जो ते द्रव्य गुण अने कर्ममां आवी जतुं होय तो ते जाति कहेवाय अने सामान्यादिमां आवी जतुं होय तो ते उपाधि कहेवाय. जाति नित्य होवाथी "उत्पन्न" कहेवाय नहि, माटे प्रामाण्य पोतानो आश्रय जे ज्ञान तेनी सामग्री जे नेत्रादि तेथी "उत्पन्न" थयु एम कहेवाय नहि. हवे एम लो के प्रामाण्यनो समावेश सामान्यादि चारमां थाय छे अर्थात् ते उपाधि छे. आ उपाधिरूप प्रामाण्यनुं लक्षण आ प्रमाणे आपवामां आवे छेः स्मृति जेनुं अधिकरण नथी एवा ज्ञानना बाधनो अत्यन्ताभाव ते प्रामाण्य. आ प्रमाणे प्रामाण्य अभावरूप होवाथी ते सामग्रीजन्य कहेवाय नहि. हवे धारो के प्रभाकरना मतानुयायीओ माने छे ते प्रमाणे स्वतःसिद्ध एटले ज्ञाननी सामग्री जे नेत्रादि तेथी उत्पन्न थयलुं जे ज्ञानविशेष तेथी उत्पन्न थयलु. परंतु अहीं पण एक अडचण आवे छे. नेत्रादिथी ज्ञान (यथार्थज्ञान) उत्पन्न थाय छे तेज प्रमाणे अयथार्थ ज्ञान (अप्रमा) पण उत्पन्न थाय छे. अने उपर प्रमाणे स्वतःसिद्धत्वनो अर्थ लेतां अप्रमाणथी उत्पन्न थयला ज्ञान विशेषथी उत्पन्न थयलुं अप्रामाण्य पण प्रामाण्य थई जाय छे. हवे कदाच एम धारो के जे नेत्रादि ज्ञानसामग्रीथी प्रमा उत्पन्न थाय छे तेज नेत्रादि सामग्रीथी उत्पन्न थयला ज्ञानविशेषमां रहेवापणु ते स्वतःसिद्धत्व. आ प्रमाणे मानतां पण अडचण आवे छे. नेत्रादि ज्ञानसामग्रीथी उत्पन्न थयलुं ज्ञानविशेष ते दोषाभावसहकृत नेत्रादिथी उत्पन्न थयलुं के दोषाभावसहकृत नेत्रादिथी उत्पन्न थयलुं? न्यायवाळा के जेओ प्रामाण्यने परतः माने छे तें पण दोषाभावसहकृत ज्ञानसामग्रीजन्य ज्ञानविशेषमां रहेनारा ज्ञानने प्रामाण्य माने छे. बीजो पक्ष लेतां दोषाभावज कारण थई पडे छे.

४३. न्यायवाळा प्रामाण्यने परतः सिद्ध केवी रीते ठरावे छे ते अहीं बताव्युं छे.

४४. प्रमानो संभव ज्ञान सामग्रीथी छे माटे दोषाभाव ने कारण मानवा रूप दोष पूर्वमां जणाव्यो ते अयथार्थ छे.

४५. ४६. दोष अप्रमानो हेतु तो दोषाभाव प्रमानो हेतु एम लेतां न्यायनीज रीते अडचण आवे छे ते ए के दोषाभाव प्रमानो हेतु (कारण) नथी पण ते अप्रमानो प्रतिबंधक छे.

४८ प्रवृत्ति थवामां फलनिश्चयनी आवश्यकता छे एवायथी प्रवृत्ति थाय एम मानीए तो प्रवृत्तिमां पण (प्रवृत्तिना अंतमां पण) प्रश्न तो रोटी छे के खरी एवो निश्चय करवानुं प्रयोजन रहे नहि आ प्रमाणे फलनिश्चय स्वतः सिद्ध होवाथी प्रामाण्य स्वतः सिद्ध छे. भाषांतरमां आ विषय विचार करीने वांचता स्पष्ट समजाशे.

४९. आ प्रमाणे जोतां अप्रामाण्य परतः सिद्ध छे

५०. भट्टाचार्य (कुमारिल) ना अनुयायीओ एम माने छे के शब्द पोतेज अमुक निश्चित अर्थनो बोध करे छे ते वाक्यमां आवे तोज अर्थबोध थाय एम आ लोको स्वीकारता नथी प्रभाकरना मतानुयायीओ वाक्यने अर्थनो बोध करनार माने छे अभिहितान्वयवादी एटले शब्दनी अभिधाशक्तिने माननारा. अन्विताभिधानवादीओ एम माने छे के शब्द एकलो अर्थ जणावी शके नहि, बीजा शब्द साथेना तेना अन्वये करीने ते अर्थ जणावी शके.

पाणिनिदर्शन.

२. थी ६. आ विषय केवल व्याकरणनो होवाथी तेना संबंधमां आ स्थळे वधारे चर्चा करवामां आवती नथी.

७. थी ९. अथ व्याकरणम् नहि लखतां अथ शब्दानुशासनम् एम लख्युं छे ते आ शास्त्रनुं प्रयोजन जणाववा माटे छे. शब्दानुशासन वेदांग होवाथी तेनुं अध्ययन करवुं सहेतुक छे.

१०. शब्दनो संस्कार—तेमने शुद्ध रूपमां समजवा—विगेरे ते शब्दानुशासननुं प्रयोजन छे.

१०. (बीजी वारनो अंक). उपर व्याकरणशास्त्रनुं प्रयोजन कह्युं पण ते पार पडे तेम नथी एम पूर्वपक्षी बतावे छे

११. एक सामान्य अथवा विशेष नियम जाण्याथी घणा शब्दनी शुद्धि अशुद्धिनुं ज्ञान थाय छे माटे व्याकरणशास्त्रथी शब्दसंस्काररूप प्रयोजन पार पडे छे

१२ वेदनुं रक्षण करवुं, एक प्रकारनी शब्द रचनाने अनुसार अन्य शब्द करतां शिखववुं, वेदादि शास्त्रनो अर्थ जणाववो, पठन करनारने सरलता करी आपवी, अने तेने निःसंदेह करवो ए व्याकरणशास्त्रनां प्रयोजन छे

१३ अविक्रमत ए खोटुं रूप छे जे कोई एवो दुष्ट शब्द वापरे ते दोषभाक् थाय छे.

१४ आ ऋचानो अर्थ भाष्यकार आ प्रमाणे करे छे वैश्वदेव बलिमां अग्निनी स्तुतिनो आ मंत्र छे. जिव्हानी देवता अग्नि छे एम मानवामां आवे छे.

१५ पदार्थ मात्र शब्दथी अभिधेय होवाथी ते शब्दब्रह्मनो विवर्त छे.

१६ शब्दना केटलाकना कहेवा प्रमाणे नाम अने आख्यात (क्रियापद) बे भेद छे केटलाक नाम, क्रियापद, उपसर्ग अने निपात ए रीत्या शब्दना चार भेद करे छे अने केटलाक उक्त चार साथे कर्मप्रवचनीय लई शब्दना पांच भेद करे छे

१७. 'अनु' जेवा जे उपसर्ग *क्रियापदना योग वगर एकला आवी* शब्दोनो संबंध करे छे ते कर्मप्रवचनीय छे. सूक्तमनुप्रावर्षत् ए वाक्यमां सूक्त 'पछी' (इंद्रे) वर्षण कर्युं एवो अर्थ छे. परंतु अहीं सूक्त निशम्य ए रीते निशम्य (सांभळीने) क्रियापद अध्याहृत छे. *माटे कर्मप्रवचनीयनो उपसर्गमां समावेश थाय छे.*

१८. अहींथी स्फोटाख्य शब्द नित्य छे एम सिद्ध करवामां आवे छे. मीमांसको शब्दने नित्य माने छे परंतु आ मत वैयाकरणीओए बहु दृढ कर्युं छे माटे माधवाचार्य पाणिनिदर्शनमां तेने लावे छे.

जेमांथी अर्थ स्फुट थाय छे अथवा जे वर्णथी स्फुट थाय छे ते स्फोट. आ स्फोटाख्य शब्द नित्य छे, कारण के तेनाथी वर्णव्यतिरिक्त अर्थ समजाय छे वर्णथी शब्दनो अर्थ समजाय छे एम लेतां बाध नडे छे. वर्ण सामटा होय तो अर्थनो बोध थाय पण ते क्षणिक होवाथी सामटा (संघाते) रही शके नहि. *माटे गौ शब्दना उच्चारथी गौनी* प्रतीति वर्णोथी थती नथी.

१९. स्फोटथी शब्दनी प्रतीति थती नथी एम पूर्वपक्षी जणावे छे. स्फोट नित्य होवाथी शब्दनो प्रतीतिनुं कारण स्फोट मानीए तो शब्दनी प्रतीति पण नित्य थाय. जो कोई कहेशे के अभिव्यक्त स्फोटथी शब्दनी प्रतीति थाय छे तो स्फोटनुं अभिव्यंजन जे वर्णोथी थाय छे ते वर्णो संघाते अभिव्यंजक करे छे के नहि ? संघाते कहेवाय नहि, कारण के वर्णने क्षणिक मानी तमेज तेनो संघात असमवित ठराव्यो छे. वर्णने गमे ते क्रमसर उच्चारीए तो तेथी पण अर्थनो बोध थतो नथी, माटे अभिव्यक्त स्फोटथी शब्दनी प्रतीति अनुपपन्न छे.

२०. वर्णथी शब्दनी प्रतीति थाय छे एम मानवामां जे जे अडचणो आवे छे तेज सर्व वर्णथी *अभिव्यक्त स्फोटथी शब्दनी प्रतीति* थाय छे एम मानवामां पण आवे छे माटे एक पक्ष बीजा करतां वधारे सारो नथी.

२१. उपर जे वर्णथी शब्दनी प्रतीति नथी थती एम बताव्युं तेज प्रमाणे *अहीं पण बतावबवामां आवे छे*

२२. पूर्वपक्षी कहे छे के तेज अडचणो अभिव्यक्त स्फोटने शब्दनी प्रतीति करावनार मानीए तो पण आववानी अने पाछा वधार

पाणिनिदर्शन.

२. थी ६. आ विषय केवल व्याकरणनो होवाथी तेना संबंधमां आ स्थळे वधारे चर्चा करवामां आवती नथी.

७. थी ९. अथ व्याकरणम् नहि लखतां अथ शब्दानुशासनम् एम लख्युं छे ते आ शास्त्रनुं प्रयोजन जणाववा माटे छे. शब्दानुशासन वेदांग होवाथी तेनुं अध्ययन करवुं सहेतुक छे.

१०. शब्दनो संस्कार—तेमने शुद्ध रूपमां समजवा—विगेरे ते शब्दानुशासननुं प्रयोजन छे.

१०. (बीजी वारनो अंक). उपर व्याकरणशास्त्रनुं प्रयोजन कह्युं पण ते पार पडे तेम नथी एम पूर्वपक्षी बतावे छे.

११. एक सामान्य अथवा विशेष नियम आप्याथी घणा शब्दनी शुद्धि अशुद्धिनुं ज्ञान थाय छे माटे व्याकरणशास्त्रथी शब्दसंस्काररूप प्रयोजन पार पडे छे.

१२. वेदनुं रक्षण करवुं, एक प्रकारनी शब्द रचनाने अनुसार अन्य शब्द करतां शिखववुं, वेदादि शास्त्रनो अर्थ जणाववो, पठन करनारने सरलता करी आपवी, अने तेने निःसंदेह करवो ए व्याकरणशास्त्रनां प्रयोजन छे

१३. अविज्ञमत ए खोटुं रूप छे. जे कोई एवो दुष्ट शब्द वापरे ते दोषभाक् थाय छे.

१४ आ ऋचानो अर्थ भाष्यकार आ प्रमाणे करे छे वैश्वदेवबलिमां अग्निनी स्तुतिनो आ मन्त्र छे. जिव्हानी देवता अग्नि छे एम मानवामां आवे छे.

१५. पदार्थ मात्र शब्दथी अभिधेय होवाथी ते शब्दब्रह्मनो विवर्त छे.

१६. शब्दना केटलाकना कहेवा प्रमाणे नाम अने आख्यात (क्रियापद) बे भेद छे केटलाक नाम, क्रियापद, उपसर्ग अने निपात ए रीते शब्दना चार भेद करे छे. अने केटलाक उक्त चार साथे कर्मप्रवचनीय लई शब्दना पांच भेद करे छे.

भिन्न गायोने आपणे गाय एवी संज्ञा लगाडीए छीए माटे गाय जाति छे. केटलाक गुणने आपणे शुक्र (श्वेत) कहीए छीए माटे शुक्लनो अर्थ पण जाति छे देवदत्तादि संज्ञानो अर्थ पण जाति छे, कारण के जुदी जुदी अवस्थागत देवदत्तना शरीरने आपणे देवदत्त संज्ञा आपीए छीए. पठति ए क्रियानो अर्थ पण जाति छे, कारण के जे जे पठनक्रिया करता होय ते सर्वने आपणे 'पठति' एम कही शकीए छीए. जे एक नित्य अने अनेक साथे समवेत ते जाति.

३१. ३२. व्याडि शब्दनो अर्थ द्रव्य ले छे, जाति लेतो नथी, अने ते एम माने छे के शब्दनी व्यक्तिनो प्रतिभास शब्दनी अभिधाशक्तिथी थाय छे. शब्दनो अर्थ सत्ताजाति मानता जे जे दोष आवे छे (उपर जणाव्या छे) ते शब्दनो अर्थ द्रव्य लेता आवता नथी. आ प्रमाणे शब्दनो अर्थ जाति पण छे अने द्रव्य पण छे अने ते बने पाणिनिए मान्य कर्या छे.

३३. सत्ता एज अर्थ शक्तिना विभागे करीने अनेक जणाता शब्दोमा सर्वत्र रहेलो छे.

३४ अविकल्पित एटले विकल्परहित अर्थात् नि संदेह.

३५. आ स्पष्ट छे.

३७. शब्द ब्रह्म वस्तुत एक छे पण उपाधिना भेदे ते अनेक भासे छे. भेद उपाधिथी कल्पित होवाथी मिथ्या छे.

पडता ज्यांथी निकळ्या त्यां पाछा आववाना. घट्टकुटी एटले नाकुंज्या कर लेवामा आवे छे ते. कोई राजीए जनार कर न आपवा इच्छीने बीजे रस्ते जाय पण सवार थता मूलो पडीने फरी फरीने पाछो नाका आगळज आवे ते प्रमाणे पूर्वपक्षी कहे छे के तमे फरी फरीने पाछा त्यांज आवो छो.

घट्टकुटीप्रभातायित एटले घट्टकुटी आगळने आगळ सवार थई जवा जेवु

२३. मीमांसक कहे छे के वर्णोथी शब्दना अर्थनी प्रतीति थाय ए अने वर्णोना उच्चारणथी थता ध्वनिथी अभिव्यक्त थता स्फोटथी शब्दनी प्रतीति थाय छे ए बे पक्ष भिन्न होवाथी एक पक्षना दोष अन्यमा आवता नथी. प्रथम वर्णना ध्वनिथी स्फोट अभिव्यक्त थाय छेज (जो के ते अपूर्ण रूपमा), बीजा वर्णना ध्वनिथी ते वधारे अभिव्यक्त थाय छे अने अन्त्य वर्णना ध्वनिथी ते सपूर्ण स्फुट थाय छे. आ प्रमाणे मानता वर्ण क्षणिक मानीए तो पण स्फुटने अभिव्यक्त थवा मा कई बाध आवतो नथी.

२४ वैयाकरणीओ शब्दनो अर्थ सत्ताजाति ले छे तेनु पूर्वपक्षी खडन करे छे सत्ता एटले होवापणु होय तो सर्व शब्दनो अर्थ एकज थाय अने ते ते सर्व एक बीजाना पर्याय थाय. आ प्रमाणे थता वाक्य (अर्थव्यजकशब्दसमूह) निरर्थक थई जाय.

२५ आ आक्षेपनु निराकरण करता कहे छे के सत्ता तो एक छे पण सबधीना भेदने लीधे ते भिन्न भिन्न जणाय छे माटे शब्द एक बीजाथी भिन्न जणाय छे.

२६ गोत्वसत्ता अश्वत्वसत्ता इत्यादि सत्ताओ उपाधिना भेदे भिन्न भिन्न छे

२९. असत्य उपाधिथी सत्य वस्तुनी अवधारणा थाय छे. देवदत्तनु घर एम कहेवामा आवता अमुक पुरुषनु घर एवी जे विशिष्ट अवधारणा थाय छे ते देवदत्तरूप उपाधिए करीने थाय छे द्रव्य (सत्ता) एज ब्रह्म छे पण ते ब्रह्मनी विशिष्ट अवधारणा छे अने ते उपाधिथी छे.

३०. जाति, गुण, द्रव्य अथवा सत्ता, अने क्रिया ए चार शब्दना भेद छे अने ते सर्वनो अर्थ सत्ताजाति छे एम अहीं बताव्यु छे भिन्न

ईए. अर्थात् तेना कारणमा ते सत् (रहेलु) होवु जोईए. आ प्रमाणे जोतां प्रधान तत्त्व स्वीकारवानी आवश्यकता जणाय छे.

१२. कार्य उत्पत्तिनी पूर्वे सत् अर्थात् अस्तित्वमां होवु जोईए. आ प्रमाणे मानवामां आटला आटला हेतु रहेला छे.

(१) जे असत् छे अर्थात् जे नथी ते थई शके नहि, एटले के तेने माटे कारणनो व्यापारज संभवे नहि. घट उत्पन्न थयो ते पूर्वे मृत्तिकामा अने कुलालना मनमां ते सत् (अस्तित्वमां) हतो, नहि तो कुलाल, मृत्तिका, दड, चक्र इत्यादि सर्व कारणोनो व्यापार कई वस्तुने उद्देशीने थयो ते समजातु नथी. अमुक प्रकारनोज व्यापार घट उत्पन्न करी शके छे. गमे ते प्रकारनो व्यापार घट उत्पन्न करी शकतो नथी. अने घट उत्पन्न करवामा कारणोनो अमुक प्रकारनोज व्यापार थवो ए घटना कार्यनी पहेलां घट ना सत्वने लीधेज थवु जोईए.

(२) उपादानना ग्रहणथी पण सिद्ध थाय छे के कार्य प्रकट थयुं ते पहेलां सत् होवु जोईए, नहि तो घटना उपादानरूपे ततुनुं ग्रहण थाय अने पटना उपादानरूपे मृत्तिकानु ग्रहण थाय.

(३) कार्य उत्पत्तिनी पहेलां होय नहि तो गमे तेमांथी गमे ते उत्पन्न थाय. घटाभाव तो ततुमा पण छे अने मृत्तिकामां पण छे. तो मृत्तिकामांथी घटज उत्पन्न थाय अने ततुमांथी पटज उत्पन्न थाय एम थवामा हेतु शो? आ प्रमाणे कार्यने असत् मानता सर्वनो संभव सर्वमांथी थशे, पण ते अनुभवविरुद्ध छे

(४) जेमा जे शक्ति छे ते शक्तिथी जे शक्य होय तेज उत्पन्न थाय छे; मृत्तिकामां घट उत्पन्न करवानी शक्ति छे अने आ शक्तिने शक्य घट उत्पन्न करवो ए छे, पट उत्पन्न करवो ए नथी आ प्रमाणे शक्ति अने शक्यना नियत सबधथी पण कार्य उत्पत्तिनी पूर्वे होवु जोईए.

(५) कारणभाव कार्यमां जोवामां आवे छे. जे वस्तु जेवी होय तेमांथी उत्पन्न थनार वस्तु पण तेवीज होय छे. आथी पण कार्य उत्पत्तिनी पूर्वे सत् ठरे छे

१३. १४ प्रपच मिथ्या छे एम सिद्ध करवामां न आवे त्यां सुधी ग १५

सांख्यदर्शन.

१. २. प्रकृति एटले जे कोईथी उत्पन्न नथी पण जेमांथी अन्य उत्पन्न थाय छे. विकृति एटले जे बीजाथी उत्पन्न छे. पुरुष प्रकृति पण नथी अने विकृति पण नथी. प्रधान मात्र प्रकृति छे. आकाशादि पंच महाभूत, पंच कर्मेन्द्रिय, पंच ज्ञानेन्द्रिय अने मनस् ए सोळ तत्त्व केवल विकृति छे. महत्, अहंकार अने पंच तन्मात्रा ए सातपदार्थ प्रकृति अने विकृति बने छे.

३. मूल प्रकृति (प्रधान) मां त्रण गुणनी साम्यावस्था छे. पुरुष-साथे प्रकृतिनो योग थतो प्रकृतिमां क्षोभ थई आ साम्यावस्था तूटे छे. वैकृत अथवा सत्वप्रधान अहंकारमांथी एकादश इन्द्रियगण प्रवर्ते छे. तामस अहंकारमांथी पंच तन्मात्रा प्रवर्ते छे. अहंकारनुं सत्वप्रधान थई अथवा रजःप्रधान थई सक्रिय थवु ते रजस् (रजोगुण) ने लीधे छे.

५. न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुष ए कारिकानो अर्थ ए छे के पुरुष कूटस्थ (अविकारी) नित्य अने अपरिणामी छे.

६. कार्यना धर्म कारणमां होवा जोईए माटे असत्मांथी सत्नी उत्पत्ति मनाय नहि. असत् कारणज थई शके नहि, जेमके वंध्यापुत्र.

९. सत् मांथी असत् पण उत्पन्न थई शके नहि, कारण के वस्तुनो स्वभाव बदलाय नहि. अश्वनी गौ थई शकेज नहि. वळी असत् उत्पन्न थयु एमज कही शकाय नहि. वंध्यापुत्र नथी तो ते उत्पन्न थयो एम कहेवु अशक्य छे. वळी जेम तलमां तेल रह्यु छे तोज ते उत्पन्न थाय छे–बहार आवे छे, तेज प्रमाणे जे वस्तु होय (सत्) तेज उत्पन्न थाय-बहार आवे, न होय (असत्) ते नज बहार आवे.

१०. कारणमां कार्य रह्यु नथी (कार्य असत् छे) तो पण कारणमां कोई शक्तिना बलथी ते उत्पन्न थई शके एम जो कोई कहेतो तेने कहे छे के जो तेल तलमां असत् होय (नज होय) तो तलमां तेल उत्पन्न करवानी शक्ति छे एम कहीज शकाय नहि.

११. कार्यरूप जगत् जड, अज्ञान, दुःखी, अने विनाशी छे ते सच्चिदानंदमांथी उत्पन्न थाय नहि, तेने माटे तेना जेवुंज कोई कारण होवु जो-

पातंजलदर्शन.

१ ३. योगवाळा अनुग्राहक ईश्वरनो स्वीकार करे छे आ प्रमाणे मानता आत्मा (पुरुष) संसारागारमा तप्त अर्थात् दु:खी थवामा आवे छे हवे एवी शंका थाय छे के निर्लेप आत्मा दु:खी शी रीते होय? व्यास पोताना योगसूत्रना चतुर्थपादना बावीसमा सूत्रना भाष्यमा आना संबधमा पोतानु निराकरण आपे छे बुद्धि ए सत्त्व गुणनु परिणाम छे आत्मा निर्लेप छे तो पण तमोगुणने लीधे (अज्ञानथी) ते पोताने बुद्धिथी अभिन्न माने छे. रजोगुणनो स्वभाव ताप आपवो ए छे अने आ तापथी सत्त्व गुण तपता सत्त्वनु परिणाम जे बुद्धि ते पण तपे छे, अने तेथी आत्मा पोते तपतो होय एम दु:खानुभव करे छे ईश्वरना अनुग्रहथी ज्यारे आ आत्माने पोताना पुरुषार्थथी ज्ञान प्राप्त थाय छे अने ते पोताने बुद्धिथी भिन्न जाणे छे त्यारे बुद्धि तपे तोपण तेने कंई दु:खानुभव थतो नथी साधारण शब्दोमा कहीए तो दु:खसुखनो अनुभव करनार विकारी बुद्धि छे पण आत्मा पोते अज्ञानथी पोताने बुद्धिथी अभिन्न माने छे. आपणने क्रोधनो आवेश आव्यो तो ए कंइ आत्मामा आव्या नथी, कारण के आपणे, क्रोधनु स्वरूप, कारण, आदिनो जाणे ते आपणाथी भिन्न होय एवी रीते विचार करी शकीए छीए; पण आ विचार नथी आवतो ते वखते क्रोधना फल–संतापादि–आपणने लागे छे

ते विवर्त (मिथ्या प्रतीत थतो उदय) छे एम कहेवाय नहि. (सां-ख्यनो परिणाम वाद छे, वेदान्त (शांकर वेदान्त) नो विवर्तवाद छे. अनुमान सुस्पष्ट छे.

१५. सुख दु ख मोह ए त्रण सत्त्व रजस् अने तमसनां परिणाम छे.

१६. सुख दु ख मोहात्मक जगत्नु कारण पण त्रिगुणात्मक होवु जोईए. आ प्रमाणे प्रधाननी सिद्धि छे.

१७. लोहित एटले रक्त; लोहितथी रजसनी लक्षणा थाय छे, का-रण के रजसत्वनु उभय साथे साधर्म्य छे. आ प्रमाणेज शुक्ल अने कृ-ष्णथी सत्त्व अने तमसनी लक्षणा थाय छे.

१८. सांख्यवाळा परमेश्वरने मानता नथी

१९. अचेतन जे प्रधान तेनी चेतनना अधिष्ठातृत्व वगर प्रवृत्ति सभवे नहि माटे ईश्वरना स्वीकारनी आवश्यकता छे एम कहेनारने आ उत्तररूप छे.

२०. ईश्वरना स्वीकारनी आवश्यकता अनगीकार्य छे एम जणावी हवे तेना अस्तित्वनु खडन करे छे.

२१. पुरुषना सांनिध्यथी प्रधाननी प्रवृत्ति छे अने ते परस्पर सा-पेक्ष छे.

२२ प्रधान भोग्य होवाथी भोक्ता जे पुरुष तेनी अपेक्षा करे छे. पुरुष कैवल्यने माटे प्रधाननी अपेक्षा करे छे. पुरुष पोते प्रकृतिथी भिन्न छे एम अज्ञानने लीधे जाणतो नथी माटे ते दु खी छे अने दु खनी निवृत्तिने माटे तेने प्रधाननी अपेक्षा छे. आ प्रमाणे अहीं पण निर्विकारी कूटस्थ अपरिणामी पुरुषमा अज्ञान आणी मूकवामा आवे छे

२३. पुरुषना कैवल्यने माटेना विचारने माटे प्रकृतिनी प्रवृत्ति छे पण पछी प्रकृतिनी निवृत्तिने माटेनु प्रयोजन जाणवानी अपेक्षा रहे छे. तेनो उत्तर नीचे नर्तकीना दृष्टान्तथी आप्यो छे.

पातंजलदर्शन.

१ ३. योगवाळा अनुग्राहक ईश्वरनो स्वीकार करे छे आ प्रमाणे मानता आत्मा (पुरुष) ससारागारमा तप्त अर्थात् दु खी लेवामा आवे छे हवे एवी शका थाय छे के निर्लेप आत्मा दु खी शी रीते होय ? त्यारे पोताना योगसूत्रना चतुर्थपादना बावीसमा सूत्रना भाष्यमा आना सबधमा पोतानु निराकरण आपे छे बुद्धि ए सत्त्व गुणनु परिणाम छे आत्मा निर्लेप छे तो पण तमोगुणने लीधे (अज्ञानथी) ते पोताने बुद्धिथी अभिन्न माने छे. रजोगुणनो स्वभाव ताप आपवो ए छे अने आ तापथी सत्त्व गुण तपता सत्त्वनु परिणाम जे बुद्धि ते पण तपे छे, अने तेथी आत्मा पोते तपतो होय एम दु खानुभव करे छे ईश्वरना अनुग्रहथी ज्यारे आ आत्माने पोताना पुरुषार्थथी ज्ञान प्राप्त थाय छे अने ते पोताने बुद्धिथी भिन्न जाणे छे त्यारे बुद्धि तपे तोपण तेने कई दु खानुभव थतो नथी साधारण शब्दोमा कहीए तो दु खसुखनो अनुभव करनार विकारी बुद्धि छे पण आत्मा पोते अज्ञानथी पोताने बुद्धिथी अभिन्न माने छे. आपणने क्रोधनो आवेश आव्यो तो ए कई आत्मामा आव्यो नथी, कारण के आपणे, क्रोधनु स्वरूप, कारण, आदिनो जाणे ते आपणाथी भिन्न होय एवी रीते विचार करी शकीए छीए, पण आ विचार नथी आवतो ते वखते क्रोधना फळ–सतापादि–आपणने लागे छे

४ विषय, प्रयोजन, सबध, अने अधिकारी ए चार अनुबध कहेवाय छे जे शास्त्रमां आ अनुबध न होय ते यथानाम शास्त्र कहेवाय नहि फळ तथा साधनसहित योग ते आ शास्त्रनो प्रतिपाद्य विषय छे. आ विषयनु प्रतिपादन ते आ शास्त्रनु गौण प्रयोजन छे, अने कैवल्य ते तेनु परम प्रयोजन छे योग प्रतिपाद्य छे अने शास्त्र तेनु प्रतिपादक छे आ प्रमाणे शास्त्र अने विषयनो प्रतिपाद्यप्रतिपादकसबध छे, तेमज योग साधन होवाथी अने कैवल्य साध्य होवाथी विषय अने प्रयोजननो साध्यसाधनसबध छे जेने जेने मोक्षनी इच्छा छे ते ते आ शास्त्रना अधिकारी छे.

७ अथनो अर्थ पछीना अर्थमां लेवो जोईए एम पूर्वपक्षी कहे छे, कारण के शमादि पछी योग थाय छे, माटे ' शमादि प्राप्त थया पछी ' एम अर्थ सूचववाने अथ पद सूत्रकारे मुक्यु होय त्यारे पोताना भाष्यमां अथनो अर्थ आरंभार्थ ले छे ते आ प्रमाणे खोटो थाय. माधवाचार्य न्यायभाष्य उपरना वाचस्पतिना व्याख्यानने आधारे कहे छे के योग शमादिनी पछी छे पण योगशास्त्र शमादिनी पछी नथी, अने योगानुशासन एटले योग शास्त्र छे

८. पूर्वपक्षी कहे छे के ' अथ ' पदनो अर्थ ' तत्त्वज्ञान अने तेने जणाववानी इच्छा पछी ' एम पछीना अर्थमां शा माटे न लेवो ? सिद्धान्ती कहे छे के योगानुशासन श्रोताने माटे छे वक्ताने माटे नथी; अने तत्त्वज्ञान अने तेने जणाववानी ईच्छा ए वक्तासाथे संबंध राखे छे माटे श्रोताने माटे ते अनुपयोगी छ आ प्रमाणे जोतां तत्त्वज्ञान अने तेने जणाववानी इच्छा ए आ शास्त्रनो विषय थई शकतो नथी माटे अथनो अर्थ आ प्रमाणे पछीना अर्थमां लेवाय नहि

१० ' शिष्य प्रश्नादिना पछी ' एम अथनो अर्थ लेतां हेयोपादेयना विकल्पथी ते निरर्थक ठरे छे

११ उत्तर मीमांसामां प्रथमसूत्रगत अथनो अर्थ पछी करे छे ते यथार्थ छे, पण अत्र तेम थई शके तेवु नथी एम जणाव्यु छे.

१२. अहीं अथ शब्द मंगलार्थ नथी, कारण के मंगलनु प्रयोजन अभीष्टनी प्राप्तिने माटे छे अने योग सुख दु:ख न होवाथी सुखप्राप्ति अने दुःखनिवृत्तिरूप अभीष्ट योगानुशासननो विषय न होवाथी योगानुशासनमां मंगलनी अपेक्षा नथी. वळी मंगलनी अपेक्षा लइए तो पण अथ शब्दना लक्ष्यार्थथी ते प्राप्त छे, कारण के जेम परदेश जनारने सन्मुख मळतो जलकुंभ पोते मंगल नथी पण तेनु दर्शन एज मंगल छे तेम अथ पदनुं उच्चारण मात्र मंगल छे आ प्रमाणे जोता अथनो वाच्यार्थ मंगल लेतां पिष्टपेषण थाय छे

१३ आयुर् छे ते घृत छे ए वाक्यमां आयुनो अर्थ आयुष्प्रद लइ वाक्यनो अर्थ समजीए छीए आ प्रमाणे वाक्यार्थने माटे जेम लक्ष्यार्थ लईए छीए तेज प्रमाण कार्यकारणसंबंधजनित लक्ष्यार्थ पण वाक्यार्थमां लई शकाय हवे अथनु श्रवणमात्र मंगल होवाथी आखा

वाक्यनो अर्थ योगानुशासन मंगल छे एम लई शकाय. (आ प्रमाणे पूर्वपक्षीनु कहेवु छे.)

१४. शाब्दी आकांक्षा शब्द वडे करीनेज पूरवी ए न्यायने अनुसार शब्दना अर्थनो बीजा शब्दना अर्थ साथे समन्वय करी वाक्यार्थ समजवानो छे पण शब्दना अर्थनो वाक्यना अर्थ साथे समन्वय थतो नथी.

१५. वृद्धिनो अर्थ वर्धन होवाथी ते मंगल छे माटे पाणिनि पोतानी अष्टाध्यायीना प्रथम सूत्रमा तेनु उपादान करे छे.

१६ आरंभना अर्थमा वपरायलो अथ शब्द पण पोताना सामर्थ्येथी मंगलप्रद छे तो पछी ते मंगलार्थे वपरायो छे एम लेवु निरर्थक छे.

१७. ' अथवा ' मा अथपद वपराय छे ते कोई पूर्व प्रकृतनी अपेक्षाए छे. परतु अहीं कई पण पूर्व प्रकृत न होवाथी आ स्थळे अथ ते अर्थमा नथी.

१८. अथ शब्द वाच्यार्थथी अधिकार (आरंभ) ना अर्थमा लेवो अने लक्ष्यार्थथी मंगलना अर्थमा लेवो.

१९. अथ अधिकार (आरंभ) ना अर्थमा लेतां ' योगानुशासननो आरंभ थाय छे ' एम वाक्यार्थ लेवो अने मंगलार्थे लेतां ' आ योगानुशासनमां सुखावबोध पूर्वक श्रोतानी प्रवृत्ति थाओ ' एवो अर्थ लेवो. बने अर्थ लेतां ' शास्त्ररूपे आरंभाता आ योगानुशासनमा शास्त्रना व्याख्याने करीने शास्त्रना सुखाववोधपूर्वक श्रोतानी प्रवृत्ति थाओ ' एवो अर्थ लेवो.

२०. पतंजलि शेषनो अवतार मनाय छे माटे तेमने फणापति कह्या छे.

२१. २२. मोक्षनी इच्छा करनार सर्व योगानुशासन (योगशास्त्र) मा श्रवणना अधिकारी छे, वेदान्तना अधिकारी तो मात्र कर्मोपासनाथी शुद्ध थयला नित्तवाळा छे. ब्रह्मसूत्रमां अथनो अर्थ पछी लेवाथी आ प्रमाणे कहेवामां आवे छे.

२३. केटलांक शास्त्रोनो आरंभ तेमां प्रतिपादित कराता फलनी

इच्छा करनारने माटे छे. योगानुशासननो आरंभ तेमा प्रतिपादित कराता कैवल्यनी इच्छा करनारने माटे छे. आ प्रमाणे अहीं अधिकारी कोने कहेवो.ते लक्षणाथी (अथनो अर्थ अधिकारार्थे लेता थती लक्षणाथी) लेवामां आवे छे. परंतु वेदान्तना अधिकारीने वेदान्तनु ज्ञान प्रणालिकाद्वारा आपवु एम श्रुतिसिद्ध होवाथी लक्षणा करीने अधिकारीनु स्वरूपनिर्णय करवानु प्रयोजन नथी. लक्ष्यार्थ प्रकरणादिथी समजाय छे पण श्रुतिथी अर्थ प्राप्त थयो होय तो प्रकरणादि अनवकाश छे एवो जैमिनिनो न्याय छे.

२४. २५. आ श्रुतिलिंगादि प्रमाणोना सापेक्ष बलने जणावनार नियम छे.

श्रुतिः—साक्षात् वेदवचन, जेवु के ज्योतिष्टोमेन यजेत स्वर्गकाम (स्वर्गने माटे इच्छा करनार ज्योतिष्टोम करवो जोईए.

लिंग —शब्दनु अर्थ जणाववाने सामर्थ्य ते लिंग, शब्दना सामर्थ्यथी ' आ प्रमाणे अर्थ लेवो ' एवु अनुमान करी शकाय छे माटे तेने लिंग कहे छे, जेमके स्रुवेणावद्यति (स्रुव (श्रवा) वडे भाग करे छे (थोडे थोडे लेछे) आ वाक्यमा स्रुव शब्दना सामर्थ्यरूप लिंगथी आपणे एम अर्थ लई शकीए छीए के भाग करवानो (थोडे थोडे लेवानो) पदार्थ आज्य जेवो द्रव होवो जोईए, कारण के पुरोडाश जेवो घन पदार्थ स्रुव वडे लई शकाय नहि.

वाक्य —जेमा एककरतां वधारे पद होय अने जेनो एक अर्थ होय ते वाक्य; अथवा जे पदो एक बीजाना सन्निकर्षथी अर्थनु अभिधान करे ते वाक्य इषेत्वेति छिनत्ति (इषेत्वा ए मंत्र भणीने ते शाखानु छेदन करे छे) ए वाक्यमां इषेत्वा मंत्र छेदननु अंग छे.

प्रकरण —परस्पराकांक्षा ते प्रकरण. दर्शपूर्णमासमां जे प्रयाजादि आवे छे अने जेओनु कंइ विशिष्ट फल श्रुतिमा कह्यु नथी ते ते प्रत्येक अपूर्व (स्वर्गप्राप्ति करावनार कोइ गुप्त सामर्थ्य) उत्पन्न करे छे अने आ सर्वनु सामटु फल दर्शपूर्णमास यजनारने स्वर्गप्राप्ति करावबी ए छे. आ प्रमाणे जोता आ सर्व प्रयाजादि प्रकरणना सामर्थ्यथी दर्शपूर्णमासनां अंग ठरे छे.

३४. प्रमाणादि वृत्तिओ आत्माना धर्म नथी पण चित्तना छे एम लई उपरनी शंकानु समाधान करवामां आवे छे.

३५. ३६. चित्त सर्वगत होवाथी ज्ञान नित्य थवुं जोईए पण ते अनुभवविरुद्ध छे एम कहेनारने कहे छे के जे शरीरमां चित्त वृत्तिमत् होय ते शरीरसाथे संबधमां आवता पदार्थोनु तेने ज्ञान थाय.

३७. ३८. चित्तना धर्म लक्षण अने अवस्था ए त्रणे प्रकारनां परिणाम होवाथी चित्त परिणामी छे.

३९ चित्तनी केटलीक दशाओमां तेनी वृत्तिओनो निरोध थाय छे पण ते वखते योग थयो एम कहेवामा आवतु नथी, माटे चित्तवृत्तिनिरोध ते योग एम कही शकाय नहि.

४०. क्षिप्तादि वृत्तिओ हेय होवाथी तत्कृत निरोध पण हेय छे माटे तेने योगमां गणता नथी.

४१. समाधि.
- संप्रज्ञात.
  - सवितर्क.
  - सविचार.
  - सानंद.
  - सास्मित.
- असंप्रज्ञात.

आ सर्वना लक्षण भाषांतरमा आप्या छे.

४२. असंप्रज्ञात समाधिमा चित्तनी सर्व वृत्तिओनो निरोध थाय छे, पण संप्रज्ञातमां तो केटलीक वृत्तिओ रहे छे, माटे चित्तवृत्ति निरोध ते योग ए लक्षण संप्रज्ञात समाधिमां अव्याप्त छे.

४३. चित्तवृत्तिनिरोधनो अर्थ सर्व चित्तवृत्तिओनो निरोध नथी, पण क्लेशादिना अटकाव पूर्वक जे कंइ निरोध ते योग छे

४४ अविद्या ए अव्ययीभाव समास छे एम कहेतां पूर्वपद जे नअर्थ अ ते प्रधान थशे अने तेथी आखो शब्द विद्याना अत्यन्ताभावना अर्थमां लेवो पडशे, परंतु आ प्रमाणे करता अविद्या क्लेशनु कारण थई शकशे नहि, कारण के अत्यन्ताभाव कोइनु कारण नथी. अविद्या ए कर्मधारय समास छे एम लेता "अ" विद्यानु विशेषण थशे हवे विद्या कोइना पण अभावे करीने विशिष्ट होय तोपण ते विद्या तो रहेवानी

ज, अने तेथी ते क्लेशनु मूल कारण मनावानी नहि. बहुव्रीहि लेता अविद्या कोइ अन्यनु (बुद्धिनुं) विशेषण थशे अने तेथी ते क्लेशनु कारण रहेशे नहि (विशेषण (गुण) कारण थवा रूप द्रव्य (नाम) नो धर्म पार पाडी शके नहि). द्वंद्व समास तो निरवकाश छे, कारण के अविद्या शब्द बे स्वतंत्र पदनो थयो नथी. आ प्रमाणे शक्य त्रण प्रकारमाना गमे ते प्रकारे अविद्यानो अर्थ लईए तो पण ते क्लेशनु मूल थई शकशे नहि अने तेथी अविद्या क्लेशनु मूल छे एम कहेवु निरर्थक थशे.

४५ ४६. अविद्याना आ लक्षणनु स्पष्टीकरण मूलमा नीचेज आपेलुं छे. अनित्यमा नित्यबुद्धि, अपवित्रमा पवित्रबुद्धि, दु खमा सुखबुद्धि अने अनात्ममा आत्मबुद्धि ए अविद्याना चार भेद छे

४७. जे ते नथी तेमा तद्बुद्धि ए अविद्यानु सामान्य लक्षण छे

४८. अनुशयी एटले रहेनार, सुखमा रहेनार ते राग, अर्थात् पदार्थमां सुखबुद्धि थता ते उपर राग उत्पन्न थाय छे एज प्रमाणे जेमां दु खबुद्धि छे ते उपर द्वेष थाय छे.

४९ ५०. वैयाकरणरीत्या अनुशयी शब्द असाधु छे एम पूर्वपक्षी जणावे छे परतु सिद्धान्ती तेने साधु ठरावे छे

५१. प्रत्येक शरीरी ने शरीरनो वियोग गमतो नथी ते अभिनिवेशने लीधे छे. पूर्वानुभूत मरणदुःखना सस्कारथी मरणमा दु खबुद्धि छे

५२ निरोध वृत्तिनो अभाव नथी पण ते अभावाश्रय (अभावनो आश्रय) छे मधुमती वगेरेना स्वरूप आगळ आवशे.

५३. अभ्यास अने वैराग्यथी वृत्तिओनो निरोध मानवामा आवे छे अभ्यास अने वैराग्यना स्वरूप आप्यां छे.

५४ जननादि दश सस्कार नीचे (मूल भाषांतरमां) आप्या छे

५५ घी आयुष्यनु साधन छे तो पण तेने शुद्धसारोपा लक्षणाथी आयुष् कहेवामां आवे छे तेज प्रमाणे ईश्वरप्रणिधान जो के योगनु साधन छे तो पण तेने योग कहेवामा आवे छे लक्षणाना प्रकार अने स्वरूप भाषान्तरमां आप्यां छे

५६. धारणा, ध्यान अने समाधि ए ज्यारे एकविषय होय अर्थात् ते सर्वनो एक विषय होय त्यारे ते त्रणे तांत्रिकी परिभाषामां सयम कहेवाय छे

३४. प्रमाणादि वृत्तिओ आत्माना धर्म नथी पण चित्तना छे एम लई उपरनी शंकानु समाधान करवामां आवे छे.

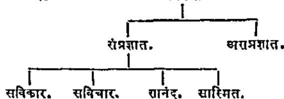
३५. ३६. चित्त सर्वगत होवाथी ज्ञान नित्य थवु जोईए पण ते अनुभवविरुद्ध छे एम कहेनारने कहे छे के जे शरीरमां चित्त वृत्तिमत् होय ते शरीरसाथे संबंधमां आवता पदार्थोनु तेने ज्ञान थाय.

३७. ३८. चित्तना धर्म लक्षण अने अवस्था ए त्रणे प्रकारना परिणाम होवाथी चित्त परिणामी छे.

३९. चित्तनी केटलीक दशाओमां तेनी वृत्तिओनो निरोध थाय छे पण ते वखते योग थयो एम कहेवामां आवतुं नथी, माटे चित्तवृत्तिनिरोध ते योग एम कही शकाय नहि.

४०. क्षिप्तादि वृत्तिओ हेय होवाथी तत्कृत निरोध पण हेय छे माटे तेने योगमां गणता नथी.

४१.



आ सर्वनां लक्षण भाषांतरमां आप्यां छे.

४२. असंप्रज्ञात समाधिमां चित्तनी सर्व वृत्तिओनो निरोध थाय छे, पण संप्रज्ञातमां तो केटलीक वृत्तिओ रहे छे, माटे चित्तवृत्ति निरोध ते योग ए लक्षण संप्रज्ञात समाधिमां अव्याप्त छे.

४३. चित्तवृत्तिनिरोधनो अर्थ सर्व चित्तवृत्तिओनो निरोध नथी, पण क्लेशादिना अटकाव पूर्वक जे कंइ निरोध ते योग छे.

४४ अविद्या ए अव्ययीभाव समास छे एम कहेतां पूर्वपद जे न-ञर्थ अ ते प्रधान थशे अने तेथी आखो शब्द विद्याना अत्यन्ताभावना अर्थमां लेवो पडशे; परतु आ प्रमाणे करतां अविद्या क्लेशनु कारण थई शकशे नहि, कारण के अत्यन्ताभाव कोइनु कारण नथी. अविद्या ए कर्मधारय समास छे एम लेतां "अ" विद्यानु विशेषण थशे. हवे विद्या कोइना पण अभावे करीने विशिष्ट होय तोपण ते विद्या तो रहेवानी-

५७. ५८. मधुभूमिक योगी जे ऋतंभराप्रज्ञा पामे छे ते मधुमती समाधि छे.

५९. मनोजवित्वादि मधुप्रतीक समाधिनी सिद्धिओ छे.

५८. सर्व भाव (पदार्थ) उपर अधिष्ठातृत्व अने सर्वज्ञत्व ए विशोका समाधिनी सिद्धिओ छे.

५८. संस्कारशेषतानु आ स्वरूप छे

५९. ६०. तैत्तिरीय आरण्यकमां आ वाक्य आवे छे. अधने मणिप्राप्ति थवी इत्यादि अशक्य वातो जो कारण वगर कार्य उत्पन्न थतु होय तो शक्य थई शके. कबीरनी अवळवाणीना पद आ वाक्यनी पेठे लौकिक अशक्य वातोने जणावे छे.

६१. अहीं जणाववामां आवतु शांकरदर्शन ते कोई पंचदशी कहे छे अने कोई प्रमेयविवरणसंग्रह कहे छे. पंचदशी श्लोकबद्ध छे अने तेमां वादविवादनो विषय सर्वदर्शनसंग्रहनां अन्यदर्शनोमां आवे छे एटलो बधो आवतो नथी. मि छत्रे जे वडोदरा हाइस्कुलमां प्रथम एक शिक्षक हता अने जेमणे वेदान्तनु अध्ययन सारु कर्यु छे ते एक दिवस म्हारा सद्गुरुपरमात्मा श्रीमन्नृसिंहाचार्य भगवान्‌ना मंदिरमां आव्या हता त्यारे तेमने आ संबंधमां पूछतां तेमणे पण मने प्रमेयविवरणसंग्रह ए ग्रन्थ कहेवामां आवतु शांकरदर्शन छे एम कह्यु हतु.